

भारतीय समाजवाद के शिल्पी

(प्रथम खण्ड)

समाजवादी आन्दोलन क बिखराव के इतने दिन बीत जान के बाद म समझता हूँ कि आचार्य नरन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण एव राम मनोहर लाहिया कितने महान नेता थे। स्वतत्रता सग्राम का इतिहास इनके रामाचकारी कारनामो से भरा पडा है। चिन्तन के क्षेत्र मे भी इनका योगदान अदभुत है। इनका त्यागपूर्ण एव निष्कलक जीवन राष्ट्रभक्ति अपरिग्रह, धर्म निरपेक्ष एव प्रगतिशील व्यक्तित्व से महात्मा गाधी अत्यन्त प्रभावित थ। फिर क्या कारण था कि यह नेता एक साथ न रह सके तथा इनकी प्रतिद्वन्द्विता क कारण समाजवादी आन्दोलन मे बिखराव आया। जहॉ तक मै समझता हूँ कि इनम पद या सत्ता के लिए काई महत्वाकाक्षा नही थी। किन्तु इनमे एक चाहत जबरदस्त थी। वह थी मसीहा बनने की लालसा। इसी ने इनमे ईर्ष्या को जन्म दिया। सरदार पटल और जवाहरलाल नहरू म भी मतभेद थे। किन्तु महात्मा गाधी का नेतृत्व इन दाना को जुएँ के नीचे एकत्र रखता था। समाजवादी आन्दोलन मे कोई गाधी नही था जो लोहिया एव जयप्रकाश को एकत्र रखता। समाजवादी आन्दोलन मे दोना ही अपने लिए गाधी की भूमिका चाहते थे।

—सुरेन्द्र मोहन

भटक गया हे देश दलो के बीहड वन मे
बार–बार यह सशय उठता है मन मे
नेता क्या है ? निज–निज गुट के महापात्र हैं
'राष्ट्र' कहाँ है शेष, शेष बस राज्य मात्र है।

——नागार्जुन

भारतीय समाजवाद के शिल्पी

(प्रथम खण्ड)

मुख्तार अनीस

प्रकाशक

समाजवादी अध्ययन एवं शोध संस्थान

3/297 विशालखण्ड--गोमती नगर, लखनऊ – 226 010

फोन – 397945

प्रकाशक
समाजवादी अध्ययन एव शोध सस्थान
3 / 297 विशालखण्ड--गोमती नगर
लखनऊ – 226 010
फोन – 397945

मूल्य रु 225 00
लाइब्रेरी सस्करण रु 375 00

वर्ष 2000 – प्रतियाँ 1000

मुद्रक
पनार आफसेट
'इन्द्रा अनुष्ठान'
गुईन रोड, अमीनाबाद, लखनऊ
फोन 213565 223757

समाजवादी आन्दोलन के लिए प्रतिबद्ध
मजदूर नेता विनायक राव कुलकर्णी,
किसान नेता बेनी प्रसाद माधव एव बाबूराम यादव
छात्र–युवा राजनीति से सम्बद्ध नरेन्द्र गुरू,
मुजीबुल्ला सिद्दीकी, जावेद सिद्दीकी एव
विनय कुमार को

सादर समर्पित

" . . हमारे कुछ समाजवादी भी सत्ता की राजनीति मे उलझने के फलस्वरूप इतने हतोत्साहित हो गये हे कि व जयप्रकाश नारायण, राममनाहर लोहिया, यूसुफ मेहर अली और आचार्य नरेन्द्र देव की विरासत की हिम्मत से रक्षा करने म आनाकानी करने लगे है। इस लापरवाही के फलस्वरूप धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद का मुद्दा ही खत्म हो जाएगा।"

— **मधु लिमये**

कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना का कुल मिलाकर क्या असर हुआ ? क्या उनके द्वारा सिर्फ आलोचना का और स्थापित नेतृत्व के खिलाफ कटुता उत्पन्न करने का नकारात्मक कार्य ही हुआ ? ऐसा कहना सर्वथा गलत होगा। समाजवादी दल ने प्रारम्भ मे सैकड़ो नौजवानो को आकर्षित किया, उनको आतंकवाद से परावृत किया, इन नौजवानो मे प्रतिकार की ज्योति प्रज्जवलित की। उनमे पढने–लिखने की आदत डाली। उनमें विचारो की गहराई बढाई। उन्हे त्याग की घुट्टी पिलाई। सत्ता–प्रलोभन की राजनीति और अवसरवादियो से उनका बचाव किया। अगर कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी न रहती, तो नौजवान या तो कम्युनिस्ट बन जाते या उनमे कुछ लोग संप्रदायवाद की ओर मुखातिब होते। अधिकांश कांग्रेस के परंपरागत नेतृत्व की तरह संकीर्ण मनोवृत्ति के बनते, विशुद्ध सत्तावादी बनते। कुल मिलाकर समाजवादी दल के न रहने से नोजवान राष्ट्र की मुख्य धारा से अलग हो जाते, जिससे स्वतंत्रता आंदोलन को नुकसान पहुँचता।

——**मधु लिमये**

दो शब्द

'भारतीय समाजवाद के शिल्पी' पाठको के समक्ष है। इस पुस्तक मे समाजवादी आन्दोलन के कुछ सस्थापक सदस्यो के जीवन उनके इतिहास एव उनके दर्शन, समाजवादी नेताओं द्वारा स्वतत्रता सग्राम—विशेषकर 1942 के *'भारत छोडो आन्दोलन'*—मे किया गया उत्सर्ग तथा उनके द्वारा अदा की गयी रोमाचकारी भूमिका का संक्षिप्त विवरण दिया गया है, जिससे स्वतत्रता आदोलन पर भी प्रकाश पडता है। यह चमत्कारिक, प्रेरणादायी एव मर्मस्पर्शी नेतृत्व अब जीवित नही है। किन्तु उनकी याद हमे सदा सालती रहेगी तथा राजनीति की उच्च मान्यताओ के लिए पेरणा देती रहेगी। आज राजनीति मे धनतत्र का प्रभाव बढ गया है, तथा अप्रतिम साधन की बाढ सी आ गयी हे। ऐसा प्रतीत होता है कि राजनीतिज्ञो को अपने हित साधन के अतिरिक्त ऊँचे आदर्शों एव लोक जीवन मे पवित्रता की कोई परवाह नही रह गयी है। हमारे विधायक एव सासद जो सत्ता के ऊँचे आसन पर विराजमान हैं वह घोडे के भाव बिक रहे है। गॉधीवादी आदर्शों का लोप हो रहा है। ऐसी स्थिति मे हमारे इन दिवगत नेताओ का जीवन हमे सच्चा मार्ग दिखायेगा तथा उनके जीवन के उच्च आदर्श हमे प्रेरित करते रहेगे।

इस पुस्तक को लिखने के लिए मुझे नेहरू मेमोरियल म्यूजियम के भूतपूर्व डायरेक्टर स्वर्गीय हरिदेव शर्मा ने बहुत प्रेरित किया था। अब जब यह पुस्तक तैयार हो गयी है तो उन्हे 'स्वर्गीय' लिखते हुए बहुत दुख हो रहा है। वे स्वतत्रता सग्राम समाजवादी आन्दोलन तथा अन्य विषयो के कोश थे। उनका इस ससार से उठ जाना एक अपूर्णीय क्षति है। अरबी मे 'आलिम की मौत' को 'आलम की मौत' कहा गया है। स्वर्गीय हरिदेव शर्मा के सम्बन्ध मे यह उक्ति सत्य सिद्ध होती है। उनकी याद हमे सदा आयेगी। वह अपनी पुस्तको मे अमर रहेगे।

यह पुस्तक तैयार ही नही होती यदि हमारे सामने स्वर्गीय हरिदेव शर्मा द्वारा सकलित आचार्य नरेन्द्रदेव के Selected Works के चार खड न होते। डॉ० लोहिया के जीवन पर प्रकाश डालने मे मुझे इन्दुमति केलकर की पुस्तक 'लोहिया' से बहुत सहायता मिली है। इसके अतिरिक्त लोहिया साहित्य को भी मैने देखा लोकनायक ——

नारायण के विशाल साहित्य भडार को भी छाना। उनके जीवन पर अनेक पुस्तके हैं। श्री मधु लिमये की *'आत्मकथा'* स्वर्गीय एस० एम० जोशी की स्वत लिखित जीवनी *'यादो की जुगाली'*, स्वर्गीय यूसुफ मेहर अली की जीवनी *'यूसुफ मेहर अली– नए क्षितिजो की खोज'* लेखक श्री मधु दडवते, से मुझे बहुत सहायता मिली है। श्री विनोद प्रसाद सिह की पुस्तक *'समाजवादी आन्दोलन के दस्तावेज'* प्रथम खड तथा उन्ही के द्वारा सम्पादित पुस्तक *'मधु लिमये–जीवन और राजनीति'*, उदयन शर्मा की पुस्तक *'मधुजी'* का मैने भरपूर उपयोग किया। यदि ये पुस्तके न होती तो मेरे लिए इस पुस्तक को तैयार करना कठिन हो जाता। मै इन सबका अत्यन्त आभारी हूँ।

'भारतीय समाजवाद के शिल्पी' से ही समाजवादी नेताओ की जीवनियो के लिखने का कार्य पूरा नही हो गया है। यह तो प्रथम खड है। दूसरे खड मे राजनारायण जी, कर्पूरी ठाकुर, रामसेवक यादव, आदि नेताओ की जीवनियो का लिखा जाना आवश्यक है। यह कार्य दूसरे खड मे होगा। इधर स्वर्गीय मधु लिमये की पुस्तक–*'A Glaxy of Socialist Leaders'* तथा एक पुस्तक इसी प्रकार की श्री प्रेम भसीन की भी आ रही है। इस प्रकार समाजवादी नेताओ के जीवन से सम्बन्धित पुस्तको से समाजवादी कार्यकर्त्ता परिचित हो जायेगे।

समाजवादी आन्दोलन ने विचार के क्षेत्र मे दुनिया को 'लोकतान्त्रिक समाजवाद' की तथा 'सिविल नाफरमानी' की जो विधि दी है उस पर गर्व किया जा सकता है। इसी के साथ ही साथ कर्म के क्षेत्र मे भी इनका योगदान अद्भुत है जो आपको जीवनियो के अध्ययन से मिलेगा।

विचार की दुनिया मे 'समाजवाद' जीवित है किन्तु सगठन के रूप मे कमजोर। हमारे लिए यह प्रसन्नता की बात है कि आज भी समाजवादी शक्तियॉ पुनरुत्थानवादियो से मोर्चा ले रही हैं। आशा है कि यह शक्तियॉ देश मे साम्प्रदायिकता एव कट्टरवाद को समाप्त करने मे सहायक सिद्ध होगी। इन महान नेताओ की आत्मा की शान्ति के लिए यह काफी है।

मुझे आशा है कि यह पुस्तक पाठको द्वारा पसद की जायेगी। इससे मेरा उत्साहवर्धन होगा और आगे काम बढ सकेगा।

इस पुस्तक की भूमिका हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यकार एव आलोचक तथा भूतपूर्व उपकुलपति, हिमाचल विश्वविद्यालय, डॉ० बच्चन सिह ने लिखी है। डॉ० साहब वामपथी विचारधारा के प्रतिबद्ध साहित्यकार है। भूमिका लिखने के लिए उन्हे उनके पुत्र सुरेन्द्र प्रताप सिह ने प्रेरित किया जो स्वय काशी विद्यापीठ मे रीडर हैं, समाजवादी आन्दोलन से सम्बद्ध रहे हैं और काफी अर्से से मेरे मित्र है। इस भूमिका से पुस्तक का महत्त्व बढ गया है

एक बार पुन मे उन सभी साथियो का आभार प्रकट करता हूँ जिन्होने इस पुस्तक के प्रकाशन मे सहयोग दिया। विशेषकर पनार मुद्रक के मालिक, श्री विश्व मोहन मेहता का मैं आभारी हूँ जिन्होने गहरी लगन से कम समय मे पुस्तक के प्रकाशन म अपना यागदान दिया। राजनीतिक क्षेत्र मे कार्य करने वाले लोगो के लिए यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी ऐसी आशा है।

—मुख्तार अनीस

सोशलिस्ट पार्टी थोडे–बहुत सुधारो से अपने को सतुष्ट नही कर सकती। उसे तो समाज के पूरे ढाचे मे बुनियादी तबदीलिया लानी है और यह तभी सम्भव है जब इच्छाशक्ति के साथ–साथ नियम और मर्यादा से बधकर काम करने का विवेक भी हो। इसके बगैर सोशलिस्ट पार्टी का विकास असम्भव है।

– राममनोहर लोहिया

प्रकाशकीय

'भारतीय समाजवाद के शिल्पी' तीन खण्डो मे प्रकाशित होनी है। इसका प्रथम खण्ड जिसमे समाजवादी आन्दोलन के छ महत्वपूर्ण नेताओ की जीवनी, व्यक्तित्व एवम् उनके दर्शन की चर्चा की गयी है, आपके हाथ म है। आचार्य नरेन्द्रदेव, जयप्रकाश नारायण एव डॉ० राममनोहर लोहिया समाजवादी आन्दोलन के ही नही बल्कि देश के गणमान्य नेताओ मे से थे। आचार्य नरेन्द्रदेव काग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य थे तथा लोहिया एव जयप्रकाश नारायण उसके विशेष आमन्त्रित सदस्यो मे से थे। महात्मा गॉधी की इच्छा थी कि स्वतन्त्रता के बाद आचार्य नरेन्द्रदेव को काग्रेस का राष्ट्रीय अध्यक्ष बना दिया जाय। पडित जवाहर लाल नेहरू लोहिया को महामन्त्री बनाना चाहते थे। किन्तु इन नेताओ की शर्तों के कारण ऐसा सम्भव नही हो सका। इन तीनो की राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति से कोई इन्कार नही कर सकता। अपनी अस्वस्थता के कारण आचार्य नरेन्द्रदेव की जल्दी ही मृत्यु हो गयी। लोहिया एवम् जयप्रकाश नारायण ने देश की राजनीति को गति दी और उसकी धारा को बदला। लोहिया ने 1967 मे देश के दो-तिहाई हिस्से से काग्रेस का सफाया कर दिया। जयप्रकाश नारायण ने 1974–77 के मध्य जो विशाल आन्दोलन चलाया उसके कारण सत्तारूढ काग्रेस की केन्द्र मे शर्मनाक पराजय हुई एव प्रतिपक्ष की कन्द्र मे सरकार बनी। इसका वर्णन विस्तार से पुस्तक मे किया गया है।

मधु लिमये, एस० एम० जोशी एव यूसुफ मेहर अली की प्रतिष्ठा भी किसी से कम नही थी। राजनीति म रहकर भी यह नेता विदेही थे जिनकी कोई महत्वाकांक्षा नही थी। इनकी भी चर्चा पुस्तक मे की गयी, जिससे इनके त्यागमय जीवन की समीक्षा पाठक स्वय कर सकेगे। पुस्तक के प्रकाशित होते समय अनेक समाजवादी मित्रो ने प्रश्न किया कि पुस्तक मे अशोक मेहता, अच्युत पटवर्धन, राजनारायण, कर्पूरी ठाकुर, गोपाल गौडा, प्रेम भसीन आदि समाजवादियो की चर्चा क्यो नही है। उनकी बात उचित हे। यह पुस्तक का प्रथम खण्ड है। दूसरे मे यह कमी पूरी कर दी जायेगी। उपरोक्त नेताओ की समाजवादी आन्दोलन मे महत्वपूर्ण भूमिका थी। यह जननेता थे तथा विचार के क्षेत्र मे भी इनका यथेष्ट योगदान था

स्वातंत्र्योत्तर काल में लोहिया एव नारायण की जन सघर्ष में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका थी। वह अपने विचारों का भारत जिस ढग का बनाना चाहते थे उसके लिए उन्होने सतत् सघर्ष किए। इसमे लाहिया का योगदान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण था। वह नए सिद्धान्तो की रचना करते थे तथा उसको कार्यान्वित करन के लिए सघर्ष करत थे उसके लिए उन्होने हजारो युवजनो की पलटन खडी कर दी थी जिसकी प्रयोगशाला विश्वविद्यालय थे। 1967 एव 1974--77 मे आया व्यापक बदलाव युवजनो के परिश्रम का ही परिणाम था। इनमे श्रमिको तथा सामान्य जन का भी योगदान कम नही था। स्वतन्त्रता के पश्चात् समाजवादी नेताओ न अनेक महत्वपूर्ण आन्दोलन चलाये जिनकी चर्चा हम यहाँ करेगे।

स्वतन्त्रता के पश्चात् ही समाजवादियो ने पुर्तगाली शासन से गोवा को मुक्त करने के लिए **'गोवा मुक्ति आन्दोलन'** एव नेपाल की राणाशाही के विरुद्ध लोकतान्त्रिक आन्दोलन चलाया। पुर्तगाली शासन ने समाजवादियो को बहुत यन्त्रणा दी। मधु लिमये, नारायण गणेश गोरे, मधु दडवते सहित हजारो कार्यकर्ता बन्दी बनाये गये। दस वर्ष से भी अधिक के दड दिये गये। 1962 के चुनाव के पहले ही गोवा मुक्त हो सका। नेपाल की राणाशाही के विरुद्ध लोहिया ने आन्दालन चलाया जिसमे वह स्वय एव प्रेम भसीन सहित सैकडो कार्यकर्ता जेल गये।

स्वतन्त्रता के दो–तीन वर्ष बाद ही जमीदारी प्रथा के उन्मूलन के लिए समाजवादियो ने विशाल आन्दोलन चलाया। लोहिया के नेतृत्व मे लगभग एक लाख लोगो का विशाल प्रदर्शन लखनऊ मे किया गया। इसी प्रकार पटना मे भी जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व मे एक विशाल आन्दोलन किया गया। अन्त में जमीदारी प्रथा की समाप्ति हुई। यह समाजवादियो की महान सफलता थी।

स्वतत्रता के पश्चात् भी अग्रेज शासको की मूर्तियाँ दिल्ली सहित विभिन्न शहरो मे लगी थी। इनको हटाने का विशाल आन्दोलन चलाया गया। लार्ड इर्विन, कर्जन, जार्ज पंजुम व विक्टोरिया की मूर्तियो को तोडा गया। काग्रेस सरकार झुकी और समाजवादियो की माँग स्वीकार की गयी। इस आन्दोलन मे राजनारायण जी को दस माह तक लखनऊ जेल मे रहना पडा था। आश्चर्य हे कि अपनी ही सरकार अग्रेजो की समर्थक बन गयी थी।

समाजवादियो ने सवा छ: एकड भूमि को लगान मुक्त करने तथा नहर रेट को समाप्त करने के लिए आन्दोलन चलाया। इसमे लोहिया गिरफ्तार किए गये। अन्य नेता भी बन्दी बनाये गये

राष्ट्रीय पैमाने पर समाजवादियो ने **'अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन'** प्रारम्भ किया। इसी के साथ सेल्स टैक्स विरोधी आन्दोलन भी प्रारम्भ किया गया। सैकड़ों कार्यकर्ता बन्दी बनाये गये।

1962–67 के मध्य समाजवादिया की गतिविधियाँ बहुत तेज हो गयी थी। अमरोहा से आचार्य कृपलानी, राजकोट से मीनू मसानी, मुगेर से मधु लिमये एव फर्रूखाबाद से डॉ० लोहिया की जीत से समाजवादियो मे नए उत्साह का सचार हुआ था। मीनू मसानी क अतिरिक्त शेष तीनो नेता समाजवादियो के ही उम्मीदवार थे। इसलिए समाजवादियो ने सीधे नेहरू से त्याग पत्र की मॉग की तथा लोकसभा मे अविश्वास प्रस्ताव रखा गया।

चीनी हमले के बाद नेहरू शासन की छवि धूमिल पड गयी थी तथा साख को बहुत धक्का लगा था। मुम्बई नगर मे जार्ज फर्नाडिस ने मजदूर नेता के रूप मे अपने जुझारूपन का अद्भुत परिचय दिया था। श्रमिको की मॉगो के समर्थन मे 21 दिन की हडताल एव **'मुम्बई बन्द'** से जीवन अस्त–व्यस्त हो गया था। जार्ज को डिफेन्स ऑफ इडिया रूल्स (डी०आई०आर०) नामक काले कानून के अतर्गत बन्दी बनाया गया और लम्बे समय तक जेल मे रखा गया। लोहिया ने इसके विरुद्ध आवाज उठाई।

महॅगाई के विरुद्ध तथा सरकार के द्वारा देश की सीमाओ की रक्षा न कर पाने के विरोध मे 1967 के पूर्व कई बार **'उत्तर प्रदेश बन्द'**, **'बिहार बन्द'**, **'महाराष्ट्र बन्द'** और फिर **'भारत बन्द'** किया गया। इन आन्दोलनो से समाजवादियो मे नयी शक्ति का सचार हुआ।

समाजवादियो ने **'भूमि मुक्ति आन्दोलन'** चलाकर भूमि के न्यायपूर्ण बॅटवारे की मॉग की।

नीति, कार्यक्रम, सिद्धान्त एव दर्शन के क्षेत्र मे भी समाजवादियो का महत्वपूर्ण स्थान था। जो लोग अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन, दाम बॉधो आन्दोलन जाति हटाओ आन्दोलन आदि की कटु आलोचना करते थे तथा इन आन्दोलनो के कारण देश के टूट जाने के भय से सावधान करते थे आज इन आन्दोलनो का समर्थन करत है।

समाजवादियो द्वारा हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए किये गये प्रयास जाति तोडने के लिए चलाये गये आन्दोलन हरिजन मन्दिर प्रवेश के लिए जुझारू मोर्चे बन्दी

एव शिक्षा सस्थाओ मे धार्मिक एव जाति सूचक शब्दो को हटाने की मॉग, आज के प्रगतिशील लोगो के मन को छू लेती है किन्तु जाति एव धर्म के कटघरे से वह स्वय मुक्त नही हो पा रहे हैं। समाजवादी विचार जीवित एव अमर है। समाजवादी युवजनो की नई पाध तैयार हो रही है। आशा है कि यह विचार एक बार पुन प्रतिष्ठित होगे। इन्ही विचारा से देश के युवजनो को प्रेरित करने की दिशा मे यह पुस्तक एक प्रयास है।

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक **'भारतीय समाजवाद के शिल्पी'** मे भारतीय समाजवाद को प्रतिष्ठित करने, रूप देने और जुझारू सघर्ष की दिशा मे ले जाने वाल कुछ समाजवादी महापुरुषो की सक्षिप्त जीवनियो और सघर्ष गाथाओ को उकेरित किया गया है। इसे पढने से लगता है कि इसका उद्देश्य सामान्य जन को समाजवादी अवधारणा से परिचित करा के उन्हे स्वय राजनीतिक मार्ग को चुनने के लिए छोड दिया जाय। आज के राजनीतिक आर्थिक और सास्कृतिक सकट मे समाजवाद ही एक ऐसी अवधारणा है जो देश को उबार सकती है।

देश की अखडता का नारा देने वाले दल स्वय अपनी करनी से टूट रहे है। सत्ता लोलुपता के चक्रव्यूह मे फॅसकर वे उदारतावाद और बहुर्राष्ट्रीय कम्पनियो के झॉसे मे आकर भयावह पूॅजीवाद का समर्थन कर रहे है। देश कर्ज से दबा जा रहा है, दूरदर्शन द्वारा अपसस्कृति परोसी जा रही है अमरीकी सास्कृतिक साम्राज्यवाद का बोलबाला है उपभोक्तावाद की तूती बोल रही है। इतिहास और भूगोल दोनो विकृत हो रहे है। इसे राकने, बदलने के लिए एक सुदृढ समाजवादी राजनीतिक सत्ता की जरूरत है।

कहा गया है **'महाजनो येन गत. स पथा ।'** महापुरुष जिस मार्ग से गए हो उसी मार्ग का वरण करना चाहिए। इसका अभिप्राय लकीर का फकीर होना नही है। सोचना तो अपनी युवा पीढी को है। पर प्रेरणा अपनी परम्परा से, अपने महापुरुषो से लेनी होगी। कहना न होगा कि इसमे जिन महापुरुषो की सघर्ष गाथाओ का बयान किया गया है वे हमारे नए सघर्ष को, जीवन और सस्कृति बोध को, नई ऊर्जा देगी।

समाजवादी आन्दोलन ने देश को आजाद कराने मे राष्ट्रीय काग्रेस के साथ पूरा सहयोग किया है। दूसरे शब्दो मे यह भी कहा जा सकता है कि सन् 48 तक समाजवादी पार्टी काग्रेस का अग बनी रही। इसे काग्रेस समाजवादी पार्टी ही कहा जाता था। पर आजादी हासिल करने के बाद काग्रेस के अपने एक कूटनीतिक प्रस्ताव के तहत यह उससे अलग हो गयी। **'अग्रेजो, भारत छोडो'** के समर्थन मे शहीद होने वाले नवजवानो मे अधिकाश लोग इसी पार्टी के सक्रिय सदस्य थे

इस पार्टी क तीन आधार स्तम्भ थे ... र्य नरेन्द्रदेव ... और

डॉ० राममनोहर लोहिया। इस पुस्तक मे इन तीनो पर विस्तार से लिखा गया है। इनके अतिरिक्त मधु लिमये, यूसुफ मेहर अली, एस० एम० जोशी क समाजवादी सघर्षों की चर्चा भी कम विस्तार से नही है। इसके सम्बन्ध मे लिखते समय अन्य बहुत से सघर्षशील समाजवादिया–अच्युत पटवर्धन, मीनू मसानी, अरुणा आसफ अली आदि के सक्रिय सहयोग और सघर्षों को यथास्थान सग्रहीत कर लिया गया हे। इस तरह यह पुस्तक एक ओर प्रमुख समाजवादियो क सघर्ष वृत्त का आकलन करती हे तो दूसरी ओर समाजवादी पार्टी का क्रमबद्ध इतिहास भी प्रस्तुत कर देती हे।

समाजवादी पार्टी की विधिवत स्थापना सन् 1934 मे हुई। इसी वर्ष समाजवादिया ने अपना पहला अखिल भारतीय अधिवशन पटना मे बुलाया जिसके अध्यक्ष नरेन्द्रदेव थे। समाजवाद के सगठनात्मक विकास का यह प्रस्थान–बिन्दु था। इसके पहले 1931 मे बिहार मे, 1932–33 मे नासिक के केन्द्रीय कारागार मे 1933–34 मे उत्तर प्रदेश ओर महाराष्ट्र मे छोटे–छोटे समाजवादी गुट स्थापित हो चुके थे। इन्ही को मिलाकर एक केन्द्रीय दल बनाया गया।

पटना सम्मेलन के पूर्व कुछ लोग समाजवादी पार्टी को स्वतन्त्र पार्टी के रूप मे रखना चाहते थे। पर आचार्य नरेन्द्रदेव इसक पक्ष मे नही थे। यह सही है कि वे काग्रेस आन्दोलन को बुर्जुआ लाकतान्त्रिक संग्राम कहते थे। पर उन्होने अपने भाषण मे कहा था–'हम उस महान राष्ट्रीय आन्दोलन से, जो ब्रिटिश साम्राज्यशाही के विरुद्ध चल रहा है और कागेस उसका प्रतीक बन गई हे अपने को अलग नही करना चाहते है।' अत इस पार्टी को काग्रेस समाजवादी पार्टी का नाम दिया गया। आचार्य जी का विचार था कि पार्टी काग्रेस को समाजवादी विचारधारा की ओर मोड सकेगी। आचार्य जी की आकाक्षा कितनी पूरी हो सकी विवाद का विषय है। ऐसा भी हुआ है कि समाजवाद का चरित्र काग्रेसी रग मे घुलने लगा। पर इससे देश के नवयुवको मे समाजवादी विचारधारा का प्रसार भी हुआ।

आचार्य नरेन्द्रदेव मार्क्सवादी थे–आर्थाडॉक्स मार्क्सवादी नही। वे कम्यूनिस्ट नही थे। कम्यूनिस्ट मार्क्सवादी होता हे पर जरूरी नही है कि मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट भी हो। पश्चिम मे ऐसे बहुत से लेखक हुए हैं जिन्हे कम्यूनिस्ट मार्क्सवादी नही मानते पर वे स्वय को मार्क्सवादी घोषित करते हैं जैसे–मारकूजे। पर समाजवादियो तथा कम्यूनिस्टो मे मार्क्सवाद का एक ऐसा सूत्र है जो उन्हे एक दूसरे के निकट खडा करता है। शुरू मे कुछ दिनो तक दोनो ने एक दूसरे से मिलकर काम किया। किन्तु द्वितीय विश्व युद्ध मे कम्यूनिस्टो ने इसे जनयुद्ध घोषित करते हुए ब्रिटिश साम्राज्यशाही की मदद की तो

पार्टी उससे अलग हो गई पर लगता है कि मुददों पर दोनों पार्टिया साझा कार्यक्रम अपना सकती हैं लेकिन आपातकाल में कम्युनिस्टों का इन्दिरा गाधी को दिया

हुआ समर्थन समाजवादी भूल नही सकता।

कार्ल मार्क्स के बारे मे आचार्य जी लिखते है–"जो लोग मार्क्स की शिक्षा का दावा करते है तथा लोकतन्त्र का निषेध करते है वे गलती पर है। मार्क्स अपने समय का महान मानवतावादी था। वह अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के अधिकार को हृदय से स्वीकार करता था। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की उसके द्वारा की गई वकालत जगजाहिर है। उसका साम्यवाद पूर्णरूपेण लोकतन्त्र का समर्थन करता था। यही कारण हे कि वह मन से लोकतन्त्रवादी था। उसका विश्वास था कि लोकतान्त्रिक इग्लैड और अमेरिका मे सोशलिज्म बिना हिसा का सहारा लिए प्राप्त किया जा सकता है।

आचार्य जी की नैतिकता, समाजवाद के प्रति एकान्तनिष्ठा, त्याग, तपश्चर्या से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। सन् 1948 मे जब सोशलिस्ट पार्टी काग्रेस से अलग हो गई तो उन्होने विधानसभा से त्यागपत्र दे दिया क्योकि वे काग्रस के टिकट पर चुनकर आए थे। वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति थे। किन्तु काशी के ब्राह्मणवादियो ने यूनीवर्सिटी कोर्ट मे उन पर कुछ पैसे के दुरूपयोग का झूठा लॉछन लगाया। उन्होंने तुरन्त त्यागपत्र दे दिया। अनैतिक समझौते के पक्ष मे वे नही थे न तो काग्रेस से न अन्य किसी पार्टी से। कृपलानी जी की किसान मजदूर पार्टी से भी सोशलिस्ट पार्टी का समझौता उन्हे पसन्द नही था।

मुख्तार अनीस ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को सम्पूर्णता देने के विचार से अपने लेख को तीन खण्डो मे बॉटा है– प्रथम खण्ड मे मुख्यत: उनकी जीवनी और राष्ट्रीय सघर्ष है, दूसरे मे व्यक्तित्व और विचार हैं और तीसरे मे उनके विचारो का चयन है। दूसरे मे शिक्षा के प्रति उनकी निष्ठा का उल्लेख करते हुए उनके मार्क्सवादी सिद्धान्तों की सारगर्भित और पारदर्शी विवेचना की गई हे। पहले कहा जा चुका है कि वे मार्क्सवादी थे। पर कम्यूनिस्ट पार्टी से उनका अनेक मुद्दो पर मतभेद था–अलगाव था। वर्ग सघर्ष को वे मानते थे। सघर्ष की चरम सीमा पर, जरूरत पड़ने पर, वे सशस्त्र क्रान्ति के विरोधी नही थे। गॉधी जी की अहिसा मे उन्हे शक था पर असहयोग आन्दोलन मे वे स्वय शरीक हुए थे। वे न तो हृदय परिवर्तन के कायल थे न भूदान के विश्वासी। मजदूरो की भॉति किसानो को भी वे परिवर्तन का हथियार मानते थे–माओत्से तुग की तरह। हिन्दी के प्रगतिशील कवियो ने ज्यादातर किसानो को ही अपना वर्ण्य बनाया है। प्रलेस के आन्दोलन के पूर्व निराला की कविता में किसानों के का स्वर अधिक मरवर है

हे और न सिद्धान्तनिष्ठ। स्वार्थपर्ता के कारण सिद्धान्तहीन दल गूगो और सास्कृतिक दृष्टि से अपाहिज लोगा को प्रधानमन्त्री के पद पर आरूढ करना चाहते हैं। जिसके कारण ससद चनुआ की सट्टी बन गई हे। शायद लोग भूल गए कि बनारस मे आचार्य नरेन्द्रदेव ने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी से मिलकर **'नवसस्कृति सघ'** की स्थापना की थी और उसका एक **'मैनीफेस्टो'** भी तैयार किया था। उसे पुन प्रसारित करने की जरूरत है।

डॉ० राममनाहर लोहिया पर जमकर लिखा गया है। समाजवादी पार्टी म वे एक धधकते हुए ज्वालामुखी थे। उनके विचारो मे अद्‌भुत मौलिकता थी। कृष्ण और द्रोपदी पर लिखकर वे नए सास्कृतिक प्रश्न उठाते है, इतिहास चक्र पर नए सिरे ज्ञ विचार करते हे। आन्दोलन का रक्त उनकी धमनियो मे निरन्तर प्रवाहित होता रहता था। वे आचार्य नरेन्द्रदेव और महात्मा गॉधी के प्रिय थे। आरम्भ मे नेहरू से भी उनकी बनती थी, पर बाद मे काग्रेस की सत्ता लोलुपता की वजह से मनमुटाव हो गया। लेकिन इस मनमुटाव ने उन्हे अप्रतिम सासद बना दिया। लोहिया अकेले व्यक्ति थ जिसके इर्द–गिर्द बुद्धिजीवियो और साहित्यिका की एक जमात जुट गई। रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सना धर्मवीर भारती जैसे उच्चकोटि के कवि और विजयदेव नारायण साही जैसे मौलिक विचारक लोहियावादी थ। साहित्यकारो का सम्मान करना कोई लोहिया से सीखे।

सन् '42 के **'भारत छोडो आन्दोलन'** मे जयप्रकाश और लोहिया की भूमिका से सभी परिचित है। पार्टी के भीतर और पार्टी के बाहर लोहिया सर्वत्र जाडे की धूप की तरह छाए हुए थे। 1955 के बाद प्रजा सोशलिस्ट पार्टी (प्रसोपा) से अलग होने पर पार्टी की गतिविधियॉ इन्ही के चतुर्दिक चलती रही। इधर लोहिया के बारे मे जो कुछ उछाला जा रहा है वह राजनीतिक अपसस्कृति है उससे साम्प्रदायिकता को बढावा मिलता है।

गोवा की स्वतन्त्रता की पहल लोहिया ने की थी। गोवा की एक सभा मे विलरित उनके पर्चे मे छपा था–*''भारत मे साम्राज्यवाद की आखिरी निशानी बने पुर्तगाली शासन को उखाड फेकने की दिशा मे यह पहला कदम है।''* सरदार पटेल लोहिया से असहमत थे पर बाद मे उन्होने गोवा के विरुद्ध कार्यवाही की। नेपाल मे विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला के जनतान्त्रिक आन्दोलन मे उन्होने ही पहल की थी। वे न तो मार्क्सवाद के विरोधी थे और न गॉधीवाद के अध समर्थक। इसे उन्होने स्वय कहा है।

लोहिया की ससद मे उपस्थिति एक ऐतिहासिक घटना के रूप मे सदैव स्मरण की जाती रहेगी। इसके पहले लोहिया के शब्दो मे वह बच्चो की पढाने की पाठशाला थी। नेहरू का आतक छाया हुआ था। इस आतकवाद की रामनामी उतार कर लोहिया ने नेहरू को बेनकाब कर दिया। अविश्वास का प्रस्ताव तक पेश करने की किसी की हिम्मत नहीं होती थी लोहिया ससद मे ईंट का जवाब पत्थर से देते थे नेहरू के अज्ञान का मण्डाफोड करते हुए उन्होने एक बार कहा था *हजारो एकड जमीन बेकार पडी है*

जिसे जोतकर खेती लायक बनाया जा सकता है। किन्तु प्रधानमन्त्री ने नया नुस्खा दिया है। गमले मे खेती करे, मकान की छत पर खेती करे।" सदन हॅसी स लाट–पोट हो गया।

ससद मे तीन आना और पन्द्रह आना को लेकर लोहिया और नेहरू मे जो बहस हुई वह ससद के इतिहास मे एक यादगार बन गई। लाहिया का कहना था कि सामान्य जन की रोज की औसत आमदनी तीन आना है। जबकि नेहरू को बताया गया था कि पन्द्रह आने है। लोहिया ने व्यग्य करत हुए कहा कि आपके अर्थशास्त्री का नोट गलत है। इस पर ससद मे गम्भीर बहस हुई। लोहिया के ऑकडो के आगे नेहरू को मात खानी पडी।

लोहिया को मातृभाषा हिन्दी से बेहद प्यार था। उन्होने ससद मे कभी भी अग्रजी मे भाषण नही दिया। अन्य समाजवादी सासदो को हिदायत दी कि वे या तो हिन्दी मे बोले या अपनी मातृभाषा में। अग्रेजी मे बोलना मना था। उस समय रामधारी सिह दिनकर राज्यसभा के सासद थे। उन्होने लिखा है—'मेरा ख्याल है कि हम हिन्दी प्रेमियो ने ससद मे जो हिन्दी सेवा बारह वर्षों मे की थी उतनी सेवा लोहिया साहब ने अपनी सदस्यता के कुछ ही वर्षों मे कर दी।" आज तो ससद मे जो दल हिन्दी सेवा के व्रत की घोषणा करता रहा है वही अग्रेजी बूक रहा है–प्रधानमत्री अटल जी भी। इसमे कोई सन्देह नही कि उस समय के समाजवादी सासद वाग्मी और विद्वान थे। लोहिया ने ससद के बार मे ठीक ही कहा था कि ससद *"कानून बनाने की मशीन नही बहस की जगह है।"* '**अग्रेजी हटाओ आन्दोलन**' लोहिया का ही चलाया हुआ था। अपने विचारो के प्रचार के लिए वे हिन्दी मे *'जन'* और अग्रेजी मे *'मैनकाइन्ड'* पत्र निकालते थे। सस्कृति का इस्तेमाल जनहित मे कैसे किया जाना चाहिए इसे लोहिया से सीखा जा सकता है। *'रामायण मेला'* का आयोजन इसका प्रमाण है।

जयप्रकाश नारायण के पहले एक विशेषण लगा था–लोकनायक। सचमुच मे वे लोकनायक थे भी। '**सम्पूर्ण क्रान्ति**' आन्दोलन से यह प्रमाणित हो चुका है। वे गृहस्थ होकर भी अगृहस्थ थे, सत्ता को हिला सकने की ताकत रखते हुए भी सत्ता से विरक्त थे। उनका राजनीतिक जीवन कभी सीधे एक मार्ग पर नही चला। अमेरिका मे वे पक्के कम्युनिस्ट हो चुके थे। भारत आने पर उन्हे अपने सास्कृतिक विचारो के कारण 'समाजवाद' रास आया। इस बीच कुछ दिनो के लिए वे सर्वोदयी और भूदानी भी हो गए थे। पर बाद मे इस कदम को उन्होने गलत माना। इन्दिरा गॉधी से उनके अच्छे सम्बन्ध थे। पर आपातकाल मे 'सम्पूर्ण क्रान्ति' आन्दोलन से उन्होने इन्दिरा गॉधी की सत्ता को हिलाकर रख दिया उसके बाद से काग्रेस दिन पर दिन कमजोर होती गई नागार्जुन ने भी का साथ दिया था यद्यपि बाद में उन्होंने इसे 'सम्पर्ण क्रान्ति'

की काव्यात्मक सज्ञा दी। जयप्रकाश जी सफलता--असफलना को दो अलग--अलग काटियो मे नही बॉटते थे। वे 'असफलता' का नई शाधो का सोपान मानत थे।

मुख्तार अनीस ने उनके व्यक्तित्व का पूर्णता दन के लिए धर्मवीर भारती' की 'मुनादी' कविता का अशत उद्धृत किया है--

खलक खुदा का मुल्क बादशाह का
हुक्म शहर कोतवाल का
हर खासोआम को आगाह किया जाता है,
कि खबरदार रहे
और अपने--अपने किवाडो को अन्दर से
कुडी चढाकर बन्द कर ले
गिरा ले खिडकियो के परदे
और बच्चो को बाहर सडक पर न भेजे
क्योकि
एक बहत्तर बरस का बूढा आदमी
अपनी कॉपती आवाज मे
सडको पर सच बोलता हुआ निकल पडा है

इनके अतिरिक्त इस किताब मे मधु लिमये, यूसुफ मेहर अली ओर एस० एम० जोशी के वैयक्तिक, राजनीतिक सघर्षों का वर्णन किया गया है। सम्भवत किताब की अपनी सीमाओ के कारण कुछ समाजवादियो को नही लिया गया है।

मुख्तार अनीस ने सघर्षशील समाजवादियो के धारदार सघर्षो का चित्रण करके समाजवादी विचारधारा को आगे बढाने मे उल्लेख्य योगदान दिया हे। ये सभी लोग प्रगतिशील विचारधारा के महत्वपूर्ण धरोहर हैं। हमे अपने पुरखो का, अपनी गत्यात्मक परम्परा का आदर करना चाहिए। उनसे बहुत कुछ सीखकर युगानुरूप उनके विचारो मे अपेक्षित परिवर्तन कर समाजवाद पर विचार करते रहने से ही उसकी जीवन्तमयता बनी रहेगी। आशा है मुख्तार अनीस समाजवाद को सास्कृतिक दृष्टि से पुष्ट करने के लिए इस प्रकार का ओर भी महत्त्वपूर्ण प्रयास करते रहेगे।

निराला निवेश, रथ यात्रा
महमूरगज, वाराणसी

--(डॉ०) बच्चन सिह

अनुक्रम

समाजवाद के प्रकाश स्तम्भ – आचार्य नरेन्द्र देव

आचार्य नरेन्द्र देव के सबध मे किसी ने लिखा है कि, ''वे हिमालय की तरह दृढ सिधु की तरह गम्भीर, सहानुभूति एव ममता की मूर्ति तथा अजातशत्रु थे।' उनकी विद्वत्ता, उनका ज्ञान, उनकी देशभक्ति, उनका त्यागमय जीवन राजनीतिक कार्यकर्त्ताओ को सदा प्रेरित करता रहेगा। देश की स्वतत्रता के लिये वह अनेक बार जेल गये। उन्होने भयकर दमे की बीमारी के बाद भी समाजवादी पार्टी की पताका को बुलन्द रखा और उसके लिये यातनाये झेली एव कष्ट उठाये। उन्होने सार्वजनिक जीवन मे सादगी एव ईमानदारी की मिसाल कायम की–इन सब गुणों ने स्वर्गीय आचार्य नरेन्द्र देव जी को महामानव का दर्जा दिया था। इन्ही गुणो के कारण वह अपने विद्वान मित्रो के मध्य अत्यत प्रिय एव लासानी हो गये थे। उनकी विद्वत्ता की पडित जवाहरलाल नेहरू ने कई स्थानो पर प्रशसा की है। उन्होने (Discovery of India) भारत की खोज में भी उनकी सहायता के लिए आचार्य जी को धन्यवाद दिया है। प्रथम भेट मे ही आचार्य जी से महात्मा गाधी इतने प्रभावित हुए कि आचार्य नरेन्द्र देव का परिचय करवाने वाले श्रीप्रकाश जी से उन्होंने कहा, 'श्रीप्रकाश तुमने ऐसे रत्न सरीखे व्यक्ति को कहॉ छुपा रखा था और मुझसे कभी इनके बारे मे बताया भी नही ?'' श्रीप्रकाश जी ने उत्तर दिया था 'महात्मा जी ! रत्न अपने प्रशसको की तलाश म दर-दर नहीं घूमते। जिनको तलाश होती है वह स्वय प्राप्त कर लेते हैं।'[1] आचार्य नरेन्द्र देव समाजवादी आन्दोलन के प्रकाश स्तम्भ थे। आचार्य नरेन्द्र देव को उनके गरिमापूर्ण व्यक्तित्व के कारण सदा याद किया जायेगा।

आचार्य नरेन्द्र देव का नाम अविनाशीलाल था। उनका जन्म 31 अक्टूबर 1889 को सीतापुर मे हुआ था। पैतृक निवास फैजाबाद मे था। जहॉ उनका पुश्तैनी मकान व सम्पत्ति थी। आचार्य जी बलदेवप्रसाद एव जवाहर देवी के दूसरे सबसे बडे पुत्र थे। आचार्य जी के तीन भाई एव दो बहने थी। आचार्य जी के पिता बलदेवप्रसाद सीतापुर मे वकालत करते थे। बलदेवप्रसाद मात्र वकील ही नही थे बल्कि उन्होने हिन्दी, अग्रेजी एव सस्कृत मे बच्चो की शिक्षा के लिए पुस्तके तैयार की थीं। आचार्य जी की प्रारम्भिक शिक्षा इन्ही पुस्तको के माध्यम से हुई थी। आचार्य जी के जन्म के दो वर्ष बाद दादा जी की मृत्यु हो जाने के कारण आचार्य जी के पिता को सीतापुर छोडना पडा क्योंकि पुश्तैनी

1 आचार्य नरेन्द्र देव युग और विचार दीक्षित जी का लेख पृष्ठ 2[illegible]

सम्पत्ति वही थी। इस प्रकार बलदेवप्रसाद जी को एक बार पुन गृहस्थी फैजाबाद मे जमानी पडी और नये सिर से वकालत प्रारम्भ करनी पडी।

आचार्य जी के पिता धार्मिक पवृत्ति के व्यक्ति थे। वह किसी सन्यासी के प्रभाव मे आ गये थे। इसी कारण वह दानशील एव सात्विक प्रवृत्ति के व्यक्ति हो गये थे। उन्हे वेदात मे बहुत रुचि थी तथा सस्कृत के प्रकाड पडित थे। घर मे एक छोटा सा पुस्तकालय था जिसकी आचार्य नरेन्द्र देव देखभाल करते थे। बाल-काल से ही आचार्य जी की धार्मिक पवृत्ति को पोत्साहन मिला। वेदो के पाठ के लिए एक मराठी ब्राह्मण को रखा गया। बाल्यकाल मे ही उन्होने रामचरित मानस, सूरसागर, लघु सिद्धान्त कोमुदी और अमरकोश का अध्ययन कर लिया था। इस प्रकार वह सस्कृत भाषा मे पारगत हो गये थे।

1899 मे जब आचार्य नरेन्द्र देव 10 वर्ष के थे उनके पिता उन्हे लखनऊ काग्रेस के अधिवेशन मे साथ ले गये। उनके पिताजी काग्रेस सम्मेलन के डेलीगेट थे। नरेन्द्र देव जी वहाँ पर हो रहे भाषणों को तो नही समझ सके किन्तु लोकमान्य तिलक, रमेशचन्द्र दत्त और जस्टिस रानाडे के प्रथम दर्शन उन्हे यही हुए। रानाडे की 1901 मे मृत्यु हो गयी किन्तु रमेशचन्द्र दत्त के दर्शन उन्होने दुबारा 1906 मे कलकत्ता मे किये।

1902 मे नरेन्द्र देव जी जब 12 वर्ष के थे उन्हें हाईस्कूल मे भरती कराया गया। 1904 और 1905 मे उन्होने थोडी बगला सीखी। उनके पिता का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव था। पिताजी सदा सदगुणो की ओर प्ररित करते और सत्यकर्म का आग्रह करते थे। आचार्यजी के एक स्नेही पडित माधवप्रसाद मिश्र, जो राष्ट्रीय विचार के थे, उन्होने बलदेवप्रसाद जी के पुत्रो के नाम बदल दिए। उन्होने ही अविनाशीलाल नाम बदल कर नरेन्द्र देव कर दिया था। बलदेवप्रसाद जी ने अपने विशाल प्रागण को सनातन धर्म के व्याख्यानो के लिए समर्पित कर दिया था। सन् 1906 मे जब आचार्य जी हाईस्कूल के छात्र थे स्वामी रामतीर्थ फैजाबाद आये थे। वे बलदेवप्रसाद जी के अतिथि थे। लाला लाजपत राय भी फैजाबाद आये थे और इसी परिवार के अतिथि थे। इस प्रभामडल का आचार्य जी पर गहरा प्रभाव पडा। आचार्य जी ने स्वदेशी का व्रत लिया और बगाल से गरम दल के समाचार पत्र-पत्रिकाये मगाने लगे। गरम दल का पमुख समाचार पत्र 'वदे मातरम' और आर्य आता था। इसमे अरविन्द घोष प्राय लिखते थे। आचार्य जी उनके लेखो को चाव से पढते थे। अरविन्द घोष ने जब राजनीति को त्याग दिया और पाडेचेरी चले गये तब भी उनका प्रभाव आचार्य जी पर बना रहा। राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत होने के कारण आचार्य जी ने बगला साहित्य पढा और थोडा बहुत समझने लगे। वह स्वदेशी के व्रत मे पूरे उतरे और राष्ट्रप्रेम उनमे कूट-कूट कर भर गया। वीर सावरकर की पुस्तक War of Indian Independence, लाला हरदयाल की पुस्तक Indian Sociologist तलवार आदि उग्र विचारो के पत्र-पत्रिकायें पढ कर आचार्य जी में क्रातिकारी भावना भर गयी थी वह गरम दल के खडा करने के उद्देश्य से इग्लैंड

जाना चाहते थे किन्तु माता की जिद के कारण नही जा सके। आचार्य नरेन्द्र देव अपने पिता की मार्फत पडित मदनमोहन मालवीय के सम्पर्क मे आये। उन्होने नरेन्द्र देव को अध्ययन के लिए इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे बुलाया जहॉ से उन्होने इटर पास किया। उन्होने म्योर केन्द्रीय विद्यालय इलाहाबाद मे अध्ययन प्रारम्भ किया जहॉ उनकी भेट डा गगानाथ झा से हुई जो अपने समय के सस्कृत के विद्वान थे तथा तिलक के अनुयायी थे। उनकी प्रेरणा से नरेन्द्र देव को भारतीय दर्शन एव सस्कृति के प्रति रुचि पैदा हुई और राष्ट्रवाद की प्रेरणा मिली। उन्होने इलाहाबाद मे ही Prince Peter Kropotkin's की Memories of Revolutionary और Mutual Aid का अध्ययन किया। ए के कुमार स्वामी जी के निबन्ध National Education तथा रूसी साहित्य पढना प्रारम्भ किया। स्नातक की डिग्री प्राप्त करने तक उन्होंने सस्कृत हिन्दी उर्दू बगाली मराठी फ्रेंच, जर्मन एव पाली भाषाये सीख ली थी। उनकी विद्वता उनके सदा काम आई।

आचार्य जी के बी ए (1911) पास करने के उपरान्त यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि वह क्या करे? वह प्राचीन इतिहास की गवेषणा करना चाहते थे। उन्होंने 'क्वीन्स कालेज' (अब सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी) से सस्कृत मे उच्च अध्ययन प्रारम्भ किया। बौद्ध दर्शन का ज्ञान प्राप्त करने क लिए उन्होंने पाली भाषा का अध्ययन किया। इस प्रकार भारतीय दर्शनशास्त्र मे वह पारगत हो गये। जब वह शिक्षक के रूप मे काशी विद्यापीठ गये तो उन्हे श्रीप्रकाशजी ने आचाय कहना प्रारम्भ किया। इस प्रकार आचार्य शब्द उनके नाम के साथ जुड गया। 1913 मे जब आचार्य जी ने एम ए पास कर लिया तो घर वालो ने वकालत की पढाई पर बल दिया। आचार्य जी की वकालत के पेशे मे रुचि नही थी। किन्तु वकालत की पढाई इसलिए उन्होने की कि वह राजनीति मे भाग ले सके। इस प्रकार आचार्य नरेन्द्र देव के इर्द–गिर्द जो वातावरण बन गया था उसक कारण उनका राजनीति मे प्रवेश स्वाभाविक था। आचार्य जी ने 1915 मे एम ए, एलएल बी की परीक्षा पास की और पेशे को जमाने के उद्देश्य से फैजाबाद मे वकालत करने लगे। एम ए, एलएल बी भी उन्होन इलाहाबाद से किया था।

सन् 1914 मे लोकमान्य बाल गगाधर तिलक माडले जेल से रिहा होकर आये और अपने सहयोगियो को फिर से एकत्र करने लगे। श्रीमती ऐनी बेसेन्ट की अगुवाई मे एक बार पुन होमरुल लीग की स्थापना की गयी। आचार्य जी ने इस सबध मे लोकमान्य तिलक से सम्पर्क किया और होमरूल लीग की एक शाखा फैजाबाद मे स्थापित हो गयी। आचार्य जी फैजाबाद होमरूल लीग के अध्यक्ष चुने गए। अब फैजाबाद मे राजनीतिक सक्रियता बढ गयी थी। उनका पहला भाषण अली बधुओ की गिरफ्तारी के विरोध मे हुआ था इस भाषण की बहुत प्रशसा हुई और आचार्य जी का हुआ इस समय उनकी आयु 27 वर्ष की थी

समर्थन मिला तथा उन्होने अपना आशीर्वाद भी दिया। 1920 मे अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की बैठक म भाग लेने लोकमान्य तिलक काशी आये थे। एक बार पुनः उनकी एव आचार्य नरेन्द्र देव जी की भेट हुई थी। आचार्य जी उन्ही के अनुयायी थे। काग्रेस के नागपुर अधिवेशन मे जब ब्रिटिश सरकार से असहयोग का प्रस्ताव पारित हो गया तो आचार्य नरेन्द्र देव जी ने वकालत छोड दी। उनकी जीविका किस प्रकार चलेगी इसका उन्होने ध्यान नही दिया। आचार्य जी के पिताजी राष्ट्रभक्त थे। उन्होने आचार्य जी के निर्णय का विरोध नहीं किया और जब तक जीवित रहे आचार्य जी आर्थिक प्रश्न पर स्वतत्र थे। वैसे भी खुशहाल परिवार था और आर्थिक सकट की स्थिति नही थी।

असहयोग आन्दोलन के शुरू मे एक बार पडित जवाहरलाल नेहरू फैजाबाद आये और आचार्य जी से मिले। पडित जी ने बताया कि वाराणसी में विद्यापीठ खुलने जा रहा है। उसमे लोग आपको लेना चाहते है। वहाँ आप अवश्य चले जायें। आचार्य जी ने अपने मित्र एव सहपाठी स्वर्गीय शिवप्रसाद जी गुप्त को पत्र लिखा। उन्होने तुरन्त आचार्य जी को बुला लिया। शिवप्रसाद जी गुप्त सच्चे राष्ट्रभक्त थे और अत्यत धनाढ्य काग्रेसी थे। 1921 मे जब वाराणसी मे काशी विद्यापीठ की स्थापना की गयी तो उन्होने अपने मृत्यु भाई का नाम जीवित रखने के उद्देश्य से इस सस्था को 11 लाख रु का दान दिया था। इसी महती राशि से इस सस्था का शुभारम्भ हुआ था। उन्होने पडित जवाहरलाल नेहरू को नरेन्द्र देव का नाम सुझाया था। 1919 मे जलियाँवाला बाग काड के बाद आनन्द भवन मे काग्रेस की एक बैठक हुई थी। उसमे आचार्य जी शरीक थे। शिवप्रसाद गुप्त जी ने यहीं आचार्यजी एव श्रीप्रकाशजी का परिचय एक दूसरे से करवाया था। पडित जवाहरलाल नेहरू, यद्यपि आचार्य नरेन्द्र देव से परिचित थे किन्तु श्रीप्रकाशजी के कारण ही दोनों की घनिष्ठता बढी। पडित नेहरू तथा अन्य मित्रो के प्रयास से ही आचार्यजी उत्तर प्रदेश काग्रेस के सभापति चुने गये। काग्रेस की वर्किंग कमेटी मे भी पडित नेहरू के प्रभाव से ही वह शरीक हुए। स्वय आचार्यजी अत्यन्त सकोची स्वभाव के थे। उनमे कोई महत्त्वाकाक्षा नही थी। आचार्य जी काशी विद्यापीठ मे इतिहास के अध्यापक के पद पर नियुक्त हो गये। वह अध्यापन कार्य का पारितोषिक नही लेते थे। वाराणसी मे जीविका चलाने के लिए घर से धन मागते थे। किन्तु बाद के दिनो में जब काशी विद्यापीठ की स्थिति सुधरी उन्हे 150 रु प्रतिमाह मिलने लगा। किन्तु इस लघु वेतन का अधिकाश भाग विद्यार्थियो को ही दे देते थे। उनके ज्ञान से ही प्रभावित होकर उनके अनन्य मित्र श्रीप्रकाशजी ने अपने पुत्रो का यज्ञोपवीत उन्ही से करवाया था। जब आचार्य कृपलानी ने काशी विद्यापीठ को छोडा तो आचार्य जी उसके प्रधानाचार्य नियुक्त हुए।

अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की मई 1920 मे वाराणसी मे बैठक हुई। यही आचार्यजी एव महात्मा गाधी की भेट हुई। इस भेट के बाद दोनो मे घनिष्ठता बढती गयी जो अंत तक कायम रही।

लोकमान्य बाल तिलक का 31 जुलाई 1920 को बम्बई में निधन हो गया महात्मा गाधी के नेतृत्व मे असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हुआ आचार्य नरेन्द्र देव

ने कांग्रेस के कलकत्ता एव नागपुर सम्मेलनो मे शरीक हुए जहाँ 'असहयोग' करने का प्रस्ताव पारित किया गया।

सन् 1927 मे कांग्रेस के मद्रास अधिवेशन मे पडित जवाहरलाल नेहरू की प्रेरणा से देश की स्वतत्रता का एक प्रस्ताव पारित किया गया। किन्तु महात्मा गाधी जी ने इसे 'जल्दबाजी मे पास किया गया प्रस्ताव' बताकर असतोष व्यक्त किया। इसलिए कांग्रेस शात हो गयी किन्तु सुभाषचन्द्र बोस एव पडित जवाहरलाल नेहरू ने Independence of India League की 11 दिसम्बर 1928 मे काशी विद्यापीठ मे स्थापना की। पडित जवाहरलाल नेहरू इसके अध्यक्ष एव आचार्य नरेन्द्र देव मत्री बनाये गये। इस मच से देश की पूर्ण स्वतत्रता की माग की गयी क्योकि उस समय तक कांग्रेस की यह नीति नही थी। आचार्य जी ने यद्यपि मत्री पद स्वीकार कर लिया, किन्तु आचार्य जी इसके भविष्य को लेकर आशान्वित नही थे। उन्होने पंडित नेहरू को एक पत्र के द्वारा अपनी शका को व्यक्त कर दिया था। किन्तु अपनी कमियो के बाद भी लीग का कार्य कुशलता के साथ सपन्न होता रहा। कांग्रेस के 1928 मे कलकत्ता अधिवेशन मे प्रस्ताव पास किया गया कि यदि एक वर्ष के अन्दर भारत को Dominion Status नही दिया गया तो अगले सत्र मे कांग्रेस पूर्ण स्वाधीनता की माग करेगी। भारत की पूर्ण स्वतत्रता का प्रस्ताव लाहौर अधिवेशन मे 1929 मे पारित किया गया। यह भी प्रस्ताव पारित किया गया कि ' पूर्ण स्वतत्रता की प्राप्ति के लिए कांग्रेस विशाल जन आन्दोलन चलायेगी।''

लाहौर के कांग्रेस के प्रस्ताव के तहत 26 जनवरी 1930 को देश भर मे पूर्ण स्वतत्रता' की माग की गयी। अंग्रेज सरकार से भारत को आर्थिक, राजनीतिक सास्कृतिक बधनों से मुक्त करने तथा यहाँ की जनता को अपने भविष्य का निर्धारण करने की माग की गयी।

इस प्रस्ताव के पारित हो जाने के पश्चात सम्पूर्ण देश मे क्राति की लहरे फूट पडीं। आचार्य नरेन्द्र देव ने 'पूर्ण स्वाधीनता' के प्रस्ताव को अमली जामा पहनाने के लिए सम्पूर्ण प्रदेश का व्यापक भ्रमण प्रारम्भ कर दिया। दौरे पर उनके साथ श्री पुरुषोत्तमदास टडन एव शिवप्रसाद जी गुप्त भी थे। 24 जून 1930 को यह लोग बस्ती दौरा करते हुए पहुँचे जहाँ इन्हे गिरफ्तार कर लिया गया तथा तीन माह का कठोर कारावास का दड दिया गया। यही से वह दमे के असाध्य रोग से ग्रस्त हो गये जिसने जीवन-पर्यन्त उनका पीछा नही छोडा और इसी रोग से उनका देहान्त हुआ।

5 मार्च 1931 को गाधी-इर्विन पैक्ट हुआ। इस प्रकार नमक सत्याग्रह समाप्त हुआ। नई परिस्थितियो मे कांग्रेस ने दूसरे गोलमेज सम्मेलन मे सम्मिलित होने का निर्णय लिया। यह सम्मेलन 30 सितम्बर 1931 को लदन मे हुआ। महात्मा गाधी कांग्रेस के अकेले सदस्य थे। गोलमेज सम्मेलन को सफलता नहीं मिली और महात्मा गाधी ''खाली हाथ'' स्वदेश वापस आये। जब वह लदन मे थे तभी भूमि कर विरोधी आन्दोलन भारत में प्रारम्भ हो गया गाधी जी की वापसी के बाद इसने उग्र रूप धारण कर लिया आचार्य नरेन्द्र देव इसमे शरीक हए 16 अक्तबर 1932 को उन्हें गिरफ्तार किया गया और

वाराणसी जिला जेल भेज दिया गया। एक वर्ष तक जेल मे रहने के पश्चात 1933 मे उन्हे रिहा किया गया।

आचार्य जी को कांग्रेस वर्किंग कमेटी का अप्रेल 1936 मे सदस्य बनाया गया। इसी वर्ष उन्हे उत्तर पदेश काग्रेस का अध्यक्ष भी चुना गया। इस पद पर वह 1938 तक बने रहे।

1939 मे सुभाषचन्द्र बोस ने काग्रेस के अध्यक्ष पद पर पुन खडे होने की इस शर्त के साथ घोषणा की कि यदि आचार्य नरेन्द्र देव को काग्रेस का अध्यक्ष बनाया जाता हे तो वह अपना नाम वापस ले लेगे। गाधी जी इस प्रस्ताव से सहमत थे। किन्तु काग्रेस वर्किंग कमेटी के प्रत्याशी मौलाना अबुल कलाम आजाद के अपने नाम वापस लेने के बाद डा पट्टाभि सीतारमैया को उम्मीदवार बनाया गया जो सुभाषचन्द्र बोस से पराजित हो गये।

काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी ने सुभाष बाबू को अपना समर्थन दिया था किन्तु पडित पत के प्रस्ताव पर वह तटस्थ थी। काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के कुछ नेता इसे काग्रेस नेतृत्व के समक्ष आत्म समर्पण मान रहे थे। आचार्य नरेन्द्र देव काग्रेस वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव के साथ थे। उन्होने प्रस्ताव का समर्थन किया तथा काग्रेस के आतरिक विवाद से काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी को दूर रखन का प्रयत्न किया, क्योकि उनका उद्देश्य मात्र दलीय सत्ता को प्राप्त करना नही था। काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी सगठन मे किसी प्रकार का वितडावाद नही खडा करना चाहती थी क्योकि वह काग्रेस को राष्ट्रीय एकता एव लोकतत्र' का प्रतीक मानती थी। डा लोहिया एव जयप्रकाश नारायण भी महात्मा गाधी के नेतृत्व मे पूर्ण आस्था रखते थे। इसलिए गॉधी-सुभाष बोस विवाद मे सुभाष बाबू के पक्ष मे मतदान करने के बावजूद भी काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के नेतृत्व की निष्ठा महात्मा गाधी मे बनी हुई थी।

काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी, काग्रेस पर दबाव डाल रही थी कि वह ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध सत्याग्रह प्रारम्भ करे। अक्टूबर 1940 मे काग्रेस ने 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' का निर्णय लिया। यह निर्णय काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के दबाव के कारण ही लिया गया था। काग्रेस पार्टी के अन्दर 'सोशलिस्ट ग्रुप' सम्पर्क के लिए अपना दबाव बनाये रखता था जिसे हम योरोप की राजनीतिक भाषा मे 'जिजर ग्रुप' की उपमा दे सकते हैं। व्यक्तिगत सत्याग्रह मे इस ग्रुप ने बढ-चढकर हिस्सा लिया। अपने स्वास्थ्य की खराबी क बावजूद भी आचार्य जी सत्याग्रह मे सम्मिलित हुए और आगरा एव गोरखपुर मे उन्हे गिरफ्तार किया गया।

सितम्बर 1941 म आचार्य नरेन्द्र देव अत्यत बीमार एव शरीर से जर्जर होकर जेल से मुक्त किये गये। उनके स्वास्थ्य मे आई गिरावट स उनका भार 18 पोड घट गया था। महात्मा गाधी, आचार्य नरेन्द्र देव के स्वास्थ्य से चिन्तित थे। जनवरी 1942 मे जब काग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक मे भाग लेने आचार्य जी वर्धा गये तो महात्मा गॉधी ने उन्ह विश्राम करने के लिए वहीं रोक लिया गाधी जी ने अपने आश्रम मे आचार्य

जी की सवा की। उनके स्वास्थ्य मे सुधार हुआ। इस अवधि मे गाधी जी एव आचार्य जी के मध्य लम्बी मत्रणा हुई। महात्मा जी को आचार्य पर इतना विश्वास था कि उन्होने क्रिप्स मिशन क लिए बनाये गये अपने प्रस्ताव को आचार्य जी को दिखाया जो काग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक मे 27 अप्रैल 1942 को इलाहाबाद म पारित किया गया। आचार्य जी मे महात्मा गाधी ने अपना पूर्ण विश्वास एव निष्ठा व्यक्त की तथा ब्रिटिश सरकार क विरुद्ध अतिम सघर्ष छडने के सबन्ध मे चर्चा की। पडित जवाहरलाल नेहरू क मन म इस अतिम सघर्ष को लेकर शकाये थी। किन्तु आचार्य नरेन्द्र दव डा0 लोहिया एव जयप्रकाश नारायण तथा काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध सघर्ष के लिए तत्पर थी। काग्रेस वर्किंग कमेटी की बेठक मे काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी क काग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य आचार्य नरेन्द्र दव एव अच्युत पटवर्धन गाधी जी क समर्थन म उनके पीछे खडे थे ओर पडित नेहरू की दुविधापूर्ण नीति क कटु आलोचक थे।

इस बेठक के बाद बहुत जल्द काग्रेस कमेटी की बैठक 7–8 अगस्त 1942 को बम्बई मे बुलायी गयी जिसमे 'अग्रेज भारत छोडो' का प्रस्ताव पारित किया गया। यहा यह उल्लेख आवश्यक है कि काग्रेस कमेटी की यह महत्त्वपूर्ण बेठक बम्बई मे इसलिए बुलायी गयी थी कि वह देश का प्रमुख व्यावसायिक नगर था जनसख्या भी बहुत अधिक थी किन्तु प्रमुख कारण यह था कि यह नगर सोशलिस्टो का प्रमुख गढ था। बम्बई कार्पोरेशन पर 'काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी' का एकाधिकार था तथा युसुफ मेहर अली बम्बई के मेयर थ। अशोक मेहता एव अच्युत पटवर्धन बम्बई नगर के प्रतिष्ठित श्रमिक नेता थे। इसके अतिरिक्त अन्य काग्रेस सोशलिस्ट नेताओ की बडी प्रतिष्ठा एव ख्याति थी। इस काग्रेस अधिवेशन की सफलता क लिए सोशलिस्टो ने व्यापक पेमाने पर तैयारी की थी। सम्पूर्ण शहर को तोरण द्वारो एव झडियो से सजाया गया था। हजारो डेलीगेट एव सोशलिस्ट सम्मेलन स्थल पर गश्त कर रहे थे। यह सब इसलिए हो रहा था क्योकि महात्मा गाधी ने सोशलिस्टो के ही दम पर देश का निर्णायक स्वतत्रता सग्राम छेडने का प्रण लिया था तथा 'करो या मरो' का उद्‌घोष किया था। काग्रस ने अत्यत उत्साह के साथ इस प्रस्ताव को अपनी स्वीकृति दी। यह प्रस्ताव अग्रेजो का भारत छोडने का नोटिस था। काग्रस के अन्दर कम्युनिस्ट विचारधारा के 12 कम्युनिस्ट सदस्यो ने इस प्रस्ताव के विरुद्ध वोट देकर अपनी गुलाम मानसिकता का परिचय दिया था। डा पी सुब्बाराव ने जो अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के सदस्य थे, इदिरा गाधी के मत्रिमडल के सदस्य मोहन कुमार मगलम के पिता थे न प्रस्ताव के विरोध मे मत देकर अपने देशद्रोह की घोषणा की थी। इनके पौत्र तथा मोहन कुमार मगलम के पुत्र स्व० कुमार मगलम श्री अटलबिहारी वाजपेयी के मत्रिमडल के सदस्य थे। सम्मेलन ने तुमुल हर्ष ध्वनि के मध्य भारी बहुमत से प्रस्ताव पारित किया। उसी दिन काग्रेस वर्किंग कमेटी के सभी सदस्य गिरफ्तार कर लिए गये तथा उन्हे अज्ञात स्थान पर भेज दिया गया। बाद मे मालूम हुआ कि ०   गाधी तथा उनके परिवार के सदस्यों को पुणे के आगा खॉ पैलेस मे रखा गया तथा वर्किंग कमेटी के सदस्यों को अहमदन र क किले मे रख गया

अहमदनगर किले मे आचार्य जी ने गभीर अध्ययन प्रारम्भ किया। उन्होने बौद्ध दर्शन पर अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ किए। उन्होने पडित नेहरू की Discovary of India लिखने मे सहायता की। अग्रेज सरकार ने जब बन्दियो की रिहाई का आदेश दिया तो सभी को उनके प्रदेशो में भेज दिया गया। आचार्य नरेन्द्र एव पडित जवाहर लाल नेहरू को अल्मोडा भेजा गया जहाँ से उन्हे 15 जून 1945 को रिहा किया गया।

आचार्य नरेन्द्र .देव अपने राजनीतिक जीवन के प्रारम्भ मे ही किसानो की समस्याओ के प्रति जागरूक थे। उन्होने यह कार्य फैजाबाद जिले मे प्रारम्भ किया तथा प्रदेश के अन्य जिलो मे किसानो को सगठित करने के लिए भ्रमण किया। 1930 मे उत्तर प्रदेश काग्रेस कमेटी ने किसानो की दुर्दशा एव उनके शोषण का अध्ययन करने के लिए एक कमेटी का गठन किया। आचार्य नरेन्द्र देव एव डा सम्पूर्णानन्द उसके सदस्य थे। जमीदारी उन्मूलन के लिए उन्होने किसानो मे चेतना उत्पन्न करनी प्रारम्भ की तथा समाजवादी समाज की स्थापना के लिए उन्होने वर्ग सघर्ष प्रारम्भ किया।

काग्रेस मे वर्ग चेतना उत्पन्न करने के उद्देश्य से उन्होने मजदूरो एव किसानो के सगठन पर बल दिया। इस प्रकार काग्रेस मे धीरे–धीरे सकल मध्यम वर्ग के अतिरिक्त अत्यज, हरिजन, मजदूर, किसान एव शोषित वर्ग का प्रवेश प्रारम्भ हुआ। इस प्रकार काग्रेस सर्वहारा की पार्टी के रूप मे स्थापित हाने लगी। उत्तर प्रदेश, बिहार, बगाल एव आध्र प्रदेश मे ढीला–ढाला किसान संगठन मौजूद था। इन्हे पक्तिबद्ध करना आवश्यक था। 15 जनवरी 1936 को मेरठ मे कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का अखिल भारतीय सम्मेलन हो रहा था। किसान सगठनो की भी बैठक बुलायी गयी। यही किसान सगठन की रूपरेखा सुनिश्चित की गयी। अखिल भारतीय किसान काग्रेस के नाम से सगठन की घोषणा की गयी। इसके अखिल भारतीय सम्मेलन के लिए तैयारी समिति बनायी गयी। जयप्रकाश नारायण एव प्रो एन जी रगा को उसका कार्यवाहक सयुक्त सचिव मनोनीत कर विभिन्न प्रान्तो मे दौरा कर सगठन बनाने का निश्चय किया गया।

11 अप्रैल 1936 को देश भर के किसान प्रतिनिधियो की एक बैठक पुन लखनऊ मे बुलायी गयी। आचार्य नरेन्द्र देव ने इसे काग्रेस पार्टी से सम्बद्ध कर काग्रेस सगठन को 'ग्रास रूट पार्टी' बनाने का प्रयास किया जिसमे काग्रेस के वर्ग चरित्र मे बदलाव आये। 'अखिल भारतीय किसान सभा' के नाम से सगठन की घोषणा की गयी जिसका सचालन काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के हाथो मे था। 22 नवम्बर 1936 को बरेली के प्रादेशिक राजनीतिक सम्मेलन मे आचार्य नरेन्द्र देव ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा 'किसानो एव मजदूरों का एक स्वतत्र संगठन बनाना आवश्यक है। किन्तु इसका सबद्ध काग्रेस पार्टी से होना चाहिए। किसानों की समस्या के लिए जूझने के कारण उनमे आचार्य जी के नेतृत्व के प्रति आस्था थी। यही कारण था कि उन्हे 4 अप्रैल 1939 को गया मे हुए अखिल भारतीय किसान सभा के अधिवेशन मे उसका उन्हे राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया उन्होने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा

"अक्सर प्रश्न किया जाता है कि किसानो के अलग सगठन की क्या आवश्यकता है जबकि काग्रेस के अधिकाश सदस्य किसान है तथा काग्रेस ने अपने जयपुर एव कराची के सम्मेलनो मे किसानो की बहुत सी मागो के लिए प्रस्ताव पारित किये हैं। इसका उत्तर मात्र इतना है कि काग्रेस के बहुआयामी सगठन होने के कारण किसान अपनी मागो के लिए सगठित रूप से दबाव नही बना सकते। किसानो की वर्ग चेतना पूरी तरह स्वतत्र नही है और सार्वजनिक स्थलो पर उसका व्यवहार सकोची हो जाता है तथा वह इस प्रकार के स्थलो पर सामजस्य नही स्थापित कर पाता। अब काग्रेस ने किसानो को सगठित कर उनकी मागो के समर्थन के लिए काग्रेस पर अधिक से अधिक दबाव बनाया जाये। इस प्रकार के दबाव मे सकारात्मक रूप उभर कर सामने आये हैं और किसानो के हित मे शासन से मागे मनवाने मे काग्रेस सफल हुई है, और काग्रेस नकारात्मक रुख कैसे अख्तियार कर सकती है जबकि वह देश की जनता के हितो की रक्षक है और ऐसे मे किसानो की सख्या बहुत अधिक है। यदि काग्रेस राष्ट्रीय हितो के लिए प्रतिबद्ध है तो उसे साम्राज्यशाही के सभी प्रतिबन्धो एव शोषण के जागीरदारी की व्यवस्था को समाप्त कर देना चाहिए।"[2]

आचार्य जी किसानो के आर्थिक एव सामाजिक जीवन मे व्यापक परिवर्तन लाना चाहते थे। वह किसान परस्त नही थे। वह ग्रामीण लोकतत्र अर्थात किसानो की लोकतात्रिक व्यवस्था मे भू–सम्पत्ति का प्रोप्राइटर बनाना चाहते थे। आचार्य जी यद्यपि मार्क्सवादी थे किन्तु किसानों को बुर्जुआ समाज का एक अग नहीं समझते थे। वह मजदूरों की भॉति किसानो को भी समाजवाद एव लोकतत्र का हरावल दस्ता मानते थे। भारत ऐसे साधनहीन देश मे किसान भी अपनी क्रातिकारी भूमिका अदा कर सकता है। माओ–त्से–तुग का भी यही विचार था। उन्होने कृषको के लिए कार्यक्रम की एक योजना बनायी थी।

(1) किसानों को शिक्षित करने के उद्देश्य से समाजवाद की भावना को जगाना और सहकारी सस्थाओ के माध्यम से उनमे जागरूकता पैदा करना।

(2) सहकारी सस्थाओ के द्वारा उत्पादन और उनका खपत के अनुसार बिना मूल्य के वितरण।

(3) काश्तकार एव सरकार के मध्य बिचौलिये की समाप्ति।

(4) भ्रष्ट पुलिस तत्र की समाप्ति।

(5) सिविल एव आपराधिक मामले मे सस्ती न्याय व्यवस्था।[3]

इस प्रकार आचार्य जी किसानो के लिए एक क्रातिकारी योजना बना रहे थे। स्वतत्रता के पश्चात उस पर आशिक रूप से अमल भी किया गया। किन्तु वास्तविकता

---

2 Selected Works of Acharya Narendra Dev A Biographical Sketch, Volume one-Handev S

3 ed Works of Achaya Narendra Dev Vol one Handev S

यह है कि किसान आज भी शोषण के जुए के नीचे दबा हुआ ह और उन पर कोई विशेष प्रभाव नही दीखता।

1932 के असहयोग आदोलन के कारण समाजवादी विचारधारा के बहुत से युवा कार्यकर्त्ता नासिक केन्द्रीय कारागार मे बन्द थ। उनमे से प्रमुख थे जयप्रकाश नारायण, मीनू मसानी, अच्युत पटवर्धन, अशोक मेहता, चार्ल्स मैकर हैन्रोस एव म ा दातवाला। इन लोगो ने एक बैठक कर निश्चित किया कि मार्क्सवादी सिद्धान्तो पर विश्वास रखने वाले युवका को सगठित किया जाये। जेल से छूटने के पश्चात जयप्रकाश नारायण ने ऐसे युवजनो को एकत्रित करना प्रारम्भ किया। 17 मई 1934 को पटना के अजुमन इस्लामिया हाल म आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता मे ऐसे युवजनो का सम्मेलन बुलाया गया। इससे पूर्व जुलाई 1931 मे जयप्रकाश नारायण फूलनप्रसाद वर्मा बाबा दामोदरदास (जिन्हे बाद मे राहुल साकृत्यायन क नाम से जाना गया) अब्दुल बारी, गगा शरण सिन्हा और अम्बिकाकात सिन्हा ने विहार सोशलिस्ट पार्टी के नाम से एक सगठन वना लिया था। इसका उद्देश्य था भारत की पूर्ण स्वतत्रता जिसका अर्थ अग्रेज शासन से पूर्ण मुक्ति और भारत को एक स्वतत्र समाजवादी गणतत्र के रूप मे स्थापित करना था। इसी तरह के उद्देश्या पर आस्था रखने वाला एक ग्रुप बम्बई मे 1933 मे मीनू मसानी की अध्यक्षता म तैयार हुआ था। इसी प्रकार के सगठन वाराणसी तथा दिल्ली मे तैयार हो गये थे। पजाब मे भी साशलिस्ट पार्टी की स्थापना हो गयी थी जिसके नेता पा0 बृजनारायण जीवनलाल कपूर तथा सुप्रीम कोर्ट के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश लाला फीराजचन्द्र इसके सदस्य थे।

पटना मे 17 मई के 'काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के हुए स्थापना सम्मेलन मे अध्यक्ष पद से प्रतिनिधियो को सम्बोधित करत हुए आचार्य नरेन्द्र देव ने यह स्पष्ट किया कि काग्रेस के अन्दर रह करके काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना क्यो की जा रही ह। स्वतत्र रूप से सोशलिस्ट पार्टी को सगठित क्यो नही किया जा रहा ह आचार्य जी न इस भ्रम का निवारण करते हुए स्पष्ट किया—

'राष्ट्रीय आन्दोलन को समाजवाद की दिशा मे मोडने का हमारा प्रयास होगा। यदि इस राष्ट्रीयता के साथ समाजवाद को पतिष्ठित करना चाहेगे तो तुरन्त आलोचना के पात्र बन जायेग। यदि हम देश मे समाजवाद की स्थापना करना चाहते हैं तो हम काग्रेस के बाहर एक स्वतत्र सगठन की स्थापना क्यो नही करते ? ओर अपनी नीति के आधार पर कार्य क्यो नही करते ? और मध्यम मार्गी सगठन के प्रतिक्रियावादी प्रभाव से मुक्त क्यो नही हाते ? इसका उत्तर है कि हम इस महान राष्ट्रीय आन्दालन से जो ब्रिटिश साम्राज्यशाही के विरुद्ध चल रहा है ओर काग्रस जिसका प्रतीक बन गयी है अपने को अलग नही करना चाहते। हम इस बात को स्वीकार करते है कि काग्रेस मे दाष है आर कमियॉ भी हैं, किन्तु इसके बाद भी यह दश की सबसे बडी क्रातिकारी जमात है। हमे यह नही भूलना चाहिए कि वर्तमान समय म राष्ट्रीय सघर्ष एक बुर्जुआ लोकतात्रिक सग्राम है और इसलिए यदि हम राष्ट्रीय स्वतत्रता सग्राम स हट जायें जिसकी

प्रतिनिधि जमाअत निश्चित रूप से काग्रेस है तो यह कदम हमारे लिए आत्मघाती होगा।[4]

आचार्य नरेन्द्र दव ने पार्टी को साधारण जनता से जोडने पर बल दिया। उन्होने कहा—

"हमे अपनी पार्टी का सामाजिक आधार व्यापक बनाने के लिए मजदूरो और किसानो को एकत्र करना चाहिए। मुझे विश्वास है कि हम शिक्षित वर्ग के समाजवाद की काल्पनिक उडान से सतुष्ट नही होगे। समाजवादी अध्ययन मडल चलाने एव भारतीय भाषाओ मे समाजवादी साहित्य तैयार करन की महत्ता से मुझे इकार नही है। यह एक उत्तम कार्य है और आवश्यक भी। किन्तु हमे यह नही भूलना चाहिए कि हमारे समक्ष जो महत्त्वपूर्ण प्रश्न हे उन पर जनता को शिक्षित करना तथा दैनन्दिन प्रश्नो पर निरन्तर आदोलन चलाते रहना जिससे कि जनता मे राजनीतिक चेतना बनी रहे अति आवश्यक है। जनता के मध्य कार्य करने से ही उसके प्रतिक्रियावादी रुझान मे बदलाव आयेगा और सर्वहारा दृष्टि विकसित होगी। हम बुद्धिजीवी वर्ग के लोग पृष्ठभूमि के लोगो को अपने से अलग कर देते हे जो हमारी भूल है। सच्चाई तो यह है कि हम आम जनता को शिक्षित करने का सदा प्रयत्न करते रहते है किन्तु हम उनसे कुछ सीखना नहीं चाहते। यह मानसिकता गलत हे। हमें साधारण जनता की भावना को जानना चाहिए और हमे उनकी इच्छाओ एव आकाक्षाओ का साझीदार बनना चाहिए।"

आचार्य जी महसूस करते थे कि औद्योगिक मजदूर के साथ काग्रेस के उपेक्षापूर्ण व्यवहार ने उन्हे काग्रेस के आन्दोलनो के प्रति उन्हे निष्क्रिय एव विरोधी बना दिया है। गुजरात प्रदेश काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए 13 जून 1935 को उन्होने मजदूरो एव किसानो को सगठित करने पर बल दिया। उन्होने कहा—

"वर्तमान परिस्थितियो मे हम यह भूल जाते हे कि बिना मजदूरो एव किसानो को सगठित किये स्वतत्रता प्राप्त करना एक कठिन कार्य है।"

जयप्रकाश नारायण के प्रभाव मे आकर 1934 मे काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी ने कम्युनिस्ट पार्टी से सहयोग की नीति अपनाई जिसके तहत मजदूरो एव किसानो की समस्याओ को लेकर सामूहिक सघर्ष करने का निश्चय किया गया किन्तु कम्युनिस्टो की षडयत्रकारी नीति को जल्दी ही काग्रेस सोशलिस्ट नेतृत्व समझ गया। कम्युनिस्टो के साथ सोशलिस्टो का कार्य करना असभव दीखने लगा। काग्रेस सोशलिस्ट नेतृत्व जिसमे मीनू मसानी अच्युत पटवर्धन डा राममनोहर लोहिया एव अशोक मेहता प्रमुख थे, ने इस सहयोग पर अपनी आपत्ति की तथा जयप्रकाश नारायण जी की कम्युनिस्टो से सहयोग की नीति के विरुद्ध चारों ने विरोधस्वरूप राष्ट्रीय कार्यकारिणी से त्यागपत्र दे दिया किन्तु जयप्रकाश नारायण दुविधाग्रस्त थे। मीनू मसानी ने 1937 मे एक परिपत्र के द्वारा

4 Selected Wo ks of Acharya Na end a Dev Volume One Har dev Sharma

कम्युनिस्टो के साथ सहयोग की जयप्रकाश नारायण की नीति का विरोध किया। द्वितीय विश्व युद्ध जो 3 सितम्बर 1939 को प्रारम्भ हुआ उसने सहयोग की नीति पर पानी फेर दिया। 11 दिसम्बर 1939 को आचार्य नरेन्द्र देव ने एक विस्तृत पत्र युसुफ मेहर अली को लिखा जिसमे उन्होने कम्युनिस्टो के साथ सहयोग एवं साझा आन्दोलन का तीव्र विरोध किया तथा कम्युनिस्ट-सोशलिस्ट सहयोग के अध्याय को समाप्त कर दिया। आचार्य नरेन्द्र देव पर अपने विस्तृत लेख मे जयप्रकाश नारायण लिखते हैं–

"सन् 1930 के दशक के प्रारम्भ में कम्युनिस्ट काग्रेस के विरोधी थे और उससे अलग किसान मजदूर पार्टी बनाकर राष्ट्रीय आदोलन का नेतृत्व करने का प्रयास कर रहे थे, जिसका एकमात्र परिणाम राष्ट्रीय आन्दोलन को तोडना ही हो सकता है। यद्यपि उनकी शक्ति इतनी थोडी थी और उनके तरीके इतने गलत थे कि उनके विरोध का कोई विशेष प्रभाव गाधी जी के आन्दोलन पर नहीं पड सकता था। उस समय उन्होने काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी को भी सामाजिक फासिज्म आदि शब्दों से सम्बोधित करते हुए उसका विरोध किया। लेकिन जब जर्मन मे नात्सीवाद विजयी हुआ और स्तालिन की नीति सफल हुई तब उसने इस नीति को एकदम बदला। उस परिवर्तन की जानकारी भारतीय कम्युनिस्टो को देर से हुई। जब हुई तब उन्होने सयुक्त मार्चे की बात शुरू की तथा काग्रेस में घुसने का प्रयास प्रारम्भ किया। उसी समय कम्युनिस्ट पार्टी के तत्कालीन महामत्री श्री पी सी जोशी से मेरा घनिष्ठ परिचय हुआ। कम्युनिस्टो के काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की नीति का अनुसरण करना मैंने उचित समझा। मुझे उस समय आशा थी कि नात्सीवाद की सफलता से कम्युनिस्टो ने जो सबक सीखा था, उसकी वजह से मेरी नीति द्वारा भारत के मार्क्सवादी या साम्यवादी तत्त्वो का एक सम्मिलित दल बन सकेगा और वह दल काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी होगी। काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के नेता जो मार्क्सवादी नही थे, इस नीति से असतुष्ट थे। परन्तु चूँकि आचार्य जी का समर्थन था, इसलिए इस नीति पर पार्टी चलती रही।"[5]

"यहॉ इस बात को स्पष्ट करना आवश्यक है कि यद्यपि आचार्य जी ने मेरी नीति का समर्थन किया, फिर भी उस पर जितना मुझे विश्वास था उन्हे नही था। वह किसी भी हालत मे काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का सगठन कम्युनिस्टो के हाथ मे देने मे तैयार नही थे। खेद है कि मेरे अधविश्वास के कारण दक्षिण के कुछ प्रदेशो मे काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की बागडोर कम्युनिस्टो के हाथो में चली गयी जिसके कारण कम्युनिस्ट सगठन और आदोलन से पृथक कोई काग्रेस समाजवादी सगठन या आन्दोलन केरल तामिलनाडु, आंध्र प्रदेशो मे नही बन सका। इसी काल मे अन्य प्रान्तो मे भी कम्युनिस्टो ने अपनी गुप्त नीति के अनुसार काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के अन्दर धीरे–धीरे अपने प्रभाव को बढाने की और उसके कार्यकर्त्ताओ को तोडकर अपने मे मिलाने की कोशिश की। इनकी 'वोरिंग फ्राम विदिन' की नीति सफल हुई। जब इसमे नीति के दुष्परिणाम सामने आने लगे तो मेरी ऑखे खुली। द्वितीय विश्व युद्ध छिड जाने के बाद कम्युनिस्टो की नीति और गतिविधियो से तंग आकर काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी में जितने कम्युनिस्ट थे उनको

5 आचार्य नरेन्द्रदेव और मैं पृष्ठ–3–4 जन्मशती ग्रथ

पार्टी से निष्कासित किया गया। उस समय मैं जेल मे था, परन्तु यदि बाहर होता तो इस निर्णय से पूर्णत सहमत होता। यद्यपि आचार्य जी का विश्वास मार्क्सवाद मे अटल रहा लेकिन मुझसे काफी पहले ही वह कम्युनिस्टो की चाल समझ चुके थे और इस निर्णय पर पहुँच चुके थे कि उनके साथ मिलकर काम नही हो सकता।'

22 जून 1941 को हिटलर ने अचानक सोवियत रूस पर हमला बोल दिया। अब युद्ध के सबध मे कम्युनिस्ट पार्टी की नीति मे परिवर्तन आ गया। अब यह उनके लिए साम्राज्यवादी युद्ध नहीं रह गया। इसे साम्राज्यवाद के विरुद्ध 'जनयुद्ध' घोषित करने लगे। अब वह पुन राष्ट्रवादी एव वामपथी रुझान के लोगो के साथ सबन्ध बनाने का प्रयत्न करने लगे। आचार्य नरेन्द्र देव जी इस दोगली नीति के कटु आलोचक थे। उन्होंने एक पम्फलैट 'युद्ध साम्राज्यवादी या जनवादी' लिखा एवं प्रकाशित किया। उन्होने कम्युनिस्ट पार्टी की बदलती हुई नीति मे आये अन्तर की विवेचना की तथा वह भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन के विरुद्ध विश्वासघात बताया। उन्होने बताया कि बाहरी आदेश का पालन करने वाले कम्युनिस्ट, अग्रेजो द्वारा भारत को गुलाम बनाये जाने के बाद सोवियत रूस जब हिटलर के विरुद्ध अग्रेजो से समर्थन लेने के उद्देश्य से मिल गया तो किस प्रकार इस युद्ध को उन्होने 'जनयुद्ध घोषित कर दिया। यद्यपि भारत के लिए ब्रिटिश सत्ता एक साम्राज्यवादी सत्ता है जो उसे गुलाम बनाये हुए है। हिटलर द्वारा रूस पर थोपे गये युद्ध मे अग्रेजो का उसी स्थिति मे साथ दिया जा सकता था जब अग्रेज भारत को स्वतत्र कर दे। यही नीति काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की थी जिसे आप आगे के पृष्ठो मे देखेगे।[6]

आचार्य नरेन्द्र देव का विश्वास था कि कम्युनिस्ट पार्टी की युद्ध सम्बन्धी नीति ब्रिटिश हस्तक्षेप के कारण रूस के ऊपर हिटलर जर्मनी के आक्रमण के प्रतिरोध के उद्देश्य से की गयी है।

कम्युनिस्ट पार्टी की 'जनयुद्ध' की नीति के तहत ही ब्रिटिश शासन ने भारत की कम्युनिस्ट पार्टी पर लगा प्रतिबध उठा लिया था और 1942 मे उसे मान्यता दे दी थी। एक समय तो ऐसा आ गया कि भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ब्रिटिश शासन का दुमछल्ला बन गयी थी और 1942 के राष्ट्रीय स्वतत्रता सग्राम का विरोध कर रही थी। राष्ट्रीय अभिलेखागार (नई दिल्ली) में इसके प्रमाण उपलब्ध हैं तथा इस सम्बन्ध मे बहुत कुछ लिखा भी जा चुका है।[7] यहाँ तक कि एक समय कम्युनिस्ट पार्टी की नेता श्रीमती अरुणा आसफ अली ने इन्हे 'देशद्रोही' घोषित किया था।

काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का पाँचवा सम्मेलन 1947 मे कानपुर मे हुआ था जिसकी अध्यक्षता डा राममनोहर लोहिया ने की थी। आचार्य जी सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष थे। इस सम्मेलन मे आचार्य नरेन्द्र देव ने राष्ट्रीय एव अतर्राष्ट्रीय स्थिति का

---

6 आचार्य नरेन्द्र देव जन्मशती ग्रन्थ पृष्ठ 3

7 देखिये Soc alist nte Madhu Limaye

मूल्याकन किया था। उन्होने लोकतत्र एव समाजवाद, राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सम्बन्धो की व्याख्या की थी। रूस मे समाजवाद को भ्रष्ट करने तथा वामपथी एकता पर भी उन्होने चर्चा की थी। आचार्य नरेन्द्र देव साम्यवाद एव कम्युनिस्ट पार्टी के कटु आलोचक थे। उन्होने मार्क्सवाद को स्पष्ट करते हुए कहा--

जो लोग मार्क्स की शिक्षा का दावा करते है, तथा लाकतत्र का विरोध करत हैं वह गलती पर है। मार्क्स अपने समय का महान मानवतावादी था। वह अभिव्यक्ति की स्वतत्रता के अधिकार को ह्दय से स्वीकार करता था। व्यक्तिगत स्वतत्रता की उसके द्वारा की गयी वकालत जगजाहिर है। उसका साम्यवाद पूर्णरूपेण लोकतत्र का समर्थन करता था। यही कारण है कि वह मन से लोकतत्रवादी था। उसका विश्वास था कि लोकतात्रिक इग्लेड एव अमेरिका म सोशलिज्म, बिना हिसा का सहारा लिए भी प्राप्त किया जा सकता है।'

उन्होने कम्युनिस्ट पार्टी क सम्बन्ध मे कहा, 'कम्युनिस्ट पार्टी का तरीका, उसके षडयत्र एव दोहरे मानदड, उसकी मौकापरस्ती और दूसरे के साथ मानवीय सम्बन्धो की उपेक्षा ने समाजवाद शब्द को बदनाम कर दिया है। जब कभी भी कम्युनिस्ट पार्टी दूसरो के साथ गठबधन करती है तो वह एसा अपन लाभ के लिए करती हे ओर जब यह अपने का दूसरे सगठनो के साथ अपने को सबद्ध करती है ता ऐसा उन सगठनो पर कब्जा[8] जमाने के उद्देश्य से करती है।

कानपुर अधिवेशन मे काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी ने अपने नाम से 'काग्रेस' शब्द हटा दिया और अपनी सदस्यता खुली कर दी।

15 अगस्त 1947 को देश की स्वतत्रता के पश्चात काग्रेस ने केन्द्र मे एव राज्यो मे अपनी सरकार का गठन किया। काग्रेस जो कि एक राष्ट्रीय सस्था थी उसने एक पार्टी का रूप धारण कर लिया। 15 से 17 नवम्बर 1947 को अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की बैठक दिल्ली मे हुई उसमे काग्रेस क सविधान की समीक्षा के लिए एक कमेटी गठित की गयी, जिसके सयोजक आचार्य जुगुलकिशोर तथा सदस्य पुरुषोत्तमदास टडन आचार्य नरेन्द्र देव आर आर दिवाकर एव एस के पाटिल थे। इसने विभिन्न काग्रेस कमेटियो एव काग्रेस के प्रसिद्ध नेताओ स सुझाव आमत्रित किये। जो सुझाव इस कमेटी ने स्वीकृत किये उन्हे काग्रेस वर्किंग कमेटी के समक्ष 24 से 26 जनवरी 1948 के मध्य प्रस्तुत किया गया। महात्मा गाधी इस बैठक मे उपस्थित थे। उनसे निवदन किया गया कि वह अपने सुझाव लिखित रूप मे कमेटी को प्रस्तुत कर दे, जिससे कि उनके मूल्यवान सुझावो को सविधान निर्मात्री समिति शामिल कर सके। गाधी जी ने अपने सुझाव 30 जनवरी 1948 को अपनी हत्या के कुछ घटे पहले प्रस्तुत किए थे। महात्मा जी के सुझाव इतने क्रातिकारी थे कि काग्रेस वर्किंग कमेटी के लिए उन्हे स्वीकार करना कठिन था। वह चाहते थे कि काग्रेस अपने को विसर्जित कर दे तथा लोकसेवक सघ का रूप

धारण कर ले अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की फरवरी 948 मे बैठक हुई उसने अन्य प्रस्तावों को स्वीकार किया किन्तु महात्मा गांधी की अंतिम इच्छा को अनदेखा कर दिया। जयपुर कांग्रेस मे दिसम्बर 1948 को संविधान समीक्षा की अंतिम रपट अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के समक्ष परतुत की गयी। कांग्रेस संविधान मे जो संशोधन स्वीकार किये गये थे उनमे एक यह भी था कि 'कांग्रेस का सदस्य किसी अन्य दल का सदस्य नही हो सकता। कांग्रेस के इस भडकाने वाली नीति के पश्चात भी आचार्य नरेन्द्र देव एवं डा राममनोहर लोहिया को कांग्रेस छोडने मे दुविधा थी। किन्तु कांग्रेसी नेताओ के व्यवहार के कारण सोशलिस्ट नेताओ का कांग्रेस मे रहना असंभव हो गया था। सोशलिस्ट पार्टी के नासिक सम्मेलन (1948) मे अंतिम रूप मे कांग्रेस से हटने का प्रस्ताव पारित कर दिया गया।

आचार्य नरेन्द्र देव राजनीति के ऊँचे आदर्शों के लिए प्रसिद्ध थे। आचार्य जी तथा उनके सोशलिस्ट पार्टी के साथी विधायक कांग्रेस के टिकट पर चुनाव जीत कर उत्तर प्रदेश विधानसभा मे आये थे। इसलिए उनका अब विधायक बना रहना अनैतिक था। उन्होंने तथा उनके अन्य साथियो ने 30 मार्च 1948 को विधानसभा की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया।

सोशलिस्ट पार्टी स्वतंत्रता के बाद हुए 1952 के प्रथम आम चुनाव के मैदान मे भारी आशाओ के साथ उतरी। पार्टी के कई नेता जिनमे डा राममनोहर लोहिया एव जयप्रकाश नारायण भी थे चुनाव नही लडे। पार्टी अधिकांश स्थानो पर पराजित हुई। पार्टी ने लोकसभा के लिए 264 उम्मीदवार खडे किए थे जिनमे से मात्र 12 विजयी हुए। पार्टी को 10 प्रतिशत वोट प्राप्त हुआ। इन चुनाव परिणामो से पार्टी में भारी निराशा हुई विशेषकर अशोक मेहता एव जयप्रकाश नारायण को। इनके पैर डगमगाने लगे तथा कांग्रेस से समझौते का प्रस्ताव करने लगे। पार्टी मे बिखराव की नौबत आ गयी। किन्तु आचार्य जी शांत थे। उन्होंने इस पराजय को खेल भावना से लिया। वह समाजवाद के पथ से विचलित नही हुए।

सोशलिस्ट पार्टी का एक विशेष सम्मेलन 23 से 27 मई 1952 को पचमढी मे बुलाया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता डा राममनोहर लोहिया ने की। उन्होने समाजवाद के दर्शन को निरूपित करते हुए 'एशिया मे समाजवाद की संभावनायें' की व्याख्या की। इस सम्मेलन के पश्चात जयप्रकाश नारायण, अशोक मेहता गंगाशरण सिन्हा और द्वारकाप्रसाद मिश्र आदि आचार्य कृपलानी से मिले। इन लोगो ने सोशलिस्ट पार्टी एव किसान मजदूर प्रजा पार्टी की एकता का प्रस्ताव किया। डा लोहिया भी इस एकता के प्रस्ताव से सहमत थे। उन्होने इसका उल्लासपूर्ण स्वागत किया। 1 जून 1952 को दोनो दलो की एकता की यह पहली पहल थी। आचार्य नरेन्द्र देव उस समय चीन के दौरे पर थे। वापसी पर उन्हे किसान मजदूर प्रजा पार्टी एव सोशलिस्ट पार्टी के एकता प्रस्ताव की जानकारी हुई वह इस एकता वार्ता से अप्रसन्न थे उन्हे यह भी दुख था कि उनके साथियों ने बिना उनसे राय लिए यह सिद्धान्तहीन एकता की थी

सोशलिस्ट पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक 20–23 अगस्त 1952 को एकता के प्रश्न पर विचार के लिए वाराणसी मे बुलायी गयी। समिति के कुछ सदस्य एकता वार्ता के विरोधी थे। बहस के दौरान कुछ सदस्यो ने पूछा कि 'तब कांग्रेस से एकता क्यो नही ? "इस पर अशोक मेहता ने कहा, छः माह बाद परस्पर समानता के आधार पर' इस पर जब आचार्य जी ने जयप्रकाश नारायण का इस ओर ध्यान आकर्षित किया तो उन्होने इस बात को गभीरता से नही लिया। किन्तु आचार्य जी को एकता प्रस्ताव के कारण असतोष बना रहा जिसकी चिंता जयप्रकाश जी द्वारा आचार्य जी को लिखे गये पत्र से प्रकट होती है–

'आपको क्या लिखूँ समझ मे नही आता। मन जैसे रो रहा है। अगर यह पहले ही जानता कि आपकी ऐसी प्रतिक्रिया होगी तो बात चलती ही नही। लेकिन गलती तो यह हुई कि आपकी गैरहाजिरी मे इतना बडा कदम हम लोगो ने उठा लिया। ख्याल तो यह था कि चाहे हम लोग अपने 'वाद' का कोई नाम दे, हम सबका दिमाग एक तरह से चलता है, और जो अशोक, लोहिया, मैं मिलकर तय करेंगे वह आपके मन और विचारो के अनुकूल ही होगा। इतने बरसों एक साथ काम करने के बाद ऐसा विश्वास पैदा हुआ था लेकिन अब लगता है कि विश्वास निराधार ही था।'[9]

जे पी के इस मार्मिक पत्र के बाद आचार्य जी जैसे शालीन पुरुष का शात हो जाना स्वाभाविक था। आचार्य जी ने भारी मन से अपनी सहमति दे दी।

किसान मजदूर प्रजा पार्टी की ओर से आचार्य कृपलानी एव सोशलिस्ट पार्टी के ओर से डा राममनोहर लोहिया एव अशोक मेहता अतिम वार्ता के लिए अधिकृत किये गये। 25 से 27 सितम्बर 1952 के मध्य दोनो दलो के प्रतिनिधि बम्बई मे मिले और एकता को अतिम रूप दिया गया। नवीन प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य कृपलानी एव महामत्री अशोक मेहता बनाये गये।

इस एकता को अभी एक वर्ष भी नही बीता था कि पडित नेहरू ने श्री जयप्रकाश नारायण को वार्ता के लिए आमत्रित किया तथा प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के साथ सहकार करने की बात कही। इस प्रस्ताव पर अशोक मेहता सहमत थे, आचार्य नरेन्द्रदेव इसे अव्यावहारिक मान रहे थे और डा लोहिया घोर विरोधी थे। पडित नेहरू के इस प्रस्ताव से कांग्रेस के भी कुछ नेता असहमत थे। सहकार के लिए जयप्रकाश नारायण ने 14 सूत्रीय कार्यक्रम प्रस्तुत किया। किन्तु गोविन्दवल्लभ पत तथा अन्य कांग्रेस नेताओ के दबाव मे प नेहरू ने इसे अस्वीकार कर दिया। वार्ता तो टूट गयी किन्तु प्रजा सोशलिस्ट पार्टी मे जो मतभेद उभरे उसकी समाप्ति समाजवादी आन्दोलन के बिखराव के बाद ही हुई। पंडित नेहरू का सहकार का प्रस्ताव एक कुशल राजनीतिज्ञ की शातिर चाल थी जिसे जयप्रकाश नारायण समझ नही सके। इस प्रस्ताव के माध्यम से ही पडित नेहरू को अपनी पुत्री को प्रधानमंत्री बनवाने एव नग्न परिवारवाद चलाने का अवसर प्राप्त हुआ।

9 समाजवादी आदोलन के दस्तावेज खड–2 सिह सुनील

क्योकि उन्होने राष्ट्रीयता, लोकतंत्र एव समाजवाद पर आधारित जुझारू लोकतान्त्रिक प्रतिपक्ष को समाप्त कर दिया था।

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी एव किसान मजदूर प्रजा पार्टी की एकता मे आशा की जा रही थी कि विपक्ष की सगठित शक्ति से सत्ताधारी दल का एक लोकतांत्रिक एव समाजवादी विकल्प तैयार होगा तथा जन आन्दोलन चलाने का अवसर मिलेगा, जिससे पार्टी का स्वरूप विराट होगा। किन्तु भविष्य ने सभी आशाओ पर तुषारापात कर दिया। यह बात पार्टी की दिसम्बर 1953 के इलाहाबाद सम्मेलन मे सिद्ध हो गयी।

ट्रवनकोर कोचीन की घटनाओ ने पार्टी मे विघटन का एक और बीज बो दिया। फरवरी 1954 मे इस प्रदेश मे हुए चुनाव मे किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत नही मिल सका। काग्रेस ने सरकार बनाने से मना कर दिया। कम्युनिस्टो को सत्ता मे आने से रोकने के लिए काग्रेस ने प्रसोपा को समर्थन देने का आश्वासन दिया—यदि वह सरकार बनाने की इच्छुक हो। प्रजा सोशलिस्ट पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने ट्रवनकोर –कोचीन की इकाई को इसकी स्वीकृति दे दी।

श्री पट्टम थानु पिल्लै के नेतृत्व मे सरकार का गठन किया गया। सरकार अगस्त 1954 तक बिना किसी बाधा के चलती रही। इसी दौरान पुलिस गोलीकाड मे चार लोग मारे गये तथा कुछ घायल हो गए। उस समय डा लोहिया पार्टी के महामन्त्री थे तथा नैनी जेल मे बन्द थे उन्होने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया तथा सरकार से भी त्यागपत्र मागा। पार्टी मे विवाद बढ गया। नागपुर मे आचार्य कृपलानी ने पार्टी के अध्यक्ष पद से त्याग पत्र दे दिया। अब पार्टी का बिखराव रोकने के लिए आचार्य नरेन्द्र देव को पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया। इसी दौरान बम्बई की पार्टी यूनिट ने मधु लिमये एव उनके 9 समर्थको को पार्टी से निष्कासित कर दिया। डॉ लोहिया अब झुकने को तैयार नही थे। गाजीपुर मे जून 1955 मे प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का सम्मेलन आयोजित किया गया जिसका उद्घाटन भाषण देने के लिए मधु लिमये को आमन्त्रित किया गया। राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने इसे अनुशासनहीनता माना और प्रदेश कार्यकारिणी को भग कर दिया। डा लोहिया ने अपना अभियान जारी रखा। उन्होने अपने विरोधियो को 'लकवामार सोशलिस्ट' तथा अपने समर्थको को 'क्रांतिवीर सोशलिस्ट' घोषित किया। श्री जयप्रकाश नारायण जो कि कुछ ही दिनो बाद सर्वोदय मे चले गये तथा अशोक मेहता काग्रेस के स्वर्ग मे सिधार गये ने मिलकर 15 से 22 जुलाई 1955 मे जयपुर के विशेष सम्मेलन मे डा लोहिया एव उनके साथियो पर अनुशासन की कार्यवाही कर उन्हें पार्टी स निष्कासित कर दिया।

प्रसोपा का राष्ट्रीय सम्मेलन 1955 मे गया मे हुआ। अपनी अस्वस्थता के कारण आचार्य नरेन्द्र देव उसमे शरीक नही हो सके। उनका लिखित भाषण उनकी अनुपस्थिति में पार्टी के महामंत्री त्रिलोकी सिंह ने पढा

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी मे आये बिखराव, डॉ लोहिया एव मधुलिमय तथा अन्य नेताओ का दल से निकाला जाना, तथा कटुता का असर आचार्य जी के स्वास्थ्य पर पडा। 1955–56 मे वह गम्भीर रूप से बीमार पड गये। उनका दमा तेज हो गया था। उन्हे कही दूर पूर्ण विश्राम की सलाह दी जा रही थी। उस समय श्री श्रीप्रकाश जी मद्रास के गर्वनर थे। उन्होने दक्षिण आने का निमत्रण दिया क्याकि वहाँ का मोसम अनुकूल था। जनवरी 1956 के प्रारम्भ मे आचार्य जी दक्षिण भारत गये। उन्हे राजभवन मे मेहमान बनाया गया। उनके जान के लिए डा सम्पूर्णानन्द ने हवाई जहाज की व्यवस्था की थी। डा की सलाह थी कि कोयम्बटूर नगर से 360 मील दूर स्थिति पनुराई नामक स्थान पर आचार्य जी का ठहरना सर्वोत्तम रहेगा। उनकी वहाँ एक डाक बगले मे रहने की व्यवस्था की गयी। श्रीप्रकाश जी ही उनको साथ लकर गये। कुछ दिन आचार्य जी स्वस्थ रहे किन्तु 19 फरवरी 1956 की शाम को 6 बजे उन्होने इस ससार को अलविदा कहा और इस प्रकार– 'उम्र भर की बेकरारी को करार आ ही गया।' आचार्य जी का शव लखनऊ लाया गया जहाँ मोतीमहल के समीप गोमती तट पर उनका सस्कार किया गया। अल्लामा इकबाल ने ठीक ही कहा है–

हजारो साल नर्गिस अपनी बेनूरी पे रोती है,
बडी मुश्किल से होता है, चमन में दीदावर पैदा।

व्यक्तित्व एव विचार

प्लेटो ने कहा है "सदगुण ही ज्ञान है।" यदि ज्ञान के सम्बन्ध मे इस परिभाषा को स्वीकार करे तो निश्चित रूप से आचार्य जी सद्गुणो की खान थ। इसी कारण उनकी विद्वत्ता निसदेह थी। आचार्यजी के सादे, निष्कलक एव त्यागमय जीवन से सभी परिचित हैं। जिसकी चर्चा से पुस्तके भरी है। वे बेमिसाल नैतिकतावादी थे। सोशलिस्ट पार्टी ने जब काग्रेस से अलग होने का निर्णय लिया तो आचार्य नरेन्द्र देव न तथा उनक 11 साथियो ने विधानसभा की सदस्यता से इसलिए त्यागपत्र दे दिया क्योकि वे काग्रेस के टिकट पर चुनाव मे विजयी होकर विधानसभा में पहुँचे थे। यह उनके नैतिकता एव उच्च आदर्श के स्थापना की एक मिसाल है। त्याग पत्र देत समय अपने भाषण मे आचार्य जी ने कहा था–

"मैंने और मेरे ग्यारह साथियो ने आज असेम्बली से त्यागपत्र देने का निर्णय कर लिया है और काग्रेस–असेम्बली पार्टी के नेता को अपना त्यागपत्र दे दिया है। मै आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि काग्रेस से पृथक होने का यह निर्णय हमारे जीवन का सबसे कठिन निर्णय है बिना पूर्व विचार के हमने यह निर्णय सहसा नहीं किया है

कठोर कर्त्तव्य—भावना से प्रेरित होकर ही तथा अपने आदर्शों और उद्देश्यो की पूर्ति के लिए हम इस निर्णय पर पहुँचने के लिए विवश हुए हैं। इस निर्णय पर पहुँचने मे हमने काफी समय लिया है। हम देश की वर्तमान स्थिति से भलीभॉति परिचित हैं। हम मानते हैं कि देश सकट की अवस्था से गुजर रहा है। किन्तु हम इन सकटो की सूची मे अपनी सस्कृति तथा जनतन्त्र का भी शामिल करते है। आज जनतन्त्र तथा हमारी सस्कृति भी खतरे मे है। यह निर्विवाद है कि जनतन्त्र की सफलता के लिए एक विरोधी दल का होना आवश्यक है—एक ऐसा विरोधी दल, जो जनतन्त्र के सिद्धान्त मे विश्वास रखता हो, जो राज्य को किसी धर्मविशेष से सम्बद्ध न करना चाहता हो, जो गवर्नमेण्ट की आलोचना केवल आलोचना की दृष्टि से न करे तथा जिसकी आलोचना रचना और निर्माण के हित मे हो न कि ध्वस के लिए।[10]

हम इस अत्यन्त आवश्यक कार्य को पूरा करना चाहते हैं। हम इस बात को कहने के लिए क्षमा चाहते हैं कि इस कार्य की पूर्ति हमारे ही द्वारा हो सकती है। दुर्भाग्यवश जनतन्त्र की कोई परम्परा हमारे देश मे नही है तथा साम्प्रदायिकता का इस समय प्राधान्य है। हम जनतन्त्र के अभ्यस्त नही है। इस कारण रचनात्मक विरोध के अभाव मे अधिनायकत्व की मनोवृत्ति का पनपना सुगम है। केवल साम्प्रदायिकता का विरोध करने से जनतन्त्र की स्थापना नही होती। इस सम्बन्ध में मै कहूँगा कि क्या ही अच्छा होता यदि माननीय पुलिस-सचिव हमारे गृहसचिव होते। कल तथा अपने बजट भाषण मे उन्होने जिन सिद्धान्तो का निरूपण किया है और जिस प्रकार जनतन्त्र की प्रगति के लिए जनतन्त्र की आवश्यकता प्रतिपादित की है, उससे हम पूर्णत सहमत है। हम आशा करते है कि यह नीति केवल उनकी व्यक्तिगत राय ही न होगी, बल्कि गवर्नमेण्ट की स्थिर नीति होगी। यदि ऐसा है तो हम आशा कर सकते है कि रचनात्मक विरोधी दल गवर्नमेण्ट का पूरक होगा और अपने महत्त्वपूर्ण कार्य मे सफलता प्राप्त करेगा।

वियोग सदा दु खदायी होता है। इस विछोह का हमको कोई कम दु ख नही है। हमको इससे मार्मिक पीडा पहुँची है किन्तु सस्थाओ तथा व्यक्तियों के जीवन मे ऐसे अवसर आते हैं, जब उनको अपने आदर्शों और उद्देश्यो की पूर्ति के लिए अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु का भी त्याग करना पडता है। हम सन्तप्त हृदय से अपना पुराना घर छोड रहे है। किन्तु जो अपनी पैतृक सम्पत्ति है, उससे हम दस्तबरदार नही हो रहे है। यह सम्पत्ति भौतिक नही है। यह आदर्शो तथा पवित्र उद्देश्यो की सम्पत्ति है। इस सम्पत्ति का उत्तराधिकारी न केवल ज्येष्ठ पुत्र होता है और न इस सम्पत्ति का समविभाग ही होता है। धार्मिक समुदायो का पर्सनल ला अर्थात् व्यक्तिगत विधान उस पर लागू नही होता। इस सम्पत्ति का दायाद वही हो सकता है, जो अपने आचरण और विश्वास से अपने को उसका अधिकारी सिद्ध करे। इसमे मिथ्या गर्व नही है। हम अपनी सीमाओ को जानते है। हम अपनी कमजोरियो से भी परिचित हैं। किन्तु हम यह कहना चाहते हैं कि हम इसका अधिकारी बनने का प्रयत्न करेगे।

---

10 सोशलिस्ट पार्टी के नासिक अधिवेशन के युक्त प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा की सदस्यता से दूसरे १२ साथियों के साथ इस्तीफा देते हुए पढ़ा गया वक्तव्य

ब्रिटिश पार्लमेण्ट तथा अन्य व्यवस्थापिकाओ का इतिहास बताता है कि ऐसे अवसर पर लोग त्यागपत्र भी नही देते। हम चाहते तो इधर से उठकर किसी दूसरी ओर बैठ जाते। किन्तु हमने ऐसा करना उचित नही समझा। ऐसा हो सकता है कि आपके आशीर्वाद से निकट भविष्य मे हम इस विशाल भवन के किसी कोने मे अपनी कुटी का निर्माण कर सके (हर्षध्वनि)। किन्तु चाहे यह संकल्प पूरा हो या नही, हम अपने से विचलित न होगे। हम जानते है कि हमारे देश का यह युग निर्माण का है, न कि ध्वस का। अत हमारी आलोचना सदा इसी उद्देश्य से होगी। हम व्यक्तिगत आक्षेपो से सदा बचने का प्रयत्न करेगे और हम किसी ऐसे विवाद मे न पडेगे। राजनीतिक जीवन को स्वस्थ और नीतिपूर्ण बनाने मे हम अपना हाथ बढाना चाहते हैं। इन बातो मे महात्मा जी का उपदेश हमारा पथ-प्रदर्शन करेगा। हम आपको विश्वास दिलाना चाहते है कि हमने किसी विद्वेष और विरोध के भाव से प्रेरित होकर यह कार्य नही किया है। हमने किसी प्रकार की कटुता नही है। हमारे बहुत से साथी और सहकर्मी कांग्रेस मे हैं और उनके साथ हमारा सम्बन्ध मधुर रहेगा। हम जानते हैं कि उनको भी हमारे अलग होने से दु ख पहुँचा है। हमारे समान राजनीतिक आदर्श तथा हमारी समान निष्ठा अब भी हमको एक प्रकार से उनसे एक सूत्र मे बाँधे रहेगी।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आप एक कुटुम्ब के सम्मानित सदस्य होते हुए भी इस भवन के अन्य कुटुम्बो के अधिकारो की भी रक्षा करते है। अत हम आपसे आशा करते है कि आप हमको आशीर्वाद देगे कि हम अपने उद्देश्यो की पूर्ति मे सफलता प्राप्त करे। हम आपके प्रति तथा कांग्रेस असेम्बली पार्टी के नेता माननीय प गोविन्द वल्लभ पन्त के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करते हैं।"

आचार्य जी ने यह भाषण 30 मार्च 1948 को उत्तर प्रदेश विधानसभा मे दिया था। ब्रिटिश पार्लियामेट के इतिहास में इसकी मिसाल नही मिलती। वहाँ बिना त्यागपत्र दिये दल–बदल एक आम बात है। त्याग पत्र देकर आचार्य जी ने उच्च नैतिक मूल्यो की स्थापना की थी।

आचार्य जी तथा उनके 11 साथियो, इस प्रकार 12 विधायको के त्याग पत्र मे खाली हुई विधानसभा के रिक्त स्थानो के लिए उप चुनाव करवाये गये। अपनी इच्छा के विपरीत बाबा राघवदास जो कि गोरखपुर के प्रतिष्ठित कांग्रेस नेता थे आचार्य नरेन्द्र देव के विरुद्ध खडा किया गया। बाबा राघवदास का पुणे के चितपावन ब्राह्मण परिवार मे जन्म हुआ था। उन्होने शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात अपने जन्म स्थान को त्याग दिया था तथा समाज सेवा का व्रत लेकर देवरिया के पास बरहज मे नदी के किनारे एक कुटी बना ली थी। उन्होने वहाँ शिक्षा का प्रसार किया, लोगो मे स्वतत्रता प्राप्ति के लिए जागरूकता उत्पन्न की, कुष्ट आश्रम खोले तथा अनेक समाज सेवा के कार्य किये थे जिसके कारण वह गरीब जनता में अत्यत लोकप्रिय थे। असहयोग आन्दोलन मे वह बन्दी बनाये गये। वह गोरखपुर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी थे इन सबके पश्चात भी मूल रूप मे बाबा एक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे उनके आश्रम पाठशाला ब्रह्मचर्य

आश्रम और वेद विद्यालय मे छात्र अध्ययन करते। गोरखपुर से अयोध्या बहुत दूर नही थी। आचार्य जी के विरुद्ध एक रामभक्त बाबा राघवदास को खडाकर कांग्रेस ने हिन्दू साम्प्रदायिकता को भुनाने का कार्य किया। काग्रेस नेतृत्व ने पडित गोविन्द वल्लभ पत के नेतृत्व मे सभी राजनीतिक मान्यताओ का तिरस्कार करते हुए, आचार्य जी के व्यक्तित्व की बिना परवाह किये उनके विरुद्ध अत्यत घृणित, लज्जाजनक, अमर्यादित प्रचार प्रारम्भ किए। इनमे गोविन्द वल्लभ पत पेश–पेश थे। आचार्य जी को नास्तिक, राम विरोधी आचार्य जी को रावण तथा बाबा राघवदास को राम की सज्ञा दी। रावणरूपी नरेन्द्र देव एव रामरूपी राघवदास के नाम पर हुआ यह चुनाव प्रचार राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ के जन्मभूमि मुक्ति आदोलन की याद दिलाता है जिसमे पडित गोविन्द वल्लभ पत की भूमिका अशोक सिघल की हो गयी थी।

आचार्य जी सहित उनके 11 साथी चुनाव हार गये। मात्र गजाधरप्रसाद आजमगढ मे चुनाव में सफल रहे। डा सम्पूर्णानन्द, पडित कमलापति त्रिपाठी एव चन्द्रभानु गुप्त के अतिरिक्त सभी काग्रेसी चुनाव प्रचार मे गये ओर इस अमर्यादित कार्य मे शरीक रहे। आचार्य जी ने अत्यत शालीन ढग से चुनाव लडा। वह राजनीतिज्ञ के साथ ही साथ अध्यापक भी थे। वह एक राजनीतिक सस्कृति विकसित करना चाहते थे। उत्तर प्रदेश विधान सभा की कार्यवाही का अध्ययन किया जाये तो विदित होगा कि गोविन्द वल्लभ पत घोर साम्प्रदायिक एव जातिवादी व्यक्ति थे।

आचार्य जी 1312 मतो से चुनाव मे पराजित हुए। बाबा राघवदास को 5,392 तथा आचार्य जी को 4080 वोट प्राप्त हुए।

सोशलिस्ट पार्टी अपने स्वतत्र अस्तित्व मे आने के बाद प्रथम आम चुनाव 1951–52 मे मैदान मे उतरी। पडित जवाहरलाल जी ने मोरारजी भाई देसाई को एक पत्र के माध्यम से आचार्य जी के विरुद्ध उम्मीदवार न खडा करने तथा उन्हे बिना लडे चुनाव जीत जाने का प्रस्ताव रखा जिसे स्वीकार नहीं किया गया। आचार्य जी काग्रेस के उम्मीदवार मदनगोपाल से 438 वोट से पराजित हो गये।

अप्रैल, 1952 मे आचार्य जी राज्यसभा के लिए लडे तथा विजयी रहे। दूसरी बार 1954 मे वह राज्यसभा के लिए निर्वाचित किये गये।

आचार्य नरेन्द्र देव की रुचि के दो कार्य थे– शिक्षा ओर राजनीति। उन्होने काशी विद्यापीठ का आचार्य पद ग्रहण कर इस राष्ट्रीय शिक्षा सस्थान में प्राण फूॅक दिए। यहॉ बिताये गये समय को वह अपने जीवन का स्वर्णिम काल मानते थे। यही से उन्होने राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सग्राम के लिए उन नौजवानो की खेप की खेप तैयार की जिसने देश की स्वतन्त्रता के लिए अपना जीवन होम कर दिया। महात्मा गाधी जब 1929 मे काशी विद्यापीठ के कान्वोकेशन को सम्बोधित करने गये तो आचार्य जी के सद्‌गुणो से बहुत प्रभावित हुए एव उन्हें रत्न मैं सज्ञा दी जी ने 1930 में गुजरात विद्यापीठ के

आठवे कान्वोकेशन को सम्बोधित करने के लिए उन्हे बुलाया। इस प्रकार आचार्य जी की प्रतिष्ठा बढाई। काशी विद्यापीठ के आचार्य तथा स्वतत्रता सग्राम के योद्धा के रूप मे आचार्य जी ने जिस निर्लिप्त भावना से कार्य किय उसका प्रकाश देश भर मे फैला। उन्होने देश मे समाजवादी समाज की सरचना के लिए भी भरसक प्रयत्न किये।

आचार्य जी ने शिक्षा सस्थाओ से 'नवयुग के नागरिक' उत्पन्न करने का भरपूर प्रयत्न किया। उनका ही प्रभाव था कि काशी विद्यापीठ ने चन्द्रशेखर आजाद ऐसा क्रातिकारी एव लालबहादुर शास्त्री ऐसा प्रधानमत्री उत्पन्न किया। कमलापति त्रिपाठी एव त्रिभुवननारायण सिह उत्तर प्रदेश के मुख्यमत्री बने, राजाराम शास्त्री लोकसभा के सदस्य एव इसी सस्था के उपकुलपति बने। एक दूसरे राजाराम शास्त्री कानपुर के प्रसिद्ध श्रमिक नेता बने। इस प्रकार कितने ही सुसस्कृत, जागरूक एव सत्यनिष्ठ कार्यकर्त्ताओ को इस शिक्षा सस्था ने उत्पन्न किया। यह आचार्य जी की देन थी।

जब वह लखनऊ एव वाराणसी विश्वविद्यालयो के उपकुलपति बनाये गये यहॉ का वातावरण अत्यत दूषित हो चुका था। छात्रो मे घोर अनुशासनहीनता आ गयी थी। उसके बाद उन्हे वाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालय का उपकुलपति बनाया गया जो महीना से बन्द पडा था। घोर उपद्रव का साम्राज्य था। किन्तु जब यहॉ का उपकुलपति बनाकर आचार्य जी को भेजा गया तो स्टेशन पर आचार्य जी का स्वागत करने के उद्देश्य से हजारो छात्र एव वाराणसी के नागरिक उपस्थित थे। दोनो विश्वविद्यालयो मे शाति स्थापित हो गयी।

आचार्य जी उपकुलपति के रूप मे अत्यत सादगी से रहते थे। उन्होने निर्धन छात्रो की सहायता के लिए अपने वेतन से एक कोष बनाया था जिसमे वेतन का दो तिहाई भाग जमा कर देते थे। इस प्रकार उनकी अपनी जीविका चलाने के लिए लगभग 800 रु ही बचते थे। उसमे से भी वह निर्धन छात्रो की सहायता करते रहते थे। आचार्य जी एक साधक का जीवन जीते थे। उपकुलपति के पद पर प्रतिष्ठित होने के पश्चात भी उन्होने अध्यापन का कार्य नही छोडा। वह छात्रो को पाली भाषा पढाते थे। उन्होने बौद्ध धर्म दर्शन पर अपना कार्य पूरा किया। बौद्ध धर्म दर्शन के भारत मे वह एकमात्र विद्वान थे। विश्वविद्यालय के छात्रो को ज्ञान स विभूषित करने तथा विविध क्षेत्रो मे ज्ञानोपार्जन करने के उद्देश्य से उन्होने प्रसिद्ध विद्वानो को विश्वविद्यालय मे बुलाया था उनसे पाडित्यपूर्ण एव खोजपूर्ण भाषण दिलवाये। गिरीशमोहन सेन, डा शातिस्वरूप भटनागर ओ सी गागुली, पी सी बागची हजारीप्रसाद द्विवेदी, राधाकुमुद मुखर्जी एव हुमायूॅ कबीर इसी श्रृखला के चन्द विद्वान प्रोफेसर है जिन्होने लखनऊ विश्वविद्यालय के छात्रो का ज्ञानवर्धन किया। इसके अतिरिक्त अन्य पाश्चात्य देशो के भी विद्वानो के भाषण हुए। आचार्य जी ने 5 अक्टूबर के मध्य लखनऊ विश्वविद्यालय मे आल इडिया ओरियटल कान्फ्रेस करवाई जिसकी अध्यक्षता दक्षिण भारत के प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता नीलकठ शास्त्री ने की जिस समय पर लखनऊ विश के थे उन्होंने नव क्राति सघ

की बुनियाद रखी जिसमें नरेन्द्र देव, पत्रकार एवं बुद्धिजीवी शरीक होते थे। इस प्रकार प्रगतिशील विचारों से हिन्दी साहित्य को लाभ हुआ।

लखनऊ विश्वविद्यालय में चार वर्ष का उपकुलपति पद पर आचार्य का बना रहा। इस विश्वविद्यालय का स्वर्णिम काल था। मैंने लखनऊ विश्वविद्यालय में 1967 में एम.ए. में दाखिला लिया था। उस समय तक छात्र एवं अध्यापक उन्हें याद करते और अपना श्रद्धासुमन अर्पित करते थे।

इस समय तक वाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालय में आतरिक सघर्ष प्रारम्भ हो गया था। अनुशासन नाम की कोई चीज नही थी। पडित गोविन्द बल्लभ पत उस समय मुख्यमत्री थे वे विश्वविद्यालय में बदनाम हो गये थे। श्री श्रीप्रकाश जी की सलाह पर पडित जवाहरलाल नेहरु एव तत्कालीन शिक्षा मत्री मौलाना आजाद ने उन्हे उपकुलपति नियुक्त करवाया। आचार्य जी के विश्वविद्यालय में आने से असतोष थमा।

वाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए आचार्य जी नये नही थे। वे काशी विद्यापीठ मे आचार्य पद (जिसे उपकुलपति के समानान्तर समझना चाहिए) पर रह चुके थे। इस विश्वविद्यालय न उन्हे 1949 मे डा की उपाधि प्रदान की थी। विभिन्न कारणो से उनका रिश्ता इस विश्वविद्यालय से था जिसके कारण यहाँ के छात्रो एव अध्यापको के मध्य वह अत्यत लोकप्रिय थे तथा उनसे रागात्मक रिश्ते थे। 5 दिसम्बर 1951 का जब आचार्य जी विश्वविद्यालय का कार्यभार ग्रहण करने वाराणसी पहुँचे तो रेलवे स्टेशन पर स्वागतार्थ हजारो लोग एकत्र थे। उनका उत्साहपूर्ण स्वागत किया गया। उस दिन विश्वविद्यालय बन्द कर दिया गया। रेलवे स्टेशन से लका तक जन सैलाब उमड पडा था। वाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालय के इतिहास मे लिखा हुआ है कि "विश्वविद्यालय के इतिहास मे इससे पूर्व किसी भी उपकुलपति का इतना भावपूर्ण स्वागत नही हुआ था। रेलवे स्टेशन मे दोपहर से प्रारम्भ हुआ उनका स्वागत जुलूस सायकाल विश्वविद्यालय पहुँचा।" अपने खराब स्वास्थ्य के बावजूद आचार्य जी ने वाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालय की प्रशासनिक एव अकादमिक स्थिति मे व्यापक सुधार किए तथा विश्वविद्यालय का पहिया सीधे रास्ते पर घूमने लगा। उपकुलपति के रूप मे आचार्य जी को 2000 रु प्रतिमाह मिलते थे जिसमे 800 रु वह विश्वविद्यालय छात्र कोष मे दान दे देते जिससे निर्धन छात्रो का आर्थिक सकट हल होता था। इन सबके पश्चात भी वह अनुशासनहीनता को पसन्द नही करते थे तथा उसके प्रति उनका रवैया कठोर था।

आचार्य जी यद्यपि सोशलिस्ट पार्टी के प्रथम पक्ति के नेता थे किन्तु विश्वविद्यालय को राजनीति का अखाडा उन्होने नही बनने दिया। उन्होने विश्वविद्यालय मे कभी सोशलिस्ट नेताओ को न तो आमत्रित किया न उनके भाषण करवाये। छात्रो की कोई भी विचारधारा हो आचार्य जी उन्हे अपना शिष्य समझते थे और सोशलिस्ट एव अन्य विचारधारा के छात्र मे कोई अन्तर नही करते थे यही कारण था कि वह सभी छात्रो मे समान रूप से लोकप्रिय थे

आचार्य नरेन्द्र देव अपने को मार्क्सवादी कहते थे। उनको समाजवाद का सिद्धान्त इतना प्रिय था कि जब कांग्रेस के लोगों ने अन्य दलो से सबन्ध रखने पर प्रतिबध लगा दिया तो आचार्य जी ने कांग्रेस छोड दी। यह उनके लिए एक कठिन और दुरूह कार्य था। किन्तु समाजवाद के लिए उन्होने अपने सभी अत्यत प्रिय मित्रों को भी छोड दिया। यह उनकी समाजवाद के प्रति निष्ठा की एक मिसाल है। आचार्य जी का वर्ग सघर्ष पर विश्वास था और इसे वह एक अनिवार्य घटना मानते थे। आचार्य जी वर्ग–विहीन समाज की स्थापना करने मे विश्वास रखते थे। वह स्वय लिखते है 'समाजवाद का ध्येय वर्गविहीन समाज की स्थापना है। समाजवाद प्रचलित समाज का इस प्रकार सगठन करना चाहता है कि वर्तमान परस्पर विरोधी स्वार्थों वाले शोषक और शोषित पीडक और पीडित वर्गों का अत हो जाय, वह सहयोग के आधार पर सगठित व्यक्तियो का ऐसा समूह बन जाय जिसमे एक सदस्य की उन्नति का अर्थ स्वभावत दूसरे सदस्य की उन्नति हो और वह मिलकर सामूहिक रूप से परस्पर उन्नति करते हुए जीवन व्यतीत करे।'[11]

आचार्य जी श्रमिको की भाँति किसानो का भी वर्ग सघर्ष का तथा परिवर्तन का औजार मानते थे। किसानो के सम्बन्ध मे उनके विचार माओत्से--तुग के विचार के समीप थे। वह किसानो को क्राति का प्रतिगामी नहीं मानते थे। यहॉ उनका मार्क्स से विरोध था।

आचार्य जी परिवर्तन के लिए शातिपूर्ण उपायों, सिविल नाफरमानी पर भरोसा करते थे। किन्तु क्राति के अतिम चरण मे सशस्त्र विद्रोह की सभावना को नही नकारते थे। वर्ग सघर्ष के साथ–साथ कुछ मुद्दे जिनका सम्बन्ध हमारे स्वतत्रता आन्दोलन से था आचार्य जी आवश्यक मानते थे जैसे– राष्ट्रीय स्वतत्रता, मानवीय हित, विश्व शान्ति। आचार्य जी राष्ट्रभक्त थे और उसके हिमायती भी। महात्मा गाधी जहॉ सत्याग्रह के द्वारा हृदय परिवर्तन की बात करते थे वही आचार्य जी इसे अव्यावहारिक मानते थे। उन्होने विनोबा भावे के भूदान आन्दोलन मे कोई रुचि नहीं ली थी और न इस पर उन्हे विश्वास था। वह जन सघर्ष, हडताल और विशाल आन्दोलन को सत्ता परिवर्तन का कारगर उपाय मानते थे।

आचार्यजी समाजवाद को एक नैतिक एव सास्कृतिक आन्दोलन मानते थे। वह राजनीतिक कार्यकर्त्ताओ को भी राजनीतिक सस्कृति की शिक्षा देते थे। उनका मानना था कि बिना 'राजनीतिक सस्कृति' के राजनीतिक कार्यकर्त्ताओ मे न अनुशासन आ सकता है न वे सिद्धान्तनिष्ठ बन सकते हैं और न उनकी दृष्टि मे व्यापकता आ सकती है। आचार्य जी की 'राजनीतिक सस्कृति' का अर्थ उन्ही के शब्दो से स्पष्ट होता है।

"समाजवाद का सवाल केवल रोटी का सवाल नही है। समाजवाद मानव स्वतत्रता की पूँजी है। समाजवाद की एक स्वतत्र–मुखी समाज मे सम्पूर्ण स्वतत्रता मनुष्यत्व को प्रतिष्ठित कर सकता है। समाजवाद ही श्रेणी–नैतिकता तथा भ्रातृत्व न्याय

11 राष्ट्रीयता और आचार्य नरेन्द्र देव

के बदले जन प्रधान नैतिकता तथा सामाजिक न्याय की स्थापना कर सकता है। समाजवाद ही स्वतत्रता, समता और भातृत्व भाव के आधार पर एक सुन्दर, सबल मानव सस्कृति की सृष्टि कर सकता है।"

ऐसी सभ्यता तथा संस्कृति की स्थापना उत्पादन के साधनो पर सामाजिक स्वामित्व स्थापित करते ही नही हो जायेगी। इसके लिए पुनर्निर्माण कार्य ही समुचित रीति से करना होगा। मानव प्रतिष्ठा के लिए नागरिक स्वतत्रता तथा उत्तरदायित्वपूर्ण प्रजातात्रिक राजनीतिक व्यवस्था की आवश्यकता होगी। सुन्दर और सम्पूर्ण मनुष्यत्व की सृष्टि भी हो सकती है जब साधन भी सुन्दर हो, मनवाछित हो। उद्देश्य और साधन परस्पर सबद्ध तथा परस्पर निर्भर होते है। दोनो का अपना–अपना महत्व है।[12]

इस प्रकार मार्क्सवादी होते हुए भी आचार्य जी शोषक वर्ग की तानाशाही के विरोधी थे। वे साधन एव साध्य की पवित्रता पर भी बल देते थे। मार्क्सवादी होते हुए भी उनके जीवन पर भारतीय दर्शन एव महात्मा गाधी का गहरा प्रभाव था। वे राजनीति मे उच्च नैतिकता के पक्षधर थे।

रामवृक्ष बेनीपुरी जी के अनुसार आचार्य जी मे 'ज्ञान, कर्म एवं साधना का अनूठा समन्वय हुआ था।' वह ज्ञानी भी थे कर्मवीर भी थे एव साधक भी थे। यही कारण है कि आज इतना समय बीत जाने के पश्चात् भी उनका नाम अमर है और उनके व्यक्तित्व की चर्चा होती है।

12 राष्ट्रीयता और —आचार्य नरेन्द्र देव

दस्तावेज

आचार्य नरेन्द्रदेव युसुफ मेहरअली की दृष्टि मे

इस पर सर्वसम्मति है कि आचार्य नरेन्द्रदेव भारतीय समाजवाद के वरिष्ठ सदस्य हैं। युवजनो की पार्टी मे वे एक ज्येष्ठ बधु है। उनमे, विद्वत्ता और राजनीति का दुर्लभ सम्मिलन है। वे अनेक वर्षो से उभय क्षेत्रो के एक अग्रगण्य व्यक्ति है। उम्मीदो से परिपूर्ण वकालत के पेशे से मुँह मोडकर और आलीशान घर की सुख सुविधाएं त्यागकर असहयोग आदोलन के उत्प्रेरक दिनो मे व सक्रिय राजनीति मे आगे कूद पडे। उसी उभार मे राष्ट्रीय शिक्षा के आग्रह को ताजा स्फूर्ति मिली थी। जब 1924 मे बनारस मे काशी विद्यापीठ स्थापित की गई, तब नरेन्द्रदेव का अध्यापक-मडल मे सम्मिलित होने के लिए आमत्रित किया गया। 5 वर्षो के बाद 1929 मे वे उसके प्राचार्य बने। तब से अब तक एक चौथाई सदी की अवधि तक, उस सम्मान्य सस्था से वे सक्रिय तौर पर जुडे रहे है।

उन जैसे सुप्रतिष्ठित महान अध्येता को देखते हुए उनका साहित्यिक कृतित्व अल्प ही है। असल मे यह बहुत थोडे लोग ही जानते है कि जब दो प्रचड और प्रतिस्पर्धा-आवेगो के बीच फँसे कुछेक युवजनो ने एक सपूर्णत अध्यवसायी जीवन के बदले राजनीति मे आने का निर्णय लिया, तब भारत मे ऐतिहासिक शोध के उद्देश्य का कितनी क्षति पहुँची। नरेन्द्रदेव के पिताजी, बाबू बलदवप्रसाद एक सुप्रसिद्ध वकील थ। स्वभावत उनकी रुचि यह थी कि उनका होनहार बेटा उन्ही के नक्शे-कदम पर चले और उनक व्यावहारिक तथा कानूनी क्षेत्र मे उनके प्रभावी सवधा का, उत्तराधिकारी बने। किसी वक्त खुद नरेन्द्रदेव पुरातत्त्वविद बनने को व्यग्र थे और उन्होने तो बनारस के क्यीन्स कॉलज मे दाखिला भी ले लिया था। यह कॉलेज उन दिनो के सयुक्त प्रान्त मे पुरालिपिशास्त्र और मुद्राशास्त्र के पाठयक्रमो वाला एकमात्र शिक्षण-सस्थान था। परन्तु 1913 मे स्नातकोत्तर उपाधि पाने के बाद उन्होने फैसला किया कि विद्वान का एकात जीवन उन्हे नही जीना है। उन्होने देखा कि ज्यादातर सक्रिय राजनेता वकील है और उन्होने वकालत पेशे मे जाने का तय किया। वकालत की पढाई पूरी कर 1915 मे वे फैजाबाद लौटे और उन्होने स्थानीय होम रूल लीग के सचिव का पद सभाला।

राजनीति में रुचि

किशोरावस्था से ही उनमे राजनीति के प्रति आकर्षण था। लखनऊ म 1909 में हुए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में अपने पिता के साथ वे दस साल की उम्र

मे ही पहुँचे थे। उनके पिता एक प्रतिनिधि थे। रमेशचन्द्र दत्त अध्यक्ष थे। बगल मे ही रानाडे के विशिष्ट सभापतित्व मे अखिल भारतीय सोशल कान्फ्रेन्स भी हो रही थी। लेकिन नरेन्द्रदेव के नायक थे तिलक जो यरवदा केन्द्रीय जेल से उसी समय रिहा हुए थे। कार्यवाही अंग्रेजी मे चल रही थी। वे कुछ नही समझ पाये। पर वही डटे रहे। यहाँ उन्होने तिलक की पहली झलक देखी। उनके प्रति उनमे तीव्र अनुराग विकसित हुआ। जब वे हाईस्कूल मे थे तब राजनीतिक क्षितिज पर बग-भग के विरुद्ध आदोलन छाया हुआ था। देश भर के विद्यार्थी समुदाय मे प्रचड उत्तेजना थी और बगाल के प्रति गहरी आत्मीयता भरी अनुभूति थी। 1906 मे 17 वर्षीय नरेन्द्रदेव कलकत्ता काग्रेस मे दर्शक के नाते शामिल हुए। इसी अधिवेशन मे सभापति पद से दादा भाई नौरोजी ने घोषित किया था कि भारत का लक्ष्य है 'स्वराज'। यह 'स्वराज' शब्द तब से अब तक राष्ट्रीय चेतना मे समा गया है और स्वाधीनता की आकाक्षा के प्रतीक के रूप में एक सम्मोहक अभिव्यक्ति बन गया है।

सर फीरोजशाह मेहता, गोखले और सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के नेतृत्व वाले नरम-पथियो और तिलक तथा अरविंद घोष के नेतृत्त्व वाले गरमपथियो के बीच लडाई उफान पर थी। प्रेसीडेंट के महान व्यक्तित्व की प्रेरणा से ही काग्रेस के ये दोनो पक्ष परस्पर सहमति से एक कार्यक्रम तय कर पाये। कार्यक्रम पर वामपथ का बढता प्रभाव झलक रहा था।

कलकत्ता मे नरेन्द्रदेव ने गरम दल वाले कुछ दिग्गज हस्तियो, खासकर अरविन्द घोष और विपिनचन्द्र पाल, के बारे मे सुना। उन्होने वहाँ नयी पार्टी के सिद्धातो पर श्री अरविंद का सुप्रसिद्ध भाषण भी सुना। अगले साल काग्रेस का अधिवेशन सूरत मे हुआ। दोनो पक्षो के बीच गहरे मतभेदो के कारण कांग्रेस दो फाट मे बँट गई। गरमपथियो को काग्रेस से निष्कासित कर दिया गया और नरमपथी अपनी चलाने लगे।

इलाहाबाद मे

जिन दिनो नरेन्द्रदेव इलाहाबाद मे स्नातक की पढाई पढ रहे थे, उन दिनो वह नेशनलिस्ट पार्टी का एक गढ था। इस तथ्य के बावजूद कि नरमपथियो के तीन वरिष्ठ नेताओ– पडित मदनमोहन मालवीय, डॉ तेजबहादुर सप्रू और मुशी ईश्वरसरन– का वह मुख्यालय था। 1907 मे जब तिलक शहर मे आये, तब इन तीनो मे से कोई उनके स्वागत को नही पहुँचे। हाँ, विद्यार्थी जरूर सैकडो की तादाद मे स्टेशन पर थे। तिलक के स्वागत के लिए अपनी बग्घी देने को इलाहाबाद मे सिर्फ बाबू चारुचन्द्र चटर्जी ही तत्पर हुए। विद्यार्थियों ने घोडे ढील दिये और खुद बग्घी खीचने का आग्रह करते रहे। तब उस महान नेता ने हस्तक्षेप किया और कहा कि अपना यह उत्साह ज्यादा बडे कामो के लिए सुरक्षित रखो। छात्र–प्रदर्शनो के एक प्रमुख व्यक्तित्त्व थे नरेन्द्रदेव।

नरेन्द्रदेव के म्यूर कालेज के छात्रावास मे रहते थे वह राजनीतिक का एक केन्द्र था रात–रात भर कालेज की पाठ्य-पुस्तकों को पढने की जगह

छात्र इन रातो मे देश के राजनीतिक भविष्य पर लम्बी बहसे करते थे। काग्रेस से गरमपथियो के निष्कासन के कारण पार्टी ने जनता का व्यापक समर्थन खो दिया था और युवा तथा गतिशील तत्त्व उससे उदासीन हो रहे थे। 1908 मे तिलक को फिर से राजद्रोह के अभियोग मे 6 वर्ष की सजा हुई और वे बरमा के माडले जेल मे भेज दिये गये। अरविद घोष भी बदी थे और उनकी लम्बी खीची जा रही पेशियाँ चल रही थी।

मुख्य-मुख्य शहरो मे घूमकर नेशनलिस्ट पार्टी के वक्ता, जिनमे लाला लाजपत राय, विपिनचन्द्र पाल तथा दिल्ली के तेजस्वी कवि और वक्ता सैयद हैदर रजा थे युवको को प्रभावित कर रहे थे। इसी समय लाला हरदयाल ने, जो योरप मे श्यामजी कृष्ण वर्मा के प्रभाव मे आये थे, इग्लैंड की अपनी स्कालरशिप त्याग दी और भारत लौटे। उन्होने अध्ययन का एक पाठ्यक्रम तैयार किया। राजनीतिक कर्म के लिए तत्पर भारतीय विद्यार्थियो के लिए पढाई का एक 'कोर्स' तैयार किया। इनमे रमेशचन्द्र दत्त और दादा भाई नौरौजी की किताबे, भारत का इतिहास, विदेश के बारे मे पुस्तके और विशेषत मेजिनी की रचनाएँ आदि शामिल थीं। नरेन्द्रदेव पर निश्चित ही इनका प्रभाव पडा।

गरमपथ के समर्थक भी इलाहाबाद से दो पत्र निकाल रहे थे। एक उर्दू साप्ताहिक 'स्वराज', जिसके अनेक सपादको को जेल मे डाला जा चुका था और हिन्दी मे कर्मयोगी', जिसका सपादन करते थे—पडित सुन्दरलाल। उन्हे अपनी राजनीतिक गतिविधियो के कारण विश्वविद्यालय से निष्कासित कर दिया गया और इसलिए वे डिग्री नही ले पाये थे।

अच्छे विद्यार्थी

ऐसे माहोल मे सास लेते और हलचल करते थे नरेन्द्रदेव। वे अच्छे विद्यार्थी थे और क्रान्तिकारी किस्म की जो भी किताब पा जाते उसे उत्कठापूर्वक पढ जाते। इनमे क्रोपाटकिन की 'मेमायर्स आफ ए रिवोल्यूशनरी एड म्युचुअल एड', ए के कुमारस्वामी की 'एसेज इन नेशनल आइडियालिज्म', हरदयाल और अरविन्द घोष की कृतियाँ और तुर्गनेव की कहानियाँ उन्हे विशेष पसद थीं। 'गैरिबाल्डी की जीवनी' और मेजिनी की छ खडो मे छपी रचनाएँ, जिनमे—'मनुष्य के कर्त्तव्य' भी शामिल थी वे चाव से पढते थे। साथ ही फ्रासीसी क्राति पर किताबे, ब्लट्शली की 'राज्य का सिद्धात' तथा उस रूस जहाँ 1905 की क्राति के भयकर दमन ने उस क्राति के नेताओ और वहाँ के लोगो को रोमास की एक नयी आभा दी थी, का बहुत सा नास्तिकवादी साहित्य भी वे चाव से पढते थे।

यह याद करना दिलचस्प है कि नरेन्द्रदेव के समकालीनो मे एक थे पडित गोविन्दवल्लभ पत। जिन दिनो नरेन्द्रदेव कला के प्रथम वर्ष मे पढ रहे थे, श्री पत बी ए मे थे। डॉ कैलाशनाथ काटजू उन दिनो एम ए मे थे। इन दिनो बाबू शिवप्रसाद गुप्त और महाकौशल प्रदेश काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष ठाकर छेदीलाल उनके सहपाठी और अच्छे दोस्त थे

नरेन्द्रदेव की राजनीति मे कितनी गहरी रुचि थी, यह इस तथ्य से प्रकट है कि राष्ट्रवादियो के निष्कासन के बाद हुई इलाहाबाद काग्रेस मे वे शामिल नही हुए यद्यपि वे उन दिनो वही पढ रहे थे। काग्रेस प्रेसीडेंट सर विलियम वेडरवन ने काग्रेस के दोनो पक्षो को एकजुट करने का एक प्रयास और किया जो विफल रहा।

1916 मे जाकर काग्रेस के दोनो पक्षो का फिर से एका हुआ। तिलक, गोखले जिन्ना तथा अन्यो के प्रयास से काग्रेस और मुस्लिम लीग मे 'लखनऊ पैक्ट' हुआ। नरेन्द्रदेव उन दिनो फैजाबाद मे वकालत कर रहे थे और होम रूल लीग के सचिव थे। लखनऊ काग्रेस मे वे पहली बार एक प्रतिनिधि के नाते शामिल हुए। तब से आज तक उन्होने काग्रेस के हर एक अधिवेशन मे हिस्सा लिया है, सिवाय कोकानाडा (1923) और मद्रास (1926) अधिवेशनो के। इन दोनो वक्त वे दमे से बुरी तरह त्रस्त थे।

असहयोग आंदोलन ने भारत मे वास्तविक नवजागरण ला दिया। राष्ट्रीय शिक्षा की प्रबल प्रेरणा फैली और शिवप्रसाद गुप्त ने बनारस में काशी विद्यापीठ की स्थापना के लिए दस लाख का दान देने का पस्ताव किया। दार्शनिक और ऋषि, पूज्य बाबू भगवानदास प्राचार्य बने तथा बाबू सम्पूर्णानद दर्शन के प्राध्यापक। 1920 की नागपुर काग्रेस के बाद नरेन्द्रदेव वकालत स्थगित कर चुके थे। बाबू शिवप्रसाद गुप्त उनके पुराने मित्र और सहपाठी थे। उन्होने उनसे आग्रह किया कि वे विद्यापीठ मे आये। वस्तुत जवाहरलाल ने आग्रह कर, उन्हे राजी किया। 1920 के सविनय अवज्ञा आदोलन के दौरान काग्रेस ने आह्वान किया कि ब्रिटिश माल का विशेषत विदेशी वस्त्रो का, दृढता से बहिष्कार हो। संयुक्त प्रात के बस्ती और गोरखपुर जिले, नेपाल को वस्त्रो की आपूर्ति करने वाले मुख्य केन्द्र थे। बाबू पुरुषोत्तमदास टडन, बाबू शिवप्रसाद गुप्त और आचार्य जी ने बस्ती का दौरा कर कोशिश की कि वस्त्रो की यह निकासी रुके और विदेशी कपडो का भडार सील किया जाय। सभी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। नरेन्द्रदेव जेल मे बहुत बीमार पडे और रिहाई तक वैसे ही बीमार रहे। 1931 मे गॉधी–इरविन सधि के दिनो मे लगभग हर महीने वे दमा के घातक दौरो से ग्रस्त रहे और उन्हे पुरी जाने की सलाह दी गई, किन्तु अपने कमजोर स्वास्थ्य और डाक्टरी सलाह की परवाह न करते हुए 1932 के सघर्ष मे उन्होने प्रमुख भूमिका निभायी और लम्बी अवधि के लिए जेल भेजे गये।

समाजवादी आदोलन

अतत समाजवादी आदोलन का जन्म वह कारण बना, जिसके चलते नरेन्द्रदेव विवादपूर्ण राजनीति के क्षेत्र मे आ गये। जयप्रकाश 1929 मे अमरीका से लौटे। कुछ समय बाद, जयप्रकाश की पसद के एक प्राध्यापक भारत की यात्रा पर आये। यहॉ की राष्ट्रीय शिक्षण-सस्थाओ का दौरा उनका विशेष कार्यक्रम था। वे बिहार विद्यापीठ गये। बाबू ... वहॉ के प्रधान थे बिहार विद्यापीठ के प्राचार्य ने काशी विद्यापीठ के उन दिनों के प्राचार्य आचार्य नरेन्द्रदेव जी को विशिष्ट अमरीकी ... के वहॉं पहुँचने पर

उचित स्वागत के बारे मे लिखा। जयप्रकाश उन अमरीकी प्राध्यापक के साथ गये। इस तरह जयप्रकाश और नरेन्द्रदेव की पहली भेट हुई और वे एक-दूसरे की तरफ आकर्षित हुए। जब जयप्रकाश ने अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के श्रम अनुसधान विभाग का कार्यभार सभाला, तब वे दोनो अक्सर मिलने लगे और घनिष्ठ हो गये। बाद मे अन्य मित्रो के साथ मिलकर इन्होने काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन किया। 1934 मे पटना मे अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी का सम्मेलन हुआ और उसमे स्थिति की नवीनतम समीक्षा की गयी और सविनय अवज्ञा आदोलन को वापस लेकर ससदीय कार्यक्रम अपनाने की बाबत विचार हुआ। पार्टी पूरी तरह सविधानवाद मे ही न जाय और देश के सामने एक अधिक गतिशील कार्यक्रम रखा जा सके, इसलिए वही समाजवादी काग्रेसजनो की भी एक कान्फ्रेन्स बुलायी गयी थी। आचार्य नरेन्द्रदेव ने उसकी अध्यक्षता की। उनके शानदार भाषण ने हलचल मचा दी। एक अखिल भारतीय काग्रेस सोशलिस्ट ग्रुप बना। जयप्रकाश उसके सगठन-सचिव हुए। तब से नरेन्द्रदेव निरतर भारतीय समाजवादी आदोलन के मार्गदर्शक, तत्त्वचितक और मित्र रहे हैं।

1936 मे जब पडित जवाहरलाल नेहरू भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के दुबारा अध्यक्ष बने, उन्होने अपनी कार्यसमिति मे नरेन्द्रदेव, जयप्रकाश और अच्युत पटवर्धन को शामिल किया। अगले वर्ष आचार्य जी उत्तर प्रदेश प्रान्तीय काग्रेस समिति के अध्यक्ष चुने गये।

पिछले कई वर्षो से आचार्य जी भारतीय किसानो की समस्याओ मे गहरी रुचि ले रहे थे। अब वे उन्हे सगठित करने लगे। उत्तर प्रदेश के किसानो के अत्यन्त प्रभावशाली नेता, मोहनलाल गौतम, जो उन दिनो केन्द्रीय किसान सघ के महासचिव भी थे एक अन्य सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी नेता सेठ दामोदरस्वरूप और पडित अलगूराय शास्त्री जो इन दिनो उत्तर प्रदेश प्रान्तीय काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष व महामत्री है, ये तीनो भी काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी मे शामिल हो गये।

जनवरी, 1936 मे मेरठ मे समाजवादियो का दूसरा वार्षिक सम्मेलन हुआ। उसी अवसर पर देश-भर के किसान कार्यकर्ताओ का भी एक सम्मेलन हुआ। इसमे से ही अखिल भारतीय किसान सभा का जन्म हुआ। नरेन्द्रदेव इसके दो बार अध्यक्ष चुने गये। (1939 मे गया अधिवेशन मे और 1942 मे बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बदौल मे हुए अधिवेशन मे)।

वे एक हिन्दी साप्ताहिक 'सघर्ष' के सस्थापक भी बने। सघर्ष खूब चला। उसके सपादक मडल मे उनके साथ मे मोहनलाल गौतम रमाकात श्रीवास्तव और सर्वोपरि प्रोफेसर वी पी सिन्हा थे।

काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के गठन के साथ ही नरेन्द्रदेव प्रान्तीय राजनीति के दायरे से आगे राष्ट्रीय पटल पर उभरे इस गौरव की कोई चाह उन्हें नहीं थी कई बार तो उन्होने विनम्रतापूर्वक गौरव से बचने की ही कोशिश की थी

का उपकुलपति पद, अपने प्रान्त मे मत्रिपद और एक से अधिक बार कांग्रेस की कार्यसमिति मे स्थान को वे अस्वीकार करते आये थे।

भारतीय इतिहास पर हमारे सुपरिचित अधिकारी विद्वानो मे से एक हैं नरेन्द्रदेव। यह बहुत स्वाभाविक भी लगता है, क्योकि जहाँ उनका घर है, उस कस्बे मे ऐतिहासिक स्मृति और आधुनिक प्रगति साथ–साथ गतिशील है। 1889 मे वे सीतापुर मे जन्मे। जब वे दो साल के थे, तभी नरेन्ददेव का परिवार फैजाबाद आ बसा और तबसे वही हैं। राम की जन्मभूमि और रामायण की गतिशील घटनाओ से जुडी प्राचीन नगरी अयोध्या सिर्फ 3 मील दूर है। फैजाबाद स्वय अवध की राजधानी और फलता–फूलता कस्बा था जब अग्रेजो ने उसे अपने साम्राज्य मे मिलाया। हाउस आफ लार्ड्स मे वारेन हेस्टिंग्स पर जिन अभियोगो पर विचार हुआ, उनमे से प्रमुख अभियोग था अवध की बेगमो की लूट। बर्क फाक्स और शेरिडन के पटुतापूर्ण शब्दो मे और मेकाले के निबन्ध मे उस मामले को अभी भी पढा जा सकता है। अवध की एक बेगम 1857 के विद्रोह की प्रमुख नेताओ मे से थी और रानी विक्टोरिया की 1858 की घोषणा का चुनोती भरा जो उत्तर उन्होने दिया था वह हमारे क्रान्तिकारी दस्तावेजों मे अग्रगण्य स्थान रखता है। अवध के एक दूरदर्शी शासक ने एक राजकीय मकबरा बनवाया था, जहाँ उसके वश के अनेक नवाबो और बेगमो को चिरविश्राम के लिए दफनाया गया। फैजाबाद मे वह गुलाब बाडी के नाम से सुपरिचित है। जिस सडक पर यह गुलाब बाडी है उसे आज आचार्य नरेन्द्रदेव मार्ग कहा जाता है।

सम्मानित नेता

आचार्य जी वामपथ के नेता हैं, तब भी अपने विपक्षियो समेत सभी के द्वारा उन्हे पसद और उनका सम्मान किया जाता है। इसका कारण है उनका परोपकारी स्वभाव और दूसरो के दृष्टिकोण के प्रति सदा न्याय बरतने की उनकी उत्कठा। साथ ही, पार्टी के मतभेदो को वे व्यक्तिगत सबधो की राह मे नहीं आने देते। अपनी सर्वाधिक विवादास्पद घोषणाओ मे भी वे कटुता नही प्रदर्शित करते। जब वे आपसे असहमत होगे, तब अपनी असहमति विनम्रता और गरिमा के साथ व्यक्त करेगे, जिससे उनका दश बहुत कुछ जाता रहता है।

आचार्य जी भारत के सर्वश्रेष्ठ वक्ताओ मे से है। उनकी जैसी महान विद्वत्ता और राजसी वाग्वैदग्ध्य दोनो से एक साथ सम्पन्न, थोडे-से भी नामों को याद कर पाना आसान नही। तब भी वे प्रकृति मे सकोची हैं। इतने कि वे 1934 तक काग्रेस मे एक बार भी नही बोले, जबकि वे अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के सदस्य 1917 से ही रहे हैं। 1934 में भी, अपने समाजवादी मित्रो के अत्यधिक आग्रह के बाद ही वे मच पर आये। कई भाषाओं पर उनका अधिकार है। एक बार प्रसिद्ध प्रोफेसर श्री वेनिस ने, जिनके कि वे प्रिय शिष्य थे उनसे आग्रह किया कि वे मेयो कालेज में सस्कत के प्रोफसर हो जायें प्रोफेसर चाहते थे कि नरेन्द्रदेव कानून के क्षेत्र में न कूदें काशी विद्यापीठ में नरेन्द्रदेव

अन्य विषयो, विशेषत भारतीय इतिहास के साथ-साथ पाली और प्राकृत पढाते थे। फ्रेच और जर्मन मे रचित विद्वत्तापूर्ण बौद्ध दार्शनिक ग्रथो के उन्होने अनुवाद किये है। उर्दू और हिन्दी पर उनका प्रभुत्व काबिले-तारीफ है।

उनमे परिष्कृत विनोदवृत्ति है। एक बार अखिल भारतीय काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी मे कार्यसमिति के एक प्रस्ताव पर सशोधन लाने के बारे मे बहस चल रही थी। आम राय यह थी कि कार्यसमिति के प्रस्ताव का समर्थन किया जाय। पर एक प्रमुख सदस्य वामपथी शैली मे कह रहे थे कि काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी को सशोधन लाना ही चाहिए। सभी को विस्मित करते हुए नरेन्द्रदेव जी ने परिहास किया—"हॉ, हॉ, अपने दोस्त से मै पूरी तरह सहमत हूँ। पार्टी मुख्यत बनी ही इसलिए थी कि वह कार्यसमिति के प्रस्तावो पर सशोधन लाये। अगर हम एक बार भी सशोधन रखने मे चूक गये तो हम पूरी तरह गुम हो जायगे।" गभीर स्वरो मे की गई उनकी टिप्पणी के खत्म होते ही हँसी के जोरदार ठहाके गूँज उठे और तनाव समाप्त हो गया। सशोधन के प्रवक्ता आगे कुछ भी कह न सके।

उनकी खामियो के बारे मे क्या कहे ? उनके अपने ही प्रान्त मे कुछ खामियो ने गुणो को ढक लिया। पहली तो यह कि किसी से भी ना कह पाने मे वे असमर्थ हैं। इसका फायदा उठाने मे लोग पीछे नही रहते। दूसरी है उनकी अत्यन्त विनम्रता। बबई मे कोई सामान्य व्यक्ति कुछ सेकेडो मे जो बाते कह जायेगा, एक सुसस्कृत व्यक्ति को वे ही बाते कहने मे लगभग उतन ही मिनट लगेगे। तब भी, उस परिष्कृत स्तर से देखने पर भी आचार्य जी की विनय और सहजता को अगर सर्वोपरि न कहा जाय तो अत्युच्च कोटि का कहा जायगा।

सहज सुलभ

अत्यधिक व्यस्त होते हुए भी, वे सर्वाधिक सुलभ लोगो मे से एक हैं। वे फैजाबाद के अपने घर मे हो या बनारस अथवा लखनऊ मे, सामान्यत हर वक्त आगतुको से घिरे दिखेगे। यह भी सामान्य अनुभव है कि लोग वहॉ बिना किसी खास प्रत्यक्ष प्रयोजन के घटों बैठे रहेगे, आपने जरूरी काम करने हो, तब भी आचार्यजी खुद उन्हे जाने को नही कह सकते। नतीजा यह होता है कि आगे बढकर आग्रहपूर्वक काम कराने वाले उनसे अपना काम करा लेते है, जबकि अक्सर महत्त्वपूर्ण काम अधूरे पडे रह जाते हैं। उनकी अतिशय विवेकबुद्धि उन्हे वे काम देर रात मे पूरा करने को बाध्य करती है। इससे उनकी नाजुक तदुरुस्ती पूरी तरह लडखडा उठती है। असल मे, मित्रो और आगतुको से दृढता न दिखा पाने की उन्हें भारी कीमत चुकानी पडती है और फलस्वरूप सगठन मे क्रमश कमियॉ बढने लगती हैं। पर जब वे बनारस मे अपने महान मित्र बाबू श्रीप्रकाश के साथ होते है, तब उनकी जीवनचर्या चुस्त—दुरुस्त और सुव्यवस्थित तरोताजा हो जाती है। आगतुक तो यहाँ भी और जगहों जैसे ही आते हैं पर कुछ ढग से वहा होती है विश्राम के समय का भी उचित प्रबध हो जाता है पता नहीं आचार्य

जी का बीमा हुआ है या नही, पर यदि है तो उनकी बीमा कपनी वालो के लिए यह एक गुप्त सूचना हम यहाँ द रहे है।

उनकी सर्वाधिक बाधा और देश का दुर्भाग्य रहा हे, उनके स्वास्थ्य की अनिश्चित दशा। लम्बे समय के लिए उन्हे निष्क्रिय रहना पडता है। भयकर दमा के दौरे के वक्त जिन लोगो ने उन्हे देखा है और उनकी पीडा की यातना देखी हे, वे उनके धैर्य और प्रसन्नता पर प्राय' आश्चर्य व्यक्त करते है। जून मे अहमदाबाद नगर किले की जेल से रिहाई के बाद से उनकी नाजुक स्वास्थ्य की स्थिति मे क्रियाशीलता और भी विस्मयकारी है, क्योकि उनके दोनो ही अभिभावक नही रहे। उनके पिता 92 वर्ष के थे और माँ 87 की।

उनका मोहक व्यवहार, उनकी विनयपूर्ण किन्तु विराट भव्यसिद्धता, चरित्रशील ओर बुद्धि की उनकी उत्कृष्टताएँ उन्हे लाखो लोगो का प्रिय बनाती हैं। एक आदर्श और आस्था के लिए जीने वाले व्यक्ति के वे विशिष्ट उदाहरण हैं। आदर्श है एक नये वर्गविहीन समाज का, जहाँ दरिद्रता, अज्ञान और शोषण का अन्त हो गया हो। आस्था है सर्वसाधारण जन मे और एक नये ससार को रचन की उसकी क्रातिकारी सामर्थ्य मे। उद्देश्य की इतनी शुद्धता और आत्मा की ऐसी गरिमा के साथ उन्होने जीवन जिया है। अपने सम्पर्क मे आने वाले सभी लोगो को वे उत्कृष्टता प्रदान करते है तथा सार्वजनिक जीवन मे वे एक नया सगीत-स्वर भरते हैं।[13]

13 एम्ड नेशनल रिवोल्यूशन पद्मा बम्बई 946

अद्वितीय प्रतिभा-पुरुष जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में

आचार्य नरेन्द्र देव दुर्लभ गुण सम्पन्न एक महत्त्वपूर्ण श्रेष्ठ पुरुष थे और उन्होने कई क्षेत्रो मे श्रेष्ठता प्राप्त की थी। असाधारण व्यक्तित्व के धनी इस मनीषी में दुर्लभ बुद्धि, दुर्लभ प्रतिभा, दुर्लभ सत्यनिष्ठा और अन्य बहुमूल्य गुण थे। केवल उनके शरीर ने ही उनका साथ नही दिया। मैं नहीं समझता कि इस सदन मे कोई अन्य ऐसा है जिसका उनके साथ इतने लम्बे अरसे तक सग साथ रहा जितना कि मेरा।

चालीस वर्ष से भी अधिक का समय गुजरा जब हम दोनो साथ हुए, स्वतन्त्रता सग्राम की धूल और धूप में तथा जेल जीवन की लम्बी नीरवता मे जहॉ हमने विभिन्न स्थानो पर चार या पॉच साल—मुझे वास्तविक अवधि इस समय याद नहीं आ रही है—साथ बिताये हम अगणित अनुभवो और अनुभूतियो के सहभोगी और सहभागी रहे और जैसा कि अवश्यभावी था हम एक दूसरे को अन्तरग रूप से जानने और समझने लगे। इसलिए मेरे लिए और हम में से बहुत से अन्य लोगो के लिए उनका निधन एक दुखद हानि है, यह गहरा आघात है और साथ ही देश के लिए भी यह एक बडी क्षति है। हमे एक ओर व्यक्तिगत क्षति की पीडा का और दूसरी ओर सार्वजनिक जीवन में जो क्षति हुई है उसकी पीडा का अनुभव हो रहा है और मन मे यह कसक उठती है कि एक श्रेष्ठ गुणवान पुरुष हमारे बीच से उठ गया है और उन जैसा अब मिलना कठिन होगा।

20 फरवरी 1956 को में व्यक्त शोकोद्गार

आचार्य नरेन्द्रदेव की दृष्टि में जीवन और राजनीति

प्रत्येक व्यक्ति को अपने लिए जीवन के अर्थ और महत्त्व की खोज करनी चाहिए। जीवन समृद्ध और वैविध्यपूर्ण है। यह सपाट और खुरदुरा दोनो ही है, इसमे सुख और दु ख विजय और पराजय दोनो ही है। विविधता जीवन का जायका है, और इसीलिए जीवन के कई पहलू हैं। एक अर्थ मे, प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में एक साध्य है, और उसे अपने ढग से अपने पूर्ण और सतोषजनक जीवन के लिए अवश्य प्रयत्नशील होना चाहिए। उसे जीवन मे अपना स्थान और जिस कार्य से उसे लगाव है उसकी तलाश अवश्य करनी चाहिए। सिर्फ वही कार्य प्रसन्नता का वाहक होता है जो उसकी प्रकृति के अनुरूप अतल गहराइयों से निर्देशित हो। जीवन विविधतापूर्ण है इसलिए मनुष्य के अनुभवो मे भी भिन्नता है और हर व्यक्ति ऐसे अनुभवो से गुजरना चाहता है जो उसके लिए पूर्णत सतोषप्रद है। उसे पारंपरिक जीवन मूल्यो को, बिना किसी विवेचना के स्वीकार न करना चाहिए। जीवन सतत रूप से प्रवाहमान और परिवर्तनशील है। विचारो और सस्थाओ मे परिवर्तन आ रहा है और क्योकि इन्ही से हमे मानवीय मूल्यो का स्तर प्राप्त होता है, इसलिए इन मूल्यो को भी पुनर्परिभाषित किया जा रहा है। हमारे समाज मे जिसमे तेजी से सामाजिक परिवर्तन हो रहे है नई सामाजिक समस्याएँ भी पैदा हुयी है और उनके हल की तलाश जारी है। यदि हम सुखमय जीवन चाहते हैं, जिसमे वे दुख दर्द और संघर्ष न हों जो आज हमारे जीवन मे है तो हमे वर्तमान की चुनौती के लिए सामाजिक मूल्यो के नये मापदड अपनाने चाहिए। इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को अपने लिए जीवन के अर्थ तलाशने चाहिए। दूसरे लोग केवल सहायता और मार्गदर्शन कर सकते हैं, लेकिन प्रयत्न तो उसे व्यक्तिगत रूप से ही करना होगा।

प्रश्न पूछा जाता है जीवन का उद्देश्य क्या है ? सत्य, शिव, सुन्दरम् को मानवीय लक्ष्य के रूप मे परिभाषित किया जाता है। इन लक्ष्यो की प्राप्ति के लिए समस्त मानवीय प्रयत्न किये जाने चाहिए। यदि हमें सामाजिक सकट को टालना है और मानवीय जीवन को समृद्धतम बनाना है तो हमे इन लक्ष्यो को उपयुक्त मानते हुए इनके प्रति अपनी आस्था व्यक्त करनी चाहिए और स्वय को इनके लिए समर्पित करना चाहिए। लेकिन इन मानवीय लक्ष्यो के अलग--अलग समय पर भिन्न अर्थ रहे हैं। बदलती परिस्थितियो के सदर्भ मे उनका लगातार पुनर्परिभाषन और पुनर्मूल्याकन किया जा रहा है। एक व्यक्ति अपने सामाजिक [illegible] की उपज होता है और यद्यपि उसे जीवन के अर्थ अपनी व्यक्तिगत प्रकति के अनुकूल तलाशने होते हैं लेकिन वह यह कार्य अपने समय के

मानवीय मूल्य तथा उसी वातावरण मे करता है जिसमे वह जीवित रहता है।

विज्ञान और तकनीक के आधुनिक युग मे सगठन की समस्या ने विशेष महत्त्व ग्रहण कर लिया है। वृहत् मानव समूहों का गठन हो गया है और जब तक हम नही जानेगे कि उनका कसे नियत्रण किया जाय, हम सकट मे पड जायेगे। विज्ञान ने हमे विपुल ससाधन प्रदान किये हे यदि इनका उचित उपयोग किया जाय तो हम गरीबी और बीमारी दूर कर सकते है और समृद्धि का युग ला सकते हैं। समूह समुदाय तथा लोगो की एकजुटता ने इस युग मे अत्यन्त महत्त्व प्राप्त कर लिया है और जब तक हम पिछली शताब्दी के व्यक्तिवाद से मुक्त होकर प्रतिस्पर्धा की जगह सहयोग नही अपनायेगे तब तक हम कष्ट मे रहगे और उन ससाधनो का उचित उपयोग न कर सकेंगे जो विज्ञान ने हमे उपलब्ध कराये हे।

वर्तमान युग मे यदि हम एक ऐसा बेहतर मानवीय और न्यायसगत समाज चाहत हैं जिसमे युद्ध का अस्तित्व न हो और जहॉ लोग अपनी इच्छाओ की पूर्ति कर सके ता हमे अपने व्यक्तिगत अलगाव और व्यक्तिगत स्वार्थ से मुक्ति पानी होगी। यदि मनुष्य जाति अपने ससाधनो का प्रयोग और सयोजन सभी के व्यापक हितो के लिए करे तो एक स्वर्णिम भविष्य और खुशहाल सबेरा उसके कदमो पर होगा। यदि समाज को जीवित बनाये रखना है तो इस लाभी समाज की निम्न स्वार्थपरता और आज की प्रतियागी दोड स मुक्त होना पडेगा। हम आवश्यकता-जनित नियमो को मान्यता देकर ही अपना व्यक्तिगत जीवन सुखमय तथा अपना स्वतत्र विकास करके स्वय को पूर्ण बना सकते हे और यह नियम है कि आने वाले युग मे सिर्फ उसी का जीवन पूर्ण और सतोषप्रद हागा जो आधुनिक समाज की आवश्यकताओ को पहचानेगा और सभी के प्रति सेवा भाव रखेगा। इसका यह अर्थ कदापि नही कि व्यक्ति गौण है और सिर्फ एक यत्र का पुरजा है और उसका कोई अपना जीवन नही है। वह यत्र का गुलाम नही है लेकिन वह अपने व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण के लिए यत्र को सायास निर्देश तभी दे सकता है जब वह सामाजिक रूप से जागरूक हो और उसने अपने वातावरण तथा समाज को सही रूप म समझा हो और स्वय को सामुदायिक जीवन मे एकात्म किया हो। यह सब उसे किसी अन्य के निर्देश पर न करके, स्वेच्छा से करना होगा। यत्र का सचालन उन लोगो द्वारा नही किया जाना हे जिनमे सत्तामद है, बल्कि उन लोगो द्वारा होना है जिनमे सेवाभाव तथा विनयशीलता हे। उदारतापूर्वक दूसरो की सेवा एक ऐसा महान नैतिक गुण है जो हमारा मन जीत लेता है। लेकिन इसकी समानता उस व्यक्तिगत त्याग से नही करनी चाहिए जो एक ऐसे तानाशाही द्वारा निर्देशित होती है जो अपनी सनक और सत्ता के दर्शन की सन्तुष्टि के लिए पूरी की पूरी कौम को नष्ट कर देता है। एक व्यक्ति को स्वचालित यत्र नही माना जाना चाहिए। बल्कि इसके विपरीत उसके व्यक्तित्त्व के प्रति अधिकतम सम्मान और व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए अवसर प्रदान करने चाहिए। लेकिन यह तभी सभव है जब व्यक्ति यह अनुभव करे कि सामूहिकता के इस युग मे हम नयी मानवीय सस्कृति की दहलीज पर खडे हैं हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति तभी कर सकते हैं जब हम अपने नैतिकता के को बदलें और सामूहिक नैतिकता को आज की

मानवीय प्रगति के लिए पूर्व शर्त के रूप म स्वीकार करे। हमे यह समझना चाहिए कि सभी की उन्नति मे ही व्यक्ति की उन्नति सभव है और इस अनुभूति के साथ हमे प्रसन्नता होनी चाहिए कि हम उस समाज क सजग कर्त्ता और सर्जक हैं जिसमे लाखो लोगो को इतिहास मे पहली बार बेहतर मानव जीवन मिल सकेगा। लाखा लोग जो युगो मे पशुवत जीवन बिताते रहे हे, उन्हे जीवन का नया स्तर तथा नयी आजादी प्राप्त होगी। व्यक्ति से जो भी वापस ले लिया गया ह, उसे लौटा दिया जायेगा और उसका स्वय से अलगाव समाप्त होगा।

लेकिन यह सब तभी सभव होगा जब समाज की नयी नस्ल एक विशिष्ट समूह की रचना कर सके। वे नये युग और सभ्यता के अग्रदूत होगे। उन्हे वातावरण की नयी समझ और मानवता के समक्ष उपस्थित सकटो के प्रति सामाजिक जागरूकता तथा उनके समाधान की आवश्यकता होगी। आध्यात्मिक क्षेत्रो मे सकट और भी गहरा है। समानता सामाजिक न्याय और शान्ति पर आधारित नये समाज की रचना के लिए अब भौतिक परिस्थितियाँ उपलब्ध हैं। व्यक्ति को सिर्फ इतना जानना होगा कि इन ससाधनों का सार्वजनिक हित मे कुशलतापूर्वक सयोजन किस प्रकार किया जाय।

आधुनिक सामाजिक व्यवस्था ने व्यक्ति को निष्प्राण ओर निर्वैयक्तिक बनाकर वस्तु मे बदल दिया है और उसे गुलाम बना लिया है। आज व्यक्ति महज यत्र का एक पुर्जा बनकर रह गया है। श्रमिक अपने उत्पादन यंत्रो का स्वय स्वामी नही है। उसे अपने कार्य के प्रति कोई लगाव नही है। उसके लिए यह शुष्क और नीरस जीवन है। वह अपनी हीनता के प्रति सजग है, वह यह अनुभव करता हे कि जीवन प्रक्रिया मे उसकी कोई भूमिका नही है। इससे कुठाभाव दिनोदिन बढता है, परिणामस्वरूप सामाजिक समस्याओ के प्रति उदासीनता और तटस्थता बढती जाती है। यह दूषित परिस्थिति उन विश्वासो और दार्शनिक निष्पत्तियो को लोकप्रिय बनाने मे सहायता करती है जो समस्याओ का समझ कर आज के सकट की सही समझदारी बनाने के बजाय उन्हे और भ्रमपूर्ण और रहस्यात्मक बनाती है। वे सकट को जीतने की हमे कोई नयी प्रेरणा या विश्वास नही प्रदान करते। युद्ध से त्रस्त लोग असहाय महसूस करते हुए उन पुराने धर्मों और दर्शनो की शरणागत होते है, जा आधुनिक दौर मे अपना महत्त्व खो चुके है या उन दार्शनिक विचारो की ओर रुख करते हैं जो उन्हे निराशावादी और नकारात्मक बनाते हैं। यह दुखद है कि कई मानवीय और सवेदनशील लोग, जिनमे सामाजिक पुनर्रचना के नये आन्दोलन को दिशा देने की आशा की जा सकती थी, जीवन मे पलायन करके किसी धार्मिक रहस्यवाद की शरण मे जा चुके हैं। हम अपने मस्तिष्क से ऐसे दर्शन निकाल देने चाहिए जो जीवन के प्रति अधकार भरा दृष्टिकोण अपनाते है तथा नकारात्मक सोच का व्यक्ति बनाते है। भारत मे हम ऐसी दार्शनिक सोच के अभ्यस्त है जो हमे बताती है कि जीवन एक खोखला स्वप्न है, अवास्तविक है और जो हमे सकट और पीडा के जीवन समुद्र मे पार लगाने के लिए मुक्ति का सदेश देती है। ऐसे दर्शन और पद्धतियाँ हमारा रचमात्र भी हित नही करेगी जिस मनुष्य ने प्रकति पर विजय प्राप्त करके उसे नियन्त्रित कर लिया है वह यह मानने से कर देगा कि शारीरिक ही उसकी नियति

है और वह अपने समक्ष प्रस्तुत समस्याओ के विस्तार से हतोत्साहित नहीं होगा। कुठा और नकारात्मक का दौर अस्थायी है और निश्चित रूप से व्यक्ति उससे ऊपर उठकर जीवन के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण अपनायेगा और समाज को सुन्दर और सुखी बनाने का जो अवसर उसे मिला है, उसे सहज ही न खो देगा। वह अपना चेहरा छिपाकर उस भूत की शरणागत नही होगा, जो हमारे देखते-देखते विलुप्त हो रहा है और जिसके पास हमारी वर्तमान समस्याओ के हल के कोई सूत्र नही है।

जीवन और ब्रह्माण्ड के बारे मे हमारे दृष्टिकोण ने एकात्मकता खो दी है। शिक्षा के क्षेत्र मे विज्ञान और समाजशास्त्री विषयो मे अतर किया जा रहा है। ज्ञान के समग्र स्वरूप के अभाव मे हमारी विचार-पद्धति सपूर्णता नही प्राप्त कर पा रही है। परिणाम यह है कि जहाँ एक मनोवैज्ञानिक अपने विषय के बारे मे तार्किक दृष्टिकोण अपनाता है, वहीं एक दूसरे विषयो के बारे मे परम्परागत सोच का अनुगमन करता है और वैज्ञानिक सिद्धान्तो को मानवीय अनुभवो पर लागू करने की कोई कोशिश नही करता। इसलिए आज वैज्ञानिक सामाजिक विश्लेषण की नैतिक आदर्शों से आवयविक एकता कायम करने की जरूरत है। तभी सामाजिक समस्याओ के निदान मे विज्ञान का प्रयोग अनैतिक नही होगा और वैज्ञानिक ज्ञान के हमारे साधन का उपयोग सार्वजनिक हित के लिए हो सकेगा। साथ ही साथ सर्वसाधारण को समाज की आधुनिक प्रवृतियो के प्रति जागरूक बनाना चाहिए और यह बताना चाहिए कि सहयोगी प्रयासो और अपने सकीर्ण स्वार्थों को सामाजिक हित मे त्याग कर ही सारे लोगो के लिए हम सुखमय जीवन की परिस्थितियाँ बना सकते है।

पूर्ण जीवन एक ऐसे सामाजिक ढाँचे मे सभव है जहाँ व्यक्ति की अपने नैतिक व मानसिक विकास तथा कलात्मक जीवन की अभिव्यक्ति की मुक्त सभावना हो। पहले इस समाज के भौतिक आधार और स्वस्थ वातावरण को बताना होगा ताकि जनसाधारण को निर्धनता और असुरक्षा के भय से मुक्त कराया जा सके। भय और अभाव से मुक्त इस वातावरण मे ही एक नयी सभ्यता पनप सकती है। मनुष्य जाति के ऐतिहासिक विकास मे मानवता यह अगला महत्त्वपूर्ण कदम उठान वाली है और जिन्होने दासता और शोषण से मुक्त बेहतर दुनिया का सपना देखा है उनके जीवन की महानतम अभिलाषा और रुचि सिर्फ एक होगी, और वह यह कि वे अपनी सपूर्ण क्षमता और प्रतिभा का सदुपयोग वृहत्तर मानवता की सेवा मे करेगे। सुलझे हुए और दृष्टि-सम्पन्न लोग अपनी भूमिका पूर्ण-लगन के साथ निभायेगे और हर कही मानवता जाति की एकता और सामुदायिक प्रयासो का सदेश प्रसारित करेगे। यदि मानव को विनाश से बचाना है तो जाति और देश की समस्त सीमाओं को तोडना होगा। हम सौभाग्यशाली हैं कि हम एक ऐसे युग मे रह रहे हैं जहाँ सार्वजनिक हित की अपार और प्रचुर सभावनाएँ उपस्थित हैं और जिनके पास निगाह है वे अपनी नाक के ठीक नीचे एक नये आन्दोलन की रूपरेखा स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। हमे अपना चुनाव दो विकल्पो में से करना है हम मानवता के सपूर्ण--हित मे कार्य करेगे या कि अपने सकीर्ण वर्गीय हित मे। सार्वजनिक हित में सामाजिक पुनर्गठन के सोद्देश्य आन्दोलन में सक्रिय हिस्सेदारी ही आज मेरे जीवन का अर्थ है

राजनीति के कुछ गम्भीर प्रश्न

भारतीय विधान का प्रारम्भ ही इस घोषणा के साथ होता है कि 'भारत एक प्रजातान्त्रिक और असाम्प्रदायिक राज्य है।' हम सभी जानते हैं कि प्रजातन्त्र और असाम्प्रदायिकता की भावनाएँ वैज्ञानिक, बौद्धिक तथा नयी चेतना वाले युग की उपज है। इसलिए यह बुद्धि संगत है कि इन विचारो को भारतीय भूमि में पनपने देने के लिए विचारों और भावनाओ का अनुकूल वातावरण तथा इनकी पुष्टि और जीवन के लिए पोषक पदार्थ प्रचुर मात्रा मे हों।

जादू की छडी घुमाते ही प्रजातन्त्र का वातावरण उपस्थित नही हो जाता; उसके पीछे एक परम्परा होती है और व्यक्ति को अपने स्वभाव में उसे लाना पडता है। सत्य तो यह है कि भारतीय जनता प्रजातान्त्रिक विचारों की नहीं है। इसलिए आज इस बात की बडी आवश्यकता है कि हम अपनी पुरानी आदत को बदलकर अपने चरित्र का नये रूप मे निर्माण करे। मानना पडेगा कि यह कोई सरल कार्य नही और इस दिशा में प्रगति बडी धीमी रहेगी। सतत् सचेष्ट रहकर, अनवरत चेष्टा करते रहने पर ही हम प्रजातान्त्रिक जीवन-पद्धति पर चलने की आशा कर सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, चूँकि हमारे देश मे आवश्यकता से अधिक धार्मिक भावना है इसलिए उसको असाम्प्रदायिकता की ओर मोडने का प्रयत्न करना भी बहुत आवश्यक है।

राष्ट्रीयता को तिलाञ्जलि

आज देश की जो दशा है, उसमे इस दोहरे काम का पूरा होना कठिन हो गया है। धार्मिक आधार पर देश का बँटवारा हो जाने से, दोनो ओर साम्प्रदायिक घृणा का बोलबाला है और फलस्वरूप देश का बौद्धिक और भावनाशील वातावरण पूर्णतया परिवर्तित हो गया है। साम्प्रदायिक उपद्रवो ने हत्या, लूट, आगजनी, बलात्कार और अपहरण का स्थान ले लिया है। साम्प्रदायिकता आज सबके सिरो पर चढकर बोल रही है राष्ट्र की विचारधारा पर आज साम्प्रदायिकता की अपनी विचार-सरणियाँ हावी हो रही हैं। अन्य विचारधाराओं के लिए अभी कोई स्थान नही। हमारा सारा सामाजिक जीवन आज भ्रष्ट हो गया है और हमारा राजनीतिक तथा बौद्धिक जीवन निम्न स्तर पर उतर आया है इसका परिणाम यह हुआ है कि हमारा राजनीतिक चिन्तन अस्त व्यस्त और हमारी उदार भावनाएँ सकुचित हो गयी हैं हमारे नैतिक मूल्य बहुत नीचे गिर गये हैं और अब

हम हर समस्या को एक सम्प्रदाय के सकुचित दृष्टिकोण से देखने लगे हैं। साम्प्रदायिक का मतलब है फिरकापरस्ती की ओर लौट जाना और उस माने मे हमने अपनी राष्ट्रीयता को तिलाञ्जलि दे दी है।

एक बार हमने यह सोचा था कि जब देश मे फिर से शान्ति और व्यवस्था स्थापित हो जायगी, तब राष्ट्र अपने खोये हुए नैतिक सतुलन को पुन शीघ्रता से प्राप्त कर लेगा और स्वतत्रता सगामो के दिनो मे हम जिन उच्च आदर्शों के लिए लडे थे उनको पूरा करने मे द्विगुणित उत्साह से जुट पडेंगे। लेकिन जब ऊपरी ढग से सारी बाते व्यवस्थित हो गयी, तब भी एक न एक प्रश्न, जैसे पहले काश्मीर का, अब हैदराबाद का—साम्प्रदायिक भावना को उभारते रहते है और जन–जीवन अब भी अशान्त बना हुआ है। ऐसा लगता है कि जब तक ये प्रश्न हल नही किये जाते राष्ट्र का नैतिक स्वास्थ्य गिरता ही जायगा। इसलिए आज यह बहुत आवश्यक हो गया है कि इन प्रश्नो का निपटारा शीघ्रता के साथ किया जाय।

प्रतिक्रियावादियो को प्रोत्साहन

लेकिन यह कहते दुख होता है कि सार्वजनिक जीवन मे जिन लोगो को प्रमुख स्थान प्राप्त हे वे परिस्थिति की इस गम्भीरता को अनुभव नही करते। कहाँ तो वे वर्तमान परिस्थिति को बदलने मे अपनी पूरी शक्ति लगाते और कहाँ वे ऐसे सार्वजनिक भाषण तथा प्रचार करते हैं, जिनसे प्रतिगामी और प्रगति-विरोधी शक्तियो को अप्रत्यक्ष रूप मे उत्साह मिलता है। वे यह नही समझते कि ये प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ प्रभावशाली होकर हमे उस नयी जीवन-पद्धति को अपनाने से रोकेंगी, जिसका अपनाया जाना राष्ट्र की रक्षा और विश्व की प्रगति के लिए अत्यन्त आवश्यक है। ऐसी शक्तियाँ अपने राजनीतिक उद्देश्यो की प्राप्ति के लिये मनुष्य की बुद्धि से अपील करने के बजाय परम्परागत विश्वासो और रीतिरिवाजो की दुहाई देती हैं। जनता का ज्ञानवर्द्धन न करके वे उसमें मति भ्रम फैलाने की चेष्टा करती है। राजनीतिक विवाद मे वे हर तरह की ऊलूल–जलूल बाते घसीट लाती है। ऐसा लगता है कि चुनावो का मूल उद्देश्य ही वे आँखो से ओझल कर बैठती हैं। येनकेन प्रकारेण चुनाव जीत लेना ही उनका मुख्य उद्देश्य मालूम होता है। चुनावो के सिलसिले मे मतदाताओ की ज्ञान वृद्धि भी होनी चाहिये, इसकी ओर शायद उनका ध्यान नही जाता।

धर्म के नाम पर

चुनाव का समय ऐसा समय है जब राजनीतिक विवाद को उच्च धरातल पर रखकर स्वस्थ राजनीतिक वातावरण उत्पन्न किया जा सकता है। इस सिलसिले मे लोगो की धार्मिक भावनाओ को भी असाम्प्रदायिक बनाने की चेष्टा की जाती है और राजनीतिक तथा सामाजिक समस्याओ की ओर उसका ध्यान आकर्षित किया जाता है लेकिन जब हमारे नेता धार्मिक मच पर खडे होकर जनता से वोट देने के लिए अपील

करते हैं, तब जादू और अन्धविश्वास का वातावरण उत्पन्न न हो तो क्या हो ? जब कोई नेता मतदाताओ से कहता है कि अमुक व्यक्तियो को ही वोट दो, अन्यथा ईश्वर तुम पर कुपित हो जायगा, तब ऐसा लगता है मानो वह ईश्वर को औरो से अधिक जानने का दावा रखता है। यह स्पष्ट है कि इस प्रकार के दावे मे कोई तथ्य नही हे, लेकिन इससे तो इतना होता ही है कि जो लोग ईश्वर मे विश्वास करते हे, उनके दिल मे झूठमूठ एक भय घर कर जाता है।

सस्कृति के नाम पर

भारतीय सस्कृति की कई बाते प्रशसा ओर रक्षा के योग्य हे, लेकिन हमारी परम्परागत सस्कृति के नाम पर जितनी चीजे चलती हैं, उन सबकी प्रशसा और रक्षा नही होनी चाहिये। घिसे–घिसाये विचारो, जीर्णशीर्ण सामाजिक सिद्धान्तो और मतवादो से हमे हानि ही पहुँच सकती है। परम्परा से चले आने वाले कुछ विचार तो आज की परिस्थिति मे बिलकुल असगत हो गये हैं और उनका तिरस्कार आवश्यक हे। सावधानी से हमे अपनी प्राचीन सस्कृति के उन अगो को चुनना हे जो हमारी वर्तमान समस्याओ को सुलझाने मे समर्थ हो। लेकिन यदि कोई प्रमुख सार्वजनिक नेता प्राचीन भारतीय सस्कृति के नाम पर अपना चित्र रखे बिना, वोटरो से अपील करता हे तो वोटरो पर निस्सन्देह यही प्रभाव पडेगा कि नेता प्राचीन भारतीय संस्कृति के उन सभी परम्परागत विश्वासो तथा रीति–रिवाजो की प्रशसा कर रहा है, जो साधारण जन को बहुत प्रिय है और जिनको वे बहुत आदर की दृष्टि स देखते है। ये सारी बाते केवल इसलिए कही जाती हैं कि अपने राजनीतिक विरोधी को नीचा दिखाया जा सके और जनता के सामने उसे भौतिकवादी तथा अपनी सस्कृति को घृणा करने वाले के रूप मे चित्रित किया जा सके। इस तरह की अपील एक प्रतिगामी नारा बनकर रह जाती है और असाम्प्रदायिक राज्य ओर प्रजातन्त्र को दृढ़ करने मे इससे कोई मदद नही मिलती।

एक प्रमुख नेता ने तो यहॉ तक कहा है कि ईश्वर मे आस्था होना भारतीय सस्कृति का अविभाज्य अग है। कई लोग इस बात की सत्यता पर सन्देह करेगे कि ईश्वर पर विश्वास किये बिना भी मनुष्य धार्मिक जीवन व्यतीत कर सकता है। दूसरो को इसमे विरोधाभास भले ही लगे, किन्तु भारत के विषय मे यह शब्दश सत्य है। ईश्वर मे आस्था होना भारतीय सस्कृति का आवश्यक अंग नहीं है। इस देश में कई ऐसे धार्मिक मतवाद प्रचलित हुए जिन्होने अपने अनुयायियो के लिए ईश्वर के प्रति विश्वास को शर्त नही बनाया। भारतीय सस्कृति की मूल आत्मा और उसका सार इससे बिलकुल भिन्न है। वह विश्व के नैतिक शासन मे विश्वास करता है। इस स्थल पर इसकी विस्तृत विवेचना असगत होगी, फिर भी ठीक परिस्थिति का स्पष्टीकरण आवश्यक है, क्योकि इसके बिना यह भ्रम हो सकता है कि भारतीय सस्कृति अत्यधिक धार्मिक है। कोई भी राज्य अपनी जनता की सस्कृति से अलग नही रह सकता। राज्य का यह प्रधान कर्त्तव्य होना चाहिये कि वह अपनी जनता की सस्कृति को दूसरो मे फैलावे और विश्वविद्यालयो के द्वारा भावी सस्कृति के लिए इसकी विरासत देने का प्रबन्ध करे

हमारी सच्ची संस्कृति

भारतीय सस्कृति के एक 'विद्वान् समर्थक' के कथन का एक ही मतलब हो सकता था कि चुनाव मे खडे हुए उसके विरोधी उम्मेदवार नास्तिक और भारतीय सस्कृति के द्रोही थे। लेकिन जो अपनी सस्कृति का शत्रु है, वह स्वय का शत्रु है। हमको केवल यह याद रखना है कि सस्कृति जड नही होती, इतिहास के किसी युग मे यदि वह ह्रासोन्मुख होती है तो किसी युग मे विकासोन्मुख। हमारी सस्कृति के दो पहलू रहे है। एक व्यक्तिवादी और दूसरा समष्टिवादी अर्थात् विश्वजनीन। आधुनिक युग मे हमे अपनी सस्कृति के विश्वजनीन पहलू पर ही जोर देना है। हमे यह भी याद रखना चाहिये कि जब कभी हमने अपनी सस्कृति के इस पहलू पर ध्यान केन्द्रित किया, भारत का गौरव बौद्धिक और सास्कृतिक क्षेत्रो मे अत्यधिक बढा। यदि हम विश्वप्रेम की इस भावना को जो मानव मात्र के प्रति प्रेम उपजाती है, फिर अपना ले तो हम अपने देश को उसी उच्च पद पर पहुँचा सकते हैं।

राजनीति और धर्म

यही एक तरीका है जिससे हम अपनी सकुचित परिधि से निकलकर असाम्प्रदायिक ढग पर सोच सकेगे। हम एक ऐसे संसार मे रह रहे हैं जिसमे क्रान्तिकारी परिवर्तन हो चुके हैं। हमसे उसका नया तकाजा है। इस नयी परिस्थिति का सामना हम तभी कर सकेगे जब हममे वही उदारता, सहिष्णुता और मैत्रीभाव हो जो हमारी सस्कृति की विशेषता रहे हैं। भारतीय सस्कृति का हित हम उसकी कुछ गली-सडी परम्पराओ से चिपके रहकर नही कर सकते। इसके लिए तो हमे उसके सार को ही ग्रहण करना पडेगा। सक्षेप मे, यदि हम सचमुच चाहते है कि अपने राष्ट्र का सगठन असाम्प्रदायिक आधार पर करें तो हमे राजनीति मे धर्म का हस्तक्षेप रोकना ही होगा।

विरोधी दल का भारतीयकरण

पहले मैंने कहा है कि हमारे देश के बिरले लोगो मे ही प्रजातान्त्रिक चरित्र या व्यवहार पाया जाता है। उसको स्थापित करने के लिए हमे अपनी सारी सद्भावना और शक्ति लगानी पडेगी। बच्चो मे प्रजातान्त्रिक स्वभाव शिक्षा के द्वारा ही उत्पन्न किया जा सकता है। लेकिन राजनीतिक स्तर पर शासनारूढ दल को यह स्वीकार करना चाहिये कि प्रजातन्त्र की स्थापना के लिए विरोधी दल का होना आवश्यक है। लेकिन जब कभी वैधानिक स्वतत्रता पर जोर दिया जाता है और विरोधी दल के सघटन की आवश्यकता बतलायी जाती है तब सरकारी गद्दियो पर बैठे लोग इसकी जरूरत से इन्कार कर देते हैं। और यह सब कुछ किया जाता है भारतीय परम्परा के नाम पर। विरोधी दल की माँग को शान्त करने के लिए हाल में ही यह नुस्खा अपनाया गया है। यह कहा जाता है कि पश्चिमी पद्धति का अनुकरण किये बिना ही भारत अपने यहाँ का विकास कर सकता है और ऐसा करते हुए वह उन अच्छी बातो को छोड सकता है जिनको पश्चिम

मे प्रजातत्र के निर्माण के लिए आवश्यक अग समझा जाता है। उनकी यह भारतीय परम्परा तब नहीं टूटती जब विधान-परिषद् मे यूरोपीय देशो के विधान जैसे के तैसे स्वीकार कर लिये जाते हैं। लेकिन उस प्रजातान्त्रिक विधान की सुरक्षा के लिए जब एक आवश्यक बात सुझायी जाती है जो सदियो के अनुभव का निचोड है, तब भारतीय परम्परा जैसी एक रहस्यात्मक वस्तु के नाम पर उसका विरोध किया जाता है। भारतीय परम्परा के इन समर्थको को हमारी नेक सलाह है कि पूर्वजो के इस सन्नियम का वे पालन करे कि एक निश्चित आयु के बाद वे सामाजिक जीवन से सन्यास ले लिया करे। यदि हमारे मन्त्रिगण और राजनीतिज्ञ 60 वर्ष की आयु मे सार्वजनिक क्षेत्र से अलग हो जाया करे तो शासन और जनता दोनो का बडा भला होगा। मैं सुझाव दूँगा कि भारत के नये प्रस्तावित विधान मे इस प्रकार का एक नियम जोड दिया जाय। आज की नयी समस्याओ को सुलझाने और शासन चलाने के लिए तो हमे ऐसे नवयुवको की आवश्यकता है, जिनके पास उत्साह और नया दृष्टिकोण हो। जीवन से थके हुए और पुरानी परिपाटी पर सोचने वाले मनुष्य तो गडबडघोटाला ही करेगे। यदि कर्मचारियो के लिए एक निश्चित उम्र के बाद नौकरी से अलग हो जाने की शर्त है, तो कोई कारण नही कि मन्त्रियों को उस नियम से बरी किया जाय। हम एक ऐसे गतिशील युग मे रह रहे हैं, जिसमे प्रतिक्षण परिवर्तन हो रहा है। बुजुर्ग लोगो से यह उम्मीद नही की जा सकती कि बदलती हुई हालतो मे भी वे उतनी ही तत्परता और शीघ्रता से काम कर सकेगे।

तानाशाही की ओर

अगर आप विरोधी दल की आवश्यकता से इनकार करते हैं तो इसका मतलब यह है कि आप निरकुश शासन का समर्थन कर रहे है। भारतीय सरकारे धीरे-धीरे अधिनायकवाद की ओर झुक रही है। उनका यह दावा है कि वर्तमान शासन-व्यवस्था बिल्कुल ठीक है और उसका समर्थन करना चाहिये। राष्ट्रीय सरकार के नाम पर जनता से यह अपील की जाती है कि वह इसको समझदारी और न्याय का ठेकेदार मानकर इस पर विश्वास करे। हमारे शासक आज अपनी आलोचना बर्दाश्त नही कर सकते। उन्हे अपने निर्णय पर अत्यधिक भरोसा है, बल्कि मैं कह सकता हूँ कि वर्तमान संकटकाल मे किसी की सहायता के बिना ही सामना करने का उनको अत्यधिक गर्व है।

जनता मे आतंक

लेकिन मुझे सबसे अधिक दु ख यह देखकर हुआ है कि आज अधिकाश जनता पर काग्रेस के अधिकारियो का आतक बैठ गया है। जो काग्रेसजन--काग्रेस और सरकार दोनो मे उच्च पद पर है, उनसे जनता बहुत डरती है। सम्भवत वह काग्रेसजनो से अधिक भय खाती है, क्योकि वे अपने असीम अधिकारो से उसे हानि पहुँचाना चाहते हैं।

प्राप्ति के पूर्व का प्यार आज भय और घृणा में बदल गया है इस भय का क्षेत्र बहुत विस्तृत हो गया है और जनता की गतिविधि पगु हो गयी है की शिक्षाओं

का सार था निर्भयता। लेकिन आज तो उनके तथाकथित अनुयायी ही जनता में भय उत्पन्न करने के उत्तरदायी हो रहे है। और जहाँ निर्भयता नही वहाँ प्रजातन्त्र कभी सफल नही हो सकता। सीधी-सादी बात तो यह है कि आज जनता स्वतत्रता की आभा का अनुभव नही करती। फलत राजनीतिक असफलता सामने है, जो क्रमश राजनीतिक असन्तोष और उदासीनता मे परिणत होती जा रही है।

इन सारी बातो का एक ही कारण है कि आज काग्रेस की राजनीति गन्दी हो गयी है। अब राजनीति अधिकार और धन-प्राप्ति का एक साधन मात्र बन गयी है। काग्रेस की राजनीति आज पहले की तरह जनता को नये सत्यो का दर्शन कराने के लिए सघर्ष नही करती, ससार को पहले से अच्छा बनाने के लिए अब वह प्रयत्न नही कर रही है। काग्रेस जनो की सामाजिक चेतना मन्द पड गयी है और ऐसा लगता है कि काग्रेरा की आत्मा को लकवा मार गया है और यह इसलिए हुआ है कि काग्रेस आज आन्दोलन नही रह गयी।

जनता को अब पहले की तरह इसस प्रेरणा नही मिलती। इससे केवल उन्ही लोगों को प्रेरणा मिलती है जो इसकी सेवाओ के बल पर मत्रियो और सभा सचिवो के पद पर पहुँच गये हैं और यह भी इसलिए क्योकि उनको भ्रम है कि वे जनता की सेवा कर रहे है।

इसलिए या तो काग्रेस को खत्म हो जाना चाहिये या उसे अपना कायाकल्प करना चाहिये। देश का सबसे बडा राजनीतिक सगठन होने के कारण इसका उत्तरदायित्व भी महान् है। उसका कर्त्तव्य है कि यह जनता मे गौरव और निर्भयता की नयी भावना भरे और एक नयी दिशा का निर्देश करे। आज की यह सबसे बडी आवश्यकता है।

दो महत्त्वपूर्ण पत्र

आर्थिक कार्यक्रम की आवश्यकता

जवाहरलाल नेहरू के नाम आचार्य नरेन्द्रदेव का पत्र*

बनारस

9 2 1929

प्रिय जवाहरलाल जी,

पाडुलिपि मिली। मै उसे देख रहा हूँ और अपनी राय आपको जल्दी ही लिखूँगा। आपके प्रश्नो के भी उत्तर देने की मे कोशिश करूँगा।

जहाँ तक लीग की बात है, मै आपसे खुलकर यह स्वीकार कर सकता हूँ कि मेरी वर्तमान राय मे उसका कोई उज्ज्वल भविष्य नजर नही आता है। हमारे बीच ऐसे तत्पर लोगो के एक सुगठित समूह का अभाव है जिनकी किन्ही आर्थिक कार्यक्रमो मे जीवन्त निष्ठा हो।

एक नये आधार पर अपने समाज का पुनर्निर्माण करने का विश्वास सामान्यत हम सबका हो सकता है, पर समाज के जिन सामाजिक और आर्थिक सिद्धान्तो के आधार पर पुनर्रचना होनी है, उनके बारे मे जब तक हमारी समझ स्पष्ट न हो और जब तक हम यह न जाने कि इस काम को आगे कैसे बढाना है तब तक हमारी आस्थाओ मे गहराई नही आती और इसलिए हमारे काम मे ही गभीरता नही आ पाती। हमारे चारो तरफ जो उदासीनता है, वह मेरी समझ मे मुख्यत किसी बौद्धिक निष्ठा के अभाव के कारण ही है। इसीलिए मै सोचता हूँ कि हमारे सामने मुख्य काम है बौद्धिक खुराक के द्वारा लोगो को प्रेरित करना। यदि जरूरी कोष जुट जाय तो इस काम के लिए लीग को एक साप्ताहिक पत्र निकालना चाहिए और पुस्तको की अपनी एक दुकान भी रखनी चाहिए जहाँ पर ऐसा साहित्य सुलभ रहा करे। लीग को स्टडी सर्किल भी शुरू करने चाहिए और भारतीय भाषाओ मे कम दाम पर साहित्य सुलभ कराना चाहिए। मेरी समझ से यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण काम है जिसकी तरफ इस साल हमे ध्यान देना चाहिए अन्यथा मेरी विनम्र राय मे कोई नीव नही डाली जा सकेगी। इस समय लीग में ऐसे मुट्ठी भर लोग ही हैं जिनके इस विषय पर कोई निश्चित और स्पष्ट विचार हो और जो एक सतोषप्रद आर्थिक कार्यक्रम तैयार करने मे सक्षम माने जा सकते हो। लीग का ध्यान इस मुद्दे पर केन्द्रित हो, यह आपसे मेरा अनुरोध है।

अपने अस्तित्व का औचित्य स्थापित करने योग्य, लगभग कुछ भी हम अब तक नही कर सके है। लीग की मुख्य पहचान है नये आधार पर समाज की नव रचना। स्वभावत लोग जानना चाहते हैं कि यह नया आधार हो ॥ क्या और लक्ष्य की प्राप्ति के

* आदालन के दस्तावेज खड 1 मूल अग्रेजी

लिए लीग क्या साधन अपनायेगी। वे सिर्फ राजनीतिक आजादी के लक्ष्य से सन्तुष्ट नही हैं। कलकत्ता मे चारो ओर से मुझ पर सवालो की बौछार हुई। सामान्य भावना यह नजर आती है कि जो उम्मीदे लीग ने शुरू मे पैदा की थी उन्हे वह पूरा नही कर रही है। कुछ लोग सोचते है कि लीग को शुरू करने का मात्र उद्देश्य था काग्रेस मे स्वतन्त्रता के मुद्दे पर संघर्ष और जब वह सघर्ष पूरा हो गया है, तो लीग के एक दिन भी अधिक रहने की कोई जरूरत नही है। कुछ दूसरे हैं, जिनकी आजादी में आस्था है, आदर्शों और लक्ष्यो की उन्हे ज्यादा परवाह नहीं है, तात्कालिक कार्य की दृष्टि से जानदार कार्यक्रम की ही उन्हे फिक्र है। काग्रेस का रचनात्मक कार्यक्रम उन्हे नीरस और बेजान लगता है और जब हमने भी देश के सामने एक बेहतर कार्यक्रम नही रखा है, तब स्वाभाविक ही वे लीग मे आने को उत्साहित नही है। हमारे लोग भी उदासीन हैं। बार–बार याद दिलाने पर भी वे जवाब नही देते। कुछ दोस्त तो चिट्ठी पाने की भी सूचना नही देते।

आप जानते हैं कि जब मैंने मत्री का पद स्वीकार किया, तो मैंने बिल्कुल स्पष्ट बता दिया था कि विद्यापीठ के मेरे मौजूदा कर्त्तव्य मुझे देश मे घूमने का वक्त नही निकालने देगे। मै तो यही से लिखा-पढी कर सकता हूँ। पर कोई जवाब ही न आये तो और इससे आगे मैं कुछ नही कर सकता।

यदि चीजे नही बदलती तो मौजूदा परिस्थितियो मे हम समृद्ध होने की उम्मीद नही कर सकते।

यदि सभव हो तो लीग को एक आर्थिक कार्यक्रम बनाना चाहिए। मैं नही समझता कि प्रान्तीय लीगो को अपना कार्यक्रम अलग से तैयार करने की छूट दी जानी चाहिए। यह घातक सिद्ध होगा। यदि ऐसी छूट दी जाती है, जेसा कि आप कहते हैं तो बहुत सभव है कि परस्पर टकराने वाले कार्यक्रम सामने आये और उससे विभ्रम की स्थिति अधिक गहरी हो। लीग का एक कार्यक्रम होना चाहिए और उसे एक स्वर से बोलना चाहिए।

मेरा विचार है कि आपके अन्य सुझाव, जो प्रान्तीय शाखाओ द्वारा केन्द्रीय परिषद् को अपने-अपने सुझाव भेजे जाने की बाबत है, स्वीकार किये जाने चाहिए। उस स्थिति मे, कार्यक्रमो का आपका मसविदा हमारी कमेटी द्वारा बहस का एक आधार मान लिया जाना चाहिए।

यदि केन्द्रीय परिषद् को एक आर्थिक कार्यक्रम तैयार करने और देश के लिए एक योजना प्रस्तुत करने को तैयार किया जा सके तो बेहतर होगा। किसी हालत मे मुझे लगता है कि ऊपर मैंने जिस कार्य की रूपरेखा प्रस्तुत की है वह केन्द्रीय परिषदो के संदर्भ-निर्देश के बिना भी प्रान्तीय लोगों द्वाराहाथ मे लिया जा सकता है।

प्रान्तीय समिति की अगली बैठक आगामी 24 तारीख को लखनऊ मे होगी। आपको औपचारिक सूचना शीघ्र ही भैजी जाएगी।

आपका

नरेन्द्र देव

गाँधीजी का नरेन्द्रदेव के नाम पत्र*

बनारस

2 अगस्त, 1934

प्रिय नरेन्द्रदेव,

थोडे दिन आपके साथ रहते हुए और आपके आतिथ्य का सुख भोगते हुए दो बार समाजवादी मित्रो के साथ मेरी हार्दिक भेट हुई , उसके लिए मै आपका बहुत ही आभारी हूँ।

आपके कार्यक्रम के मसौदे को पढने और उसकी आलोचना करने का मैंने आपसे वायदा किया था। जितने ध्यान से मैं पढना चाहता था, उतने ध्यान से उसे नही पढ पाया हूँ। इसलिए इसे किसी भी तरह विस्तृत नहीं, एक सरसरी आलोचना ही समझना चाहिए।

मेरे ख्याल से जब तक आप इस दल को काग्रेस सगठन का अग बनाने की अनुमति न मॉगे, इसे 'काग्रेस समाजवादी दल' कहना गलत हैं, पर इसे 'काग्रेस जनो का अखिल भारतीय समाजवादी दल' कहना पूर्णतया उचित होगा। मुझे यकीन है कि इस अन्तर के महत्त्व को आप समझ जायेगे।

काग्रेस का न्यायोचित और शान्तिपूर्ण उपाया से पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने का जो उद्देश्य है, आपके सविधान के मसौदे मे मुझे उसकी स्वीकृति नही मिली।

यदि उसे जान-बूझकर छोड दिया गया है तो मैं यह बात समझ सकता हूँ, क्योकि आपका उद्देश्य काग्रेस के उद्देश्य से बहुत भिन्न है। आपका शायद यह दावा है कि वह कांग्रेस के उद्देश्य से कही प्रगतिशील है। फिर भी, आप अपने को कांग्रेस का एक दल नही कह सकते।

काग्रेस का उद्देश्य स्वाधीन राज्य स्थापित करना है। वह राज्य किस तरह का होगा, इसका हम अभी धुँधला-सा अनुमान ही लगा सकते हैं। उसकी कुछ विशेषताएँ हम निर्धारित कर चुके है। अनुभव हमे रोज यह सिखा रहा है कि उनमे नई चीजे जोडनी होगी। परन्तु समाजवादी उद्देश्य का आपका जो प्रतिपादन है, वह मुझे भयभीत करता है तीनों सिद्धान्तो के फलितार्थ इतने व्यापक हैं कि मेरी समझ से बाहर हैं। वे कार्यक्रम को नशीला बना देते है, जबकि सभी तरह के नशो से मुझे डर लगता है।

* आचार्य नरेन्द्रदेव ने गॉधीजी से अनुरोध किया था कि वे काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के पूरे कार्यक्रम पर विस्तार से अपनी राय दें उसी के उत्तर में गाँधीजी ने यह पत्र लिखा सम्पूर्ण गॉधी खण्ड 58 पृष्ठ 287-89 आदोलन के दस्तावेज मूल अग्रेजी

अब मैं, दृष्टान्त के रूप मे आपके कार्यक्रम के उन मुद्दो को लेता हूँ जो मुझे आपत्तिजनक लगते है। 7 और 8 मुद्दे काग्रेस की वर्तमान नीति के प्रतिकूल है। यद्यपि जीवन–भर मैं अपने को जन-साधारण के साथ एकाकार करता आया हूँ और निजी सम्पत्ति का मैंने त्याग कर दिया है, फिर भी मेरा इरादा नरेशो और जमीदारो को खत्म करने का नही है और न जमीन को फिर से किसानों मे बॉटने का ही है। मेरा लक्ष्य नरेशो और जमीदारो को सुधारना है। जमीन का जबर्दस्ती फिर से बँटवारा किये बिना गुजारो के लिए ऐसे अधिकार प्राप्त किये जा सकते है जो वस्तुत मिल्कियत जैसे ही होगे। 11वॉ मुद्दा, जिसका 7–8 मुद्दा, जिसका 7–8 और कुछ अन्य मुद्दे खण्डन करते लगते हैं, मुझे पसद है। आवश्यकताओ के पहले यदि आप 'न्यायोचित' शब्द रख सके, तो मेरी राय मे हरेक को उसकी 'आवश्यकताओ के अनुसार एक निर्दोष सूत्र हो सकता है। हमारे करोडो ' मे जो सबसे असहाय और बेसहारा हैं, उनके लिए आप जो-कुछ भी चाह सकते है उस सबका सार अकेले इसी सूत्र मे आ जाता है। आपका पॉचवा तरीका, जैसा मै उसे समझा हूँ, अहिसा का प्रतिवाद है। सवैधानिक प्रश्न पर ब्रिटिश सरकार के साथ किसी भी अवस्था मे बातचीत के लिए तैयार न होने मे क्या औचित्य है, मै समझ नही पा रहा हूँ। काग्रेस ने यह नीति उस समय भी नही अपनाई थी, जब असहयोग पूरे जोर पर था। मुझे यकीन है कि यह चीज अधीर होकर ही डाल दी गई है।

आपकी ' मजदूरो और किसानो की आम हडताले ', जिन पर किसी तरह का कोई प्रतिबन्ध नही है, सयत और अहिसात्मक कार्यक्रम के लिए बहुत ही खतरनाक है।

आपकी तात्कालिक मॉगे, केवल कुछ मुद्दो को छोडकर, आकर्षक है। पर आपक तरीको में मुझे ऐसा कुछ नही मिला जो यह दिखाये कि आपको तुरन्त उनकी प्राप्ति की कोई आशा है।

कुछ बहुत ही स्पष्ट चीजें छूट गई हैं, जिनकी ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ

अस्पृश्यता–निवारण।

साम्प्रदायिक एकता।

खद्दर जन-साधारण से एकात्मता का प्रतीक है और साल मे चार-छ महीने बेकार रहने वाले लाखो लोग, जब तक उन्हे कोई और बेहतर धन्धा न मिल जाये, इस धन्धे को तुरन्त अपना सकते हैं।

मद्य और मादक पदार्थों का पूर्ण निषेध।

मैं इस बात के पक्ष मे हूँ कि समूचे सविधान का कडाई से सशोधन होना चाहिए। हम दोनों के मार्ग में भारी अडचन यह है कि जवाहरलाल, जिन्होने हमे समाजवाद का मन्त्र दिया, हमारे बीच मे नहीं हैं। मैं यह समझता हूँ कि जब मुझे और अन्य बूढो को विश्राम की अनुमति मिल जायेगी जिसके कि हम सर्वथा अधिकारी हैं तो काग्रेस के कॉटो के ताज का उन्हें ही होना है मेरा ऐसा विश्वास है कि यदि वे

हमारे बीच मे होते तो गति धीरे-धीरे तेज करते। मेरा सुझाव यह है कि आप वैज्ञानिक समाजवाद की बजाय जैसा कि आपके कार्यक्रम को नाम दिया गया है, देश को व्यावहारिक समाजवाद दे, जो भारतीय परिस्थितियो के अनुरूप हो। मुझे इस बात की खुशी है कि जो कार्यक्रम आपने मुझे दिया है वह, इसी उद्देश्य के लिए नियुक्त एक प्रभावशाली समिति द्वारा तैयार किया होने पर भी, अभी एक मसौदा ही है। इसलिए अपने कार्यक्रम को अन्तिम रूप देते हुए यदि आप ऐसे लोगो से सहयोग करे जिनका झुकाव समाजवाद की ओर हो और जिन्हे वास्तविक परिस्थितियो का अनुभव हो, तो वह बुद्धिमत्ता होगी।

हृदय से आपका

मो. क गाँधी

आचार्य नरेन्द्र साहित्य

Acharya Narendra Dev, (Birth Centenary Volume)
Edited by
Prem Bhasin, Madhu Limaye,
Hari Dev Sharma,
Vinod Prasad Singh ,
Radiant Publishers,

Acharya Narendra Dev (Commemoration Volume)
Centre of Applied Politics,
B-54 Connaught Place, New Delhi

Selected Works of Acharya Narendra Dev
Volume One (1928-1940)
Volume Two (1941-1948)
Volume Three (1948-1952)
Volume Four (1952-1956)
Edited by Hari Dev Sharma , Radiant Publishers

आचार्य नरेन्द्र देव (जन्मशती ग्रथ)
सपादक, प्रेम भसीन, मधु लिमये, हरिदेव शर्मा, विनोदप्रसाद सिह
रेडियन्ट पब्लिशर्स

राष्ट्रीयता और समाजवाद,
आचार्य नरेन्द्र देव, ज्ञान मडल प्रकाशन, वाराणसी

आचार्य नरेन्द्र देव—युग और विचार,
जगदीश चन्द्र दीक्षित
सचना एव जनसम्पर्क विभाग उत्तर प्रदेश

आचार्य नरेन्द्र देव : महत्त्वपूर्ण जीवन तिथियाँ

31 अक्टूबर 1889	जन्म (सीतापुर)
1891	पिता के साथ फैजाबाद
1902	शिक्षारम्भ (फैजाबाद)
1911	बी ए (इलाहाबाद)
1913	एम ए, क्वीस कालेज, काशी
1915	एल-एल बी, इलाहाबाद
1915	फैजाबाद मे वकालत
1916	फैजाबाद मे होम रूल लीग की शाखा का गठन।
1921	काशी विद्यापीठ मे अध्यापन प्रारम्भ।
1930	सविनय अवज्ञा मे पहली बार जेल।
1932	फिर जेल
17 मई 1934	अ भा काग्रेस समाजवादी पार्टी की स्थापना, सम्मेलन के अध्यक्ष।
1936	यू पी प्रान्तीय काग्रेस के अध्यक्ष व काग्रेस कार्य समिति के सदस्य मनोनीत।
1937	सयुक्त प्रान्त विधान सभा के सदस्य निर्वाचित।
1941	व्यक्तिगत सत्याग्रह मे गिरफ्तार।
9 अगस्त 1942	काग्रेस कार्य समिति के सदस्यो के साथ गिरफ्तार होकर अहमदनगर जेल मे नजरबन्द।
1946	सयुक्त प्रान्त विधान सभा के सदस्य निर्विरोध निर्वाचित।
1947	लखनऊ विश्वविद्यालय के उप–कुलपति नियुक्त।
मार्च 1948	काग्रेस समाजवादी पार्टी के नासिक निर्णय के अनुसार काग्रेस और विधान सभा से त्याग-पत्र।
1952	क … नियुक्त और राज्य

	सभा मे एम पी निर्वाचित, चीनी सास्कृतिक मिशन मे चीन यात्रा।
1954	योरोप मे स्वास्थ्य लाभ के लिए यात्रा और नागपुर प्रसोपा सम्मेलन के अध्यक्ष।
1955	गया प्रसोपा सम्मेलन के अध्यक्ष।
19 फरवरी 1956	पेन्दुराई (मद्रास) मे देहावसान।



लोकनायक जयप्रकाश नारायण

पटना नगर से पचास मील दूर गगा और सरयू नदी के मध्य सिताब दियारा गॉव बसा है। दो धाराओ के मध्य टापूनुमा जगह को भोजपुरी भाषा मे दियारा कहते हैं। ऐसी जगह पर नदियो की बाढ से रेतीली मिट्टी अक्सर उपजाऊ हो जाती है तथा वहॉ लोग आबाद हो जाते हैं। सिताब दियारा ऐसा ही एक बडा गॉव है जिसे कभी राजा सिताब राय ने बसाया था। इसीलिए गाव का नाम सिताब दियारा पड गया। गाव मे 22 टोले है। इन्ही टोले में से एक कायस्थ टोला मे बाबू देवकीनन्दनलाल रहते थे जो अग्रेजी पढाई पढ कर पुलिस के दरोगा बने थे। उनके पुत्र बाबू हरसूदयाल थे। उन्होने भी अग्रेजी शिक्षा प्राप्त की। नहर विभाग मे जिलेदार बने तथा रेवेन्यू असिस्टेन्ट के पद से रिटायर हुए।

बाबू हरसूदयाल का विवाह छपरा जिले के एक जमीदार परिवार मे फूलरानी के साथ हुआ था। फूलरानी अत्यत सौम्य ममता की मूर्ति साक्षात देवी समान थी। इन्ही की कोख से 11 अक्टूबर 1902 को जयप्रकाश नारायण का जन्म हुआ। जयप्रकाश नारायण अपनी माता–पिता की चौथी सन्तान थे। यह कुल छ भाई-बहन थे। किन्तु आज इस परिवार को देश जयप्रकाश नारायण जी के कारण ही जानता है।

जयप्रकाश नारायण अर्थात "विजय की ज्योति"– जिनको युवावस्था मे उनके तिलस्मी व्यक्तित्व के कारण देश की जनता ने 'युवा हृदय सम्राट' कहा, अधेड उम्र मे समाजवाद एव सर्वोदय के प्रचारक हो गये वृद्धावस्था मे जब उन्होने निरकुश शासन को हिलाया और उसके अंहकार और दभ को तोडा तो देश की जनता ने उन्हे "लोकनायक कहा। उनके व्यक्तित्व की गरिमा, उनके स्वभाव की विनम्रता उनके चेहरे की आभा ने उन्हें राजनीतिक ऋषि का दर्जा दे दिया था। जब वह सरकार पर प्रहार करते तो ऐसा प्रतीत होता कि सैकडो धनुष टकार कर रहे हो, देश की दुर्दशा पर जब वह अपने भावुक स्वभाव के कारण रो देते तो अपार जनता की ऑखो मे ऑसू जारी हो जाते और शायद उस बाढ के लिए समुद्र मे जगह न बचती। हृदय के तारो को छू देने वाले उनके भाषणो से ऐसा प्रतीत होता कि मानो गौतम बुद्ध उपदेश दे रहे हैं। जनता तल्लीन होकर उनके भाषण को सुनती। उनके अनन्य मित्र डा राममनोहर लोहिया कहते थे, "देश को हिलाने की ताकत केवल जयप्रकाश मे है।" किन्तु उनके हृदय की सरलता और भोलेपन पर शक करते हुए लोहिया कहते 'बशर्ते वह खुद न हिर्ले दक्षिण एव वाम के बीच उनके व्यक्तित्व के इसी गुण को राजनीति करने वालो ने दोष माना है किन्तु

विनोबा जी कहते है--

"मुझे उनके हृदय की सरलता बहुत प्रिय है। इसी सरलता के कारण उनके बारे मे काफी गलतफहमी भी होती है, और इसी सरलता के कारण वे स्वय भी कोई भूल चूक कर सकते है।"

"जवाहरलाल के बाद प्रधानमत्री के रूप मे जयप्रकाश का नाम लिया जाता था। परन्तु जयप्रकाश ने कभी सत्ता ली नही। उन्हे सत्ता की अभिलाषा रही नही। दूसरी बात वह गृहस्थ होकर भी ब्रह्मचर्य का पालन करते रहे। किन्तु वह इतने विनम्र है कि बहुत कम लोगो को उनकी इस विशेषता का पता है। गाधी, अरविन्द और रामकृष्ण की बात तो प्रकट है किन्तु जयप्रकाश के ब्रह्मचर्य को कोई जानता नही। उनकी तीसरी विशेषता है नम्रता, सरलता और स्नेह।"

जयप्रकाश नारायण जीवन की असफलताओ से कभी निराश नही हुए। उन्होने अगस्त 75 को चडीगढ जल में स्वय स्वीकार किया--

सफलता और विफलता की
परिभाषाएँ भिन्न है मेरी
इतिहास से पूछो कि वर्षो पूर्व
बन नहीं सकता था प्रधानमंत्री क्या ?
किन्तु मुझ क्रातिशोधक के लिए
कुछ अन्य ही पथ मान्य थे, उद्दिष्ट थे,
पथ त्याग के, सेवा के, निर्माण के
पथ सघर्ष के, सम्पूर्ण क्राति के
जग जिन्हे कहता विफलता
थी शोध की वह मज़िले।

जयप्रकाश नारायण जिन्हें प्यार से उनके सोशलिस्ट मित्र 'जे पी' कहते थे और बाद मे यही नाम लोकप्रिय हो गया था, का बचपन माता--पिता के लाड प्यार मे बीता। प्रारम्भिक शिक्षा गॉव के ही स्कूल मे ही हुई। आगे की पढाई के लिए वह सिलाब दियारा छोडकर पटना पहुँचे। पटना मे वह कालेजिएट स्कूल मे सातवी कक्षा मे भर्ती हुए। जयप्रकाश का स्कूल पटना के अच्छे स्कूलो मे था। जयप्रकाश जी के मन मे हाईस्कूल के शिक्षक का बहुत सम्मान था। जे पी उनको बहुत आदर के साथ याद करते थे। जे पी की पढाई के अतिरिक्त उनके चरित्र निर्माण मे उनका बहुत बडा हाथ था। बाद मे 'विटमोर' नामक हेड मास्टर स्कूल में आये। उन्होने भी बच्चो की पढाई मे विशेष रुचि ली

जयप्रकाश नारायण एक अध्ययनशील विद्यार्थी थे। अपनी कक्षा के चन्द प्रतिभाशाली छात्रों मे उनकी गिनती होती थी। सन् 1919 मे 17 वर्ष की आयु मे उन्होने मैट्रिक की परीक्षा पास की थी। गणित मे उन्हे 98 प्रतिशत नम्बर मिले थे। इस प्रकार उनका स्थान प्रथम रहा था। उन्हे विज्ञान मे विशेष रुचि थी। इसलिए उन्होने विज्ञान विषय को ही चुना। उनकी साहित्य मे भी विशेष रुचि थी। मैथलीशरण गुप्त उनके प्रिय कवि थे। उनकी रचनाओ पर जे पी मुग्ध थे।

जे पी अभी हाईस्कूल मे ही थे कि उनकी बडी बहन चन्द्रावती का विवाह हुआ। बहनोई ब्रजबिहारी बाबू पटना हाईकोर्ट के कार्यालय मे काम करते थे। अब जयप्रकाश अपने बहनोई के साथ रहने लगे। जे पी के चरित्र निर्माण में उनका भी बहुत बडा हाथ था।

पटना मे जयप्रकाश जी का जीवन अत्यत नियमित रहा। वह प्रात उठते, ठडे पानी से कडाके की सर्दी मे भी नहाते। यद्यपि वह मासाहारी थे किन्तु बहनोई के कारण शुद्ध शाकाहारी बन गये थे। बाद मे फिर मासाहारी हो गये। वह नियमित रूप से गीता और रामायण का पाठ करते। जब वह विदेश अध्ययन करने के उद्देश्य से गये तो उनके साथ गीता भी गयी। उन्हे गीता के बहुत से श्लोक कठस्थ थे। जे पी खाना पका लेते व्यवहार मे अत्यत शिष्ट एवं मृदुभाषी थे। धोती, कुर्ता पहनते। वह तब तक अग्रेजी पोशाक नही इस्तेमाल करते थे।

जब जयप्रकाशजी कालेज मे पढ रहे थे तभी उनका विवाह (1920) हो गया। उस समय लडके–लडकी को देखने की प्रथा नही थी। वह अपनी होने वाली ससुराल मे गये जहॉ उनके होने वाले ससुर बाबू ब्रजकिशोर ने उनको देखा। बाबू ब्रजकिशोर का नाम कौन नही जानता था। उस समय बिहार मे दो ही काग्रेसी हस्ती थी। एक डॉ राजेन्द्रप्रसाद और दूसरे बाबू ब्रजकिशोर। उनको जे पी पसन्द आ गये और विवाह निश्चित कर दिया गया। बाबू ब्रजकिशोर गाधी जी को नील के किसानो की समस्या के समाधान के लिए चम्पारण ले गये थे। उन्होने वकालत छोड दी थी, वह पक्के गाधीवादी बन गये थे तथा काग्रेस का प्रचार करते थे। बाबू ब्रजकिशोर एक सपन्न खाते पीते व्यक्ति थे। उनकी बडी पुत्री का विवाह डा राजेन्द्रप्रसाद के पुत्र मृत्युजयप्रसाद से हुआ था और छोटी बेटी जे पी की पत्नी थी। विवाह के समय जे पी की आयु 18 वर्ष तथा प्रभावती की 14 वर्ष थी। विवाह के पॉच वर्ष बाद विदाई का निर्णय लिया गया किन्तु जे.पी को उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाना था इसलिए गौना एक-दो वर्ष बाद ही कर दिया गया।

आपातकाल के दौरान चंडीगढ मे अपनी जेल डायरी मे जे पी ने लिखा था क्राति के इस बिच्छू ने तो मुझे उस समय ही काटा था जब मै हाईस्कूल मे पढ रहा था। उन दिनो उसका नाम था राष्ट्रीय क्राति, राष्ट्र की स्वतत्रता।"

वह जमाना था गोखले एव तिलक का। सन् 1915 में गाधी जी दक्षिण अफ्रीका से भारत आ चुके थे इस दौरान होमरूल आन्दोलन रौलट एक्ट बाग आन्दोलन का आदि के उग्र था

इस वातावरण की हवा जयप्रकाश नारायण के किशोर मन को छू रही थी।

सिताब दियारा से जे.पी. पटना आये थे और सरस्वती भवन मे रुके थे। सरस्वती भवन मे राष्ट्रभक्त युवको का जमावडा लगता था। जिनमे से कई स्वतत्रता सग्राम के मूर्धन्य नेता बने। जयप्रकाश इस वातावरण से अछूते न रह सके। उन पर गोखले के व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव पडा। जे.पी. इतिहास की पुस्तके पढते। शिवाजी एव राणा प्रताप की जीवनियो का उन पर गहरा प्रभाव पडा। जब वह हाईस्कूल में पढते थे तो छोट्टन सिह नामक एक उनके साथी ने उनका सपर्क बगाल के विप्लवकारियो से करवा दिया। किन्तु जब छोट्टन सिह को गिरफ्तार कर लिया गया तो जे.पी. का सबन्ध विप्लववादियो से समाप्त हो गया। जे.पी. के मन पर महात्मा गाधी के विचारो का प्रभाव पडने लगा। गाधी जी पर लिखित तोताराम सनाढ्य की पुस्तक का उनके मन पर गहरा प्रभाव पडा। उन्होने सत्याग्रह और अहिसा के सिद्धान्तो को हृदयगम कर लिया। दक्षिण अफ्रीका मे गाधी जी के सत्याग्रह ने तो तरुण जयप्रकाश को मत्रमुग्ध कर दिया।

जयप्रकाश ने अपने स्कूल के समान विचारधारा के सहपाठियो के साथ राजनीतिक चर्चा शुरू की। उनके सहपाठी उनको 'हम लोगो के राजेन्द्रप्रसाद' कहने लगे। 1920 मे गाधी जी पटना पधारे। उनके आगमन पर वहॉ एक विशाल सभा हुई जिसमे जयप्रकाश नारायण उपस्थित थे। गाधी जी के विचारो से जयप्रकाश नारायण अत्यधिक प्रभावित थे।

असहयोग आन्दोलन तेजी से बढ रहा था। हजारो विद्यार्थी स्कूल–कालेज छोडकर बाहर आ गये। अग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार होने लगा। स्वदेशी को अपनाये जाने पर बल था। रवीन्द्रनाथ टैगोर सहित न जाने कितने लोगो ने अग्रेजो से मिली उपाधियॉ लौटा दी। इस आन्दोलन को गति देने के उद्देश्य से 1921 मे मौलाना आजाद और पडित जवाहरलाल नेहरू पटना पहुँचे। जयप्रकाश नारायण सभा मे उपस्थित थे। उनके मन पर मौलाना के विचारों की गहरी छाप पडी। फिर क्या था जयप्रकाश एवं उनके मित्रो ने दूसरे दिन से स्कूल जाना बन्द कर दिया। कालेज मे परीक्षा हो चुकी थी। उसमे जयप्रकाश नारायण प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हुए। अब जयप्रकाश नारायण विश्वविद्यालय की पढाई की तैयारी कर रहे थे। किन्तु उन्होने स्कूल छोड दिया था। सरकारी सस्था की पढाई को वह बेकार समझ रहे थे। दूसरे दिन वह राजेन्द्र बाबू के घर गये और असहयोग आन्दोलन मे कूद पडे।

स्कूल छोडने का निर्णय उनका अपना था किन्तु वह इस निर्णय पर दृढ थे। कुछ दिनो बाद जयप्रकाश वाराणसी चले गये। वहॉ Organic Chemistry के एक कुशल अध्यापक फूलदेवप्रसाद वर्मा की प्रयोगशाला मे अध्ययन प्रारम्भ किया। किन्तु ऊँची पढाई करने के उद्देश्य से उन्होने अमेरिका जाने का मन बनाया।

उन दिनो Association for the advancement of the sc`entific learn ng नामक एक सस्था देश में कार्यरत थी उसी की से वह अमेरिका जा सके

जापान जाने का किराया उससे मिला। कुछ इधर–उधर से सुविधा जुटाकर वह अमेरिका जाने को तैयार हो गये।

जयप्रकाश नारायण को विदेश जाना था, इसलिए उनका गौना जल्दी ही किया गया। जयप्रकाश जी ने अपनी नवविवाहिता पत्नी से कहा कि वह भी पढ-लिख ले और गॉधी जी के बताये रास्ते पर चले। जिस समय जयप्रकाश विदेश जाने वाले थे उनकी आयु बीस वर्ष से भी कम थी। माता को पुत्र के विदेश जाते समय बहुत दुख हुआ। वह रो रही थी और जे पी का तॉगा आगे बढ रहा था। जयप्रकाश बहुत भावुक हो गये।

सन 1922 के अगस्त महीने मे उनके जेन्स नामक जहाज ने कलकत्ता बन्दरगाह को छोडा। यह मालवाहक जहाज था जिस पर कुछ मुसाफिर भी सवार थे। कलकत्ता छोडने के बाद रगून, सिगापुर और हागकाग के रास्ते जहाज जापान के कोबो बन्दरगाह पर पहुँचा। कोबो से ओसाका पहुँचकर इन लोगो ने जापान के चोको हामा बन्दरगाह से अमेरिका जाने वाले दूसरे जहाज को पकडा। इस प्रकार सन् 1922 के अक्टूबर महीने की 8 तारीख को जयप्रकाश ने अमेरिका की धरती पर पैर रखा।

बीस वर्ष की आयु मे जयप्रकाश नारायण अमेरिका पहुँचे। वह वहॉ सात वर्ष तक रहे। जयप्रकाश एक विद्यार्थी के रूप मे वहॉ पहुँचे थे। इसलिए उन्हें पढने लायक पैसो की कमाई खुद ही मेहनत–मशक्कत करके अर्जित करनी थी। उन्होने विभिन्न विश्वविद्यालयो मे शिक्षा ग्रहण की तथा अपने खर्च की भी व्यवस्था की। उन दिनो विस्कान्सिन अमेरिका का अत्यत प्रगतिशील राज्य माना जाता था। यही उनका परिचय कार्ल मार्क्स के विचारों से हुआ। यही उनका मानसिक विकास हुआ। उन्होने विज्ञान का अध्ययन छोडकर समाजशास्त्र का अध्ययन प्रारम्भ किया क्योकि वह बुर्जुवा अर्थशास्त्र बुर्जुआ समाजशास्त्र की चर्चा के मध्य वास्तविकता तलाश करना चाहते थे। इस प्रकार विस्कान्सिन मे पढते हुए उन्हे सन् 1924–25 मे डेढ़ वर्ष बीता। इस अवधि मे उन्होने मार्क्सवादी साहित्य–दर्शन का गहन अध्ययन किया। उनकी अनेक मार्क्सवादियो से मित्रता हो गयी। उन लोगो ने उन्हे रूस जाने की सलाह दी। किन्तु इसी दौरान वह गम्भीर रूप से बीमार हो गये। उनके पिताजी ने अपनी भूमि को बधक रखकर पैसे भेजे। उन्होने रूस जाने का विरोध किया। राजेन्द्र बाबू ने भी पत्र के माध्यम से इरादा बदलने का आग्रह किया। उन्होने एम ए किया और ओहाइयो विश्वविद्यालय मे अंतिम पढाई पूरी की। डा की उपाधि प्राप्त करने के उद्देश्य से उन्होने जो निबध लिखा था उसकी सराहना विश्वविद्यालय मे हो रही थी। किन्तु माता की बीमारी का समाचार सुनकर वह चिन्तित हो गये। उन्होने मेहनत मजदूरी करके पैसे एकत्र किये। सितम्बर 1929 मे सात वर्ष बाद वह कलकत्ता पहुँचे और वहॉ से पटना रवाना हुए।

जिस समय जे पी विस्कान्सिन विश्वविद्यालय मे पढ रहे थे उन्होने मार्क्सवाद का अध्ययन किया [illegible] मे [illegible] का एक छोटा स मडल तैयार हो गया था वह युग मार्क्सवाद की गौरव गाथा का युग था लेनिन

की यद्यपि मृत्यु हो चुकी थी किन्तु स्टालिन का नेतृत्व अपनी ऊँचाइयां को छू रहा था। रूसी क्रान्ति ने तरूणो के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ा था। लेनिन उस समय जयप्रकाश के हीरो बन गये थे। जयप्रकाश जब विस्कान्सिन विश्वविद्यालय से ओहाइयो विश्वविद्यालय पहुँचे तो वह पक्के कम्युनिस्ट बन गये थे। उन्होने श्रम सगठनो मे कार्य करना भी प्रारम्भ कर दिया था।

उन दिनो जयप्रकाश को राष्ट्रीय स्वतत्रता की लौ लगी थी। जब अग्रेज उनसे पूछते कि 30–35 करोड़ की जनसख्या वाले देश के एक लाख–दो लाख अग्रेज किस प्रकार गुलाम बनाये रख सकते है तो उनका सर शर्म से झुक जाता। उन्होने देखा कि मार्क्सवाद के विचारो के सहारे रूस को लेनिन ने मुक्ति दिलायी। इसलिए स्वतत्रता के लिए मार्क्सवाद का रास्ता ही उपयुक्त है।

जे पी ने एम ए मे समाजशास्त्र लिया था। समाजशास्त्र के द्वारा समाज परिवर्तन से जुड़े सूक्ष्म सवालो की वह समीक्षा करते थे। एम ए के लिए उनके निबन्ध का विषय था 'कल्चरल वेरिएशन' (सांस्कृतिक रूपान्तरण)। अपने निबध मे उन्होने प्रतिपादित किया था कि सामाजिक परिवर्तन का अर्थ है अततोगत्वा सास्कृतिक परिवर्तन। सस्कृति मे मनुष्य की भौतिक साधन-सामग्री नीति, मान्यताये, रीति-रिवाज, कला, सस्थाये नीति-नियम, मूल्य आदि सारी बातो का समावेश हो जाता है। अत सामाजिक क्रान्ति का अर्थ होता है मनुष्य की कलाओ, उद्योगो, ज्ञान, रीति–रिवाजो एव सस्थाओ मे होने वाला रूपान्तरण। इसी आधार पर मार्क्स के विचार उनको अब अधिक सतोषजनक लगे।

आगे चलकर मेरी विचारयात्रा मे जे पी लिखते हैं, "मार्क्सवाद ने समानता और बधुत्व की एक और ज्योति मेरे लिए जगा दी। केवल स्वतत्रता पर्याप्त नही थी। उसका अर्थ होना चाहिए, सबकी, जो लोग सबसे नीचे स्तर पर हैं और सबसे पीछे है उनकी भी स्वतत्रता और इस स्वतत्रता मे शोषण, भुखमरी और दरिद्रता से मुक्ति का भी समावेश होना चाहिए।"

जयप्रकाश जी के भारत आने के पूर्व तक उन्हे निश्चित पता नही था कि गाधी जी के सामाजिक आर्थिक एव राजनीतिक विचार क्या हैं। उनकी क्राति का क्या रूप है तथा समाज परिवर्तन की दिशा मे वह क्या सोचते है जे पी लिखते हैं, "उस समय तक मुझे पता नही था कि सामाजिक क्राति के बारे मे गाधी जी के अपने कुछ विशिष्ट विचार हैं, और इसे सिद्ध करने के लिए उनकी अपनी भी कोई विशिष्ट पद्धति है।' इसलिए स्वदेश वापसी पर जब उन्हे स्पष्ट हो गया कि गाधी जी का रास्ता सही है तो उन्होने महात्मा गाधी को अपना नेता स्वीकार कर लिया और उनके दर्शन को हृदयगम कर लिया। वह स्वय लिखते हैं "मैंने जो लेनिन के विचारो से सीखा था वह यह सीखा था कि जो गुलाम देश हैं, वहाँ के जो कम्युनिस्ट हैं, उनको हरगिज वहाँ की आजादी की लड़ाई में अपने को अलग नहीं रखना चाहिए यदि उस लड़ाई का नेतृत्व

जिसको मार्क्सवादी भाषा मे बुर्जुआ क्लास कहते है। उस क्लास के हाथो मे ही क्यो न हो। पूँजीवादी के हाथो मे ही क्यो न हो उसमे अपने आपको 'आइसोलेट' नही करना चाहिए। उस समय मेरठ थीसिस चल रही थी। मै उनके साथ नही गया। आजादी की लडाई मे गद्दारी की इन्होने।"[1]

कोलम्बो से जब जे पी पटना पहुँचे तो वह कोट–पतलून मे थे। लेकिन पटना पहुॅचने के बाद उन्होने बहनोई के कपडे लिए और धोती, कुर्ता मे आ गये। वह सिताब दियारा पहुँचे तो किसी को यह आभास नही हुआ कि सात वर्ष के बाद अमेरिका से आये है। वे शुद्ध भोजपुरी बोल रहे थे। माता रसोई मे थी। वही जाकर मिले। माता तथा दादी ने मन्नत उतारी। उन्हे पता नही था कि जे पी अनीश्वरवदी हो गये हैं।

चम्पारन सत्याग्रह के दौरान महात्मा गाधी एव कस्तूरबा बाबू बजकिशोर के घर गये थे। वहॉ प्रभावती ने बा और बापू की बहुत सेवा की थी। दोनो ने उन्हे अपनी बेटी मान लिया था। जे पी और प्रभा के विवाह के बाद कुछ अन्तर पडा था। किन्तु जे पी के अमेरिका जाने के पश्चात प्रभावती अधिक समय तक महात्मा गाधी और बा के साथ रही थी। यही उनकी शिक्षा-दीक्षा हुई थी। उन्होने यही साबरमती आश्रम मे अग्रेजी सीखी थी। गाधी जी से जब प्रभावती अलग होकर पिता के पास आ जाती तो उन्हे गाधी जी उन्हे पत्र लिखते। एक बार उन्होने लिखा था, "मै किसी खास काम के लिए नही बुला रहा हूँ। कोई खास बात कहनी भी नही है। लेकिन जिस तरह बाप अपनी बेटी को बिना कारण भी अपने पास रखना चाहता है उसी स्थिति मे मुझे समझो।" गाधी जी ने प्रभावती को अग्रेजी एव गुजराती लिखना एव पढना सिखाया। सस्कृत एवं गणित की शिक्षा दी। आश्रम के नियम एव रहने का ढग सिखाकर उन्हे एक योग्य एव दक्ष गृहणी बना दिया था। जब जयप्रकाश जी हिन्दुस्तान आये तो प्रभावती जी उनसे मिलने/गयी। महात्मा गाधी ने पत्र लिखा, "तुम गई तब मुझे दुख हुआ, पर यह सच्चा कर्म था। अत दुख सह लिया। जयप्रकाश से कहना वह मुझे खत लिखे और वह भी तुम्हारे साथ वर्धा आये।

जयप्रकाश जी 1929 मे गाधी जी से मिलने वर्धा गये। उनका वहॉ गॉधी जी ने स्वय स्वागत किया। महात्मा गाधी और कस्तूरबा ने उन्हे सदा एक दामाद के रूप मे माना। गॉधी जी को जयप्रकाश की सरलता और सादगी बहुत भाई।

वर्धा से जयप्रकाश और प्रभावती, गाधी जी के साथ लाहौर गये। वर्धा मे ही जे पी की भेट जवाहरलाल नेहरू से हुई। नेहरू जी ने स्वय जे पी को अपना परिचय दिया। इस प्रकार वर्धा से लाहौर तक जवाहरलाल जी इन लोगो के साथ थे। इनमे लम्बी मत्रणा हुई।

गाधी जी का जे पी के व्यक्तित्व के निर्माण मे बहुत बडा हाथ था, किन्तु वह चाहते थे कि मार्क्सवाद एव गॉधीवाद के मध्य कोई रास्ता निकल आये। अन्त मे वह गॉधी के प्रभाव मे एक आदर्श गॉधीवादी बन गये।

1 सम्पूर्ण क्रान्ति का जे पी का भाषण

1932 मे असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। जयप्रकाश एव पडित नेहरू एक साथ रेल के रास्ते काग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक मे भाग लेने इलाहाबाद से बम्बई जा रहे थे। रास्ते मे पडित नेहरू को गिरफ्तार किया गया। जयप्रकाश जी ने कागज–पत्र बैठक मे पहुँचाये। उस समय सरोजनी नायडू काग्रेस की कार्यकारी अध्यक्ष थी। उन्होने जयप्रकाश नारायण को पार्टी का प्रधानमत्री नियुक्त किया। जयप्रकाश जी आन्दोलन मे कूद पडे। जयप्रकाश नारायण ने असहयोग आन्दोलन मे बढ–चढकर हिस्सा लिया। वह देश के कोने-कोने मे घूमे। जयप्रकाश जी को सितम्बर 1932 मे गिरफ्तार किया गया।

जयप्रकाश जी को मद्रास से बम्बई लाया गया। उन्हे आर्थर रोड जेल मे रखा गया। बाद में नासिक सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया। प्रभावती जी को पहले ही इलाहाबाद मे गिरफ्तार किया गया था। उन्हे दो वर्ष कठोर कारावास की सजा दी गयी थी। जयप्रकाश जी को जीवन का अर्थ स्पष्ट हो गया था। जयप्रकाश जी ने लिखा था

"एक बडा आत्म-सतोष था। यानि वह सार जो ETHOS था राष्ट्रीय आन्दोलन का गॉधी जी के नेतृत्व का, एक ऐसा लोकमानस बना था इस सफर का और अपनी सफरिंग मे ही स्वराज्य की प्राप्ति होगी, देश की शक्ति बनेगी। बहुत स्फूर्ति मिली मुझको इसमे, इस प्रकार बहुत बडा आत्मसतोष रहा।"

जब जयप्रकाश अमेरिका मे थे, और प्रभावती गाधी जी के आश्रम मे, तो उन पर आश्रम जीवन का बहुत प्रभाव पडा। उन्होने ब्रह्मचर्य का सकल्प लिया। उनका मानना था कि जब उन्हें देश सेवा करनी है तो बाल-बच्चों से मुक्त रहना चाहिए। जब जयप्रकाश जी हिन्दुस्तान आये तो गाधी जी ने प्रभावती को समझाया और व्रत तोडने को कहा। किन्तु प्रभावती ने इसे स्वीकार नही किया। जयप्रकाश जी ने स्वय व्रत ले लिया। इस प्रकार एक साथ रहते हुए भी दोनो ब्रह्मचारी रहे। यह बहुत कठिन जीवन था जिसे दोनों ने सफलतापूर्वक निर्वहन किया।

जयप्रकाश 1933 मे नासिक जेल से छूटकर बाहर आये। जे पी ने समाजवादियों का सम्मेलन पटना मे बुलाया। सम्मेलन 17 मई 1934 को अजुमन इस्लामिया हाल मे पटना मे हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता आचार्य नरेन्द्रदेव ने की थी। 6 माह बाद एक बडा सम्मेलन बम्बई मे हुआ जिसके सभापति डा सम्पूर्णानन्द थे। जयप्रकाश जी पार्टी के महामत्री बने। 1940 मे युद्ध विरोधी भाषण देने के आरोप में जयप्रकाश गिरफ्तार कर लिए गये। उनकी गिरफ्तारी पर पडित नेहरू ने कहा, 'हमारे सबसे प्रिय और सबसे मूल्यवान साथियो में से एक श्री जयप्रकाश नारायण को गिरफ्तार करके सरकार ने काग्रेस के खिलाफ युद्ध का ऐलान कर दिया है।'

जयप्रकाश अभी जेल मे थे कि विश्व पर युद्ध के बादल मडराने लगे। अक्टूबर 1941 मे प्रभावती जी जयप्रकाश जी से जेल मे मिलने गयी। तभी उन्होने चप्पल की नाप के बहाने कुछ गुप्त कागज और चिट्ठी उन्हे दी। किन्तु चतुर पुलिस अफसर ने उस गुप्त पत्रों का रहस्य जान लिया जे पी का अपराध पकडा गया गॉधी जी ने अग्रेज

सरकार के विरुद्ध एक कडा बयान दिया। दूसरी घटना भी देवली कैम्प जेल की है। यहाँ कैदियो को घोर यातना दी जाती थी। देवली के राजनीतिक बन्दियो ने उपवास शुरू किया। जे पी भी इसमे शरीक हुए। यह उपवास 31 दिन तक चला।

1942 मे जब काग्रेस वर्किंग कमेटी ने 'अग्रेजो भारत छोडो' का नारा दिया तथा 'करो या मरो' का उद्घोष करके अग्रेजो के विरुद्ध अतिम सघर्ष का ऐलान किया तो जयप्रकाश नारायण की प्रसन्नता की कोई सीमा नही रही। उनका रोम--रोम पुलकित और रोमाचित हो गया। हजारीबाग जेल के राजनीतिक बन्दियो ने अपनी बैठक की और कुछ गुप्त योजना बनायी।

1942 की नवम्बर की 8 तारीख को दीवाली थी। दीवाली बडे उल्लास से मनायी जा रही थी। खेलकूद और रास-रग की तान पर बन्दी थिरक रहे थे। बन्दिओ का एक जुलूस पूरे जेल के वार्डों मे घूम रहा था जिसमे जेल के वार्डन, सिपाही और नम्बरदार भी शरीक थे। यह सब हो रहा था तभी जेल के एक कोने पर एक मेज रखी गयी। उस पर योगेन्द्र शुक्ल खडे हो गए। उनके कधे पर दूसरे एक साथी खडे हो गए। धोतियो को आपस में बांधकर एक लम्बी रस्सी तैयार की गयी। उनमे गाठे लगाकर रस्सी को सीढी की शक्ल दी गयी। उस रस्सी के सहारे एक के बाद एक व्यक्ति अर्थात कुल 6 व्यक्ति जेल से बाहर निकल गये। इस प्रकार 17 फुट ऊँची दीवार को यह बन्दी फॉद कर बाहर निकल आये। हडबडी मे कपडो और जूतो की गठरी जेल के अन्दर ही छूट गयी। हजारीबाग जेल 1700 फुट की ऊँचाई पर बसा है। चारो ओर जगल है। बाहर बहुत जाडा था ओर अमावस का घना अधेरा छाया था। यह लोग भागते ही जा रहे थे। घने धान के खेत के बीच पानी और कीचड से लथ–पथ। भोर मे इन लोगो ने थोडा विश्राम किया। पूरे दो दिन चिवडा और गुड पर इन लोगो ने बिताया। जयप्रकाश जी को साईटिका की तकलीफ रहती थी। मित्रो ने हाथो की जजीर बनाकर उस पर उन्हे बिठाकर भागना शुरू किया। दिनभर भागने के बाद एक परिचित शिक्षक के घर पर इन लोगो ने स्नान किया, खाना खाया, कुछ पुराने कपडे और जूते प्राप्त किए और आगे बढ गये। पूरे तीन दिन और चार रात जगल को पार करने मे लगा। जगल से निकल जाने के बाद सभी साथी विश्राम करने के लिए तीन दिन रुके और आगे की रणनीति तैयार की। सब साथी एक दूसरे से अलग हो गये क्योकि एक साथ घूमने मे खतरा था। जयप्रकाश नारायण वाराणसी गये जहॉ से उनका अज्ञातवास का जीवन प्रारम्भ हुआ। जो लोग जेल से फरार हुए उनके नाम इस प्रकार है– योगेन्द्र शुक्ल, रामनन्दन मिश्र, सूरज नारायण सिह, शालिग्राम सिह, गुलाबचन्द गुप्त एव जयप्रकाश नारायण।

उधर जेल मे चन्द साथियो के अतिरिक्त किसी को इस घटना की जानकारी नही थी। दूसरे दिन भी ग्यारह बजे तक जेल मे किसी को कोई सूचना नही थी। जब इस घटना की सूचना अधिकारियो को मिली तो सब अवाक रह गये। अग्रेज सरकार स्तब्ध रह गयी भागे हुए कैदियो को पकड़ने के लिए 5–5 हजार रु का इनाम घोषित किया गया को जिन्दा या मुर्दा पता देने वाले को 10 हजार रु का

इनाम घोषित किया गया।

जयप्रकाश नारायण सारे देश मे घूम-घूम कर अग्रेज सरकार को छकाते रहे। जब जयप्रकाश नारायण जेल से बाहर आये तो उनके कई साथी अच्युत पटवर्धन राममनोहर लोहिया, ऊषा मेहता, अरुणा आसफ अली, एस एम जोशी आदि गुप्त आन्दोलन का कुशलतापूर्वक सचालन कर रहे थे। इसमे जे पी को बहुत बल मिला। एक केन्द्रीय सचालन मडल बनाया गया। यह इन साथियो की आवश्यकताओ की पूर्ति करता था। यह साहसिक कार्य काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी से संबद्ध लोग कर रहे थे।

जयप्रकाश एव लोहिया ने क्रातिकारी साथियों को पत्र लिखे तथा उनका हौंसला बढाया। लोहिया एव ऊषा मेहता काग्रेस रेडियो का प्रसारण कर देश को समाचार दे रहे थे। कांग्रेस रेडियो के एक प्रसारण मे जयप्रकाश नारायण ने कहा, "क्राति का अर्थ केवल सहार नही है। क्राति के साथ निर्माण की महान शक्ति भी जुडी हैं जहॉ-जहॉ विदेशी राज्य को समाप्त कर दिया गया हो वहॉ जनता को अपनी सरकार का गठन करना चाहिए। हमे पूरी जनता को क्राति के पथ पर ले चलना है।"

बम्बई मे कलकत्ता होते हुए जयप्रकाश नेपाल रवाना हुए। उत्तर प्रदेश का सहरसा जिला नेपाल की सीमा से लगा हुआ है। उन्होने वहॉ से नेपाल के लिए प्रवेश किया। उन्होने वेषभूषा ऐसी बनायी मानो विवाह के तुरन्त बाद दुल्हन को घर लेकर जा रहे हैं। खूब बन–ठन कर निकले। आगे–आगे हाथी पर जयप्रकाश और पीछे पालकी पर अच्युत पटवर्धन और उनकी बहन विजया पटवर्धन। इन लोगो ने इस तरह नेपाल पहॅुचकर डेरा डाला। सूरज बाबू ने आजाद दस्ते का प्रशिक्षण शुरू किया। वहा 30–35 नौजवान इकट्ठे हो गये। कुछ दिनो बाद लोहिया भी वहाँ पहॅुच गये और कार्य प्रारम्भ हो गया।

इन घटनाओ से अग्रेज सरकार के कान खडे हो गए। अग्रेज सरकार ने नेपाल की राणाशाही से जानकारी चाही। उन्होने स्पष्ट उत्तर नही दिया किन्तु नेपाल सरकार पर दबाव बढने पर सरकार ने जयप्रकाश और लोहिया को गिरफ्तार कर लिया। उन्हे बैलगाडी मे बिठाया गया और हनुमान नगर ले गए। हनुमान नगर पहॅुचने मे दो दिन बीते। एक दिन जयप्रकाश शौच के लिए गये। अधिकारी उन पर निगाह लगाये थे। उसी दौरान एक क्रान्तिकारी नौजवान मिला। जयप्रकाश जी ने उससे कहा कि वह हनुमान नगर जा रहे हैं। सूरज बाबू को इसकी सूचना दे दे तथा उनसे कहे कि वह उनको तथा उनके साथियों को मुक्त करवायें। यह सुनते ही वह नौजवान तीर की तरह वहॉ से भागा।

हनुमान नगर के अधिकारियो का व्यवहार अत्यंत उत्तम था। लोहिया एव जयप्रकाश की गिरफ्तारी की सूचना अग्रेज सरकार को दी गयी। उससे कहा गया कि वह अपने अधिकारियों को भेजकर अपने बन्दिओ को ले जाये। नेपाल सरकार भारतीय सीमा में प्रवेश नहीं करेगी यह लोग अभी जेल में ही थे कि दस्ते ने छापा मारा एक सिपाही मारा गया दूसरा घायल हो गया सामने पशुओं का सखा चारा भरा था

उसमें आजाद दस्ते ने आग लगा दी। जयप्रकाश भागे किन्तु लोहिया की ऑखे कमजोर थी उनका चश्मा भी छूट गया था इसलिए उन्हे भागने मे दिक्कत हुई। वह भी किसी तरह भागे। जयप्रकाश जी भागने की जल्दी मे लोहिया को छोड गये थे जिसकी शिकायत उन्हे जीवन भर रही। यह लोग कई दिनो बाद कलकत्ता पहुँचे। देश मे एक बार फिर सनसनी फैल गयी।

इसी अर्से मे जयप्रकाश जी ने आजाद हिन्द फौज के अगुआ सुषाष बाबू से सम्पर्क करना चाहा। किन्तु उसमे सफलता नही मिली। अग्रेज सरकार को जयप्रकाश नारायण की गतिविधियो पर नजर थी। वे अफगानिस्तान के क्रातिकारियो से सम्पर्क करना चाहते थे। इसके लिए वे दिल्ली के रास्ते रावलपिण्डी जाने की तैयारी कर रहे थे। जयप्रकाश जी ने अपनी दाढी मुडा ली थी वे अग्रेजी कपडो मे एक सुन्दर युवा लग रहे थे। सादी पोशाक मे अग्रेज अफसर उन पर निगाह रखे हुए थे।

जयप्रकाश जी सुबह अमृतसर रेलवे स्टेशन पर उतरे। उन्होने हाथ–मुँह धोया। उनके डिब्बे मे दो सिख और एक अग्रेज अफसर सवार हो गये। जैसे ही ट्रेन आगे बढी अग्रेज अफसर ने जे पी के आगे बढकर कहा 'आप जयप्रकाश नारायण है ?' मैं सरकार के हुक्म से आपको गिरफ्तार करता हूँ।' उसने बताया कि यदि आप थोडा भी भागने का प्रयास करेगे तो गोली मार दी जायेगी। जयप्रकाश गिरफ्तार कर लिए गये। साथ आये सिख ने सामान की तलाशी ली। सारा सामान पकडा गया। पुलिस निश्चिन्त हो गयी कि यह जयप्रकाश नारायण ही हैं।

स्वतत्रता के दीवाने जयप्रकाश नारायण को हथकडी पहनाकर लाहौर के समीप मुगलपुरा स्टेशन पर उतारा गया। वहॉ से लाहौर किले की जेल मे ले जाया गया। वहॉ करीब डेढ हजार अर्ध सुरक्षा बल के सिपाही हथियारो से लैस सुरक्षा के लिए तैनात थे। इस प्रकार हजारीबाग जेल से फरार होने के 10 महीने के बाद एक बार फिर जे पी जेल मे बन्दी बनाये गये। 18 सितम्बर 1943 को पुन जे पी जेल मे बन्द किये गये। इस बार उन्हे 31 महीने तक जेल मे बन्द रखा गया। इनमे से 16 महीने उन्हे लाहौर जेल मे बीते जहॉ उन्हे घोर यातनाये दी गयीं।

लाहौर जेल मे जे पी को एक महीना अज्ञातवास मे रखा गया। उस समय की मन स्थिति के बारे मे उन्होंने स्वय लिखा है–

"एक छोटी सी अंधेरी कोठरी। उसी मे सोना, खाना पीना, पेशाब, पाखाने जाना सब एक ही जगह। एक खटिया दी थी और एक कम्बल। घुटन और मन मे ऐसी गिरावट का अनुभव मैने इसके पहले कभी नही किया था। एक महीने तक उसी अधेरी कोठरी मे बिल्कुल गूगा बनकर रहा। इतना एकान्त। इतना सन्नाटा। और मन में इस बात का दुख भी था कि जेल के बाहर देश मे भी पूरा सन्नाटा ही छाया हुआ था। मुझे इस बात की चिन्ता तो कभी नही रही कि मेरा क्या होगा लेकिन मन मे यह बात जरूर घुटती रहती थी कि देश में एक बार फिर जागृति किस तरह आ सकती थी। इसी के साथ यह भी सोचता रहता था कि अब तक जो किया उसमें कहाँ कौन सी गलती हो गयी आदि–आदि

"लेकिन कोई अपने साथ कब तक बात करे। दूसरा कोई था ही नही जो मेरे मामूली से छोट-मोटे सवालो का जवाब देता। पहरेदारो के साथ बात करना चाहूँ तो वह पत्थर की मूर्ति की भाँति चुपचाप खडा रहे। न कोई अखबार, न समाचार बाहर की दुनिया की कोई जानकारी नही। ऐसा लगता था मानो किसी शून्यता मे फेक दिया गया हो। दरवाजे क बाहर से भोजन की थाली खिसका दी जाती थी। भोजन के बाद मै भी उसे बाहर ठेल दिया करता था। मेहतर आता सफाई करके चला जाता। भिश्ती आता घडे मे पानी भर कर चला जाता। लेकिन किसी को भी बोलना मना था। एक महीने तक यही चलता रहा।" एक महीने बाद जे पी को जेल के कार्यालय मे ले जाया जाता। उनकी खुशामद की जाती। उन्हे समझाया जाता जिससे वह अज्ञातवास के दौरान की गयी कार्यवाही का खुलासा कर दे। किन्तु जयप्रकाश जी इन बातो को टाल जाते।

धीरे-धीरे जयप्रकाश पर सख्ती बढती गयी। उन्हे कुर्सी पर बिठाकर घंटो सवाल किये जाते। उनके सिर के बाल पकड कर उन्हे झिझोडा जाता। गाली दी जाती। हटरो की मार से कमरा गूँज जाता। उनके कमरे मे हटर, लोहे की सरिया, जजीरे आदि रखी जाती। प्रत्यक्ष पिटाई से अधिक इन बातो से तनाव होता। अब एक नया तरीका निकाला गया जयप्रकाश जी को कुर्सी मे रस्सी से बाँध कर जगाया जाता। सोने लगते तो घडो पानी डालकर जगाया जाता। यह क्रम लगातार दस दिनो तक चला। यही व्यवहार डा राममनोहर लोहिया के साथ भी बगल के दूसरे बैरक मे हो रहा था किन्तु एक दूसरे को इसकी जानकारी नही थी।

यह क्रम लगातार दो माह तक चला। जे पी स्पष्ट रूप से कहते–

"मैं ब्रिटिश सरकार का जानी दुश्मन हूँ। मैं अपने देश की आजादी की लडाई लड रहा हूँ। या तो मेरा यह शरीर छूटेगा या फिर मै मर जाऊँगा। मैं मुँह से हरगिज नहीं बोलूँगा।"

पुलिस अत्याचार करते-करते थक चुकी थी। जयप्रकाश एव लोहिया को दी जाने वाली यातनाओ की चर्चा जेल के बाहर भी थी। अग्रेज सरकार ने इस भय से कि कही इनकी मृत्यु न हो जाये इन्हे अच्छी बैरक दी। खाने मे भी सुधार किया गया। जयप्रकाश जी के सामने लोहिया को लाकर खडा कर दिया गया। दोनों एक दूसरे को देखकर भाव-विभोर हो गये। इस प्रकार हर रोज एक घंटा दोनो को मिलने दिया जाता था। पूरे देश में लोहिया एव जयप्रकाश को दी जाने वाली यातनाओ की चर्चा थी। इसके कारण वातावरण उग्र हो गया था। होमी पारडीवाला, पूर्णिमा बैनर्जी, पुरुषोत्तम त्रिकमदास आदि मित्रो की ओर से हाईकोर्ट में याचिका प्रस्तुत की गयी। इसके कारण जे पी और लोहिया को आगरा केन्द्रीय कारागार मे लाया गया। जनवरी 1945 में लाहौर किले मे दी गयी यातनाओ का अन्त हुआ।

-प्रारम्भ मे तो जे पी को लिखने-पढने की कोई सहूलियत नही थी किन्तु यह सहूलियत 16 महीने बाद प्रारम्भ हुई उनकी जेल डायरी अत्यत महत्त्वपूर्ण है जो

सुविधा मिलने के बाद लिखी गयी। उन्होने ब्रिटिश सरकार को 1944 मे एक पत्र लिखा था जिसके कुछ अश इस प्रकार है– "मैं महसूस करता हूँ कि मैं खूखार जानवर के रूप मे कहीं बदल न जाऊँ। मेरे अन्दर बैर की और बदला लेने की पाशविक ज्वालाये उठ रही हैं। अपनी मानवता को बनाये रखने के लिए मुझे अपने आपके साथ बहुत ही जूझना पड रहा है। यह काम मुश्किल है बहुत ही मुश्किल और भरोसा नही है कि मे इसमें पूरी तरह सफल हो पाऊँगा।"

किन्तु बाद मे जब वह सभले तो इस महामानव ने एक अन्य स्थान पर सरकार को लिखा– "जिन लोगो ने मेरे साथ ऐसा बरताव किया, उनके लिए मेरे मन मे कोई कडुवाहट नही है, क्योकि वे तो उन्हे ऊपर से मिले हुक्म पर अमल कर रहे थे। जो उच्च अधिकारी इसके लिए सचमुच जिम्मेदार हैं, उनके प्रति मेरे मन मे सख्त नाराजगी और रोष है।"

काग्रेस के सभी नेता मुक्त हो चुके थे किन्तु जयप्रकाश नारायण एव डा राममनोहर लोहिया को 1944 तक नही छोडा गया। इस पर काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी ने 'लोहिया दिवस" का आयोजन किया। समाचार पत्रों की मार्फत दोनो की रिहाई की माग की गयी। गाधी जी ने प्रार्थना सभा मे अपील की। स्थान–स्थान पर विरोध मे सभाये एव भूख हड़ताल की गयी, किन्तु खेद है कि गाधी के अतिरिक्त काग्रेसी नेता मूक एव बधिर बन गये थे। उनके मुँह से एक शब्द भी सहानुभूति का नही निकला।

लोहिया एव जयप्रकाश अप्रैल 1946 मे जेल से बाहर आये। इनका देश के कोने-कोने मे उत्साह भरा स्वागत किया गया। 21 अप्रैल को पटना मे बिहार के वीर सपूत जयप्रकाश नारायण का भावात्मक स्वागत किया गया। इस अवसर पर महाकवि रामधारी सिह 'दिनकर' ने स्वागत में कविता पढी। यह कविता हिन्दी साहित्य की अमर कृति बन गयी है जिसे पुस्तक में कही अन्यत्र दिया जा रहा है।

स्वतत्रता के बाद देश का दुखद बँटवारा जे पी को असह्य था। उन्होने भारी मन से बँटवारे के प्रस्ताव को स्वीकार किया। फिर महात्मा गाधी की दुखद हत्या से वह अनाथ हो गये। गॉधी जी की हत्या पर लोहिया, जयप्रकाश नारायण, कमला देवी चटटोपाध्याय ने नेहरू सरकार का इस्तीफा मांगा, जिसे नेहरू एव पटेल ने अस्वीकार कर दिया। गांधी जी की मृत्यु के बाद सोशलिस्ट अपने को अनाथ महसूस करने लगे थे। गाधी जी की अतिम यात्रा मे जे.पी शरीक थे। वह अस्थियों के साथ इलाहाबाद गये। उनके साथ उनकी पत्नी प्रभावती भी थीं। भारी मन से जे पी ने गाधी जी को विदा किया और इलाहाबाद से पटना के लिए रवाना हुए। यहाँ से अनाथ जे पी. की लम्बी यात्रा–एक नये पथ की यात्रा, भारत के नवनिर्माण की यात्रा, सम्पूर्ण क्राति की यात्रा, प्रारम्भ हुई।

जे पी को स्पष्ट हो गया था कि सरदार पटेल तथा अन्य कांग्रेसी सोशलिस्टों को काग्रेस में रहने नहीं देंगे इस आशय का साहब का भी आ गया था

कि "जो लोग कांग्रेस की नीतियो मे आस्था नही रखते तथा कांग्रेस मे एक अलग पार्टी बनाकर रहना चाहते हैं, उनके लिए कांग्रेस मे कोई स्थान नही है।" जयप्रकाश नारायण ने भी कांग्रेस की नीतियो की कटु आलोचना प्रारम्भ कर दी थी। 24 फरवरी 1947 को कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी" का सम्मेलन कानपुर मे बुलाया गया। यही सोशलिस्ट पार्टी के स्थापना की घोषणा की गयी। यह एक युवको का सगठन था जिसमे सबसे कम आयु के 30 वर्षीय प्रेम भसीन थे जो पार्टी के सयुक्त मत्री बनाये गये। इस सम्मेलन मे कांग्रेस की कटु आलोचना की गयी। उसकी नीतियो पर तीखे हमले किए गए। अप्रैल 1948 मे सोशलिस्ट पार्टी का स्वतत्र अस्तित्व सामने आया।

महात्मा गाँधी की हत्या के बाद नेहरू एव पटेल से सोशलिस्टो की टकराहट प्रारम्भ हो गयी। इसी बीच 1952 का आम चुनाव आ गया। अशोक मेहता चुनाव सयोजन समिति के सयोजक बनाये गए। जयप्रकाश एव लोहिया ने चुनाव लडने से स्पष्ट इकार कर दिया। जयप्रकाश एव नेहरू के मध्य पत्र व्यवहार होता रहता था जिसमे एक दूसरे की शिकायत करते थे। लोहिया जी का भी नेहरू से मोहभग हो गया। उन्होने नेहरू की कई बार कडी आलोचना की थी। चुनाव के बाद दूरी बढी। किन्तु परिणाम अत्यत निराशाजनक थे। इस सदमे से उबरने के लिए आचार्य कृपलानी की किसान मजदूर प्रजा पार्टी एव सोशलिस्ट पार्टी की एकता से प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का गठन किया किया। किन्तु 1954 मे ट्रावनकोर कोचीन मे पट्टम थाणु पिल्लई की सरकार द्वारा गोलाबारी करने से विवाद उत्पन्न हो गया। इस दौरान पडित नेहरू ने जे पी से कांग्रेस के साथ सहयोग का प्रस्ताव रखा। इन तमाम प्रश्नो पर मतभेद इतना तीव्र हो गया कि प्रजा सोशलिस्ट पार्टी कई धडो मे विभक्त हो गयी।

1 लोहिया ने हैदराबाद मे सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की।

2 अशोक मेहता ने पिछडी अर्थव्यवस्था के सिद्धान्त के तहत कांग्रेस से सहकार का मन बनाया।

3 जयप्रकाश नारायण सर्वोदय आन्दोलन मे पहले ही जाने का मन बना चुके थे। वह वही चले गये।

4 आचार्य नरेन्द्र देव जी अपनी बीमारी के कारण अस्वस्थ रहने लगे। उनकी 1956 मे मृत्यु हो गयी।

इन विषम परिस्थितियो मे प्रसोपा और सोपा ने 1964–65 मे एक बार फिर एकता का प्रयास किया। 1967 मे एक बार पुन लोहिया का नेतृत्व उभरा और उनका 'गैर कांग्रेसवाद' का नारा सफल हुआ। कई राज्यों में कांग्रेस की पराजय हुई।

गाँधी जी की हत्या के पश्चात जे. पी के मन मे गाधी जी के विचारो के प्रति आस्था बढ रही थी। वह स्वयं कहते थे कि "मुझे गाँधी जी के दर्शन की गहराई का ज्ञान बाद में हुआ। इस परिवर्तन का मुख्य श्रेय प्रभावती जी को जाता है जो गाँधी जी की अत्यत प्रिय शिष्या एव सेविका थीं जे पी का रुझान सर्वोदय एव भूदान की ओर बढ़ने

लगा। इसमे उन्हे 80 प्रतिशत समाजवाद दिखायी दिया। वह इन विचारों से संतुष्ट हुए। यह और बात है कि जब प्रभा जी की मृत्यु हो गयी तो उन्होने देश मे 'सम्पूर्ण क्राति का आन्दोलन' प्रारम्भ किया। उन्हें विनोबा जी का आन्दोलन नीरस लगने लगा। उन्होने अपनी सभाओ मे जिनमे इन पक्तियो का तुच्छ लेखक उपस्थित रहता था तथा जो स्वय एक सक्रिय कार्यकर्त्ता के रुप में कार्य कर रहा था जे पी से सुना था "मेरे इतने वर्ष भूदान एव सर्वोदय आन्दोलन में व्यर्थ चले गए।"

इसलिए 'इन व्यर्थ चले गये वर्षों' की चर्चा हम सक्षेप मे करेगे। यद्यपि जे.पी ने इस दौरान बहुत से महत्त्वपूर्ण रचनात्मक कार्य भी किये थे।

जे पी ने जब सर्वोदय मे जाने का निर्णय लिया तो एक ओर जहाँ प्रभावती प्रसन्न थीं और अपनी विजय समझ रही थीं तथा अपना एव जे पी. का सर्वोदय आन्दोलन के लिए जीवनदान कर रही थी, लोहिया मतभेदों के बाद भी अत्यत दुखी थे। किसी मतभेद की बिना चर्चा कि 30 मार्च 1954 को लोहिया ने जे पी को पत्र लिखा, "अब मेरी समझ मे फिर से देश और पार्टी को हिलाने का समय आ रहा है। जैसा तुम हिला सकते हो, वैसा कोई भी नही हिला सकता। देश मे तुम्हारा ममता का सबन्ध है। तुम्ही देश के नेता हो सकते हो, और समाजवाद का बढा सकते हो।" इसका उत्तर 2 अप्रैल 1954 को जयप्रकाश जी ने दिया, "इस समय मेरे जो विचार है उनको जानते हुए यह प्रस्ताव तुम्हे करना ही नही चाहिए। देश को हिला सकने की शक्ति मुझमे न कभी थी न आज है। न उस प्रकार हिलाने का मेरा बहुत महत्त्व ही है। मेरा विचार है कि विधायक कर्मियो को भी किसी भीं प्रकार के चुनाव मे भाग नहीं लेना चाहिए। तद्नुकूल मुझे भी पार्टी का चवन्नी का ही सदस्य बनकर रहना होगा।"

किन्तु जब उन्होने सर्वोदय मे जीवनदान कर दिया तो वह चवन्नी के सदस्य भी नही रह गये। उनका समाजवादी आन्दोलन से रास्ता अलग हो गया। किन्तु यह बात निर्विवाद है कि जे पी ने सोशलिस्ट सगठन को खडा करने मे बहुत मेहनत की थी। उनकी कुछ भूलो से पार्टी को बहुत क्षति उठानी पडी जिसकी चर्चा हम लोहिया एव आचार्य नरेन्द्र देव जी की जीवनियो मे करेगे। भावुक जे.पी पर लोहिया के शिष्यो द्वारा किये गये हमलो से भी उन्हे भारी आघात लगा। सर्वोदय मे जाने के बाद उन्हे महत और मठाधीश ऐसे शब्दो से सबोधित किया गया।

यूँ तो जयप्रकाश नारायण ने 1953 मे ही सर्वोदय मे काम करने और जीवनदान करने का मन बना लिया था, किन्तु विधिवत उन्होने 1957 मे प्रजा सोशलिस्ट पार्टी से त्यागपत्र दे दिया। उन्होने घोषणा की 'अगर दुनिया में अभी भी शान्ति स्वतत्रता और बधुत्व की स्थापना करनी होगी, तो समाजवाद को अन्तत सर्वोदय मे विलीन होना ही पडेगा।' किन्तु दुनिया ने देखा कि यह एक निरा भ्रम था। विनोबा जी की मृत्यु के साथ ही यह आन्दोलन लुप्त सा हुआ दिखाई देता है

जे.पी ने सर्वोदय आन्दोलन मे शामिल होकर भी देश की बहुत सेवा की। उन्होने ग्राम स्वराज्य की अपनी कल्पना को साकार करने का प्रयत्न किया, भूदान आन्दोलन के द्वारा भूमि का वितरण करने का प्रयास किया, उन्होने लोकजीवन मे आध्यात्मिकता पर बल दिया। ग्राम विद्यालय, नागा समस्या, कश्मीर समस्या भारत–पाकिस्तान सम्बन्धो मे मिठास घोलना, बगला देश की मुक्ति का आन्दोलन और उसके लिए विश्व भ्रमण, डाकू समस्या और उसका समाधान, आदि समस्याये थी जिनके समाधान का प्रयास जे.पी ने सार्थक ढग से किया। इन कार्यो को एक सस्था या एक व्यक्ति नही कर सकता था जो उस एक अकेले व्यक्ति जिसे आधुनिक गाधी कहना उपयुक्त होगा अपने पुरुषार्थ के बल पर कर दिखाया। उन्होने 'राज्य सत्ता' के स्थान पर 'नैतिक सत्ता' स्थापित की। निश्चित रूप से वे महान थे।

पडित जवाहरलाल नेहरू ने सभवत 1946 मे जयप्रकाश नारायण को भारत का अगला प्रधानमत्री घोषित किया था। किन्तु यह वाक्य उनके हृदय से नही निकला था उस पर होने वाली प्रतिक्रिया जानने के लिए दिया गया एक लुभावना एव चालाकी से भरा वाक्य था। इसका उत्तर उतनी ही होशियारी से डा राममनोहर लोहिया ने दिया था "मैं भी जयप्रकाश को प्रधानमत्री बनाना चाहता हूँ किन्तु पडित नेहरू की दया से नही जनता के आशीर्वाद से। यदि वह पडित नेहरू की कृपा से प्रधानमत्री बनते हैं तो वह उनसे भी खराब प्रधानमत्री होगे किन्तु यदि वह जनता के सहयोग से नेहरू को हटाकर प्रधानमत्री बनते हैं तो वह उनसे बेहतर प्रधानमत्री होगे और यह देश की जनता के लिए शुभ दिन होगा।' उन्होंने जे.पी की सरलता का लाभ उठाकर प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के साथ काग्रेस के सहयोग की बात चलाई। इस व्यर्थ की कसरत का उद्देश्य मात्र इतना था कि सोशलिस्ट शक्तियो मे टकराहट और विवाद उत्पन्न हो जिससे पार्टी मे बिखराव उत्पन्न हो और यही हुआ। लोहिया और जे.पी मे इतनी कटुता उत्पन्न हुई और कडुवाहट बढी कि पार्टी के विभाजन की नौबत आ गयी। अपना कार्य सिद्ध होते देखकर नेहरू ने वार्ता वही समाप्त कर दी। लोहिया के हमलो से जिन्हे जे.पी मित्र और भाई मानते थे, दुखी जयप्रकाश ने दलीय राजनीति को त्याग कर भूदान आन्दोलन मे चले गये और इस प्रकार लोहिया के शब्दो मे 'सरकारी साधू' विनोवा का नेतृत्व स्वीकार कर लिया जो नेहरू परिवार के अधभक्त थे तथा भूदान के नाम पर नेहरू परिवार का हित साधन करते थे। इस सरकारी साधू विनोवा भावे का सारा पाखड उस समय खुला जब उन्होने 'आपातकाल' की तानाशाही को 'अनुशासन पर्व' कहा। उन्हें मृत्यु से जूझ रहे एक सर्वोदयी जे.पी पर रहम नही आया। वह सरकारी दान और अनुदान के बल पर अपनी तथा अपने टोले की जीविका चलाते रहे। यद्यपि जे.पी. के आन्दोलन मे अधिकाश सर्वोदयी उनके साथ आ गये थे, उन्होने यातनायें भी भोगी थीं, आपातकाल के दौरान हमारे ऐसे कार्यकर्त्ताओं ने सर्वोदय के दफ्तरो मे शरण ली थी। किन्तु यह बात निर्विवाद है कि विनोबा की आस्था इंदिरा गॉधी मे थी और वह उनके समर्थक थे। फिर भी सर्वोदय के अधिकाश कार्यकर्त्ता सपूर्ण क्राति के आन्दोलन के प्रति समर्पित थे। विनोबा जी की जो भी राय रही हो

नेहरू परिवार से जे पी के सम्बन्ध थे। किन्तु वह लोग जे पी के व्यक्तित्व से भयभीत रहते थे। पडित नेहरू के जीवन मे ही नेहरू–जे पी के मध्य कटुता बढ गयी थी किन्तु वह मुखर नही हुई थी। 1971 मे जब प्रधानमत्री इदिरा गाधी ने राष्ट्रपति पद के लिए नामाकन करवाया नीलम सजीव रेड्डी का और प्रचार वी वी गिरि का किया तो इस आचरण से जे पी को आघात लगा। उन्होने इंदिरा गाधी को पत्र लिखा, "राष्ट्रपति चुनाव के समय मैंने तुम्हारे आचरण को पसद नही किया था, यद्यपि मै जानता था कि यह तुम्हारे लिए राजनीतिक जीवन-मरण की घडी थी।" (13 मार्च 1971)।

इस लम्बे पत्र का उत्तर देते हुए इदिरा गॉधी ने लिखा था, "आपने लिखा है कि राष्ट्रपति के चुनाव के समय आपने मेरे आचरण को पसद नहीं किया। हालॉकि आपने मेरे राजनीतिक जीवन के लिए उसे आवश्यक समझा था। इन वाक्यो को पढकर मुझे दुख हुआ और विशेषकर यह सोचकर कि आप मुझे इतना कम जानते और समझते है। इस तलखी भरे पत्र का उत्तर जे पी ने तुरन्त दिया– 'मेरे उस वाक्य का तुमने बिल्कुल उलटा अर्थ लगाया है। इससे मेरा मतलब यह नहीं था जैसा तुमने लिखा है, कि तुम्हारे उस आचरण को मैने तुम्हारे राजनीतिक जीवन के लिए आवश्यक समझा था। जो चीज उचित नही है उसे मैं आवश्यक कैसे समझ सकता हूँ। अन्त मे इतना ही लिखना आवश्यक समझता हूँ कि कभी–कभी तुम्हारे आचरण को मैने पसन्द नही किया है, फिर भी सार्वजनिक रूप से तुम्हारे विरुद्ध कभी भी कुछ नही कहा है। यह सब इसीलिए नही लिख रहा हूँ कि मै तुम्हे खुश करना चाहता हूँ, या तुमसे कुछ अपेक्षा अपने लिए रखता हूँ, बल्कि इसलिए कि मुझे लगता है कि तुम भी मुझे बहुत कम जानती हो।

इन्दिरा गॉधी और जयप्रकाश नारायण के मध्य **"तुम आप भी मुझे बहुत कम जानती या जानते हो"** का तनाव बढता गया जिसने आगे चलकर विस्फोटक रूप धारण कर लिया। जयप्रकाश नारायण के साथ निरन्तर बढते हुए मतभेदो का परिणाम यह था कि 1971 के चुनाव मे मिला प्रचड बहुमत 1974 मे धुँआ हो चुका था। बाबा नागार्जुन के शब्दो मे "पटना आकर टूट चुका है दम दिल्ली का।"

जुलाई 1973 में जयप्रकाश जी ने 'एव्रीमेन्स' नामक साप्ताहिक पत्रिका निकालनी शुरू की। उसमे वह स्वय लिखते थे तथा अन्य बुद्धिजीवी भी लिखते थे। देश में बढती हुई चरित्रहीनता, सर्वोच्च न्यायालय के जजो की नियुक्ति मे सरकार दखलअदाजी मौलिक अधिकारो मे सरकार का हस्तक्षेप, सीमित तानाशाही की चर्चा आदि मुद्दो पर जे पी दुखी थे। वह निरन्तर प्रधानमत्री के सज्ञान में बातो को लाते कि सत्ता के मद मे प्रधानमत्री सुनी अनसुनी कर देतीं।

1974 मे उत्तर प्रदेश विधानसभा के चुनाव हुए। उस चुनाव के पहले जे पी चुनाव सुधार पर जनमानस बनाने के उद्देश्य से लखनऊ आये थे। यहॉ उन्होने विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं से वार्ता की थी सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी का एक प्रतिनिधि मडल स्वर्गीय रामसेवक यादव जी की अगुवाई मे उनसे मिला था जिसमें इन

पंक्तियों का विनम्र लेखक भी शामिल था जी की बातों से ऐसा आभास होता था कि वह चुनाव मे धॉधली से आशकित है। उन्होने सायकाल गगा प्रसाद मेमोरियल हाल मे एक गोष्ठी को भी सबोधित किया था। उनके भाषण से यह ध्वनि प्रकट होती थी कि वह सत्तारूढ काग्रेस की नीतियो से असतुष्ट हैं। गुजरात और बिहार मे छात्र आन्दोलन प्रारम्भ हो गये थे। जयप्रकाश जी ने गुजरात मे नवनिर्माण समिति के मच पर भाषण भी दिया था और 1942 की तरह के आन्दोलन का आवाह्न भी किया था। इस दौरान 15 फरवरी को जे पी इन्दिरा जी से मिले। इदिरा जी ने विपक्ष से सहयोग मागा जिसके लिए जे पी ने हामी भर ली। उन्होंने इसका प्रयास भी प्रारम्भ कर दिया और प्रथम चरण मे श्री अटलबिहारी वाजपेयी से वार्ता हुई। आगे की वार्ता के लिए पटना से वापसी पर कार्यक्रम बनाया गया। इस प्रकार सम्पूर्ण घटना से यही भान होता है कि जे पी के मन मे इदिरा गाधी के लिए कोई द्वेष नही था। किन्तु परिस्थितियॉ तेजी से बदल रही थीं जिसे कोई रोक नही सकता था। समय बडा बलवान होता है जो अपने मार्ग का चयन स्वय कर लेता है।

अब जे पी दिल्ली से पटना पहुँचे तो वहॉ भी फरवरी 1974 मे छात्र आन्दोलन प्रारम्भ हो चुका था। छात्रो की 12 मागे थी। 8 मागे तो शिक्षा से और विद्यार्थियो से सबन्ध रखने वाली थी। शेष मागे राष्ट्र से सम्बन्धित थी– भ्रष्टाचार दूर करो मॅहगाई दूर करो, बेकारी दूर करो, शिक्षा मे अमूल परिवर्तन करो आदि। बिहार सरकार ने इन मागो पर कोई विशेष ध्यान नही दिया। 18 मार्च को पटना मे बिहार विधानसभा के सामने भारी हगामा हुआ। छात्रो पर लाठी और गोली से प्रहार किया गया। अग्रेजी समाचार पत्र 'सर्चलाइट' का दफ्तर जला दिया गया। गोलीकाड में कई छात्र मारे गए। सम्पूर्ण पटना रणक्षेत्र बन गया था। उस दिन पटना की कानून व्यवस्था छिन्न–भिन्न हो गयी थी। काग्रेस की बैठक करने श्री उमाशकर दीक्षित एव जगजीवन राम पटना आये थे। उन्होने भी स्वीकारा कि कानून–व्यवस्था मे भारी कमी थी। काग्रेस की गुटबाजी भयायक रूप मे उभर गयी थी। शासक दल के लोगो ने एक अभियान भी चला रखा था कि छात्र आन्दोलन जयप्रकाश नारायण की अगुवाई मे हो रहा हैं वह इदिरा गांधी का शासन समाप्त करना चाहते हैं। यह भी प्रचारित किया गया कि भागलपुर के गाधी शान्ति प्रतिष्ठान के कार्यालय में बम बरामद हुए हैं और यह कि सर्वोदय के कार्यालय 'छात्र युवा सघर्ष समिति' के कार्यालय मे परिवर्तित हो गए हैं। बिहार के सहरसा जिले में ग्राम स्वराज्य का कार्य करने वाले किशोर शाह को विदेशी एजेन्ट बना दिया था। किशोर शाह का जन्म विदेश मे हुआ था इसलिए उन्हे ऐसा कहा गया। किन्तु वास्तविकता यह थी कि वह सच्चे गाधीवादी और राष्ट्रभक्त थे। सर्वोदय कार्यकर्ताओ की देशभक्ति किस तरह सदिग्ध हो सकती थी।

इन तमाम शरारती अफवाहों के बीच जयप्रकाश जी ने 30 अप्रैल को पहला वक्तव्य प्रसारित किया– "बिहार सरकार को मैं सच्चे दिल से सलाह देता हूँ कि अगर सरकार का यही बर्ताव जारी रहा और वह जनता के शातिपूर्ण आन्दोलन को दबाती

रही, तो फिर हिसक विस्फोट को टाला नहीं जा सकता है।" उन्होने आगे कहा, "अपने बारे मे मै यही कहना चाहता हूँ कि मैं तो कभी भी पटना, दिल्ली या दूसरी किसी जगह मे चलने वाली व्यवस्था, और भ्रष्टाचार आदि का मूक साक्षी नही रह सकूँगा। स्वतत्रता की लडाई मैने इन बातो के लिए नही लडी थी। मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नही है कि इस मत्रिमंडल की जगह कोई दूसरा मत्रिमडल आ रहा है। लेकिन मैने निश्चय किया है कि मैं भ्रष्टाचार अव्यवस्था, काला बाजार, मुनाफाखोरी, और अनाज का सग्रह करके जनता को भूखा मारने के विरोध में बराबर लडता रहूँगा। मैंने निश्चित किया है कि सच्चे अर्थों मे जनता का राज और जनता का लोकतत्र लाने के लिए लडाई लडता रहूँगा।

जयप्रकाश जी का यह बयान अत्यत प्रासगिक और परिस्थिति के अनुरूप था किन्तु प्रधानमत्री इदिरा गाधी ने इसके उत्तर मे दिये गये वक्तव्य मे आग मे घी का काम किया। उन्होने दिल्ली मे सासदो की बैठक मे कहा, 'वह (जयप्रकाश नारायण) काग्रेसियो पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाते जाते हैं। अगर विरोधी पक्ष के लोग ऐसे आरोप लगाते तो मै समझ सकती हूँ। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि अब सर्वोदय वाले भी ऐसे आरोप लगाने लगे हैं। धनवानो के साथ स्थायी सम्बन्ध रखने वाले और उनकी कृपादृष्टि चाहने वाले ऐसे लोग भ्रष्टाचार की बात करने की हिम्मत कैसे करते होगे। एक अन्य जगह कहा 'कुछ लोगो को एक ऊँचा नैतिक स्तर पर से सलाह देने की आदत पड गयी है। हालाँकि वह खुद तो बडे उद्योगपतियो के अतिथि भवनो मे ही रहते हैं। उनके यात्रा खर्च और दूसरे खर्च उद्योगपति ही दिया करते हैं।'

इदिरा जी ने सर्वोदय आन्दोलन मे फूट डालने के उद्देश्य से विनोबा भावे एव जे पी के मध्य मतभेद पैदा करने की यह कहकर कोशिश की, कि 'विनोबा जी भी अपने अनुयायियों की इस कृति से दुखी हैं।'

इदिरा गाधी की छोटी बुद्धि और मानसिक विक्षिप्तता पर जे पी उबल पडे उन्होने कहा, 'जिसके पास आमदनी का कोई स्रोत नही होता, ऐसे पूरे समय के किसी भी कार्यकर्त्ता के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि वह अपने निजी मित्रो से जीविका के लायक आर्थिक सहायता ले। वैसे, अगर इंदिरा जी का यह मापदड माना जाये तब तो गाधी जी, सबसे अधिक भ्रष्टाचारी सिद्ध होगे, क्योकि उनका पूरे का पूरा खर्च उनके धनी प्रशसको की सहायता से चलता था।' अपने बयान मे सर्वोदय आन्दोलन के बारे मे जयप्रकाश जी ने कहा था, 'दो लोगो के प्रेमपूर्ण सम्बन्धों मे मतभेद की कला मे इदिरा जी माहिर हैं। किन्तु अपनी इस कला का उपयोग करके वे मेरे और विनोबा जी के मध्य फूट डालने की चेष्टा से दूर रहे तो बडी मेहरबानी होगी। मेरे और विनोबा जी के मध्य दूरी समझदारी बनी हुई है।' इदिरा गाधी शात होने वाली जीव नहीं थी। उन्होने अपनी कारस्तानी जारी रखी। 10 जुलाई 1974 के पत्र मे जे पी ने प्रधानमत्री को लिखा, 'अपनी निराशा को व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नही हैं। तुम्हारी इच्छा। मै तो केवल एक साधारण व्यक्ति हूँ लेकिन मेरा अपना भी स्वाभिमान है।'

अब 71 वर्षीय जयप्रकाश नारायण 1942 के युवा हृदय सम्राट बन चुके थे। 8 अप्रैल 1974 को उन्होने पटना मे मौन जुलूस निकाला जिसमे इन पक्तियो का तुच्छ लेखक मौजूद था। एक हजार शाति सेना के कार्यकर्ता हाथ–मुँह बॉधे और गले मे पडी हुई दफ्ती की पट्टियॉ जिन पर लिखा था, 'हाथ हमारा नही उठेगा–हमला चाहे जैसा होगा', पटना की सडको पर पैदल मार्च कर रहे थे। जे पी. एक जीप मे बैठे पसीने से लथ-पथ आगे–आगे चल रहे थे। इन मासूम देवताओ के जुलूस को देखने के लिए पटना के मुख्य मार्गों पर लाखो नर-नारियों का जन सैलाब उमड पडा था। मुख्य मार्गों पर, पेडों पर, घर की छतों पर तिल रखने की जगह नही थी। जे पी के सौम्य चेहरे को देखकर लोग फूट–फूट कर रो पडते थे। 'राजसत्ता' को 'नैतिक सत्ता' ललकारने निकल पडी थी। 'पावर' पटना आकर 'पावरलेस' हो गयी थी। जयप्रकाश ने जनता की नाडी पर हाथ रख दिया था। बूढे क्रातिकारी ने 8 अप्रैल को नाडी पहचान ली थी। उस दिन के जुलूस तथा जनता की रोमाचक गतिविधि का डा0 धर्मवीर भारती ने 'मुनादी' नामक कविता मे कितना सुन्दर चित्रण किया है–

खलक खुदा का, मुल्क बादशाह का
हुक्म शहर कोतवाल का
हर खासो–आम को आगाह किया जाता है,
कि खबरदार रहे
और अपने-अपने किवाडो के अन्दर से
कुंडी चढाकर बन्द कर लें
गिरा ले खिडकियो के परदे
और बच्चो को बाहर सडक पर न भेजें
क्योकि
एक बहत्तर बरस का बूढा आदमी
अपनी कापती आवाज मे
सडको पर सच बोलता हुआ निकल पडा है।

शाति जुलूस के बाद 9 अप्रैल को पटना की एक विशाल सभा मे छात्रो ने जयप्रकाश जी को 'लोकनायक' माना और आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। आन्दोलन पूर्णरूप से वैधानिक एव शातिपूर्ण था, रचनात्मक था और अहिसक था। जैसे–जैसे सरकार का दमन बढता जाता था। आन्दोलन का वेग भी बढता जाता था।

बिहार सरकार अविवेकपूर्ण रुख अपनाती जा रही थी। छात्र आन्दोलन को कुचलने में वह सक्रिय हो गयी थी 'शासन ठप करो' आन्दोलन के तहत गया में

गोलीकाड हुआ। 12 अप्रैल को जयप्रकाश जी गया पहुँचे। पॉच सदस्यो की एक जॉच समिति बनाई गयी जिसने रपट दी कि छात्रो पर अनावश्यक ढग से गोली चलाई गयी। सरकार का कथन था कि गोली चलाया जाना वाजिब था। इस पर जयप्रकाश जी क्रोधित हुए। उन्होंने कहा, 'अब अगर छात्र विधानसभा को भग करके नया चुनाव करने की मॉग करते हैं तो उनका छात्रो को समर्थन रहेगा।' इस पकार बिहार विधानसभा को भग करने का एक और मुद्दा इस आन्दोलन मे जुड गया।

बिहार विधानसभा को भग करने का आदोलन एक नया मोड था जिसमे सरकार की अदूरदर्शिता से जे पी को जुडना पडा। सरकार ने इस माग को मानने से स्पष्ट इकार कर दिया।

इस दौरान पौरुष ग्रन्थि के आपरेशन के लिए जे पी को वेल्लौर जाना पडा। उन्हे बिहार से पॉच हफ्ते बाहर रहना था। इस पॉच हफ्तो के लिए एक सचालन समिति गठित की गयी। इसके पहले 5 जून 1974 को पटना के गाधी मैदान मे एक अभूतपूर्व सभा बुलायी गयी। इसमे लगभग पॉच लाख लोग सम्मिलित थे। जयप्रकाश जी ने अपने ऐतिहासिक भाषण मे स्पष्ट रूप से बिहार विधानसभा भग करने की मॉग की। जुलाई 1974 को सर्व सेवा सघ ने भी आन्दोलन को अपने समर्थन की घोषणा की। इससे जे पी को नैतिक बल मिला।

जे पी ने 3,4 एव 5 अक्टूबर को सम्पूर्ण बिहार बन्द की घोषणा की। बिहार विधानसभा को भग करने के लिए विधायको से त्यागपत्र मागा गया। सम्पूर्ण बिहार पर आन्दोलन का बुखार सवार था। रास्ता जाम, रेल जाम, बिहार बन्द, हवाई जहाज बन्द था। लाखो लोग सडको पर आ गये थे। यह सम्पूर्ण क्राति के आन्दोलन को जनता के समर्थन का प्रमाण था। पटना रणक्षेत्र बना था। ऑसू गैस, लाठी चार्ज और दमन का ताडव हो रहा था। जे पी को भी लाठियो का वार झेलना पडा। यदि लाठियो का वार युवकों तथा नानाजी देशमुख ने अपने ऊपर न ले लिया होता तो उस दिन अनर्थ हो जाता। आन्दोलन को दबाने के लिए बाहर से बी एस एफ , पी.ए.सी तथा पुलिस बुलायी गयी थी। गंगा नदी पर हेलीकाप्टर गश्त कर रहे थे। वायरलेस से पुलिस नियत्रित की जा रही थी। इदिरा जी ने वक्तव्य दिया– "मै इस्तीफा देना पसन्द करूँगी किन्तु विधानसभा नही भग होगी। जब जयप्रकाश जी कहते हैं कि जनता इस आन्दोलन मे उनके साथ है तो वह सब्र से काम ले। इस बात का निर्णय चुनाव मे हो जायेगा।" 18

की सभा जो अब तक की सभी सभाओ में विशाल थी उसमें जे पी ने भी इंदिरा जी की चुनौती स्वीकार किया

और विषमता के खात्मे के लिए कार्य करना प्रारम्भ किया जाने लगा। जे पी ने कहा सत्ता हमारी अतिम मजिल नही है। हमारी मजिल सम्पूर्ण क्राति है। सम्पूर्ण क्राति को परिभाषित करते हुए जे पी ने कहा लोहिया की भॉति मेरी सप्त क्राति का अर्थ है–

1 सामाजिक क्रान्ति, 2 आर्थिक क्रान्ति, 3 राजनीतिक क्रान्ति, 4 सास्कृतिक क्रान्ति, 5 वैचारिक क्रान्ति, 6 बौद्धिक क्रान्ति, 7 शैक्षणिक क्रान्ति ।

जयप्रकाश जी के साथ जो सर्वोदय के नेता या कार्यकर्त्ता इस आन्दोलन मे लगे थे वह राजनीतिक पार्टियो के जमावडे से बहुत प्रसन्न नही थे। वे चाहते थे कि आन्दोलन आम जनता का बन जाये किन्तु यह हो नही सकता था। एक तो यह इन पार्टियो का अपना सगठन था दूसरे यह कि इन नेताओ की साख थी। छात्र नेता भी किसी न किसी पार्टी से सबद्ध थे। वे पार्टी-निरपेक्ष नही बन सकते थे। जयप्रकाश जी ने छात्र युवा सघर्ष वाहिनी का गठन किया किन्तु आपातकाल लगने के बाद उसके अध्यक्ष जेल नही गये। यही नही इस सगठन के नाम पर जो चन्दा हुआ था उसको उन्होने बैंक से निकाल लिया और अपने ऊपर इस्तेमाल कर लिया।

इसी बीच एक और घटना हो गयी। 12 जून 1975 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने अपना फैसला सुना दिया। इन्दिरा गॉधी चुनाव याचिका हार गयी। राजनारायण जी की अपील स्वीकार हो गयी। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने अपने फैसले के विरुद्ध उच्चतम न्यायालय मे याचिका दायर करने के लिए 20 दिन का समय भी दिया। हालाकि इस अवधि मे इन्दिरा जी लोकसभा की सदस्य नही रह गयी थीं। 23 जून को जयप्रकाश जी दिल्ली पहुँचे। 25 जून को सर्वदलीय रैली होनी थी। जयप्रकाश जी ही मुख्य वक्ता थे। 25 जून की रात में जे पी सहित सभी नेता गिरफ्तार कर लिए गये। जयप्रकाश जी के मुँह से निकला– "विनाश काले विपरीत बुद्धि ।"

देश मे आपातकाल लग चुका था। हम सब मीसा मे बन्द किए जा चुके थे। 26 जून की भोर मे जयप्रकाश नारायण को गिरफ्तार करके दिल्ली से सीधे हरियाणा राज्य मे सोहना गेस्ट हाउस ले जाया गया। मोरार जी भाई को भी वही ले जाया गया था एक दूसरे से मिलने नही दिया गया। जे पी की तबियत खराब होने पर उन्हे अखिल भारतीय आर्युविज्ञान सस्थान ले जाया गया। दो दिन वहॉ उनका उपचार चला। 1 जुलाई को उन्हे हवाई जहाज से चडीगढ ले जाया गया। वहॉ उन्हे पोस्ट ग्रेजुएट इस्टीटयूट आफ मेडिकल एजूकेशन एण्ड रिसर्च के अस्पताल मे कैदी की तरह रखा गया। बीमारी के 6 दिन बाद जे पी के छोटे भाई राजा बाबू उनसे मिल सके थे। वे महीने में दो बार उनसे मिलने जा सकते थे। जे पी का यह एक प्रकार का एकान्तवास था। घुटन मे उनकी बीमारी और बढ रही थी। अग्रेज सरकार ने भी जे पी को एकान्तवास मे बहुत कम दिनो तक रखा था। जे पी को अखबार और रेडियो दिये गये किन्तु वह सभी शासक दल के भोपू थे उससे क्या लाभ इदिरा गाधी की तानाशाही सविधान की अवज्ञा का अनादर मौलिक अधिकारों का हनन की देश के

प्रतिष्ठित नेताओ का बन्दी जीवन, आदि बाते जे पी को अन्दर ही अन्दर घुला रही थी। उन्होने अपनी जेल डायरी मे लिखा, "मैंने अपना दिल टटोल कर देख लिया। अब अगर मौत भी आती है, तो कोई हरज नही है। अपने देश को तानाशाही के गहरे गड्ढे की तरफ घिसटते देखना मेरे लिए मौत से जरा ही कम तकलीफ देने वाली बात है।

जेल मे जे पी का विचार मथन चलता रहा। उन्होने उसे जेल डायरी में लिखा है। 18 सितम्बर को अस्पताल की सीमा मे मौजूद अतिथि गृह मे उनको रखा गया। दीवारें काफी ऊँची थी फिर भी वह आसमान देख सकते थे।

27 सितम्बर को जे पी बाथरूम गए तो उनके पेट मे भयकर दर्द होने लगा। उन्हे पसीना बहुत आया काफी छानबीन के बाद पता चला कि उनके गुर्दो ने काम करना बन्द कर दिया है। बीमारी ने गम्भीर रूप ले लिया।

इस बीच जे पी की बीमारी की चर्चा देश मे होने लगी। बी बी सी ने समाचार दिया। राजा बाबू ने इदिरा जी को पत्र लिखा। 12 नवम्बर को सरकार ने जयप्रकाश जी को पैरोल पर छोडा। जिस समय जयप्रकाश जी को छोडा गया वह अधमरी हालत मे थे। यह सरकार की नीचता की चरम सीमा थी कि ऐसी हालत मे भी उन्हे पैरोल पर छोडा गया। उन्हे आयुर्विज्ञान सस्थान नई दिल्ली तथा बाद मे जसलोक अस्पताल बम्बई मे रखा गया। डेढ महीने बाद जे पी अस्पताल से बाहर आये। उनके जीवन के जो दिन शेष बचे थे उसमे उन्हे डायलेसिस पर रहना पडा। उनके जीवन के यह घोर कष्ट के दिन थे।

देश पर आपातकाल थोपने के बाद चुनाव सम्बन्धी कानून मे कुछ सशोधन कर दिये गये। जिन मुद्दो पर इदिरा गाधी चुनाव याचिका मे पराजित हुई थी, उन्ही मे ऐसे सशोधन किये गये जिसका लाभ इदिरा गाधी को मिल रहा था। नवम्बर 1975 मे सर्वोच्च न्यायालय ने इदिरा गांधी की अपील स्वीकार कर ली जिसमे फैसला उनके पक्ष मे हो गया। यह आपातकाल का समय था। काग्रेस कार्यकर्त्ताओ के साथ गुंडों ने मिलकर खूब उधम किया और अभद्र नारे लगाये। लोगो को यह बताया गया कि इलाहाबाद के उच्चन्यायालय के न्यायाधीश जगमोहन राजनारायण जी से मिल गये थे। तत्कालीन मुख्यमत्री बहुगुणा जी ने राजनारायण जी का साथ दिया था। किन्तु यह सब बातें गलत थी। वास्तविकता यह थी कि जब सत्ताधारी व्यक्ति ने कानून मे रद्दोबदल करवा दिया तो उच्चतम न्यायालय मे फैसला उनके पक्ष मे होना ही था। यदि वह कानून मे व्यापक सशोधन के बाद चुनाव याचिका जीती तो क्या बडी बात थी। इदिरा जी के पक्ष मे निर्णय देते हुए न्यायाधीशो ने यही लिखा था 'इदिरा गाधी के विरुद्ध कुछ आरोप थे और इन आरोपो के बारे में उच्च न्यायालय ने अपने कुछ निष्कर्ष निकाले थे। लेकिन अब नये सशोधित कानून के अनुसार इस तरह के आरोप अपराध के दायरे मे आते ही नही इसलिए इदिरा गाधी की अपील मजूर की जाती है'। न्यायाधीशो ने यह भी स्पष्ट कर दिया था कि 'चूँकि यह अपील से पहले का फैसला जिस कानून के आधार पर दिया

गया था, उस कानून के तहत नही, बल्कि नये सशोधित कानून के प्रकाश मे मजूर की जाती है, इसलिए विजयी पक्ष का खर्च प्रतिपक्ष को चुकाने का आदेश नही दिया जा रहा है। हॉ पॉच मे से एक न्यायाधीश ने अवश्य इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश की आलोचना की थी।

चुनाव कानून मे संशोधन के साथ ही इन्दिरा जी ने अपने दो तिहाई बहुमत के जोर पर उपराष्ट्रपति, राष्ट्रपति, प्रधानमत्री और लोकसभा के अध्यक्ष के चुनाव को देश के किसी भी न्यायालय मे चुनौती देने को अवैध कर दिया था। इस पर उच्चतम न्यायालय ने टिप्पणी की–

"इस धारा के मूल मे एक राजनीतिक हेतु निहित है जो प्रकरण न्यायालय मे विधिवत चल रहा था, लोकसभा ने उसमे व्यर्थ ही हस्तक्षेप किया है। लोकसभा न्यायालय मे चल रहे मामलो का निर्णय नही कर सकती। व्यवहार मे इसका परिणाम यह होगा कि ये चार व्यक्ति चाहे जैसी अनुचित रीति-नीति का आचरण करे तथा चुन लिए जाये तो भी उन पर कोई ऑच नही लग सकेगी। यह तो मुक्त और न्यायपूर्ण चुनाव के मूल पर ही प्रहार करने जैसी बात हुई। ऐसी स्थिति मे कानून का सशोधन कहाँ रहा ? यह सशोधन तो ऐसा आदेश देता है कि न्यायालय मे जिस अपील की सुनवाई की जा रही हो, उसका फैसला उसके गुण के आधार पर या किसी कानून के अनुसार न किया जाये। बल्कि जैसा सरकार कहे वैसा किया जाये। . हमारी देशी रियासतो मे कभी–कभी ऐसा हुआ करता था। यह तो निरी निरकुश सत्ता यानी 'दि स्पारिक पावर' मानी जायेगी, और यह हमारे लोकतांत्रिक ढॉचे को हानि पहुँचायेगी।'

उच्चतम न्यायालय की इस टीका के बाद इंदिरा जी की तानाशाही प्रवृत्ति उजागर हो जाती है और उनके पक्ष मे हुए निर्णय की पोल खुल जाती है।

इसके अलावा, इदिरा सरकार ने एक और प्रारूप तैयार किया था जिसके तहत कि राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमत्री, राज्यसभा एव विधानसभाओ के अध्यक्ष, राज्यपालो के विरुद्ध उनकी किसी कार्यवाही के बारे मे, उन्होने जितना भयकर अपराध किया हो मुकदमा नही चल सकता। इस बिल को राज्यसभा मे पारित करवा लिया गया था किन्तु लोकसभा भग होने के कारण यह कानून पारित नहीं हो सका।

ऐसे वातावरण मे जयप्रकाश जी घुटन महसूस करने लगे। उनके स्वास्थ्य पर इन बातो का गहरा असर पड रहा था। वह विनोबा भावे की तरह निष्ठुर और किसी के परिवार के भक्त नही थे। वह महान लोकतत्रवादी, राष्ट्रभक्त और सवेदनशील थे। ऐसे मे उनका विचलित होना स्वाभाविक था।

जयप्रकाश जी की भयंकर बीमारी, देश मे व्याप्त जन असतोष, हजारों लोगो का जेलों में बन्द होना आदि बातों का पर प्रभाव पड रहा था कांग्रेस के अदर भी घोर असतोष व्याप्त था एक दिन बाबू राम से मिले उन्होंने

स्पष्ट शब्दो मे आपातकाल को समाप्त करने की बात कही। जनवरी 1977 मे आपातकाल उठा लिया गया, राजनीतिक बन्दी मुक्त किये गये, नये चुनाव की घोषणा की गयी। चारो ओर हर्ष की लहर दौड गयी। जे पी ने दूसरी आजादी की जग जीत ली थी।

आम चुनाव मे जे पी ने स्पष्ट कर दिया था कि जब तक विभिन्न दल मिलकर चुनाव नही लडते हैं वह प्रचार नही करगें। अन्तत जनता पार्टी की बुनियाद पडी जिसमे जे पी शब्द ध्वनित होता है।

फरवरी के अतिम एव मार्च के प्रथम सप्ताह मे चुनाव नतीजे आ चुके थे। जनता पार्टी को शानदार सफलता मिली। वयोवृद्ध काग्रेसी नेता एव स्वतत्रता सग्राम सेनानी मोरारजी देसाई देश के प्रधानमत्री बने। इस प्रकार इस सम्पूर्ण क्राति के महासग्राम का अत हुआ।

आपातकाल लगने के तुरन्त बाद ही जे पी की किडनी खराब हो गयी। इस बीमारी से वह उबर नही पाये। 8 अक्टूबर 1979 को प्रात 6 बजे जयप्रकाश जी ने इस ससार को अलविदा कहा। सारा देश दुखी था। सरकार ने 13 दिन के शोक की घोषणा की। 9 अक्टूबर को पटना मे राजकीय सम्मान के साथ इस संत और राजनेता का अतिम सस्कार किया गया।



कुछ प्रासंगिक कविताएँ

कहते है उसको जयप्रकाश !

—दिनकर

झझा सोई, तूफान रुका,
प्लावन जा रहा कगारो मे,
जीवित है सबका तेज किन्तु,
अब भी तेरे हुकारो मे।

दो दिन पर्वत का मूल हिला
फिर उतर सिधु का ज्वार गया,
पर, सौप देश के हाथो मे,
वह एक नई तलवार गया।

जय हो भारत के नये खड्ग,
जय तरुण देश के सेनानी,
जय नई आग, जय नई ज्योति,
जय नये लक्ष्य के अभियानी।

स्वागत है, आओ, काल—सर्प के,
फण पर चढ चलने वाले,
स्वागत है, आओ, हवन—कुण्ड मे,
कूद स्वय जलनेवाले।

मुट्ठी मे लिए भविष्य देश का,
वाणी मे हुकार लिए,
मन से उतरकर हाथो मे,
निज स्वप्नो का ससार लिए।

सेनानी करो प्रणाम अभय,
भावी इतिहास तुम्हारा है,
ये नखत अमॉ के बुझते हैं,
सारा आकाश तुम्हारा है।

(सन 1942 के आन्दोलन के बाद जब 1946 मे जयप्रकाश जेल से छूटकर आये तब 21 अप्रैल के दिन पटने की सम्मान सभा में कवि दिनकर ने जयप्रकाश के जोशीले व्यक्तित्व को हू—ब—हू करने वाली अपनी यह कविता बुलन्द में गाई थी)

जो कुछ था निर्गुण, निराकार,
तुम उस द्युति के आकार हुए,
पीकर जो आग पचा डाली,
तुम स्वय एक अगार हुए।

सॉसो का पाकर वेग देश की,
हवा तपी–सी जाती है,
गगा के पानी मे देखो,
परछाई आग लगाती है।

विप्लव ने उगला तुम्हे, महामणि
उगले क्यो नागिन कोई,
माता ने पाया यथा,
मणि पाये बडभागिन कोई।

लौटे तुम रूपक बन स्वदेश को,
आग भरी कुरबानी का,
अब जयप्रकाश है नाम देश की,
आतुर, हठी जवानी का।

कहते हैं उसको जयप्रकाश,
जो नही मरण से डरता है,
ज्वाला को बुझते देख कुण्ड मे,
स्वय कूद जो पडता है।

है जयप्रकाश वह, जो न कभी,
सीमित रह सकता घेरे मे,
अपनी मशाल जो जला,
बॉटता फिरता ज्योति अधेरे मे।

है जयप्रकाश वह, जो कि पगु का,
चरण, मूक की भाषा है,
है जयप्रकाश वह, टिकी हुई
जिस पर स्वदेश की आशा है।
हॉ, जयप्रकाश है नाम समय की
करवट का, ॲगडाई का,
भूचाल, बवण्डर के दावो से,
भरी हुई तरुणाई का।

है, जयप्रकाश वह नाम जिसे,
इतिहास समादर देता है,
बढकर जिसके पदचिन्हो को,
उर पर अकित कर लेता है।

ज्ञानी करते जिसको प्रणाम,
बलिदानी प्राण चढाते है,
वाणी की आग बढाने को,
गायक जिसका गुण गाते है।

आते ही जिसका ध्यान,
दीप्त हो प्रतिभा पख लगाती है,
कल्पना ज्वार से उद्वेलित,
मानस–तट पर थर्राती है।

वह सुनो, भविष्य पुकार रहा,
वह दलित देश का त्राता है,
स्वप्नो का द्रष्टा जयप्रकाश,
भारत का भाग्य–विधाता है।



मुनादी

–धर्मवीर भारती

खलक खुदा का, मुलुक बाश्शा का
हुकुम शहर कोतवाल का
हर खासो–आम को आगाह किया जाता है
कि खबरदार रहें
और अपने–अपने किवाड़ो को अन्दर से
कुण्डी चढाकर बन्द कर ले
गिरा ले खिड़कियो के परदे
और बच्चो को बाहर सडक पर न भेजे,

(बिहारी आन्दोलन के दिनो में सरकार की तरफ से विचार–शून्य और अलोकतान्त्रिक रुख अपनाया गया उसको हू–ब–हू शब्दबद्ध करनेवाली चुटीली कविता जो 4 नवम्बर 1974 की घटना को ध्यान में रखकर लिखी गई

क्योकि
एक बहत्तर बरस का बूढा आदमी
अपनी कॉपती कमजोर आवाज मे
सडको पर सच बोलता हुआ निकल पडा है।

शहर का हर बशर वाकिफ है
कि पच्चीस साल से यह मुजिर है
कि हालात को हालात की तरह बयान किया जाये
कि चोर को चोर और हत्यारे को हत्यारा कहा जाये
कि मार खाते भले आदमी को
ओर अस्मत लुटाती हुई औरत को
और भूख से पेट दबाए ढॉचे को
और जीप के नीचे कुचलते बच्चे को
बचाने की बेअदबी की जाये।
जीप अगर बाश्शा की है तो
उसे बच्चे के पेट पर से गुजरने का हक क्यो नही ?
आखिर सडक भी तो बाश्शा ने बनवाई है।

बुड्ढे के पीछे दौड पडने वाले अहसान—फरामोशो।
क्या तुम भूल गए कि बाश्शा ने
एक खूबसूरत माहौल दिया है जहॉ
भूख से ही सही, दिन मे तुम्हें तारे नजर आते हैं
और फुटपाथो पर फरिश्तो के पख रात भर
तुम पर छॉह किए रहते है
और हूरे हर लैम्प पोस्ट के नीचे खडी
मोटर वालो की ओर लपकती है
कि जन्नत तारी हो गई है जमी पर,
तुम्हे उस बुड्ढे के पीछे दौडकर
भला और क्या हासिल होने वाला है ?

आखिर क्या दुश्मनी है, तुम्हारी उन लोगो से
जो भले मानसो की तरह
अपनी-अपनी कुर्सी पर चुपचाप
बैठे-बैठे मुल्क की भलाई के लिए
रात-रात जागते हैं
और गॉव की नाली की मरम्मत के लिए
मॉस्को न्यूयार्क टोकियो लन्दन की खाक छानते
फकीरों की तरह भटकते रहते हैं

तोड दिए जाएँगे पैर
और फोड दी जाएँगी ऑखें
अगर तुमने अपने पॉव चलकर
महलसरा की चहारदीवारी फलॉगकर
अन्दर झॉकने की कोशिश की।
क्या तुमने नही देखी वह लाठी
जिसस हमारे एक कद्दावर जवान ने
इसी निहत्थे कॉपते बुड्ढे को ढेर कर दिया ?
वह लाठी हमने समय–मजूषा के साथ
गहराइयो मे गाड दी है
कि आने वाली नस्ले उसे देखे और
हमारी जवॉमर्दी की दाद दे।

अब पूछो कहॉ है वह सच जो
इस बुड्ढे ने सडकों पर बकना शुरू किया था ?
हमने अपने रेडियो के स्वर ऊँचे करा दिए हैं
और कहा है कि जोर–जोर से फिल्मी गीत बजाएँ
ताकि थिरकती धुनो की दिलकश बुलन्दी मे
इस बुड्ढे की बकवास दब जाए।

नासमझ बच्चो ने पटक दिए पोथियॉ और बस्ते
फेक दी है खडिया और स्लेट
इस नामाकूल जादूगर के पीछे चूहो की तरह
फदर–फदर भागते चले आ रहे हैं
और जिसका बच्चा परसो मारा गया
वह औरत आचल परचम की तरह लहराती हुई
सडक पर निकल आई है।

खबरदार, यह सारा मुल्क तुम्हारा है,
पर जहॉ हो, वही रहो,
यह बगावत नही बरदाश्त की जाएगी कि
तुम फासले तय करो
और मजिल तक पहुँचो।
इस बार रेलो के चक्के हम खुद जाम कर देगे
नावें मंझधार मे रोक दी जायेगी
बैलगाडियॉ सडक किनारे नीमतले खडी कर दी जायेंगी

ट्रको को नुक्कड़ से लौटा दिया जायेगा
सब अपनी-अपनी जगह ठप।
क्योकि याद रखो कि मुल्क को आगे बढना है
और उसके लिए जरूरी है कि जो जहॉ है
वही ठप कर दिया जाये।

बेताब मत हो
तुम्हे जलसा–जुलूस, हल्ला–गुल्ला, भीड–भडक्के का शौक है,
बाश्शा को हमदर्दी है अपनी रिआया से
तुम्हारे इस शौक को पूरा करने के लिए
बाश्शा के खास हुक्म से
उसका अपना दरबार जुलूस की शकल मे निकलेगा–दर्शन करो।

वही रेलगाडियॉ तुम्हे मुफ्त लाद कर लायेगी।
बैलगाडी–वालो को दुहरी बख्शीश मिलेगी
ट्रको को झण्डियो से सजाया जाएगा
नुक्कड–नुक्कड पर प्याऊ बिठाया जाएगा।
और जो पानी मागेगा
उसे इत्र–बसा शरबत पेश किया जाएगा।

लाखो की तादाद में शामिल हो इस जुलूस मे
और सडक पर पैर घिसते हुए चलो
ताकि वह खून जो उस बुड्ढे की वजह से बहा,
वह पुँछ जाए।
बाश्शा सलामत को खून-खराबा पसन्द नही।

खलक खुदा का मुल्क बाश्शा का
हुकुम



दस्तावेज

दो लाक्षणिक पत्र

शेख मुजीबुर्रहमान
(प्रधानमंत्री, बाग्लादेश, ढाका)

पटना
31 जनवरी, 1972

प्रिय भाई

मै मानता हूँ कि मेरे इस आत्मीयतापूर्ण सम्बोधन पर आपको कोई आपत्ति नही होगी, क्योकि इसके अलावा दूसरे किसी प्रकार से आपके प्रति अपनी भावनाओ का मै व्यक्त नही कर सकता।

अपनी इस उमर मे अपनी ऐसी तबीयत के चलते मुझ जैसे आदमी के मन मे अब और कोई इच्छा तो रह नही जाती, सिवाय इसके कि बिना किसी खेद के और बिना किसी लालसा के वह शाति और खुशी के साथ अपने सिरजनहार से मिल सके। इसके बावजूद जिस दिन आप लन्दन से दिल्ली आये, उस दिन, उस ऐतिहासिक अवसर पर वहाँ हाजिर रहने की एक जबरदस्त इच्छा ने मुझे विवश सा कर दिया था। आपके दर्शन करने, आपके गले मे फूलो की माला पहनाने, और ईश्वर की कृपा से, एक क्षण के लिए आपको अपनी पूरी ताकत के साथ गले लगा लेने के लिए मेरा मन मचल उठा था। अगर दिल की बीमारी के अलावा मुझे दूसरी कोई बीमारी रही होती, तो डॉक्टरो की चाहे जैसी सलाहो के बावजूद, मैं निश्चय ही आपके स्वागत के लिए वहाँ पहुँचा होता। लकिन परिस्थितियाँ ऐसी बनी कि मन मारकर पटने मे ही बैठे रहने के अलावा दूसरा कोई उपाय मेरे हाथ मे रहा नही था। मैं अपने ट्रांजिस्टर रेडियो के साथ सटकर बैठा रहा और आकाशवाणी ने उस दिन सुबह की दिल को छू लेने वाली सारी घटनाओ का जो ऑखो देखा हाल प्रसारित किया, उसे सुनकर ही मुझे सन्तोष कर लेना पडा। परेड के मैदान मे दिया गया आपका भाषण बहुत ही हृदयस्पर्शी था। लेकिन उस दिन की दिल को सबसे ज्यादा छू लेनेवाली और हिला देने वाली घटना तो थी ढाका के रेसकोर्स वाले मैदान मे ऑसुओ भरा और गद्‌गद कण्ठ से दिया गया आपका भाषण। डॉक्टरो ने मुझे सलाह दी थी कि मै भावो को उभाडने वाला किसी तरह का कोई तनाव अपने मन मे आने न दूँ। फिर भी वह पूरा दिन मेरे लिए तो— और मुझे विश्वास है कि मेरे बहुतेरे देश-बन्धुओ के लिए, और आपके साढे सात करोड देश-बन्धुओ के लिए भी—सबसे अधिक मर्मस्पर्शी, भावनापूर्ण और आध्यात्मिक अनुभूति का दिन बन गया।

ईश्वर आपको लम्बी उमर और बढिया तन्दुरुस्ती दे कि जिससे आप अपने और अपने साढे सात करोड देश-बन्धुओ के सपनो के 'सोनार बाग्ला' को साकार कर सके यही नही, बल्कि आप इस धिक्कार-भरे अभागे उपमहाद्वीप को स्वतत्र और स्वायत्त राष्ट्रो के एक सुसभ्य सुबुद्ध परस्पर सहयोगी और समृद्ध समुदाय में बदल डालने के काम में भी बन सकें

आमतौर पर यह माना जाता है कि यह उपमहाद्वीप भारत, बगलादेश और पाकिस्तान से मिलकर बना है। परन्तु भूटान सिक्किम और नेपाल भी इस भारतीय महाद्वीप के अग रूप है, और उनका भविष्य भी उनके बीच और हम सबके बीच पाये जाने वाले सद्भाव, मित्रता और सहयोग पर अवलम्बित है। सचमुच ही विनाबाजी जवाहरलाल जी, राममनोहर लोहिया और मेरे सहित इस देश के कई लोगो का एक सपना रहा है कि केवल भारतीय उपमहाद्वीप का ही नही, बल्कि समूचे दक्षिण एशिया का भविष्य इस बात मे निहित है कि इस क्षेत्र के सभी देश किसी–न–किसी प्रकार के सघ ने अथवा भाईचारे मे जुडकर रहे। विनोबाजी ने बार–बार ए–बी–सी के त्रिकोण की बात कही है। ए यानी अफगानिस्तान, बी यानी ब्रह्म देश सी यानी सीलोन। इन तीन छोरा क बीच आया हुआ समूचा प्रदेश स्वाभाविक रूप से एक भौगोलिक और राजनीतिक इकाई के रूप मे है, और ऐसा लगता है, मानो नियति ने ही राजनीतिक, आर्थिक और अन्य हिता का एक भाईचारा खडा करने के लिए इसकी रचना की है।

लेकिन मैं तो अपनी कल्पना को पूरी तरह स्वतंत्र किये दे रहा हूँ। इस सपने मे आपको अपना साझेदार बनाने का कारण यह है कि मेरे विचार मे इस सपने को साकार करने के लिए आवश्यक नैतिक और राजनैतिक व्यक्तित्व आपके पास है व्यापक दृष्टि है हृदय की विशालता है, समूचे दक्षिण एशिया मे आपका एक विशिष्ट स्थान है आर आपकी अपनी व्यावहारिक वृत्ति है। (सचमुच, मुझे यह कहने दीजिए कि गाधीजी के बाद इस उपमहाद्वीप मे आप ही पहले राजनैतिक नेता है, जो आदर्शवाद और व्यावहारिकता के बीच इतना अच्छा समन्वय कर सकते है।) एक कल्पनाशील रचनात्मक और सामजस्य से युक्त काम के लिये यह सब आवश्यक होता है। इसके अलावा 51 साल की अपनी इस उमर मे आपके पास ऐसे एक चुनौती भरे ऐतिहासिक काम का पूरा करने के लिए पर्याप्त समय भी है। यह भी एक खुशी की बात है कि हमारी तरुण, गतिशील और दृढ निश्चयवाली प्रधानमत्री भी राजनीतिक व्यूह रचना म बहुत ही निपुण सिद्ध हुई है और उन्होने भी न केवल दक्षिण एशिया मे, बल्कि सारी दुनिया मे एक बहुत ही महत्त्व का स्थान प्राप्त कर लिया है। उन्होने भारत और बगलादेश के बीच आपके साथ भी व्यक्ति, उष्मायुक्त और पारस्परिक आदरवाला अटूट सम्बन्ध स्थापित कर लिया है, और इस समूचे प्रदेश को तथा हिन्द महासागर को महासत्ताओ के दॉवपेच, शोषण और प्रभुत्व स मुक्त कराने का अपना निश्चय भी घोषित किया है। यह सब उनके पिताजी के सपने को साकार करने मे सहायक बन सकता है। बेशक, पाकिस्तान अभी प्रश्नचिन्ह-रूप ही रहा है– भगवान ही जानता है, कितने समय के लिए। लेकिन इस चर्चा को इसी तरह जारी रखकर मुझे अपने इस पत्र मे दूर के ध्येयो की बात ही नही करनी है, विशेषकर ऐसे समय मे जबकि आपके सामने विराट् समस्याओ के साथ नवनिर्माण का भगीरथ काम खडा हुआ है इस पत्र का हेतु तो आप तक अपना व्यक्तिगत स्नेहपूर्ण अभिनन्दन और अपनी शुभकामनाओ के साथ एक–दो–सुझाव भर पहुँचाने का रहा है।

मैं नहीं कि बागलादेश की जनतत्री सरकार के उस समय के कार्यकारी राष्ट्रपति त्री और विदेशमत्री जनाब इस्लाम जनाब ताजुदीन अहमद और

जनाब खोडकर मुश्ताक के नाम मैने जो पत्र लिखा था, उसे आपने देखा या नही। सुविधा के विचार से उस पत्र की एक प्रतिलिपि इसके साथ भेज रहा हूँ।

आपके साथियो को लिखे गये अपने उक्त पत्र मे मुझे एक सुधार करना है। दुबारा सोचने पर मैंने यह महसूस किया है कि सन् 1947 मे स्वराज्य के प्रभातकाल मे भारत मे जो परिस्थितियाँ थीं, उनकी तुलना मे इस समय बगलादेश की परिस्थिति बहुत भिन्न है। इसलिए बगलादेश की वर्तमान परिस्थितियो को ध्यान मे रखकर राज्य की सर्वोच्च सत्ता अपने हाथ मे ले लेना आपके लिए अनिवार्य बन गया था, जबकि गाधीजी ने इससे बिल्कुल भिन्न रीति अपनाई थी। इसके अलावा, इस तथ्य को भी ध्यान मे रखना होगा कि (अ) बगलादेश मे जवाहरलाल, सरदार पटेल, मौलाना आजाद राजेन्द्र बाबू और राजाजी के समान ऐसे असाधारण नेता नही हैं कि जिनके हाथो मे सुरक्षितरुप से राज्यसत्ता सौंपकर गाधीजी खुद लोक-शक्ति-निर्माण करने के काम के साथ ही उस लोक-शक्ति को स्वेच्छापूर्ण पुरुषार्थ के और आत्म-निर्भरता के आधार पर राष्ट्र के नवनिर्माण के काम की दिशा में मोडने के काम मे लग सके थे, (ब) आपने आपके साथियो ने और अवामी लीग ने अपने आप लोगो को प्रेरित करके उनकी शक्तियों का उपयोग देश के नवनिर्माण के काम मे करने की दिशा मे कदम उठाने शुरू कर दिये हैं– मैंने कही पढा है कि छह लाख नौजवानो और नवयुवतियो का एक स्वय-सेवक-दल खडा हो रहा है। ये तथ्य देश के प्रधानमत्री बनने के आपके निर्णय को उचित सिद्ध करते हैं। इसके बावजूद, मै यह उम्मीद तो रखता ही हूँ कि जिस तरह अपने लडखडाते स्वास्थ्य और प्रशासन पर अपनी पकड को ढीली होते जाने पर भी जवाहरलाल जी सत्तारूढ बने रहे थे, आप वैसा नही करेगे। इस विषय मे जार्ज वाशिंगटन ने जो उदाहरण प्रस्तुत किया है, वह अनुसरणीय है। दो बार देश के राष्ट्रपति बनने के बाद उन्होने तीसरी बार राष्ट्रपति बनने से इनकार कर दिया था।

अपने उपयुर्क्त पत्र मे मैंने जिन मुद्दो की चर्चा की है, उनके अलावा एक और मुद्दे की बात मैं इस पत्र मे समाजवाद के अथवा समाजवादी व्यवस्था के बारे मे लिखना चाहता हूँ। मैं महसूस करता हूँ कि आज समाजवाद एक ऐसा शब्द बन गया है, जिसका अर्थ सब प्रकार के लोगों की दृष्टि से सब प्रकार का हो सकता है। तानाशाही साम्यवादी देशो मे उसका एक विकृत स्वरूप खडा हो चुका है, और उन देशो के बीच एक भीषण वाद-विवाद भी चल पडा है। दुनिया के दो सबसे बडे 'समाजवादी देश' रूस और चीन के बीच चल रहे अशोभनीय गाली-गलौज को हम देख ही रहे हैं। परन्तु इनके अलावा भी जो लोग लम्बे समय से 'लोकतात्रिक समाजवाद' की डीग हाकते रहे हैं, उन लोगो के पास भी विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों में राष्ट्रीकरण को छोडकर शायद ही दूसरी कोई विशेष वस्तु दिखाने को रही है। राष्ट्रीकरण राज्य की सत्ता को सुदृढ बनाने के अलावा विशेष रूप से आगे बढ नहीं सका है। उसने खासतौर पर नौकरशाही को ही मजबूत बनाया है। उसमे व्यापारिक दृष्टि से समुचित व्यवस्था का अभाव रहा है और आर्थिक लाभ के अभाव की अथवा अत्यंत की जो स्थित रही है उसके बारे में तो कहना ही क्या है? के महान प्रवक्ताओं ने जो आदर्श हमारे सामने रखा

था वह ऐसे नौकरशाही समाजवाद का तो कभी था ही नहीं।

भारत मे प्रधानमत्री नेहरू की पहल के कारण लोकसभा ने दिसम्बर 1954 मे समाजवादी समाज व्यवस्था' का ध्येय स्वीकार किया और जनवरी, 1955 मे अखिल भारत काग्रेस की महासमिति ने मद्रास के अपने आवडी–अधिवेशन मे इस ध्येय को स्वीकार कर लिया था। काग्रेस की महासमिति के प्रस्ताव मे सूचित एक ध्येय था 'राष्ट्रीय सपत्ति का न्यायसगत वितरण'। इस बात को आज 16 सालो से अधिक समय बीत चुका है। इस अवधि मे केन्द्र ने और देश के अधिकाश राज्यो मे काग्रेस–पक्ष ही निरन्तर सत्तारूढ रहा है आपके कोई भी अर्थशास्त्री आपको बता सकेगे कि इतने वर्षो मे राष्ट्रीय सपत्ति का न्यायसगत वितरण किस हद तक सिद्ध हो पाया है। बम्बई और नई दिल्ली से एक साथ प्रकाशित होने वाला 'टाइम्स आफ इण्डिया' हमारा एक प्रथम श्रेणी का राजधानी दैनिक है। और वह हमारे प्रधानमत्री के प्रति अनुकूल रुख रखता है। अपनी हाल की नई दिल्ली की यात्रा के दिनो मे मैकनामारा ने आर्थिक विकास के क्षेत्र में हमारे देश की 'भव्य उपलब्धियों' के बारे मे प्रशसा की जो पुष्प-वर्षा की थी, उस पर 'टाइम्स ने टीका यह की है "यहाँ हमे यह याद रखना चाहिए कि विश्वबैंक के अध्यक्ष हाल-हाल मे बार-बार इस बात पर जोर देते रहे कि आर्थिक विकास की दर के और राष्ट्रीय आय आदि के ऑकडो पर से किसी परिणाम पर पहुँचना पर्याप्त नहीं है। आर्थिक विकास की एक मुख्य कसौटी यह भी मानी जानी चाहिए कि रोजगार के क्षेत्र मे और सामाजिक न्याय के क्षेत्र मे कितनी प्रगति की जा सकती है।" 25 जनवरी, 72 के अपने सम्पादकीय लेख मे टाइम्स' ने दूसरी बातो के साथ ही यह भी लिखा है "पॉचसाला योजनाओ की अवधि मे भिन्न–भिन्न आय वाले वर्गो के बीच की अथवा भिन्न-भिन्न प्रदेशो के बीच की विषमता कम हुई है, इसके कोई विशेष प्रमाण दिये नही जा सकते। सच पूछा जाये तो उलटे यह विषमता बढी है। इसमे भी खासतौर पर जिन जिलो को विपुल उत्पादन देने वाले बीजो का लाभ मिला है, उसमे तो यह विषमता इतनी स्पष्ट है कि छिपाए छिप नही सकती। ऐसे प्रदेशो मे सम्पन्न किसानो की आमदनी कई मामलो मे दुगुनी हो गई है जबकि बेजमीन खेतिहर मजदूर की हालत पहले के मुकाबले में बदतर बनी हैं इस तरह जहाँ सिचाई की सुविधाएँ पहुँच गई हैं, उन प्रदेशो की और दूसरे सूखे प्रदेशो की परिस्थिति के बीच का अन्तर भी पहले की तुलना मे अधिक गम्भीर हो उठा है।'

ये सारी बाते मैं आपको क्यो लिख रहा हूँ? इसलिए लिख रहा हूँ कि अपनी आखिरी मुलाकात के वक्त आपने लन्दन मे अपने आपको गाधी की परम्परा का वरण करने वाले व्यक्ति के रूप मे प्रस्तुत किया था। (इस सिलसिले मे आपने मुझे भी याद किया था, जिसे मैं आपकी भलमनसाहत मानता हूँ।) मैं जिस बात पर जोर देना चाहता हूँ, वह यह है कि आज कल चलते–फिरते जिस समाजवाद का नाम लेते रहने का फैशन–सा हो गया है, उस समाजवाद की तुलना से गाधी जी का समाजवाद भिन्न था। वे उसे 'सर्वोदय' कहना पसन्द करते थे। उनका वह समाजवाद या सर्वोदय नीचे की बुनियाद से शुरू होता था वे बार बार कहा करते थे कि सर्वोदय का प्रारम्भ अन्त्योदय से होता है लेकिन दुर्भाग्य यह है कि पूर्व की अथवा पश्चिम की आर्थिक विकास

सबन्धी किसी भी वर्तमान 'थ्योरी' मे गाधीजी के आदर्श के अनुरूप कही कोई उदाहरण मिलता नही है। हर 30 जनवरी और 2 अक्टूबर के दिन गॉधी को आदर और सम्मान के साथ याद किया जाता है। लेकिन जहॉ उनके विचारो की बात आती है, वहॉ विचार तो उनके अव्यावहारिक और दकियानूस ही माने जाते है।

किन्तु सौभाग्य से अब परिस्थिति ही ऐसी बनी है कि वह गाधी जी की याद को फिर ताजा करवा रही है लगातार बढ रही बेकारी, विकास के लाभो के वितरण की विषमता, देश की कुल आबादी के लगभग 40 फीसदी लोगो का जिसमे समावेश होता है उस सबसे नीचे वाले स्तर के लोगो की भयकर गरीबी, देहाती और शहरी इलाको मे बढ रही हिसा (बगलादेश की मुक्ति के आन्दोलन के दिनो मे जो कुछ कम हुई थी।) और गरीब से गरीब मतदाता को रिझाकर उसका मत प्राप्त करने की लोकतत्रात्मक अनिवार्यता– इन सब कारणो से हमारे अर्थशास्त्र के विद्वानो और योजनाकारो के लिए अब यह कर्त्तव्यरूप हो गया है कि वे अपने सिद्धान्तो, योजना की दिशाओ और उसकी प्राथमिकताओ के बारे मे फिर स सोचना शुरू करें। यही कारण है कि अब सबका ध्यान फिर गाधीजी के विचारो की तरफ जाने लगा है। हमारे नए योजना मत्री श्री सुब्रह्मण्यम को सचमुच इस बात की चिन्ता रहने लगी है कि विकास के लाभ सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था के सबसे नीचे वाल स्तर तक किस प्रकार पहुँचे। हमारे लोकतत्र की नीव को हानि पहुँचाए बिना इसके लिए आवश्यक कठिन निर्णय राजनीति के सर्वोच्च स्तर पर लिये जा सकेगे या नही, इसका जवाब तो आने वाली परिस्थितियॉ ही दे पायेगी। अपनी तरफ से मैं यह उत्कट आशा अवश्य रखता हूँ कि आपके नेतृत्व मे बगलादेश को समाजवाद की अपनी खामियो और भूलो को समझने म चौथाई सदी के बराबर समय नही लगेगा। गाधीजी के आदर्शो के प्रति आपने अपना जो रुख जाहिर किया है, उसके कारण मेरे अपने मन मे बडी श्रद्धा जागी है। आपको इस तरह लिखने का मुझे कोई अधिकार नहीं है। मेरे समान एक साधारण नागरिक आपके समान एक महान राष्ट्र के निर्विवाद नेता को सलाह देने की धृष्टता भला कैसे करे। लेकिन एक साथी गाधी-जन के रूप मे और आपके तथा आपकी बहादुर और सहनशील जनता के प्रति अपने स्नेह की भावना के कारण ही मैंने आपको ये सारी बाते लिखी है।

गहरे आदर,और स्नेह के साथ

आपका विश्वसनीय

जयप्रकाश नारायण

(मूल अग्रेजी से अनूदित)



इन्दिरा गाँधी
(प्रधानमत्री, नई दिल्ली)

चण्डीगढ
21 जुलाई, 1975

प्रिय पधानमत्री,

समाचारपत्रो मे आपकी बातचीतो और वक्तव्यो के विवरण पढकर मन को आघात पहुँचता रहता है। (आपको रोज–रोज अपने बचाव मे कुछ न कुछ कहना पडता है इसी से पता चलता है कि आपका दिल दोषी है।) आपने सब प्रकार के सार्वजनिक मतभेदो का और समाचारपत्रो का गला घोट दिया है, इसलिए अब किसी आलोचना या प्रतिवाद के भय के बिना आप तोडे–मरोडे गये तथ्यो और असत्यो की अपनी रट लगाए रहती है। अगर आप यह मानती है कि ऐसा करके आप अपने को आम जनता के सामने सच्चा साबित कर सकेगी और विरोधी पक्षो को सदा के लिए समाप्त कर देगी तो आप एक गम्भीर भूल कर रही हैं। अगर मेरी इस बात म आपको कोई शक हो तो आपातकाल उठा लीजिए लोगो को उनके बुनियादी हक लौटा दीजिए, समाचारपत्रो को उनकी स्वतत्रता वापस कर दीजिए, और अपनी दश-भक्ति व्यक्त करने के अलावा जिन लोगो का दूसरा कोई भी अपराध नही था फिर भी जिनको आपने जेलो मे बन्द कर रखा है उन सब लोगो को रिहा कर दीजिए, और फिर मेरी बात को कसौटी पर कस कर देखिए। भगवान ने जनता को एक छठी इन्द्रिय दे रखी है इसलिए नौ सालो की अवधि मे, जो कोई छोटी अवधि नही है, जनता ने आपको ठीक–ठीक पहचान लिया है।

जिन बातो को आप बार-बार दोहराती रहती है, मेरे विचार मे उनका सार यह है कि (1) सरकार को पगु बना देने के लिए एक षड्यन्त्र रचा गया था, और (2) एक व्यक्ति फौजवालो और पुलिसवालो के बीच असतोष फैलाने की कोशिश कर रहा था। अपनी इन दो मुख्य बातो के अलावा आप दूसरी भी कुछ छोटी मोटी बाते दोहराती रही हैं। बात-बात मे आप अपने कुछ दूसरे सूत्रा का भी उच्चारण करती रही हैं। जैसे, लोकतत्र की अपेक्षा राष्ट्र अधिक महत्त्व का है, समाजवादी लोकतत्र भारत के लिए उपयुक्त हो सकेगा या नही, आदि आदि।

चूँकि इस मामले मे मुझे मुख्य अपराधी माना गया है, इसलिए मैं थोडी स्पष्टता किए देता हूँ। आप जिस तरह सोच-समझकर झूठी बाते प्रचारित करती है और तथ्यो को तोड–मरोडकर उन्हे विकृत रूप मे प्रस्तुत करती रही हैं, उसे देखते हुए आपको मेरी इन बातो मे कोई दिलचस्पी नही होगी, फिर भी यह सोचकर कि कम से कम सचाई का कही उल्लेख तो हो ही जाना चाहिए, मै अपनी बात लिख रहा हूँ।

जहाँ तक आपकी सरकार को पगु बना देने के षड्यन्त्र की बात है, आप खुद जानती हैं कि ऐसा कोई था ही नहीं इस विषय में जो हकीकते हैं उन्हें मैं नीचे दे रहा हूँ

चल रहा था। लेकिन वहाँ भी, जैसा कि मुख्यमंत्री के कई बयानों में कहा गया है, अगर कोई आन्दोलन कभी था, तो वह बहुत पहले ही चरमराकर खत्म हो चुका था। अगर आपके सर्वव्यापक खुफिया विभाग ने आपको सही जानकारी दी होगी, तो आपको पता चला ही होगा कि दरअसल आन्दोलन बराबर फैलता जा रहा था, और वह दूर–दूर के देहाती इलाको तक पहुँच रहा था। मेरी गिरफ्तारी के समय तक गॉवो से लेकर प्रखण्डो के स्तर तक जनता सरकारे बनाई जा रही थी। आशा यह थी कि आगे चलकर यह प्रक्रिया जिलो से लेकर राज्यो के स्तर तक जारी रहेगी।

यदि आपने इन जनता-सरकारो के कार्यक्रमो को जानने-समझने की चिन्ता रखी होती, तो आपको पता चला होता कि इनके अधिकतर कार्यक्रम रचनात्मक थे। उदाहरण के लिए सार्वजनिक वितरण प्रणाली को नियमित और व्यवस्थित बनाना प्रशासन के नीचे वाले स्तर पर भ्रष्टाचार को रोकना, भूमि सुधार सबन्धी कानूनो का अमल करवाना, पुरानी परम्परागत प्रथा के अनुसार पचो की मदद से आपस के झगडों को निपटाना और समझौते कराना हरिजनो के साथ न्यायोचित व्यवहार की व्यवस्था खडी करना, और तिलक–दहेज जैसी समाजिक बुराइयो को रोकने की कोशिश करना, आदि-आदि। कल्पना-शक्ति की सारी खींचतान के बाद भी इन कार्यक्रमो मे आपको ऐसा एक कार्यक्रम नहीं मिलेगा, जो सरकार को उलटने वाला कहा जा सके। बेशक जहॉ जनता सरकार का सुदृढ सगठन खडा हो सका था, वहॉ कर बन्दी आन्दोलन शुरू किया गया था। जब आन्दोलन अपनी चरम सीमा पर पहुँचा था, तब कुछ दिनो तक पिकेटिग के जरिये सरकारी दफ्तरो का कामकाज रोकने का प्रयत्न हुआ था। पटने मे विधानसभा के अधिवेशनो के दिनो मे सदस्यो को अन्दर जाने से रोकने के और उन्हे समझाकर उनसे इस्तीफे मागने के प्रयत्न शातिपूर्वक किये गये थे। ये सारे ही कार्यक्रम सोच-समझकर सविनय-अवज्ञा की दृष्टि से शुरू किए गए थे, और इनके चलते पूरे प्रदेश मे हजारो स्त्री-पुरुष जेल गये थे।

अगर यह कहा जाये कि ये सारे कार्यक्रम बिहार-सरकार को पगु बना देने की कोशिश करने वाले कार्यक्रम थे, तो कहना होगा कि यह वैसी ही कोशिश थी, जैसे स्वतत्रता आन्दोलन के चलते असहयोग और सत्याग्रह के द्वारा ब्रिटिश सरकार को पगु बनाने के लिए की गई थी। लेकिन उस समय की सरकार तो शक्ति के बल पर स्थापित सरकार थी, जबकि बिहार सरकार और बिहार की विधानसभा दोनो सविधान के अनुसार स्थापित सस्थाऍ हैं। आपके खास सवालों मे एक सवाल यह है कि चुनी गई सरकार को और विधानसभा को हट जाने के लिए कहने का किसी को क्या अधिकार है ? सविधान के जाने माने विशेषज्ञो और अन्य अधिकारी व्यक्तियो द्वारा इन सवालो का जवाब अनगिनत बार दिया जा चुका है। जवाब यह है कि लोकतत्र मे जनता को यह अधिकार है कि अगर कोई चुनी हुई सरकार कुशासन चलाती है, और भ्रष्टाचार करती है, तो वह उससे देने के लिए कह सकती है और करती है तो वह उससे देने के लिए कह सकती है इसके बावजूद यदि राज्य की ऐसी

सरकार का समर्थन करती रहती है, तो उसे भी जाना ही चाहिए, जिससे जनता फिर अधिक अच्छे प्रतिनिधियो को चुन सके।

ऐसी स्थिति मे, इस बात का निर्णय कैसे किया जाये कि लोग क्या चाहते हैं ? निर्णय तो लोकतत्र की साधारण रीति से ही हो सकता है। जहॉ तक बिहार का सवाल है पटने मे जो विशाल रैलियॉ निकली और जुलूस निकले, सारे राज्य के मतदान–क्षेत्रो मे जो हजारो सभाएँ हुई , लगातार तीन दिनो तक बिहार बन्द रहा, 4 नवम्बर को जो अविस्मरणीय घटनाऍ घटी और 18 नवम्बर को पटने के गाधी–मैदान मे जो बडी से बडी सभा हुई, ये सब जनता की इच्छा को प्रकट करने वाले विश्वसनीय प्रमाण थे। इसकी तुलना में बिहार सरकार के पास और काग्रेस के पास दिखाने को क्या था ? इनके जवाब मे श्री बरुआ की योजना के अनुसार 16 नवम्बर को एक दरिद्र प्रदर्शन आयोजित किया गया था, विश्वसनीय सूत्रो के अनुसार जिस पर 60 लाख रुपयो की जगी रकम खर्च की गई थी। अगर आपको जनता की इच्छा के निर्णायक प्रमाण मालूम नही होते थे, तो मैंने बार–बार जनमत सग्रह की बात भी कही थी। लेकिन आप जनता के सामने जाने से डर रही थी।

बिहार आन्दोलन की इस चर्चा के चलते मैं यहॉ एक ऐसे महत्त्वपूर्ण मुद्दे का उल्लेख कर देना चाहता हूँ, जिससे इस प्रकार के आन्दोलन की राजनीति पर प्रकाश पडता है। बिहार के विद्यार्थियो ने अपना आन्दोलन अचानक ही नहीं शुरू कर दिया था। अपने एक सम्मेलन मे अपनी मॉगे निश्चित करने के बाद वे मुख्यमत्री और शिक्षा मत्री से मिले थे। उनके साथ विद्यार्थियो की कई बैठके हुई थी, लेकिन दुर्भाग्यवश बिहार की अयोग्य और भ्रष्ट सरकार ने विद्यार्थियो की बातो पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान नही दिया। इसके बाद विद्यार्थियों ने विधानसभा का घेराव किया। उस दिन की दुखद घटनाओ के कारण बिहार का आन्दोलन सहसा शुरू हो गया। तिस पर भी विद्यार्थियो ने न तो मत्रिमण्डल के त्यागपत्र की माग की और न विधानसभा के विसर्जन की बात कही। इसके बाद जब बिहार में जगह–जगह गोलियॉ चली, लाठियॉ बरसी और अन्धाधुध गिरफ्तारियॉ की गई , तो कई हफ्तो के बाद विद्यार्थियो की सघर्ष–समिति को विवश होकर अपनी मॉगे पेश करनी पडी। ऐसी स्थिति मे उसे लक्ष्मण रेखा को लॉघने का अटल निर्णय करना पडा।

इस तरह बिहार मे सरकार को आमने–सामने बैठकर बातचीत के जरिए सवालो को हल करने का अवसर दिया गया था। विद्यार्थियों की एक भी मॉग ऐसी नही थी जो अनुचित हो, या जिसे आपस की बातचीत के जरिये निपटाया न जा सके। लेकिन बिहार की सरकार ने सघर्ष का रास्ता ही पसन्द किया, और दमन का बेमिसाल दौर चलाया। उत्तर प्रदेश मे भी यही हुआ। दोनो प्रान्तों की सरकारो ने आमने-सामने बैठकर आपस मे बातचीत करने का रास्ता छोड दिया और सघर्ष का रास्ता पसन्द किया। यदि यह सब न हुआ होता तो कोई आन्दोलन हुआ ही न होता

मैं इस पहेली के बारे मे गम्भीरता के साथ सोचता रहा हूँ इन सरकारो ने समझदारी से काम क्यो नही लिया? मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि इसमे मुख्य बाधा भ्रष्टाचार की रही है। कारण कुछ भी क्यो न हो, स्पष्ट ही सरकारे अपने अन्दर फैले भ्रष्टाचार को, खासतौर पर उच्च स्तर के, अर्थात मंत्रिमण्डल स्तर तक के भ्रष्टाचार को राकने मे असमर्थ रही हैं। और, भ्रष्टाचार इस आन्दोलन का केन्द्र बिन्दु रहा है, खासतौर पर सरकार के और प्रशासन के स्तर पर चल रहा भ्रष्टाचार।

सो जो भी हो, किन्तु एक बिहार को छोडकर देश के दूसरे किसी भी राज्य मे इस तरह का कोई आन्दोलन नही था। अप्रैल मे उत्तर प्रदेश मे सत्याग्रह शुरू हुआ था पर लोक-आन्दोलन बनने मे उसे अभी बहुत देर थी। दूसरे भी कुछ राज्यो मे संघर्ष-समितियाँ की रचना हो चुकी थी, किन्तु कही भी व्यापक जन-आन्दोलन की कोई सम्भावना दीखती नही थी। और चूँकि लोकसभा के चुनाव नजदीक आ रहे थे, इसलिए राजनीतिक पक्षो का ध्यान सविनय अवज्ञा-आन्दोलन के बदले चुनावों की तरफ ही अधिक आकर्षित था।

इस तरह सरकार को पगु बना देने के षड्यंत्र की बात तो आपके मन की कल्पना का एक तुक्का भर था, जिसके जरिए आप अपनी तानाशाही से भरी कार्रवाइयो को उचित ठहराना चाहती थी।

लेकिन दलील के तौर पर एक मिनट के लिए मै यह मान भी लूँ कि ऐसी कोई योजना थी, तो क्या आप प्रामाणिकतापूर्वक यह मानती हे कि आपके भूतपूर्व साथी, और कांग्रेस कार्यकारिणी के एक सदस्य श्री चन्द्रशेखर भी उस षड्यंत्र के भागीदार थे? तो फिर उनको और उनके समान दूसरे कई लोगो को किसलिए गिरफ्तार किया गया था?

नही, प्रिय प्रधानमंत्री, सरकार को पगु बना देने की कोई योजना नही बनी थी। अगर कोई योजना थी ही तो वह इतनी सीधी-सादी और अल्प अवधि के लिए थी कि आपके मामले मे उच्चतम न्यायलय का निर्णय होने तक आन्दोलन जारी रखा जाय। जून की 25 तारीख के दिन नानाजी देशमुख ने रामलीला मैदान मे जिस योजना की घोषणा की थी, और उस दिन के मेरे भाषण की जो मुख्य ध्वनि थी, उसका स्वरूप यह था उस योजना के अनुसार आपके मामले का फैसला होने तक के लिए आप अपना पद और अधिकार छोड दे। इस मॉग के समर्थन मे आपके निवास-स्थान के सामने कुछ लोग रोज सत्याग्रह करने वाले थे। इस कार्यक्रम को सात दिन तक दिल्ली मे चलाने के बाद इसे दूसरे प्रान्तो मे शुरू करना था। और, यह सत्याग्रह की उच्चतम न्यायालय का फैसला होने तक ही चलने वाला था। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि इसमे राज्य को उलट देने की या उसका भय पैदा करने की ऐसी कौन सी बात थी? जब लोकतंत्र मे शिकायतो को दूर करवाने के सभी रास्ते बद हो जाते हैं तो वैसी परिस्थिति मे नागरिक के पास सविनय अवज्ञा का एक अविच्छिन्न अधिकार रह जाता है। और यह कहना जरूरी नहीं है कि ऐसा करते हुए सत्याग्रही कानून सम्मत दण्ड को अपने लिए जान बूझकर

न्योतता और स्वीकार करता है। गाधीजी ने लोकतत्र मे यह एक अनोखा आयाम जोडा था। पर दैव का यह कैसा दुर्विलास है कि गॉधी क ही देश मे इस आयाम को यो समाप्त कर दिया जाता हे ?

यहॉ एक बात विशेष रूप स कहने लायक है। यह एक महत्त्व की बात है कि अगर आप चुपचाप अपने पद पर बनी रही होती, तो विरोध पक्ष को सत्याग्रह करने का कार्यक्रम शायद न सूझा होता। लेकिन आपने वैसा नही किया। आपने अपने पिट्ठुओ के जरिए, अपने निवास स्थान के सामने रेलियॉ निकलवाई, प्रदर्शन करवाये और उनसे विनतियॉ करवाई कि आप त्यागपत्र न दे। इन सब रैलियो के सामने आपने भाषण किये। अपने इन भाषणो मे आपने अपने बचाव मे झूठी दलीले पेश कीं और विरोध पक्षो पर गलत आरोप लगाये। इलाहाबाद के उच्च न्यायालय के न्यायाधीश की अरथी आपके निवास–स्थान के सामने जलाई गई। और सारे शहर की दीवारो पर इस आशय के पोस्टर चिपकवाये गये कि उन न्यायाधीश के और सी.आई.ए. के (अमरिकन गुप्तचर विभाग) बीच सबन्ध है। जब रोज-रोज इस तरह की हीनतापूर्ण घटनाएँ होती रहे तो इनका प्रतिकार करने के अलावा विरोधी पक्षो के पास दूसरा कोई उपाय नही था। लेकिन वह प्रतिकार उन्होने किस पद्धति से करने का निर्णय किया ? चाहे जैसी धॉधली, ऊधम या उपद्रव मचाकर नही, बल्कि आत्म-बलिदान के साथ व्यवस्थित सत्याग्रह करके।

और, यही है वह योजना, जिसकी वजह से आपका गुस्सा भडक उठा, और आपके हाथो जनता की स्वतत्रता छीनी गई और लोकतत्र पर घातक प्रहार किया गया।

और, समाचारपत्रो की स्वतत्रता किसलिए कुचल दी गई ? इस लिए नही कि समाचार पत्र गैर जिम्मेदार, अप्रमाणिक और सरकार विरोधी थे। सच तो यह है कि जहॉ समाचारपत्रो की स्वतत्रता प्राप्त है, ऐसे किसी भी देश मे समाचारपत्रो की तुलना मे भारत के समाचार पत्र अधिक जिम्मेदार, तर्कसगत और न्याय–परायण रहे हैं। दरअसल बात तो यह है कि इलाहाबाद के उच्च न्यायालय के निर्णय के बाद कुछ समाचारपत्रो ने जो नीति अपनाई, वह आपको रुचिकर नही लगी, इसलिए आपका गुस्सा उन पर बरस पडा। और उच्चतम न्यायालय के (अन्तरिम) निर्णय के बाद दिल्ली के सभी समाचार पत्रो ने अस्थिर चित्तवाले 'टाइम्स आफ इडिया' तक ने, उचित कारण देकर अपने जोरदार सम्पादकीय लेखो द्वारा आपको पद से हट जाने की सलाह दी। इसकी वजह से आप समाचारपत्रो की स्वतत्रता को सहन नही कर सकी। उनके दिन भर गये और आपने उनपर भयकर प्रहार किया। एक प्रधानमत्री की व्यक्तिगत खीझ की वजह से लोकतत्र की श्वास--नलिका के समान अमूल्यवान समाचारपत्रो की स्वतत्रता को रौद दिया जाये इसकी कल्पना मात्र से दिमाग चकराने लगता है।

आपने विरोधी पक्षों पर यह आरोप लगाया है कि उन्होने देश के प्रधानमत्री के पद को और उसकी प्रतिष्ठा को गिराया है। लेकिन सच पूछा जाये, तो इस दोष के भागीदार कोई और ही हैं के पद की प्रतिष्ठा को गिराने के लिए खुद आपने जितना कछ किया है उतना तो दसरे किसी ने नहीं किया क्या आप किसी

देश के ऐसे प्रधानमत्री की कल्पना कर सकती है, जो चुनाव मे भ्रष्टाचार करने के दोष के कारण लोकसभा मे मत भी न दे सके? (हो सकता है कि उच्चतम न्यायालय इस वातावरण मे इलाहाबाद के उच्च न्यायालय के निर्णय को बदल सके, लेकिन जब तक ऐसा होता नही है, तब तक जो आपके विरूद्ध लगा आरोप अपनी जगह खडा ही है, और तब तक आप मत देने के अपने अधिकार से वचित भी रहती हैं।)

जिस 'एक आदमी' पर फौज और पुलिसवालो के बीच असतोष फैलाने का आरोप था, वह 'एक आदमी' उस आरोप को अस्वीकार करता है। उसने इन दलो के अधिकारियो और साधारण लोगो को उनके कर्त्तव्यो और जिम्मेदारियो के बारे में सजग ओर सावधान किया था। उसने इस विषय मे जो कुछ भी कहा था, वह कानून, संविधान फौजी कानून और पुलिस कानून की मर्यादा में रहकर ही कहा था।

सरकार को पगु बनाने की योजना और फौज तथा पुलिस के लोगों के बीच असतोष फैलाने के दो मुख्य मुद्दो के बारे मे मुझे यही कहना है। अब बात–बात मे जिन दूसरे साधारण मुद्दो की चर्चा करती रहती हैं, उनके बारे मे मुझे जो कहना है, वह यों है।

अखबारी खबरों के अनुसार आपने यह कहा है कि राष्ट्र की तुलना मे लोकतत्र अधिक महत्त्व की वस्तु नही है। श्रीमती प्रधानमत्री, क्या यह कहकर आप अपने बारे मे बहुत ज्यादा तो नहीं कह रही है? राष्ट्र की चिन्ता करनेवालो मे आप एक अकेली नही हे। जिन लोगो को आपने जेलो मे बन्द किया, उनमे बहुतेरे ऐसे हैं, जिन्होने राष्ट्र के लिए आप से कही अधिक काम किया है, और उनमे से प्रत्येक आप के समान ही देशभक्त हैं। इसलिए राष्ट्र के बारे मे उपदेश देकर जले पर नमक छिडकने का काम मत कीजिए।

दूसरे, आपने इन दोनो चीजो की जो तुलना की है, वही गलत है। लोकतत्र और राष्ट्र इन दोनो मे से किसी एक को पसन्द करने का तो सवाल ही नहीं उठता। 26 जनवरी 1949 के दिन भारत की जनता ने राष्ट्र के कल्याण के लिए सविधान सभा मे घोषणा की थी कि 'गम्भीरतापूर्वक निर्णय करके हमने भारत को एक स्वायत्त लोकतात्रिक जनतत्र बनाने का और अपने आपको यह संविधान समर्पित करने का निश्चय किया है।' इस अर्थ मे हमारा सविधान लोकतत्रात्मक है। उसे किसी अध्यादेश के जरिए अथवा लोकसभा के किसी एक कानून भर से सर्वाधिकारवादी तत्र मे बदला नही जा सकता। यह काम तो भारत की जनता ही इसी एक उद्देश्य से एक सविधान सभा का चुनाव करके उसके माध्यम से कर सकती हैं सबकी सहियो और मुहरो के साथ इस सविधान को स्वीकार कर लेने के बाद पिछले पच्चीस–सत्ताईस वर्षो मे भी जनता को स्वाधीनता, समानता और बन्धुता न दी जा सकी हो, तो वह दोष सविधान का अथवा लोकतत्र का नही है, वह दोष तो काग्रेस का है, जिसने इन सारे सालो मे दिल्ली की गद्दी पर बैठकर राज्य किया। और, काग्रेस की इसी विफलता के कारण आज जनता में और तरुण पीढी मे इतना अधिक असतोष पाया जाता है। किसी भी प्रकार का दमन इस का कोई उपाय नहीं। दमन से तो उलटे विफलता और गहरी ही बनती है

आजकल समाचार पत्र आपकी नई नीतियो, नए अभियानो, नये उत्साहो आदि की बातो से भरे रहते हैं। इस सब मे से एक ही अर्थ निकलता है कि पिछले नौ सालो मे आप जो करने मे विफल रही हैं, वह सभी आपको एक साथ आज और अभी ही कर डालना है, और ऐसा करके आप जब तक बरबाद हुए वक्त की भरपाई कर लेना चाहती हैं। लेकिन मै आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपके इन बीस सूत्रो की वही गति होने वाली है, जो आपके दस सूत्रो की हुई थी। मैं दूसरा भी एक विश्वास दिला देता हूँ– दुर्भाग्यवश आज कांग्रेस जी-हूजूरो, स्वार्थ-साधुओ और नितान्त अवसरवादियो की एक जमात बन चुकी है, ऐसी जमात के जरिए कभी कोई कहने लायक काम बनेगा नही। (हॉ यह सच है कि सभी काग्रेसी ऐसे नही है। उनमे कुछ अपवाद अवश्य हैं, जिनको उनकी सदस्यता से और स्वाधीनता से वचित किया गया है। एकाधिकारवाद का, यानी तानाशाही का यह धर्म ही है कि अपने पक्ष के अन्दर भी किसी तरह की कोई टीका–टिप्पणी नही होनी चाहिए।) कागज पर धुँआधार प्रचार होगा और खूब ढोल–नक्कारे बजेंगे, लेकिन प्रत्यक्ष रूप से रचमात्र भी परिवर्तन नही होगा। इस देश के अधिकांश भागो मे बसनेवाले गरीब लोग ही बहुमत मे है और पिछले सालों मे रोज–ब–रोज उनकी हालत बिगडती ही जा रही है। वह और ज्यादा बिगडने से रुके, तो भी बडी बात हो। लेकिन यह सब करने के लिए राजनीति और अर्थनीति के प्रवाहो को जडमूल से बदलना पडेगा।

उपर्युक्त बाते मेने अत्यत विशुद्ध भाव से और स्पष्ट शब्दो मे लिखी हैं। आपके साथ बहस करने के लिए या अपना गुस्सा जताने के लिए मैने इन्हे नही लिखा है। वैसा करना तो अपनी कायरता दिखाना ही होगा। यहॉ मेरे स्वास्थ्य की जो देखभाल की जा रही है, उसकी सराहना के अभाव का भी यह सूचक नही है। आप जिस सचाई को दबाने और विकृत रूप से पेश करने की कोशिश मे लगी हैं, उसी को उसके नग्न रूप मे आपके सामने रख देने के लिए मैने ये बाते लिखी हैं।

इस अरुचिकर कर्त्तव्य का पालन करने के बाद, अपने इस पत्र को समाप्त करने से पहले, क्या मैं दो शब्द सलाह के कहूँ? आप जानती है कि मैं तो एक पका हुआ पत्ता हूँ। मेरा जीवनकार्य पूरा हो चुका है। प्रभावतीजी के स्वर्गवास के बाद अब दूसरा कोई नहीं है, जिसके लिए जीना जरूरी हो। मेरे भाईयो और भतीजो के परिवारों की अपनी हरी–भरी बाडियॉ हैं। बडी बहन कई सालो पहले मर चुकी थीं। छोटी बहन के भी भानजे वगैरा हैं। अपनी पढाई पूरी करने के बाद मैंने अपना पूरा ही जीवन, बिना किसी प्रकार के बदले की आशा रखे, राष्ट्र के चरणो मे समर्पित कर दिया है। इसलिए अब आपके राज्य की छत्रछाया मे मैं एक कैदी की तरह मरूँगा, तो भी मेरे मन मे उसका सतोष ही रहेगा।

क्या ऐसे एक व्यक्ति की सलाह पर आप ध्यान देगी? इस राष्ट्र के पिता ने और उनके साथ आपके महान पिता ने भी जो बुनियादे डाली हैं आप उनको बरबाद मत कीजिए आपने जो रास्ता है उस रास्ते मे तो सघर्ष और व्यथाएँ ही बिखरी

पडी हैं। आपको विरासत मे एक महान परम्परा, उत्तम जीवन मूल्य और जमा जमाया लोकतत्र मिला है। इन सबको तोड–फोडकर अपने पीछे इनका मलबा मत छोड जाइए। क्योकि मुझे विश्वास है कि इस सबको फिर से व्यवस्थित करने मे बहुत लम्बा समय लग जायेगा। जिस जनता ने ब्रिटिशो के साम्राज्यवाद के विरुद्ध लडकर उसे झुकाया है वह जनता लम्बे समय तक तानाशाही द्वारा उत्पन्न अपमान और हीनता को सहन नहीं कर सकेगी। मनुष्य की भावना को कितना ही क्यो न दबाया जाये, उसे कभी पराजित नही किया जा सकता। आपने अपनी व्यक्गित तानाशाही कायम करने के लिए उस भावना को बहुत गहराई मे दबा दिया है, लेकिन वह तो गहरी कब्र मे से भी उठकर फिर बाहर आयेगी। रूस के समान देश मे भी वह अपना सिर ऊपर उठाने लगी है।

आप समाजवादी लोकतत्र की बात करती हे। इन शब्दो मे से कितनी सुन्दर मूर्ति के सामने खडी होती है। किन्तु मध्य यूरोप और पूर्व यूरोप मे हमने देखा है कि इनका असल रूप कितना कुरूप है। नगी तानाशाही, और उसे ठीक से खोलकर देखे, तो रूसी सामन्तशाही। मेहरबानी करके भारत को इस भयानक मार्ग पर मत धकेलिए।

और, ये सारी राक्षसी कार्यवाहियॉ आपको क्यो करनी पडी ? क्या आपके बीस सूत्रीय कार्यक्रमों को पूरा कराने के लिए ? तो जरा यह तो बताइए कि आपके दस–सूत्रीय कार्यक्रमो को पूरा करने मे आपको कौन रोक रहा था ? देश की जनता और तरुण पीढी दुख और दरिद्रता के बोझ के नीचे दबी जा रही थी। उनके उस बोझ को हलका करने के लिए, अपने उस अधूरे ओर अधकचरे कार्यक्रम को भी पूरा करने के इरादे से आप खुद कुछ भी तो नही कर रही थी। इसलिए तो असतोष, विरोध ओर सत्याग्रह सामने आ खडे हुए थे। यही बात चन्द्रशेखर, मोहन धारिया, कृष्णकात और दूसरे मित्र कह रहे थे। यह कहने के लिए उन्हे सजा दी गई।

आप कहती हैं कि देश एक दिशा मे घिसटता जा रहा था। लेकिन क्या यह सब विरोधी पक्षो के कारण हो रहा था ? निर्णय शक्ति, मार्गदर्शन और अभियान के अभाव मे इस परिस्थिति का जन्म हुआ था। ऐसा मालूम होता है कि जब आपके व्यक्तिगत पद पर कोई सकट आता है, तभी आप तेजी के साथ अचानक कुछ कार्यवाहियॉ करने लगती है। और जब वह सकट टल जाता है, तो स्थिति फिर ज्यो–की–त्यो हो जाती है, वही जडता फिर लौट आती है। इसलिए इदिरा जी, आप अपने आपको ही राष्ट्र मानकर मत बैठिए। आप अमर नही हे, जबकि भारत तो सदा-सर्वदा रहने वाला है।

आपने विरोधी पक्षो पर और मुझ पर सब प्रकार की दुष्टताओं के आरोप लगाये हैं। तिस पर भी एक बात का विश्वास मै आपको दिलाना चाहता हूँ। अगर आप सच्ची कार्यवाही करना चाहती हो, बीस सूत्रा वाले अपने इस कार्यक्रम को ही आप अच्छी तरह से अमली रूप देने का प्रयत्न करने वाली हों, मत्रिमण्डल के स्तर पर भ्रष्टाचार दूर करने की कोशिश करने वाली हो, चुनावों के कानून मे सुधार करने वाली हो, तो विरोधी पक्षो को अपने विश्वास मे लीजिए और उनकी सलाहो और सुझावो पर ध्यान दीजिए। हममे से प्रत्येक व्यक्ति स्वेच्छापूर्वक आपके साथ सहयोग करेगा अब आपकी बारी है कि आप

निर्णय करें कि केवल इतनी सी बात के लिए आपको लोकतत्र को ही समाप्त कर देने की जरूरत नही है।

इन अन्तिम शब्दो के साथ मैं आपसे विदा लेता हूँ। भगवान आपके साथ सदा बना रहे।

सद्भावनाओं के साथ,

आपका

जयप्रकाश नारायण

(मूल अग्रेजी से अनूदित)



जीवनयात्रा : घटना-क्रम

जन्म	सन् 1902, अक्टूबर, 11 सवत 1959, विजयादशमी
1919	मेरिट सर्टिफिकेट के साथ मैट्रिक की परीक्षा पास की
1920	प्रभावती के साथ विवाह
1920	आम सभा मे गाधी जी के प्रथम दर्शन
जनवरी 1922	कॉलेज छोडकर गाधी जी के असहयोग आन्दोलन में कूदे
अगस्त, 1922	कलकत्ते से जहाज मे बैठकर पढने के लिए अमेरिका गये
अक्टूबर, 1922	सान्फ्रासिस्को पहुँचे
1924–25	विस्कॉन्सिन यूनिवर्सिटी मे पढते समय मार्क्सवाद का परिचय
अगस्त, 1928	ओहाइयो यूनिवर्सिटी से बी.ए की उपाधि प्राप्त की
अगस्त, 1929	ओहाइयो यूनिवर्सिटी से एम ए की उपाधि प्राप्त की
सितम्बर, 1929	हिन्दुस्तान आने के लिए अमेरिका से निकले
नवम्बर, 1929	स्वदेश वापस आये
दिसम्बर , 1929	वर्धा में गाधी जी से पहली बार मिले और लाहौर काग्रेस मे उपस्थित रहे
1930	इलाहाबाद में काग्रेस के कार्यालय मे मजदूर विभाग की जिम्मेदारी सँभाली, माता का निधन, पिता को पक्षाघात
1931	घनश्यामदास बिडला के निजी सहायक का काम सँभाला
1932	काग्रेस के कार्यकारी महामत्री के रूप मे अज्ञातवास मे रहकर काम किया, मद्रास मे गिरफ्तार हुए, पहली जेल यात्रा
1933	नासिक जेल में समाजवादी सगठन के विषय मे चिन्तन
अक्टूबर, 1934	काग्रेस समाजवादी पक्ष की स्थापना– महामत्री
1936	काग्रेस की कार्यकारिणी के सदस्य बने
1936–1939	देश की समस्त समाजवादी शक्तियो की एकता का निष्फल प्रयत्न
फरवरी, 1940	जमशेदपुर मे युद्ध विरोधी भाषण के लिए गिरफ्तारी– 9 महीनो की सजा
जनवरी, 1941	बम्बई मे फिर पकडे गये, राजस्थान के देवली कैम्प जेल मे नजरबन्द
अक्टूबर 1941	कैदियों की मांगों के सिलसिलें में 31 दिनों के

		उपवास–प्रभावती जी के साथ की मुलाकात के समय उन्हें गुपचुप पत्र देने का निष्फल प्रयत्न
1942	.	बिहार के हजारीबाग जेल मे बदली
8 नवम्बर, 1942	:	17 फुट ऊँची दीवार लाघकर जेल से भागे
1942–43	:	अज्ञातवास– गुप्त रीति से लडाई का सचालन नेपाल मे आजाद दस्ते की रचना–नेपाल मे गिरफ्तारी और रिहाई
18 सितम्बर, 1943		चलती रेल मे गिरफ्तारी–लाहौर की जिला जेल मे शारीरिक उत्पीडन और मानसिक यातना
जनवरी, 1945		आगरा केन्द्रीय कारागार मे बदली
11 अप्रैल, 1946	·	जेल से रिहा किए गये
19 अप्रैल, 1946		पटना मे अगस्त क्राति के वीर के रूप मे सार्वजनिक सम्मान
फरवरी, 1947		काग्रेस समाजवादी पक्ष के नाम मे से 'काग्रेस' शब्द हटाया गया
जून, 1947		काग्रेस की महासमिति की बैठक मे देश के बटवारे का विरोध
1947		रेलवे कर्मचारी, डाकतार कर्मचारी और फौजी सामान बनाने वाले कर्मचारियों के सघो के अध्यक्ष बने
मार्च, 1948		मार्क्स के 'क्रातिकारी नीति–शास्त्र' का त्याग करके गाधी जी की साधन शुद्धिवाली बात को अपनाया–समाजवादियो ने काग्रेस से हटने का निश्चय किया।
अप्रैल, 1949	.	बिहार मे हुई मोटर दुर्घटना में दाहिने हाथ की हड्डी टूटी
अगस्त, 1950	·	वर्धा–पवनार यात्रा
30 मई, 1952		बादा जिले की पदयात्रा मे विनोबा से मिले
23 जून, 1952	.	पूना मे आत्मशुद्धि के लिए 21 दिनो के उपवास–भलाई के प्रेरणा के बारे मे चिन्तन, मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद छोडा
सितम्बर, 1952		गया जिले में भूदान–यात्रा का स्वानुभव, किसान–मजदूर प्रजा पक्ष और समाजवादी पक्ष के मिलन से प्रजा समाजवादी पक्ष बना।
जनवरी, 1953		रगून मे हुई एशियाई देशो की पहली समाजवादी परिषद् मे सम्मिलित हुए
फरवरी–मार्च, 1953		नेहरू का प्रस्ताव, समझौते की चर्चा और पक्ष के साथियों के साथ मन क्लेश

अप्रैल, 1953	चाण्डील का सर्वोदय–सम्मेलन– मैं अपने आपको विनोबा का शिष्य कहलाने के लिए तैयार हूँ।'
19 अप्रैल, 1954	बोधगया सर्वोदय सम्मेलन–जीवनदान
5 मई 1954	गया जिले मे सोखोदेवरा आश्रम की स्थापना
1954	'अवार्ड' सस्था के सस्थापक अध्यक्ष
अगस्त 1955	पटना विश्वविद्यालय मे विद्यार्थियो पर हुए गोलीबार के बारे मे व्यथापूर्ण वक्तव्य– नेहरू के साथ के सबन्ध मे थोडी दरार
अक्टूबर 1957	प्रजा समाजवादी पक्ष की साधारण सदस्यता से त्यागपत्र
मई से सितम्बर,1958	साढे चार महीनो की विदेश यात्रा– इग्लैण्ड और यूरोप
1959	तिब्बत की समस्या पर दिल्ली मे अन्तर्राष्ट्रीय परिषद् का आयोजन
1960	विश्व-शाति सेना के तीन अध्यक्षो मे एक अध्यक्ष
1961	अखिल भारत पचायत परिषद् के अध्यक्ष बने
मई, 1961	चेब्रोलू सर्वोदय सम्मेलन के अध्यक्ष
1962	भारत–पाकिस्तान मित्रता–मण्डल के सस्थापक अध्यक्ष
नवम्बर, 1962	चीन के आक्रमण के अवसर पर नेहरू का स्थान लेने के लिए किये गये कुछ लोगो के प्रस्ताव को अस्वीकार किया
1963	'कॉमन वेल्थ ऑफ वर्ल्ड सिटीजन्स' नामक सस्था के पॉच सदस्यो वाले सर्वोच्च मण्डल मे नियुक्ति
जून, 1963	गया जिले मे ग्रामदान का सघन काम करने का निर्णय
6 सितम्बर, 1964	नागालैण्ड पीस मिशन के अविरत प्रयत्नो से नागभूमि मे शस्त्र विराम
मई, 1965	सर्व सेवा सघ के वर्धा अधिवेशन मे बिहार की तरफ से ग्रामदान–तूफान का बीडा उठाया
1965	फिलीप्पीन्स का लोक सेवा सम्बन्धी मैगसेसे पुरस्कार मिला
1967	राष्ट्रपति पद के लिए खडे रहने का प्रस्ताव अस्वीकार किया
1967–68	बिहार रिलीफ कमेटी के अध्यक्ष– अकाल राहत का प्रचण्ड काम
1968	70 दिनों की विदेश यात्रा–अमेरिका, यूरोप, रूस
1969	गाधी शताब्दी के निमित्त से आस्ट्रेलिया मे प्रवचन, बादशाह खान सम्मान समिति के अध्यक्ष
मई 1970	गगोत्री यात्रा

1970	दो सर्वोदयी कार्यकर्त्ताओ के नाम के नक्सलवादियो के धमकी भरे पत्र के कारण विश्राम छोडकर मुसहरी विकास खण्ड मे बैठने का निर्णय
1970	ग्राम स्वराज्य कोष के अध्यक्ष
1971	बॅगलादेश के प्रश्न पर विश्व का लोकमत जगाने के लिए सारी दुनिया के देशो की 47 दिनो की यात्रा दिल्ली मे अतर्राष्ट्रीय परिषद्
1971	हृदय रोग का हलका हमला
1972	चम्बल घाटी के बागियो का आत्म सर्नपण– चम्बल घाटी शाति मिशन के अध्यक्ष
1972	दादाजी और सत्य साईबाबा के चमत्कारों मे रुचि
1972	बगल मे हुई बगल गाठ का आपरेशन, प्रभावती जी के गर्भाशय मे कैन्सर का निदान और आपरेशन
1973	प्रभावती जी का निधन
1973	अग्रेजी साप्ताहिक 'एवरीमेन्स' शुरु किया
1973	'यूथ फार डेमोक्रेसी' के नाम से युवको का आवाहन
1974	नवनिर्माण आन्दोलन के निमित्त से गुजरात मे लोक-जागृति के सकेत
1974	विद्यार्थी–आन्दोलन के संदर्भ में बिहार सरकार से जिम्मेदारी भरा व्यवहार करने की अपील
1974	इदिरा जी द्वारा मार्मिक प्रहार–व्यक्तिगत आक्षेप
1974	पटने में मौन जुलूस का नेतृत्व
1974	विद्यार्थियो द्वारा 'लोकनायक' का विरुद
1974	विद्यार्थी-आन्दोलन का नेतृत्व स्वीकार किया 12 अप्रैल को गया मे हुए गोली काण्ड के बाद विधानसभा को विसर्जित करने की मॉग का समर्थन
1974	वेलोर मे प्रोस्टेट का आपरेशन
1974	लाखों हस्ताक्षरो वाला आवेदन पत्र राज्यपाल को सौंपा–पटने की विराट सभा मे सम्पूर्ण क्राति की घोषणा
1974	सर्व सेवा सघ के पवनार अधिवेशन में मन्थन–गगा–ब्रह्मपुत्र की दो धाराओ की बात–कुछ साथियो के रुख से मर्माहत
1974	पटने की आम सभा मे लोक-जीवन मे से भ्रष्टाचार को समाप्त करके नैतिक क्राति करने का आवाहन
1974	अभूतपूर्व सम्पूर्ण बिहार बन्द
1974	इदिराजी के साथ विफल भेंट
1974	पटने में भव्य कूच–लाठी की मार से बचाव

18 नवम्बर, 1974	सघर्ष का फैसला चुनाव के मैदान में करने की इदिरा जी की चुनौती स्वीकार की।
मार्च, 1975	दिल्ली मे विशाल जुलूस का नेतृत्व, लोकसभा अध्यक्ष को जनता की ओर से मागपत्र दिया, सर्वसेवा सघ के पवनार–अधिवेशन मे फिर मन्थन–सरकार के साथ सघर्ष को छोड देने की सलाह को स्वीकार करने मे असमर्थ
26 जून, 1975	देश मे आपातकाल की घोषणा के साथ नजरबन्द–चण्डीगढ मे लगभग एकान्त कारावास
27 सितम्बर, 1975	पेट में असह्य पीडा का आरम्भ–लगभग नरक यातना मे से गुजरने का अनुभव–महीनो तक लगभग एक सी पीडा
1 नवम्बर, 1975	मानसिक ग्लानि, तन्द्रा, विस्मृति
5 नवम्बर, 1975	दोनों गुरदो के बिलकुल खराब हो जाने का निदान
12 नवम्बर, 1975	लगभग मरणासन्न स्थिति म एक महीने की पेरोल पर छूटे–चण्डीगढ से दिल्ली, दिल्ली से बम्बई
22 नवम्बर, 1975	जसलोक अस्पताल मे प्रवेश–लगभग डेढ महीने के उपचार से सुधार हर तीसरे दिन डायलिसिस का अनिवार्य उपयोग
4 दिसम्बर, 1975	सरकार ने नजरबन्दी का हुक्म वापस लिया
जनवरी, 1977	देश में आम चुनाव की घोषणा– जनता पक्ष का जन्म–शारीरिक मर्यादा की उपेक्षा करके लोकतत्र को बचाने के लिए चुनाव प्रचार
मार्च, 1977	चुनावो मे जनता के फैसले के बाद की भावना–'मेरा काम पूरा हुआ'– प्रधानमत्री पद के लिए मोरारजी भाई की पसन्दगी
मई, 1977	डायालिसिस सम्बन्धी उपचार के लिए अमेरिका की यात्रा करके आये
1978–79	देशभ्रमण असम्भव–लोक-सम्पर्क के अभाव मे पगुता का अनुभव–देश की परिस्थिति के बारे में मानसिक व्यथा– 'बाग उजड गया' की भावना–विरक्ति
22 मार्च, 1979	मृत्यु के गलत समाचार और लोकसभा में श्रद्धाजलि–गम्भीर बीमारी से बचे–मृत्यु की विशेष अनुभूति
8 अक्टूबर, 1979	सुबह छह बजे के लगभग निधन
9 अक्टूबर 1979	पटने के गगाघाट पर अग्नि संस्कार

ग्रन्थ सूची

(स्वलिखित)

Why Socialism ?
Congress Socialist Party, Varanasi (1936)

Inside Lahore Fort
Sahityalaya, Patna (1947)
Commercial Printing & Publishing House, Madras (1959)

From Socialism to Sarvodaya
Sarva Seva Sangh Prakashan, Varanasi (1957)

A Plea for Reconstruction of Indian Polity
Sarva Seva Sangh Prakashan, Varanasi (1959)

Swaraj for the People
Sarva Seva Sangh Prakashan, Varanasi (1961)

Fac Face
Navachetna Prakashan, Varanasi (1970)

Prison Diary
Samajwadi Yuvajan Sabha, Calcutta (1976)
Abhay Prakashan, Pune, (1977)
Popular Prakashan, Bombay (1977)

समाजवाद से सर्वोदय की ओर (अनु)
सर्व सेवा सघ प्रकाशन, वाराणसी (1958)

लोकस्वराज्य (अनु)
सर्व सेवा सघ प्रकाशन, वाराणसी (1961)

आमने–सामने (अनु)
सर्व सेवा सघ प्रकाशन, वाराणसी (1971)

बिहारवासियो के नाम चिट्ठी
सघर्ष कार्यालय पटना 1976

मेरी जेल डायरी (अनु)
  राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली (1977)

गुजराती

समाजवाद शामाटे ? (अनु)
  नयी दुनिया कार्यालय, अहमदाबाद (1937)

लोकस्वराज्य (अनु.)
  यज्ञ प्रकाशन, वडोदरा (1961)

भ्रान्ति अने क्राति (अनु)
  यज्ञ प्रकाशन, वडोदरा (1970)

जेल डायरी (अनु.)
  बालगोविन्द प्रकाशन, अहमदाबाद (1977)

(सम्पादित)

Towards Struggle
  ed. Yusuf Meherally
  Padma Publications, Bombay (1946)

Socialism, Sarvodaya and Democracy
  ed Bimal Prasad
  Asia Publishing House, Bombay (1964)

Communitarian Society and Panchayati Raj
  ed Brahmanand
  Navachetna Prakashan, Varanasi (1970)

Nation-Building in India
  ed. Brahmanand
  Navachetna Prakashan, Varanasi (1974)

Towards Revolution
  ed Bhargava and phadnis
  Arnold-Heinemann, new Delhi (1975)

J P's Jail Life
  A of Personal Letters (Tr

ed. G.S Bhargava
Arnold Heinemann,. New Delhi (1977)

Towards Total Revolution
1 Search for an Ideology
2 Politics in India
3. India and Her Problems
4 Total Revoluton
ed. Brahmanand
Popular Prakashan, Bombay (1978)

A Revolutionary's Quest
ed. Bimal Prasad
Oxford University Press, New Delhi (1980)

J P Profile of a non-conformist
Interviews by Bhola Chatterji
Minerva Associates, Calcutta (1979)

Sarvodaya Answer to chinese Agression
Sarvodaya Prachuralaya, Tanjore (1963)

हमारी भूमि--समस्या का हल
सर्वसेवा सघ प्रकाशन, वाराणसी (1954)

सामुदायिक समाज रूप और चिन्तन (अनु)
सर्व सेवा सघ प्रकाशन, वाराणसी

समाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र (अनु)
सं विमल प्रसाद
बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना

मेरी विचारयात्रा (अनु)
स कान्ति शाह
सर्व सेवा सघ, प्रकाशन, वाराणसी (1937)

मेरी विचार यात्रा--सम्पूर्ण क्राति की खोज में (अनु)
स कातिशाह
सर्व सेवा संघ प्रकाशन वाराणसी (1978)

के विचार अनु

स रघुवश
लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद (1975)

सम्पूर्ण क्राति
सर्व सेवा सघ प्रकाशन, वाराणसी (1974)

राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ
सुरुचि–प्रकाशन, नई दिल्ली (1977)

जे पी. का वर्ग-सघर्ष
स राममूर्ति
सर्व सेवा सघ प्रकाशन, वाराणसी (1977)

नागालैण्ड का सवाल
सर्व सेवा सघ प्रकाशन, वाराणसी

शिक्षण और शांति
सर्व सेवा सघ प्रकाशन, वाराणसी

गुजराती

आपणी भूमि–समस्यानो उकेल (अनु.)
यज्ञ प्रकाशन, वडोदरा (1954)

मारी विचारयात्रा
स काति शाह
यज्ञ प्रकाशन, वडोदरा (1972)

सम्पूर्ण क्राति (अनु)
यज्ञ प्रकाशन वडोदरा (1975)

सम्पूर्ण क्रातिनी खोजमा
स काति शाह
यज्ञ प्रकाशन, वडोदरा (1977)

जीवन चरित्र

Red fugitive Jayaprakash Narayan
H.L. Singh
Dewan's Publications, Lahore (1946)

Life and Time of Jayaprakash narayan
J S Bright

Dewan's Publications, Lahore

Jayaprakash narayan A political Biography
Ajit Bhattacharjea
Vikas Publications, Delhi (1975)

J.P His Biography
Allan and Wendy Scarfe
Oreint Longmans, new Delhi (1975)

Jayaprakash : Rebel Extraordinary
Lakshmi Narayan Lal
Indian Book Co., new Delhi (1975)

Loknayak Jayprakash Narayan
Suresh Ram
Macmillan Co., Delhi (1974)

Loknayak Jayprakash Narayan
Farooq Argali
Janata Pocket Books, Delhi (1977)

जयप्रकाश
रामवृक्ष बेनीपुरी
साहित्यालय, पटना (1947)

विप्लवी जयप्रकाश
श्री राम
सरस्वती पुस्तक मन्दिर, नई दिल्ली (1947)

जयप्रकाश
लक्ष्मीनारायण लाल
मैकमिलन क दिल्ली (1974)

जयप्रकाश - एक जीवनी (अनु)
एलन और वेण्डी स्कार्फ
राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली (1978)

लोकनायक जयप्रकाश
सुरेश राम

जयप्रकाश
ओकार शरद
साहित्य भवन, इलाहाबाद (1977)

'भारत छोडो'–आन्दोलन के सेनानी– जयप्रकाश
श्रीकृष्णदत्त भट्ट
सर्व सेवा सघ प्रकाशन, वाराणसी

सम्पूर्ण क्राति के लोकनायक जयप्रकाश
श्रीकृष्ण दत्त भट्ट
सर्व सेवा सघ प्रकाशन, वाराणसी

जयप्रकाश लोकनायक भी, किशोर भी
रामभूषण
सर्व सेवा सघ प्रकाशन, वाराणसी

लोकनायक जयप्रकाश नारायण
रघुवश दयाल सावत
राष्ट्रीय साहित्य सदन, लखनऊ

लोकनायक
निर्मल शुक्ल
मजरी प्रकाशन, माव–बांदा

लोकनायक जयप्रकाश नारायण
जगदीश चावला
प्रेम प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली (1977)

गुजराती

जयप्रकाश नारायण
रमणलाल पटेल
एन एम टक्करनी क, मुबई (1946)

जयप्रकाश जेनु नाम
प्रकाश न शाह
यज्ञ प्रकाशन, वडोदरा (1977)

लोकनायक जयप्रकाश
(जीवन चरित्र अने जेल-डायरी)

गुड कम्पेनियन्स, वडोदरा (1977)

जयप्रकाश नारायण
नारायण देसाई,
परिचय ट्रस्ट, मुम्बई (1980)

जयप्रकाशजीनी जीवन-ज्योत
लक्ष्मी नारायण लाल, अनु मोहन दाडीकर
विश्वमानव सस्कार शिक्षण ट्रस्ट, वडोदरा (1980)

(जे.पी. और उनके कार्य के बारे में)

J P - India's Revolutionary Number one
ed. B.N Ahuja
Verma Publishing Co , Lahore (1947)

Is J.P. the Answer ?
Minoo Masani
Macmillan Co., Delhi (1975)

J.P's Mission Partly Accomplished
Minoo Masani
Macmillan Co , Delhi (1977)

J.P.'s Crusade for Revolution
Vasant Nargolkar
S. Chand & Co., new Delhi (1975)

J.P Vinidicated
Vasant Nargolkar
S Cahnd & Co , New Delhi (1977)

Unacknowledged Aeronaut
(An analysis of J.P's agitation)
Achyutanand Prasad
All India Sampradayikta Virodhi Committee, New Delhi

Jaypeocracy · Theory & Practice
Achyutanand Prasad
Al ndia Vrodh ee New Delh 1995

J P – From Marxism to Total Revolution
Ramchandra Gupta
Sterling Publishers, Delhi (1981)

Jayaprakash Narayan and the Future of Indian Democracy
ed T K Mahadevan
Affiliated East-West Press, New Delhi (1975)

Protest Movements in Two Indian States
(A Study of Gujarat & Bihar Movements)
Ghanshyam Shah
Ajanta publishers, Delhi (1977)

Jayaprakash Narayan His Life & Thought
Commemoration Volume, J P.'s 61st Birthday Celebration Committee, Madras (1963)

Jayaprakash Narayan Abhinandan Granth
(English & Hindi)
ed. K L Sharma
Chinmaya Prakashan, Jaipur (1978)

The Quest and the Goal
Commemoration Volume
J P's 76th Birthday Celebration Committee, Madras (1979)

Bihar Shows the way
(With 96 Illustrations)
Raghu Rai & Sunanda K. Dutta Ray
Nachiketa Publications, Bombay (1977)

Politics of the J.P. Movement
Radhakant Bank
Radiant Publisher, New Delhi (1977)

Real Face of J P's Total Revolution
Indradeep Sinha
Communist Party of India, New Delhi (1974)

Jayaprakash Narayan analysed through the Gandhian Prism
Hari Kishore Thakur

All India Congress Committee (1975)

Total Revolution for All
Rammurti
Sarva Seva Sangh Prakasahan, Varanasi (1978)

जयप्रकाश की विचारधारा
रामवृक्ष बेनीपुरी
पुस्तक जगत, पटना

अन्धकार मे एक प्रकाश जयप्रकाश
लक्ष्मी नारायण लाल
सरस्वती विहार, नई दिल्ली (1977)

जयप्रकाश नारायण जीवनकथा, भाषण, विचार
अमरनाथ सेठ
साहित्य भवन, इलाहाबाद (1975)

जेल से जसलोक तक
अक्षयकुमार जैन
पजाबी पुस्तक भण्डार, दिल्ली (1977)

विचार--नेता और राजनेता का
रामजन्म और राजेश चतुर्वेदी
बाजना बुक डिपो, जयपुर (1979)

जयप्रकाश, व्यक्ति और विचार
ओमप्रकाश अग्रवाल
पूर्ति–प्रकाशन (1975)

बिहार-आंदोलन एक सिंहावलोकन
श्रवणकुमार गर्ग
सर्व सेवा सघ प्रकाशन, वाराणसी (1974)

जयप्रकाश-- जीवित कार्य
मीनू मसानी
मैकमिलन क., दिल्ली (1977)

चम्बल की बन्दूके गॉधी के चरणो मे
गॉधी पुस्तक घर, नई दिल्ली

सम्पूर्ण क्रांति सबके लिए
राममूर्ति
सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी (1977)

[illegible] क्यों बने, कैसे बने क्या करे ?
राममूर्ति
सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी (1977)

गुजराती

सम्पूर्ण क्रान्ति ने मार्गे जयप्रकाशजी (अनु)
वसन्त नारगोलकर
नवभारत साहित्य मन्दिर, अहमदाबाद (1977)

□□□

समाजवादी आन्दोलन के आधार-स्तम्भ डॉ. लोहिया

जन्म, बाल्यकाल एव शिक्षा

समाजवादी आन्दोलन के आधार स्तम्भ, स्वतत्रता सग्राम के महान योद्धा, देश की राजनीतिक दिशा को परिवर्तित करने एव उसे गति देने मे कुशल, अपनी धुन के पक्के, डा राममनोहर लोहिया का जन्म 23 मार्च, 1910 को अकबरपुर (अकबरपुर अम्बेदकरनगर जिला हो गया किन्तु तहसील का नाम अकबरपुर ही है) जिला फैजाबाद मे हुआ था। पिता का नाम हीरालाल लोहिया तथा माता का नाम चन्द्री था। लोहे का कारोबार करने के कारण परिवार के साथ 'लोहिया' शब्द का विशेषण जुड गया। यह परिवार मिर्जापुर से व्यापार के उद्देश्य से फैजाबाद आया और अकबरपुर मे आबाद हो गया। तमसा नदी अकबरपुर को दो भागो मे बॉटती है। अकबरपुर और शहजादपुर। लोहिया परिवार शहजादपुर मे रहता था। लोहिया की प्रारम्भिक शिक्षा यही टण्डन पाठशाला मे हुई। पॉचवी कक्षा मे उनका दाखिला विशेश्वरनाथ विद्यालय मे कराया गया। लोहिया के पिता हीरालाल लोहिया का रुझान स्वतत्रता सग्राम की ओर था। व्यापार के उद्देश्य से जब वह मुम्बई गये तो बालक राममनोहर को भी साथ लेते गये, जहॉ मारवाडी विद्यालय से उन्होने 1925 मे मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। किन्तु हीरालाल लोहिया को कारोबार के लिए वापस वाराणसी आना पडा। इस प्रकार लोहिया की आगे की शिक्षा वाराणसी मे हुई जहाँ 1927 मे उन्होने काशी विश्वविद्यालय से इण्टर की परीक्षा अच्छे नम्बरो से उत्तीर्ण की। विद्यासागर विद्यालय कलकत्ता से बी ए पास किया। राममनोहर लोहिया का राजनीतिक जीवन कलकत्ता से प्रारम्भ हुआ। इसी नगर मे वह राजनीति मे सक्रिय हुए।

राममनोहर लोहिया जिस समय स्नातक के विद्यार्थी थे देश का राजनीतिक वातावरण उग्र था। 1928–29 में भारत की वास्तविक स्थिति जानने के लिए साइमन साहब की अध्यक्षता मे एक कमीशन ब्रिटिश सरकार ने हिन्दुस्तान भेजा था, जिसमे कोई हिन्दुस्तानी प्रतिनिधि नही था। इसलिये 'साइमन कमीशन' का भारत आने पर उग्र विरोध हुआ। 'गो बैक साइमन' के नारे से सम्पूर्ण देश गुजायमान हो गया। साइमन कमीशन विरोधी आन्दोलन में लोहिया शामिल हुए थे तथा उन्हे कुछ समय के लिए दण्डित किया गया था [illegible] में अखिल भारतीय विद्यार्थी फेडरेशन के सम्मेलन मे लोहिया शरीक हुए थे इस सम्मेलन के अध्यक्ष पडित [illegible] नेहरू तथा

थ सुभाषचन्द्र बोस थे इन दोनों राष्ट्रीय विभूतियों के प्रथम दर्शन लोहिया ने कक्षा में ही किये थे। 1929 मे राममनोहर ने बी ए आनर्स की परीक्षा उच्च श्रेणी मे उत्तीर्ण की। लोहिया उच्च शिक्षा ग्रहण करने के उद्देश्य से तथा अर्थशास्त्र मे पी-एच डी की डिग्री प्राप्त करने के लिए विदेश जाना चाहते थे, किन्तु उनके पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी। अत कुछ धर्मादा सस्थाओ की सहायता से वे इग्लैड जा सके। किन्तु वहाँ राममनोहर का मन उचट गया। वह एक पराधीन देश के नागरिक हैं, यह भावना उनके मन मे कचोट रही थी। कुछ लोगो ने उन्हे सलाह दी कि यदि वे आधुनिक एव तार्किक विषयो का अध्ययन करना चाहते हैं तो उन्हे जर्मनी जाना चाहिए। इस कारण उन्होने जर्मन की यात्रा की तथा बर्लिन म जाकर रुके। यूरोप मे बर्लिन दर्शनशास्त्र का प्रमुख केन्द्र था। मार्क्स, एंजेल्स तथा हीगेल का इसी धरती पर जन्म हुआ था। समाजवादी दर्शन ने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया है तथा समतामूलक समाज के निर्माण की कल्पना करने वाले लोगो को समाजवादी दर्शन ने चकाचौंधित कर दिया था। एक समय मे विश्व को दो गुटो–पूँजीवादी तथा समाजवादी मे हमने बँटा हुआ देखा है। समाजवादी विचाराधारा का जन्म जर्मन मे ही हुआ जहाँ कार्ल मार्क्स एव एजेल्स ने इस विचारधारा को वैज्ञानिक रूप दिया तथा लेनिन ने इस विचारधारा की नीव पर नये समाज की रचना की। यह समाज शोषण से मुक्त समानता की बुनियाद पर आधारित था।

लोहिया जर्मनी मे

राममनोहर लोहिया जर्मन भाषा से अनभिज्ञ थे। इसलिए बर्लिन पहुँचने पर उनके शिक्षक ने जर्मनी भाषा सीखने को कहा। लोहिया ने तीन माह मे जर्मन भाषा सीख ली क्योंकि अपनी थिसिस लोहिया को जर्मन भाषा मे ही लिखनी थी। यह उनकी कुशाग्र बुद्धि का प्रमाण था। जर्मन मे अपना गाइड चुनने की विद्यार्थियो को छूट थी। डा लोहिया के गाइड डॉ वर्नर जोम्बार्ट थे जो अपने समय के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री थे। विश्वविख्यात वैज्ञानिक आइस्टीन और प्रसिद्ध जर्मन समाजवादी चिन्तक शूमाखर इसी हम्बोल्ट विश्वविद्यालय मे उन दिनो अध्यापक थे। इस प्रकार लोहिया को सत्सग अच्छा मिला जिससे उनके ज्ञान मे वृद्धि हुई तथा कल्पना शक्ति मे नवीनता आई। 1932 के आरम्भ मे राममनोहर लोहिया ने अर्थशास्त्र में डाक्टरट पाने के उद्धेश्य से अपना शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया, जो जर्मन भाषा मे लिखा गया था। डा लोहिया के परीक्षक डा. शूमाखर थे। इतिहास के प्रकाण्ड पडित प्रो जानकीन, मनोवैज्ञानिक तथा प्रसिद्ध दार्शनिक प्रो रैमलार तथा अन्य विद्वानो ने लोहिया की परीक्षा ली। डा लोहिया की विद्वत्ता की सबने प्रशसा की तथा उनके शोध प्रबन्ध को सराहा गया। लोहिया की शिक्षा पूरी हो गयी थी। डा शूमाखर ने सलाह दी कि लोहिया को तुरन्त स्वदेश लौटना चाहिए क्योंकि जर्मनी पर युद्ध के बादल मडरा रहे थे तथा नाजी सेनाये युद्ध की तैयारी कर रही थीं। लोहिया 1932 मे कोलम्बो होते हुए भारत वापस आये। उनका जहाज चेन्नई में रुका। उनका सारा सामान यहाँ तक कि डिग्री भी चोरी हो गयी। वह चेन्नई के समाचार-पत्र हिन्दू दैनिक के कार्यालय गए उन्होंने फ्यूचर आफ शीर्षक लेख लिखा उन्हें

पच्चीस रुपये की धनराशि मिली जिससे वह कलकत्ता वापस आये। कुछ दिनो बाद डॉ लोहिया के नाम से वह देश मे विख्यात हो गये।

जर्मन मे विताए गये इन साढे तीन वर्षों मे डा. लाहिया ने यूरोपीय राजनीति एव अर्थशास्त्र का गहराई से अध्ययन किया। लोहिया का मत था कि यूरोप द्वारा प्रतिपादित अर्थशास्त्र भारतीय परिस्थितियो के लिए अधूरा है क्योकि इसकी रचना यूरोपीय परिस्थितियो को दृष्टि मे रखकर की गयी है। यूरोपीय दर्शन भारतीय समाज व्यवस्था को अनदेखा करता है। लोहिया का कथन था कि "इग्लैंड एव फ्रांस का पूँजीवादी जनतत्र मध्य यूरोप का समाजवादी जनतत्र, तथा रूस की कम्युनिस्ट व्यवस्था– यह तीनो प्रणालियाँ भारत के लिए अनुपयुक्त हैं।" डॉ लोहिया के अनुसार "लोकतत्र एव समाजवाद पर आधारित व्यवस्था जिसमे गाधी दर्शन का समावेश हो भारत के लिए उत्तम है।" आगे चलकर समाजवादी आन्दोलन पर लोहिया के विचारो की स्पष्ट छाप दिखाई देती है।[1]

राजनीति में प्रवेश

डॉ लोहिया के स्वदेश लौटने के पूर्व महात्मा गाधी नमक सत्याग्रह कर चुके थे। इस उद्देश्य से गाधी जी ने दाण्डी मार्च किया था। लाखो देशवासियो ने नमक सत्याग्रह मे हिस्सा लिया था तथा नमक कानून को तोडा था। सरोजनी नायडू के नेतृत्व मे धरासणा (गुजरात) मे नमक सत्याग्रह किया गया था जिसमे लोहिया के पिता हीरालाल लोहिया भी सम्मिलित हुए थे। धरासणा मे काग्रसी सत्याग्रहियो के साथ पुलिस ने नितान्त बर्बर व्यवहार किया था। सत्याग्रहियो पर पुलिस ने निर्ममतापूर्वक प्रहार किया था। इस लोमहर्षक घटना से सम्पूर्ण विश्व स्तब्ध था। इसकी खबर जर्मनी भी पहुँच गयी थी जिससे लोहिया विचलित हो उठे थे। जर्मन के समाचार पत्रो ने इस घटना पर अग्र लख लिखे थे तथा इसे लोकतत्र के लिए कलक बताया था। हीरालाल लोहिया ने धरासणा सत्याग्रह की विस्तृत सूचना राममनोहर को भेजी थी जिससे वह बहुत चिंतित और दु खी थे। उसी समय लीग आफ नेशन्स का जनेवा मे सम्मेलन हो रहा था जिसमे भारत का प्रतिनिधित्व बीकानेर के महाराजा गगा सिह कर रहे थे। डा लोहिया तथा उनके मित्र डा मेनेजिस ने किसी प्रकार दर्शक दीर्घा के पास प्राप्त कर लिए। जैसे ही महाराजा बीकानेर ने भाषण मे ब्रिटिश शासन का गुण–गान करना प्रारम्भ किया दोनो युवकों ने जोरदार सीटी बजाकर उनका प्रतिरोध किया सभा के अध्यक्ष रूमानिया के टिटेले स्क्यू थे। उन्होने दोनो युवको को देखा तथा मुख पर मुस्कान बिखेरते हुए इन्हे सभा से बाहर करने का आदेश दिया। इस प्रकार लोहिया ने पराधीन भारत का सच्चा प्रतिनिधि अपने को सिद्ध किया तथा बीकानेर के राजा के असत्य भाषण का प्रतिरोध किया। यह घटना जर्मनी के मुख्य समाचार पत्रो मे प्रकाशित हुई। लोहिया ने भारत की वास्तविक स्थिति पर लीग आफ नेशन्स मे पर्चे वितरित करके अग्रेजी सत्ता को बेनकाब किया।[2]

---

1 राममनोहर लोहिया इन्दुमति केलकर नेशनल बुक ट्रस्ट भारत

2 लोहिया, इन्दुमति केलकर नेशनल बुक ट्रस्ट भारत

डॉ लोहिया की महात्मा गाधी मे पूर्ण श्रद्धा थी तथा गाधी जी की नीति मे आस्था थी। उस समय के समाजवादियों मे विशषकर आचार्य नरेन्द्र देव एव जयप्रकाश नारायण पर मार्क्सवाद का गहरा प्रभाव था। डा लाहिया को न तो मार्क्सवाद से विरोध था और न ही वह उसके अध समर्थक थे। उनकी पुस्तक मार्क्स, गाधी एण्ड सोशलिज्म से यह बात स्पष्ट हो जाती है। वे पडित जवाहरलाल नेहरू के जोशीले राजनीतिक विचारो का समर्थन करते थे। डा. लोहिया जमनालाल बजाज की मार्फत गाधी जी से मिले। गाधी जी से उनकी आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध मे पूछा। जिसके उत्तर मे जमनालाल बजाज ने कहा "इसकी चिन्ता की आवश्यकता नही।"[3]

काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी

17 मई 1934 को पटना मे अजुमन इस्लामिया हाल मे आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता मे काग्रेस के उन कार्यकर्त्ताओ की बैठक हुई जो समाजवादी विचारधारा के समर्थक थे। निर्णय लिया गया कि काग्रेस के अन्दर ही 'काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी' की स्थापना की जाए। पार्टी की नीति, कार्यक्रम एव सविधान की रचना के लिए समिति का गठन किया गया जिसमे लोहिया को भी सम्मिलित किया गया। आगे चलकर 21 और 22 अक्टूबर 1934 को बम्बई में 'कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का जन्म हुआ। सम्मेलन के अध्यक्ष डा सम्पूर्णानन्द थे। पार्टी का महामत्री जयप्रकाश नारायण को चुना गया। उस समय अध्यक्ष चुनने की परम्परा नही थी। महामत्री के असीमित अधिकार थे। जयप्रकाश नारायण बुनियादी तौर पर मार्क्सवादी थे किन्तु उनकी पत्नी प्रभावती जी के कारण गाधी जी का भी उन पर प्रभाव था। यहॉ यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि विश्व म कम्युनिस्ट रूस क प्रभाव मे चल रहे मजदूर आन्दोलन से समाजवादी नेतृत्व तथा पडित जवाहरलाल नेहरू बहुत प्रभावित थे। किन्तु डा लोहिया अपवाद थे। लोहिया की मान्यता थी कि विश्व शाति तथा नई आर्थिक व्यवस्था देने की क्षमता रूस मे नही है। अपनी वैचारिक स्वतंत्रता के कारण लोहिया तथा अन्य समाजवादी नेताओ मे मतभेद रहते थे। किन्तु लोहिया अपनी मौलिक दृष्टि के कारण परास्त नहीं होते थे।[4]

लोहिया के सम्पादन मे 'काग्रेस सोशलिस्ट' नामक साप्ताहिक कलकत्ता मे प्रकाशित होने लगा। लोहिया की स्वतत्र विचारधारा कभी-कभी उनके लिए तथा काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के नेताओ के लिए कठिनाई उत्पन्न करती थी। गाधी जी के ग्राम सुधार जैसे कार्यक्रम की आलोचना करते हुए लोहिया ने लिखा था, 'इसकी अपेक्षा ब्रिटिश शासन को हटाने के आवश्यक प्रयत्न किये जाने चाहिए।' गाधी जी को यह अक इस आशा के साथ भेजा गया कि वह अपनी प्रतिक्रिया दे। गाधी जी ने उत्तर मे लिखा था कि चूँकि आपमे विरोधियो की मान्यताओ को समझने की सहिष्णुता नही है इसलिए मेरे उत्तर की इच्छा मत रखें।' लोहिया ने अपने उत्तर मे लिखा कि "सम्भव है कि उन्होने

3 राममनोहर लोहिया इन्दुमति केलकर

4 वही

शब्दो के चयन मे लापरवाही की हो।" इस पर गाधी जी ने क्षमा करते हुए अपना आशीर्वाद दिया।[5]

काग्रेस के विदेश विभाग के सचिव

पडित जवाहरलाल नेहरू 1936 मे काग्रेस के राष्ट्रपति बने। उन्होने डा लोहिया को परराष्ट्र सम्बन्धी विभाग का सचिव मनोनीत किया। किसी जगह बैठकर कार्य करने का लाहिया का स्वभाव नही था। आचार्य नरेन्द्र देव के आग्रह पर उन्होने इस पद को स्वीकारा। लोहिया ने इलाहाबाद मे तीन वर्ष बिताये। आचार्य नरेन्द्र देव उत्तर प्रदेश काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे। इस प्रकार उत्तर प्रदेश काग्रेस कमेटी पर सोशलिस्टो का अधिकार था। आचार्य नरेन्द्र देव तथा डा लोहिया के सम्बन्ध अत्यत मधुर एव स्नेहमय थे जिसके कारण लोहिया को जर्मनी आधार बनाने का अवसर प्राप्त हुआ।[6]

लोहिया के परराष्ट्र विभाग के सचिव होने से पूर्व साम्राज्यवाद के विरोध के अतिरिक्त अन्य कोई कागेस की नीति नही थी। उन्होने विभिन्न पराधीन देशो से तथा स्वतत्र लोकतत्रवादी देशो से सम्पर्क किया तथा भारत की स्वतत्रता के लिए एक मच तैयार किया। विभाग की ओर से एक साप्ताहिक बुलेटिन भी निकालना प्रारम्भ किया। परराष्ट्र विभाग के सचिव के रूप मे लोहिया ने कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तके प्रकाशित की। 'भारत की विदेश नीति' नामक पुस्तक मे काग्रेस की विदेश नीति को भाष्य किया गया हे। पुस्तक की भूमिका पडित जवाहरलाल नेहरू ने लिखी है। "विदेशो मे भारतवासी नामक पुस्तक की भूमिका आचार्य कृपलानी ने लिखी है। 'भारत और चीन' पुस्तक की भूमिका पडित नेहरू ने लिखी। इसके अतिरिक्त भी बहुत सी पुस्तिकाये तथा पैम्फलेट लोहिया ने लिखे जो विभिन्न पत्र–पत्रिकाओ मे प्रकाशित होते रहे। लोहिया के मस्तिष्क मे एक तटस्थ विदेश नीति की अवधारणा थी जो कम्युनिस्ट रूस तथा पूँजीवादी अमेरिका से अलग हटकर हो। लोहिया के अनुसार, 'एशिया और अफ्रीकी देशो को चाहिए कि वे एक नवीन विश्व व्यवस्था को कायम करने के लिए पूँजीवाद और साम्राज्यवाद के आपसी सघर्षों से अलग हटकर अपनी तीसरी शक्ति का गठन करे।"[7] आगे चलकर लोहिया को काग्रेस के विदेश विभाग के सचिव पद को छोडना पडा। इसका कारण यह प्रस्ताव था जिसमें कहा गया था कि काग्रेस के अतिरिक्त अन्य किसी पार्टी का सदस्य काग्रेस मे पदाधिकारी नही हो सकता।

उधर काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी मे एक नया तूफान आने का खतरा मडरा रहा था। पार्टी के महासचिव श्री जयप्रकाश नारायण ने काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की सदस्यता मे ढील दी थी। उनका प्रस्ताव था कि सभी वामपथियो को एक झण्डे के नीचे एकत्र कर

---

5 मार्क्स, गॉधी एण्ड सोशलिज्म, डॉ लोहिया नवग्रह प्रकाशन हेदराबाद

6 राममनोहर लोहिया इन्दुमति केलकर

7 समाजवादी आंदोलन का इतिहास राममनोहर लोहिया समता विद्यालय न्यास हैदराबाद

मार्क्सवाद के आधार पर सगठित कर सशक्त वामपथी दल की बुनियाद डाली जाये। इस प्रकार 'काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी' का व्यापक आधार बढाया जाये। इस नीति के चलते पार्टी की भयकर क्षति हुई। राष्ट्रीय स्वतत्रता सग्राम विशेष कर 1942 के दौरान विभिन्न प्रदेशो मे पार्टी के सगठन कम्युनिस्ट पार्टी मे विलीन हो गये। अनेक बडे नेता कम्युनिस्ट हो गये। जयप्रकाश नारायण को अपनी भूल पर पश्चाताप हुआ। किन्तु इस भूल का प्रायश्चित सम्भव नही था।

1939 मे यह स्पष्ट होने लगा था कि द्वितीय विश्व युद्ध सन्निकट है। फैजपुर काग्रेस के अधिवेशन मे सुभाषचन्द्र बोस काग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित हुए थे। इसे महात्मा गाधी ने अपनी पराजय माना था। गाधी जी चाहते थे कि पट्टाभि सीतारमैया काग्रेस के अध्यक्ष बने। प्राय सभी काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सदस्यो ने सुभाष बाबू के पक्ष मे मत दिया था। लोहिया तटस्थ थे। सुभाष बाबू की जीत को गाधी जी ने अपनी पराजय स्वीकार किया। काग्रेस मे गम्भीर सकट उत्पन्न हो गया। गाधी जी के प्रति अपनी निष्ठा प्रमाणित करने के लिए काग्रेस वर्किंग कमेटी ने त्यागपत्र दे दिया। लोहिया यद्यपि सुभाष बाबू को सम्मान देते थे किन्तु वह मानते थे कि राष्ट्रीय स्वतत्रता सग्राम गाधी जी के अतिरिक्त कोई दूसरा नही चला सकता। इसलिए उनका झुकाव गाधी जी के साथ था।[8]

समाजवादियों का युद्ध विरोध

1937–38 मे यह स्पष्ट हो गया था कि जर्मनी ओर इग्लैड फ्रांस मे हो रहा सत्ता सघर्ष यूरोप को बडे युद्ध की ओर ले जायेगा। लोहिया की स्पष्ट मान्यता थी कि भारत का यह परमकर्त्तव्य है कि वह चीन और स्पेन जैसे लोकतांत्रिक राष्ट्रो का जोरदार समर्थन करे और जर्मनी तथा इग्लैंड जैसे साम्राज्यवादी राष्ट्रो को आपसी सघर्ष मे कोई दखल न दे अगर युद्ध हो ही जाता है तो भारत को चाहिए कि अपने स्वाधीनता के सघर्ष को अधिक तीव्र और पुरजोर बनाने के लिये वह इस अवसर का लाभ उठाये। 'इस आशय की माग लोहिया और काग्रेस समाजवादी पार्टी ने की। काग्रेस युद्ध का समर्थन करे अथवा विरोध यह एक द्वन्द्व था जो स्पष्ट नही हो रहा था। काग्रेस समाजवादियो तथा सुभाषचन्द्र बोस का मत स्वाधीनता सघर्ष को उग्र करने का था। लोहिया ने युद्ध विरोधी भावना के पाच कारण बताये थे– 1 जनता मे युद्ध विरोधी भावना का प्रबल होना 2 देश मे बढती राष्ट्रीय भावना 3 देश की स्वतत्रता के लिए जनता की आकाक्षा 4 युद्ध मे होने वाली इग्लैंड की दुर्दशा का भान 5 अहिसा की प्रबल भावना के कारण युद्ध मे होने वाले नरसहार मे जनता की नाराजगी।'[9–10]

लोहिया ने युद्ध विरोधी भूमिका का प्रचार प्रारम्भ कर दिया। कलकत्ता

---

8 राममनोहर लोहिया, इन्दुमति केलकर

9 वही

10 आन्दोलन के दस्तावेज खड–1 विनोद नवीनतम प्रतिपक्ष न नयी दिल्ली

विश्वविद्यालय मे लोहिया द्वारा युद्ध विरोधी भाषण दिये जाने तथा अग्रेजो का युद्ध मे असहयोग करने के प्रचार के कारण लोहिया को गिरफ्तार किया गया। किन्तु चीफ प्रेसीडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने लोहिया को निर्दोष बताते हुए मुक्त कर दिया। लोहिया ने अपनी पैरवी स्वय की थी। किन्तु कांग्रेस पार्टी के कई वरिष्ठ नेताओ की लोहिया से मत भिन्नता थी जिसमे मुख्य पडित जवाहरलाल नेहरू थे। उनका मानना था कि भारत एक लोकतत्रवादी देश है और ब्रिटेन भी एक ऐसा ही देश है। इसलिये उसका फासिस्ट जर्मनी के मुकाबले मे समर्थन करना चाहिए। क्योकि फासिज्म से लोकतत्र को भयकर खतरा है। लोहिया का मत था कि भारत स्वय पराधीन है। पहले ब्रिटेन उसे मुक्त करे तभी उसकी सहायता और समर्थन के सम्बन्ध मे विचार किया जा सकता है।'[11]

जेसी की सम्भावना थी 1 सितम्बर 1939 को युद्ध छिड गया। हिटलर की नाजी फौज ने पोलैण्ड पर धावा बोल दिया। 13 सितम्बर को ब्रिटेन ने जर्मन के विरुद्ध युद्ध का ऐलान किया। सम्पूर्ण यूरोप युद्ध की चपेट मे आ गया था। ब्रिटेन ने बिना भारत की अनुमति लिए उसे युद्ध मे घसीट लिया। वाइसराय लिनलिथगो ने वार्ता के लिए गॉधी जी को आमत्रित किया। अपनी भेट की रपट देते हुए गाधी जी ने हरिजन मे लिखा कि उनकी हमदर्दी ब्रिटेन और फ्रास के साथ मानवता के कारण है। मानवीय विनाश से उनका मन काप रहा है। किन्तु गाधी जी ने अंग्रेजो को कोई सहायता देने की अपील नही की। लोहिया ने बयान दिया, 'यदि भारत को तुरन्त स्वाधीनता दी जाती है तो युद्ध मे भारत ब्रिटेन की सहायता करने का प्रस्ताव करेगा।' अग्रेजो ने स्वाधीनता के प्रश्न को अनदेखा कर दिया। भारत में जबरदस्ती लोगो की सेना मे भर्ती किया जाने लगा, चन्दा एकत्र होने लगा तथा साधन उपलब्ध कराये जाने लगे।[13]

उत्तर प्रदेश मे सुल्तानपुर जिले की राजनीतिक परिषद मे लोहिया ने कहा था कि सात राज्यो मे गवर्नरो का निरकुश शासन चल रहा है। सत्याग्रह चलाने के लिए इसे काफी समझना चाहिये। ब्रिटिश साम्राज्यवाद की इमारत डगमगा रही है। यह अधिक काल तक चलने वाली नही।' डा लोहिया को 7 जून 1940 को इलाहाबाद मे गिरफ्तार किया गया। लोहिया को दो वर्ष कठोर कारावास की सजा दी गई। उनके हाथो मे हथकडियॉ ओर पैरो मे बेडियॉ थी। गाधी जी युद्ध मे तटस्थ थे। उनका कहना था न एक पाई न एक भाई 1 दिसम्बर 1940 तक देश मे लगभग 25,000 काग्रेसी गिरफ्तार किये गये। इनमे से अधिकाश काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के कार्यकर्त्ता थ। गॉधी जी का धीरज टूट गया था। उन्होंने वक्तव्य दिया 'जब तक डा लोहिया एव जयप्रकाश नारायण जेल मे बन्द हैं मुझे चैन नही आयेगा क्योकि इनसे अधिक और शिष्ट व्यक्ति को मै नही जानता।'[13]

---

11 राममनोहर लोहिया इन्दुमति केलकर नेशनल बुक ट्रस्ट नयी दिल्ली

12 समाजवादी आदोलन के दस्तावेज विनोद नवीनतम प्रतिपक्ष प्रकाशन नयी दिल्ली

13 लोहिया बहुआयामी व्यक्तित्व मुख्तार अनीस विजय दीक्षित

7 दिसम्बर 1941 को जापान ने समुद्री सघर्ष मे अमेरिका को बुरी तरह पछाड दिया। ब्रिटेन भारत सम्बन्धी नीति पर विचार करने को मजबूर हुआ। फलस्वरूप ब्रिटेन ने भारत के साथ समझौते के प्रस्ताव पर वार्ता प्रारम्भ की। ब्रिटिश सरकार युद्ध के समाप्त होने पर 'औपनिवेशिक स्वतत्रता' देने की बात कर रही थी। काग्रेस से समझौता नही हो सका और वार्ता टूट गयी।

स्वाधीनता का अन्तिम सग्राम

स्वाधीनता के अन्तिम सग्राम को छेडने के प्रश्न पर काग्रेस मे दुविधा थी। जब एक तरफ लोकतांत्रिक शक्तियॉ अर्थात अग्रेज तथा दूसरी ओर फासिस्ट शक्तियॉ अर्थात जर्मनी आमने सामने हो तो राष्ट्रीय स्वतत्रता सग्राम छेडना कहॉ तक उचित होगा। इसलिए इस प्रश्न पर काग्रेस दुविधा मे थी। काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी को कोई दुविधा नही थी। वह अग्रजो से भारत की मुक्ति का सग्राम छेडने को तैयार थी। अतत सघर्ष छेडने का निर्णय गाधी जी ने ले लिया। परिणामत 7 और 8 अगस्त 1942 को बम्बई मे आयोजित काग्रेस अधिवेशन मे 'अंग्रेज भारत छोडो' का प्रस्ताव पारित हुआ। आचार्य नरेन्द्र देव तथा डा लोहिया ने प्रस्ताव के पक्ष मे जोरदार भाषण दिया। दूसरे दिन अर्थात 9 अगस्त को काग्रेस वर्किंग कमेटी के प्राय सभी सदस्य गिरफ्तार कर लिये गये। काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के अधिकांश नेता भूमिगत हो गये थे। लोहिया ने इस सग्राम का कुशल सचालन करने के लिए कई बुलेटिन निकाले तथा पत्र–पत्रिकाये प्रकाशित की। उन्होने इस सघर्ष को वैज्ञानिक आधार दिया तथा नीति तैयार की। इसके अतिरिक्त अन्य समाजवादी नेता अच्युत पटवर्धन, अरुणा आसफ अली, अशोक मेहता आदि के सघर्ष को तीव्र करने की रणनीति बनाई। ब्रिटिश सरकार के गुप्तचरो को चकमा देकर 8 अगस्त 1942 से 20 मई 1944 तक लोहिया भूमिगत रहे और क्राति का नेतृत्व करते रहे। उनके कारनामें आम देशवासियो मे रोमाच पैदा कर देते थे।[14]

लोहिया के भूमिगत जीवन का अधिकाश समय कलकत्ता एव मुम्बई मे बीता। लोहिया के ही प्रयासो से काग्रेस रेडियो का प्रसारण प्रारम्भ हुआ। बम्बई केन्द्र ने पूरे 90 दिन तक जनता को क्रांति का सदेश दिया तथा स्वाधीनता सग्राम के लिए उसे लामबन्द किया। लोहिया, अरुणा आसफ अली एव अच्युत पटवर्धन अत्यत कुशलता से कार्य का सचालन कर रहे थे जिस समय यह महासग्राम प्रारम्भ हुआ जयप्रकाश नारायण जेल मे थे। दीवाली के दिन अपने साथियों सहित वह जेल से फरार हो गये। इस घटना से सम्पूर्ण देश रोमाचित था। जयप्रकाश जी ने नेपाल की सीमा पर छापेमार दस्तो को सगठित किया। लोहिया एव जयप्रकाश ने एक साथ छापामार दस्तो के शिविर का सचालन प्रारम्भ किया। लोहिया, जयप्रकाश नारायण सहित अन्य पॉच नेताओ को अग्रेज सरकार के आदेश पर गिरफ्तार कर नेपाल की हनुमान नगर पुलिस हवालात मे बन्द कर दिया। किन्तु क्रातिकारी सगठन और आजाद दस्तों ने छापा मार कर दोनो नेताओ को मुक्त

14 लोहिया बहुआयामी मुख्तार अनीस विजय दीक्षित

करा लिया। इस घटना से अग्रेज सरकार स्तब्ध थी। लोहिया को 10 मई 1944 मे 21 महीने बाद गिरफ्तार किया गया। एक महीने बम्बई मे तनहाई मे रखने के बाद लाहोर फोर्ट जेल मे ले जाया गया। लाहौर फोर्ट जेल खतरनाक कैदियो के लिए प्रसिद्ध थी। वहॉ अमानवीय यातनाएँ दी जाती थी। लोहिया को कई रात सोने नहीं दिया गया। इसी जेल मे जयप्रकाश नारायण भी थे। किन्तु दोनो को एक दूसरे का पता नही था। उन्हे भी अमानवीय यातनाये दी जा रही थी। चार महीने की इस यत्रणा काल मे दस दिन तक लोहिया को सोने नही दिया गया। उनकी नाक से रक्तस्राव होने लगा। 6 महीने बाद लोहिया को आगरा जेल भेजा गया। यहॉ से लोहिया ने हेराल्ड लास्की को पत्र लिखा जिसमे उन्होने ब्रिटिश साम्राज्य की दमन नीति की विस्तृत कथा सुनाई थी। डा लोहिया ने वाइसराय लार्ड लिनलिथगो को भी एक पत्र लिखा था।[15]

जेल से मुक्ति

लगभग 8 माह बाद लोहिया पर लगी पाबदियो मे ढील दी गयी। उन्होने जेल मे ही 'इकोनोमिक्स आफ मार्क्स' नामक विस्तृत निबन्ध लिखा। अपने प्रबन्ध लेखन को स्पष्ट करते हुये लोहिया ने लिखा, "1942–43 की अवधि मे ब्रिटिश सत्ता के विरोध मे जो क्राति आन्दोलन चला उस समय समाजवादी तो जेल मे बन्द थे या पुलिस उनके पीछे पडी थी। यह वह समय है जब कम्युनिस्ट अपने विदेशी मालिको के आज्ञाकारी सेवक बन चुके थे तथा लोकयुद्ध का ऐलान कर रहे थे। परस्पर विरोधी पडने वाली कई विसगतियों से ओत-प्रोत मार्क्सवाद के प्रत्यक्ष अनुभवो और दर्शन से मैं चकरा गया। इसी समय मैंने तय किया कि मार्क्सवाद के सत्य को तलाश करूँगा और असत्य को मार्क्सवाद से अलग करूँगा। अर्थशास्त्र, राज्य शासन, इतिहास और दर्शनशास्त्र मार्क्सवाद के चार प्रमुख आयाम हैं इनका विश्लेषण करना भी मैंने आवश्यक समझा। परन्तु अर्थशास्त्र का विश्लेषण जारी ही था कि मुझे पुलिस पकड कर ले गयी।"[16]

भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के प्रश्न पर विचार करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने कैबिनेट मिशन भारत भेजने का प्रस्ताव किया था। इसके आने से पहले महात्मा गाँधी राजनीतिक बदियो की रिहाई के लिए प्रयत्नशील थे। इनमे डा लोहिया एव जयप्रकाश नारायण की रिहाई अत्यत कठिन थी। दोनो पर सशस्त्र विद्रोह करने तथा हिसा के आरोप थे। ब्रिटिश सरकार इन पर देशद्रोह और हिसा के आरोप के कारण रिहा नही करना चाहती थी। गाधी जी इनकी रिहाई के लिए चितित थे। लोहिया के स्वास्थ्य मे निरन्तर गिरावट के समाचार मिल रहे थे। इसलिये कैबिनेट मिशन के आने के पूर्व जेल बन्दिओ की रिहाई आवश्यक थी। यदि ऐसा न होता तो वार्ता मे गतिरोध उत्पन्न हा जाता। ऐसी स्थिति मे कैबिनेट मिशन सफल न हो पाता। अग्रेजी सरकार शीघ्रातिशीघ्र हिन्दुस्तान को मुक्त कर वापस जाना चाहती थी। क्योकि हिन्दुस्तान की परिस्थितियॉ अत्यन्त विस्फोटक

15 लोहिया बहुआयामी व्यक्तित्व मुख्तार अनीस विनय दीक्षित लख ऊ

16 वही

हो रही थीं। दश के विभाजन का मुस्लिम लीग का दबाव भी कम चिन्ता का विषय नही था। महात्मा गाधी ने लोहिया की रिहाई के लिए 8 दिसम्बर 1945 को वाइसराय के निजी सचिव जी ई वी एवेल को वह वक्तव्य भेजा जो लोहिया ने अपने वकील की मार्फत पजाब हाईकोर्ट को 27 अक्टूबर 1945 को आगरा केन्द्रीय कारागार से भेजा था। लोहिया के अनुसार 'पजाब हाईकोर्ट को मेरे द्वारा भेजे गए प्रार्थना पत्र जो दिनाक 13 दिसम्बर 1944 तथा 19 जनवरी 1945 को भेजे गये है, उसमे मैने लाहौर किले मे अपने बन्धक बनाये जाने का विस्तृत ब्यौरा दिया है। मैं यहाँ कुछ घटनाओ को सक्षेप्र मे तथा शीघ्रता के साथ दोहराना चाहता हूँ। यद्यपि यहाँ विस्तृत सूचना उपलब्ध नही है फिर भी कुछ लोगो के नाम तथा तिथियो की सूचना मै दूँगा। इसके अतिरिक्त लाहौर किले मे दी गयी पाशविक यातनाओ का भी विवरण दूँगा किन्तु यह तभी सम्भव होगा जब मैं सुनिश्चित हो जाऊँ।

मै 20 मई 1944 को बम्बई मे गिरफ्तार किया गया तथा दो या तीन अवसरो के अतिरिक्त जब मुझे बम्बई पुलिस मुख्यालय मे ले जाया गया। मुझे आर्थर रोड जेल मे बन्दी बनाकर डाला गया। मुझे 20 जून को केन्द्रीय सरकार का एक आदेश प्राप्त हुआ जो 7 जून को जेल मे भेजा गया था। मुझे 22 जून को लाहौर ले जाया गया। इस आदेश मे निर्देशित किया गया था कि मुझे कही भी बधक बनाकर रखा जा सकता है जिसमे पजाब भी शामिल हे। इस आदेश का बुनियादी उद्देश्य था मुझे शिकजे मे फँसाना।

पूँछतॉछ के कमरे मे मेरे सामान की जॉच की गयी तथा मुझे किताब, कापी ओर कलम तथा दाढी बनाने के सामान तक से वचित रखा गया। उसके बाद मुझे एक कमरे मे ले जाया गया जहॉ मेरी तलाशी ली गयी। मे उस छोटे से बन्दीगृह मे हाथ–मुँह धोना तथा नहाना चाहता था किन्तु उस छोटे से कमरे तथा आगन के मध्य गदगी तथा गध की कोई सीमा नही थी और उसी मे एक छोटे से रास्ते से खाना दिया जाता था। एक तेज रोशनी वाला वल्ब वहा सारी रात जलता था जिसके कारण सोना असम्भव था।

मैं भूख हडताल नही कर रहा था फिर भी मै खाना नही खा सका क्योकि मुझे इच्छा नही हो रही थी। एक दिन मे वह मेरे हाथो मे हथकडी पहनाते तथा इसी दशा मे वह मुझे पूँछतॉछ के लिए ले जाते। मुझे जेल मे ले जाये जाने के चौथे दिन वह मुझे मात्र एक घन्टे के लिए बन्दीगृह से बाहर ले गए।

मेरे बन्दी बनाये जाने के छठे दिन पुलिस अधीक्षक ने जो कि मेरा पूँछतॉछ का अधिकारी था मुझे आवश्वासन दिया कि मुझे नहाने दिया जायेगा, मुझे बाहर निकाला जायेगा तथा अच्छा भोजन भी मिलेगा। उसने यह भी बताया कि मुझे अभद्र गालियॉ नही दी जायेगी यह मेरी गलती थी कि इसके बाद मैने खाना प्रारम्भ कर दिया। मेरी इच्छा थी कि मैं कानूनी तौर पर न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत होकर अपराध को स्वीकार कर लूँ। वह भी यही चाहते थे।

अगस्त के प्रारम्भ में उन्होंने एक और तरीका निकाला दोपहर से आधी रात तक मुझे खडा रखा जाता था जब मैं अपने को खडा रख पाने में असमर्थ पाता था तो

मुझे दो आदमी सहारा देकर खडा रखते थे। एक अवसर पर मेरा चश्मा छीन लिया गया। मेरे हाथ सूज गये तथा हथकडियो के कारण निशान पड गये तथा खून जम गया। एक दिन तो मुझे गटर का गदा पानी पीने को मजबूर किया गया। मुझे कई रातो तक सोने नही दिया गया। जब मुझे झपकी आ जाती तो मेरे पैरो मे पडी भारी बेडियो तथा हथकडियो को हिला कर मुझे जगाया जाता। नीद न मिलने के कारण खून के चकत्ते मेरी नाक मे जमा हो गये थे और मुझे तेज बुखार आ रहा था।"[17 18]

लोहिया के विस्तृत वक्तव्य का यह अति सक्षिप्त सार है। महात्मा गाधी का चिंतित होना स्वाभाविक था। यह विषय आश्चर्य का है कि काग्रेस के अन्य वरिष्ठ नेताओ ने इसकी चिन्ता नही की। 20 दिसम्बर 1945 को वाइसराय के निजी सचिव श्री एवेल ने गाधी जी को लिखा कि वाइसराय इस घटना की जॉच करेगे। महात्मा गाधी ने लार्ड पैथिक लारेन्स को भी जो विचारणीय मामले के सचिव थे लोहिया के सम्बन्ध मे पत्र लिखा तथा उनके साथ किए गए अमानवीय व्यवहार पर अपनी चिन्ता व्यक्त की। महात्मा गॉधी ने लोहिया एव जयप्रकाश जी की मुक्ति के लिए अभियान चला दिया। अपनी प्रार्थना सभाओ मे उन्होने इन दोनो की रिहाई की माग की। डा लोहिया ने लार्ड लिनलिथगो तथा प्रो हेराल्ड लास्की को भी पत्र लिखे जिसमे उनके साथ की गयी अमानवीय यातनाओं का वर्णन किया गया था। महात्मा गांधी के प्रयासो से 11 अप्रैल 1946 को लोहिया एव जयप्रकाश नारायण को आगरा जेल से मुक्त कर दिया गया। इस प्रकार भारत छोडो आन्दोलन के यह अतिम बदी थे, जो मुक्त किए गये। महात्मा गाधी ने 17 अप्रैल 1946 को पत्र लिखकर डा लोहिया को उनके पिता की असामयिक मृत्यु पर दु ख प्रकट किया तथा उनसे तुरन्त मिलने की इच्छा व्यक्त की। पडित जवाहर लाल नेहरू ने भी पत्र लिखकर उनके पिता की मृत्यु पर दु ख प्रकट किया। नेहरू जी के पत्र से उनके तथा डा लोहिया के प्रेमपूर्ण सम्बन्धो पर भी प्रकाश पडता है यह पत्र 17 अप्रैल 1946 को लिखा गया था। पत्र इस प्रकार है—

प्रिय राममनोहर,

तुम्हे चिट्ठी लिखे या तुमसे मिले कितने दिन हो गये। ऐसा लगता है कि युगो बीत गये। सोच रहा हूँ कि तुम अब कैसे दिखते हो या कैसा सोचते हो। आखिर बाह्य परिवर्तनो से आन्तरिक परिवर्तन अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। मुझे स्वय लगातार परिवर्तन की अनुभूति हो रही है। लेकिन ये परिवर्तन अच्छे हैं या बुरे, इसका निर्णय तो वास्तव मे दूसरे लोग ही कर सकते हैं।

मुझे उम्मीद थी कि जेल से छूटने के बाद तुम यहॉ आओगे लेकिन तुम्हे कलकत्ता जाना पडा। इधर मैं शाही राजधानी में फॅसा हुआ हूँ। यह अपना वेश सुधारने

17 लोहिया बहुआयामी व्यक्तित्व मुख्तार अनीस विजय दीक्षित

18 गाधी के वक्तव्य हरिजन महात्मा गॉधी की फाइल

की असफल कोशिश कर रही हैं। मैं यह नही जानता कि यह काम कब तक चलेगा और क्या नतीजे होगे।

जयप्रकाश से मिलकर और उसे पहले की तरह, प्रिय आह्लादक व्यक्ति के रूप मे पाकर बेहद खुशी हुई। कितना बदला है, फिर भी शायद कई तरह से बदल गया है। दो बार हममे सक्षिप्त, अति सक्षिप्त बात हुई और फिर वह चला गया।

क्या तुम अभी भी पहले की तरह हो– तेज, मेधावी थोडा अनियमित और घुमतू ? क्या तुम्हे जीवन ने कठोर बना दिया है ? लेकिन यह मेरे सवाल है जिनका उत्तर तुम नही दे सकते और यह सब जानने के लिए मुझे तुमसे मिलना पडेगा। मैं आशा करता हूँ कि जब हम मिलेगे तो तुम मुझे इस तरह नही देखोगे मानो आवरण के माध्यम से मुझे झॉक रहे हो।

जब तुम्हारे पिता की मृत्यु हुई उस समय मै असम मे था। उनके प्रेमपूर्ण व्यक्तित्व की यादे उभर आई । मैने महसूस किया कि इससे तुम्हे कितनी तकलीफ हुई होगी।

तुम्हे तो जानना ही चाहिये कि मैंने दूसरी किताब, सदा की तरह, काफी आत्मनिष्ठ होकर लिखी है। उसकी प्रति तुम्हे भेजना चाहूँगा लेकिन अभी मेरे पास यहॉ एक भी उपलब्ध नही है। मै सोचता हूँ कि मेरे लिए सबसे आसान तरीका यह होगा कि मै प्रकाशक के नाम एक नोट संलग्न कर दूँ। मुझे लगता है कि प्रकाशक के पास भी कोई नही बची है, लेकिन अगर एक प्रति भी है तो वह तुम्हे दे दी जायेगी। अपने को तेजवान और प्रसन्न रखना और घटनाओ के दबाव मे बोझिल मत होना।[19]

तुम्हारा स्नेहाधीन
जवाहरलाल नेहरू

इस पत्र का विस्तृत उल्लेख इसलिये किया गया है कि 1946 तक नेहरू और लोहिया के सम्बन्धो मे कडुवाहट नही आई थी। दोनो के सम्बन्धो मे तनाव बाद में आया।

देश का विभाजन

लोहिया को जब जेल से रिहा किया गया तो उनका स्वास्थ्य काफी बिगड गया था। उनका शरीर अनेक बीमारियो का घर बन गया था। यह बीमारियॉ उनमे अन्त तक रहीं। पिता के बाद उनका अब इस ससार मे कोई नही रह गया था। वह उदास और भारी मन से कलकत्ता पहुँचे।

इग्लैण्ड मे महायुद्ध के पश्चात लार्ड एटली के नतृत्व मे लेबर पार्टी की सरकार का गठन हुआ। भारत को शीघ्रातिशीघ्र स्वतत्रता देने के उद्देश्य से एक प्रतिनिधि मण्डल

19 आंदोलन के दस्तावेज (हिन्दी अनुवाद खण्ड–1 विनोद सुनील

भारत आया। इस समय काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का केन्द्रीय नेतृत्व गभीर सकट मे था। दल का नेतृत्त्व देश के विभाजन का विरोधी था तथा वह गाधी जी से आस लगाये हुए था। गाधी जी ने देश के विभाजन का निरन्तर विरोध किया था। किन्तु विभाजन की सम्भावना प्रबल होती जा रही थी। गाधी जी की स्थिति असहाय की सी हो गयी। समाजवादियो ने दु खी मन से विभाजन के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। काग्रेस वर्किंग कमेटी जिसमे देश के विभाजन का प्रस्ताव स्वीकार किया था, उसमे सोशलिस्ट नेतृत्व उपस्थित था। उन्होने विभाजन का अपनी शक्ति भर विरोध किया।

देश के विभाजन के तुरन्त बाद ही हिन्दू–मुस्लिम दगे फूट पडे। लाखो हिन्दू और मुसलमान कत्लेआम में मारे गए। इस हिसा के ताडव को शान्त करने के उद्देश्य से महात्मा गाधी ने नोआखाली का दौरा किया। लोहिया इस अवसर पर गाधी जी के साथ थे। उन्होने गाधी जी की सहायता की तथा साम्प्रदायिक दगो को शान्त करने का प्रयत्न किया। इसी उद्देश्य से महात्मा गाधी ने आमरण अनशन किया तब जाकर स्थिति सामान्य हो पायी।

गोवा की स्वतंत्रता के लिए सघर्ष

वर्ष 1946–47 का काल खण्ड लोहिया के लिए अत्यधिक तूफानी था। स्वतन्त्रता सग्राम के अधिकाश सेनानी विश्राम कर रहे थे। किन्तु लोहिया शान्त नही थे। देश तो स्वतन्त्र हो गया था किन्तु पुर्तगालियो के निरकुश शासन से गोवा मुक्त नही हुआ था। डॉ मैनेजिस जो कि जर्मनी से डॉ लोहिया के मित्र तथा सहपाठी थे, क निमन्त्रण पर विश्राम के उद्देश्य से लोहिया गावा गये। बातचीत मे डा मैनेजिस ने गोवा की निरकुश सरकार के अत्याचार की कहानी सुनाई। गोवा मे डा लोहिया जहॉ भी जाते उन्हे इन अत्याचारो और दमन की कहानी सुननी पडती। अर्थात जनता उनसे कुछ करने की अपील कर रही थी। गोवा की जनता पॉच सौ वर्ष से पुर्तगाली तानाशाही की चक्की के नीचे पिस रही थी। डा लोहिया ने गोवा के शासन से सीधी सी "नागरिक स्वतन्त्रता की माग की। उन दिनो गोवा मे, सभा, प्रदर्शन, शादी–विवाह तथा धार्मिक उत्सवो आदि पर पाबन्दी थी। 18 जून 1946 को सघर्ष का सिहनाद किया गया। प्रतिबन्ध के बावजूद मडगॉव मे लोहिया की सभा का ऐलान किया गया। आश्चर्य का विषय है कि मामूली प्रचार से मडगॉव मे हजारो लोग एकत्र हो गये। लोहिया की अपील सभा स्थल मे बॉटी गयी जिसमे लिखा था 'भारत मे साम्राज्यवाद की आखिरी निशानी बने पुर्तगाली शासन को उखाड फेकने की दिशा मे यह पहला कदम है।'[20] लोहिया को 18 जून 1946 को गिरफ्तार किया गया। 19 जून को लोहिया को भारत की धरती पर लाकर रिहा कर दिया गया। रिहा होते समय डा लोहिया ने घोषणा की कि यदि तीन महीने मे नागरिक स्वतन्त्रता बहाल नही की गयी तो वह पुन. वापस आकर आन्दोलन चलायेगे। रिहा होने पर लोहिया सीधे बम्बई पहुँचे। बम्बई के लोगो को इस घटना की पूरी जानकारी प्राप्त

20 लोहिया बहुआयामी व्यक्तित्व मुख्तार अनीम त दीक्षि मूल अग्रेजी

हो गयी थी जिसके कारण बम्बई निवासी रोमाचित थे। लोहिया इस घटना के बाद गाधी जी से मिले तथा इसकी विस्तृत सूचना इन्हे दी तथा तीन महीने बाद गोवा मे नागरिक स्वाधीनता" के लिए सघर्ष चलाने के अपने सकल्प को दुहराया गाधी जी लोहिया के इस निर्णय से प्रसन्न थे।[21]

उस समय दिल्ली मे काग्रेस और मुस्लिम लीग की अस्थाई सरकार थी तथा पडित नेहरू प्रधानमत्री थे। उन्होने एक वक्तव्य मे कहा था, "अग्रेजो की सत्ता के समाप्त हाते ही पुर्तगाल की सत्ता अपने आप समाप्त हो जायेगी। गोवा की पराधीनता भारत के गाल पर उभरी हुई एक छोटी सी फुसी है जिससे उगलियो से आसानी से मरोडा जा सकता है।" सरदार पटेल की मान्यता की थी "गोवा आन्दोलन" से सरकार का कोई वास्ता नही है। किन्तु गाधी जी का लोहिया को आशीर्वाद प्राप्त था। गाधी जी ने "हरिजन" मे लिखा, "अपनी कृति द्वारा उन्होने (लोहिया) नागरिक स्वतन्त्रता की और खास कर गोमातकीयो की सेवा की हे। बन्दूक की एक गोली के बिना गोवा की जनता आजाद मुल्क की मॉग कर सकती है और उसे प्राप्त भी कर सकती है। गोवा के नागरिको से मैं कहता हूॅ कि पुर्तगाली सरकार का डर छोडकर "नागरिक स्वतन्त्रता" के लिए आगे आये।"[22]

लोहिया को गिरफ्तार कर ऑवाद किले के तहखाने मे बन्द कर दिया गया। देश मे इसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई। गॉधी जी ने नेहरू तथा पटेल के हस्तक्षेप करने को कहा तथा प्रार्थना सभा मे कहा, "पुर्तगाली सरकार ने लोहिया को नही भारत की आत्मा को बन्दी बनाया है।" गांधी जी एव पुर्तगाल सरकार के मध्य लम्बा पत्र–व्यवहार हुआ। भारत सरकार तथा ब्रिटिश सरकार के दबाव के कारण लोहिया को दो सप्ताह बाद रिहा किया गया। लोहिया ने 18 जून 1946 को गोवा मुक्ति संग्राम का सूत्रपात किया था। यह क्रम चलता रहा। 1954–55 के मध्य गोवा आन्दोलन फिर उग्र हो गया। हजारो सोशलिस्ट गिरफ्तार किए गए 1962 के चुनाव के पहले भारत सरकार ने फौजी चढाई मे गोवा को मुक्त कराया। लोहिया ने अपने वक्तव्य मे कहा, "चुनाव के ठीक पहले गोवा को मुक्त करवाकर पंडित नेहरू ने देश की जनता को रेवडी खिलाई है।" गोवा वासी अपनी स्यतन्त्रता का समारोह 18 जून को मनाते हैं। यह उनकी लोहिया को श्रद्धांजलि है।[23]

कलकत्ता में साम्प्रदायिक सौहार्द का प्रयत्न

गोवा के स्वाधीनता आन्दोलन से लोहिया को थोडी फुर्सत मिली थी कि कलकत्ता मे हिन्दू–मुस्लिम दगो की सूचना आने लगी। डॉ लोहिया चरागाव गए जहॉं मुस्लिम आबादी 80 प्रतिशत से भी अधिक थी। दगा शान्त कराने मे लोहिया ने गाधी जी

---

21 लोहिया, बहुआयामी व्यक्तित्व, मुख्तार अनीस, विजय दीक्षित

22 वही

23 वही

की पूरी सहायता की। डा लोहिया की सक्रियता तथा उनके रचनात्मक कार्यो से महात्मा गॉधी अत्यन्त प्रसन्न थे। लोहिया की गाधी से अन्तिम भेट 29 जनवरी, 1948 को हुई। 30 जनवरी को पुन मिलने तथा विस्तृत वार्ता का कार्यक्रम बना था। किन्तु गाधी जी की दुखद हत्या कर दी गयी। लोहिया के दुख का कोई ठिकाना नही रहा।[24]

काग्रेस और सोशलिस्टो के सम्बन्धो में कटुता

सोशलिस्टो ने 1942 के "भारत छोडो" आन्दोलन मे बढ-चढ कर हिस्सा लिया था। काग्रेस के कुछ वरिष्ठ नेता जिनमे पण्डित जवाहरलाल नेहरू, राजाजी मौलाना आजाद तथा कई अन्य इस आन्दोलन के विरुद्ध थे। उनका कथन था कि "ऐसे समय मे जबकि इग्लैण्ड एक फासिस्ट देश जर्मनी से सघर्षरत है भारत को इग्लैण्ड जो कि एक लोकतन्त्रवादी देश है का समर्थन करना चाहिए। सोशलिस्टो का कथन था कि भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् ही हम एसा सोच सकते है। गॉधी जी को सोशलिस्टो की बात सत्य के ज्यादा समीप लगी। 9 अगस्त को जब काग्रेस ने स्वतन्त्रता सग्राम का सिहनाद किया तो सोशलिस्टो ने उसमे बढ–चढकर हिस्सा लिया। सोशलिस्ट अब नहरू के मुकाबले गाधी जी के अधिक समीप आ गये थे। दोनो मे वैचारिक समीपता बढ गयी थी। सोशलिस्टों की रिहाई के लिए भी गाधी जी ने बहुत प्रयास किए। 1942 के आन्दोलन के बाद सोशलिस्ट नेता राष्ट्रीय हीरो के रूप मे उभर रहे थे। निश्चित रूप मे बात काग्रेस नेतृत्व को चुभ रही थी। किन्तु जनता का यह जाेश क्षणिक था जो आगे चलकर सत्य सिद्ध हुआ। उस समय की स्थिति का तथा गाधी जी की मनोदशा का विस्तृत उल्लेख प्यारेलालजी ने अपनी पुस्तक "महात्मा गाधी पूर्णाहुति" मे किया है। गाधी जी चाहते थे कि आचार्य कृपलानी के काग्रेस के अध्यक्ष पद से त्याग–पत्र के बाद आचार्य नरेन्द्र देव अथवा जयप्रकाश नारायण को काग्रेस का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया जाए। किन्तु नेतृत्व ने डा राजेन्द्रप्रसाद का नाम पसन्द किया। इसी प्रकार डा लोहिया को काग्रेस का महामत्री बनाने का प्रस्ताव जवाहरलाल नेहरू ने किया। इस पर लोहिया ने तीन शर्तें रक्खी– (1) काग्रेस का अध्यक्ष सरकार का कोई पद ग्रहण नही करेगा। (2) काग्रेस की वर्किंग कमेटी के सदस्य मत्री नहीं बनेंगे। (3) काग्रेस पार्टी अपने मत्रियो की सद्भावनापूर्वक आलोचना कर सकती है। उन्होने डॉ लोहिया की तीनो बाते अस्वीकार कर दी। इस प्रकार वार्ता ही समाप्त हो गयी और लोहिया ने महामत्री पद अस्वीकार कर दिया।

पडित जवाहरलाल नेहरू जिन्हे सोशलिस्ट अपना नेता स्वीकार करते थे उनका रग सोशलिस्टो के ऊपर से उतर चुका था। सोशलिस्ट गाधी जी के समीप आ गए थे। लोहिया तथा अन्य समाजवादियो द्वारा किये जा रहे कार्यो मे भी काग्रेसी विशेष कर नेहरू एव पटेल दुःखी थे।[25]

---

24 राममनोहर लोहिया इन्दुमति केलकर

25 वही

सोशलिस्ट पार्टी का गठन

गोवा के आन्दोलन मे लोहिया की भूमिका से यह लोग क्षुब्ध थे। जयप्रकाश नारायण एव डा लोहिया के साथ किए गए अमानवीय व्यवहार के जिम्मेदार गृह सचिव गिरजाशकर बाजपेयी अपने पद पर बने थे। स्वतन्त्रराष्ट्र मे अग्रेजी व्यवस्था कायम थी तथा अग्रेज शासको की मूर्तियॉ यथावत लगी थी। यह तभी हटी थी जब लोहिया ने सत्याग्रह करके उन्हे तोडा। काग्रेस की आर्थिक नीति स्पष्ट नही थी। इसका झुकाव मजदूरो एव किसानो की ओर न हाकर बुर्जुवा वर्ग की ओर था। इन सब बातो स समाजवादी दुखी थे। 26 जनवरी 1948 को कानपुर मे कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का सम्मेलन हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता डॉ राममनोहर लोहिया ने की। इस सम्मेलन मे काग्रेस शब्द सोशलिस्ट पार्टी के नाम से अलग कर दिया गया। इसका प्रमुख कारण था काग्रस का आग्रह कि काग्रेस का सदस्य किसी अन्य पार्टी का सदस्य नहीं हो सकता। समाजवादी विशेषकर जयप्रकाश नारायण, अशोक मेहता, अरुणा आसफ अली आदि काग्रेस छोडना चाहते थे किन्तु डा लोहिया एव आचार्य नरेन्द्र देव दुविधाग्रस्त थे। किन्तु जब काग्रेस ने स्वय कह दिया तो अब इन नेताओ के सामने कोई रास्ता नही था। सम्मलन के स्वागताध्यक्ष आचार्य नरेन्द्र देव थे। आचार्य नरेन्द्र देव ने अपने भाषण मे कहा कि समाजवाद बिना जनतत्र के पूर्ण रूप नही ले सकता और नही हर व्यक्ति के विकास का मार्ग खुल सकता है। द्वितीय महायुद्ध के अन्त मे साम्राज्यशाही कमजोर पड गयी है और उपनिवेशो की स्वतन्त्रता के सग्राम मे नया जोश आ रहा है। सोवियत सघ की अनेक क्षेत्रो मे की गयी प्रगति यद्यपि प्रथमस्तरीय है तथापि उसके द्वारा राजनीतिक स्वतन्त्रता की उपेक्षा भारत के समाजवादियो को पसन्द नही है। कम्युनिस्ट पक्षो ने अपनी मौकापरस्ती तथा ब्रिटिश शासन क हरावल दस्ते के रूप मे कार्य कर देश की महान क्षति की है जिससे समाजवादी आन्दोलन की भारी क्षति हुई है। आचार्य नरेन्द्र देव जी के भाषण से काग्रेस मे अलग होने तथा सोशलिस्ट पार्टी के गठन की भावना स्पष्ट रूप से झलक रही थी। डा लोहिया अपना लिखित भाषण तैयार नही कर सके थे। उन्होने अपना भाषण हिन्दी मे स्वत स्फूर्त दिया। उन्होने देश की अखण्डता, हिन्दू-मुस्लिम एकता, काग्रस एव सोशलिस्टो के सम्बन्धो की समाप्ति तथा सर्वहारा की एकजुटता तथा इसे सगठित करने पर बल दिया। लोहिया का भाषण अत्यन्त सार्थक एव भावपूर्ण था। सोशलिस्टो को रचनात्मक कार्य के लिए लोहिया ने 15 सूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत किया था। जयप्रकाश नारायण का यह मत था कि, "काग्रेस के अन्दर सोशलिस्टो का और अधिक दिनो तक रहना बेकार लगता है। इससे बाहर निकलकर एक वास्तविक सोशलिस्ट पार्टी जो सैद्धान्तिक एव सगठनात्मक दोनो ही रूपो मे देश की मेहनतकश जनता पर आधारित हो बनाना अधिक वाछनीय लगता है। इस तरह की एक पार्टी इस लिए भी जरूरी है कि वह एक विरोधी पार्टी के रूप मे काम करे। खासकर आज लोकतत्र की सफलता के लिए सत्तारूढ़ पार्टी में जो अकुशलता और आत्मसतोष है उसे देखते हुए यह और भी आवश्यक हो जाता है।"[26]

26 समाजवादी आंदोलन के दस्तावेज खण्ड-1 विनोद सुनील

इस बीच सरदार पटेल एवं श्री मीनू मसानी, डॉ लोहिया, जयप्रकाश नारायण के मध्य पत्राचार एव वार्ता हुई। किन्तु कोई ठोस परिणाम नही निकला। सरदार चाहते थे कि सोशलिस्ट काग्रेस से अलग न हो अपितु काग्रेस मे बने रहे। इसका अर्थ स्पष्ट था कि वह समाजवाद को त्याग दे। वार्ता टूट गयी। अन्तत 19–21 मार्च 1948 को नासिक मे सोशलिस्टो ने कांग्रेस से अलग होने की स्पष्ट घोषणा कर दी। इस प्रस्ताव को आचार्य नरेन्द्र देव ने पेश किया और अच्युत पटवर्धन ने अनुमोदन किया। सकल्प प्रस्ताव जयप्रकाश नारायण ने प्रस्तुत किया तथा डा राममनोहर लोहिया ने समर्थन किया। राजनीतिक प्रस्ताव में कहा गया था, "क्योकि काग्रेस अपनी क्रातिकारी परम्परा बनाये रखने मे असमर्थ है इसलिए दूसरी पार्टी की आवश्यकता पैदा होती है। वह इसलिए कि आर्थिक सस्थाओ के ढेर को बुनियादी रूप मे पुन प्रभावित किये बिना वर्तमान गम्भीर आर्थिक गैर बराबरी और तगी की हालत मे स्थिरता प्राप्त नही हो सकती। साथ ही समाजवादी राज्य ही राजनीतिक स्थिरता को ठोस धरातल सुनिश्चित कर सकता है। अत लोकतान्त्रिक समाजवादी शक्तियो के लिए इसके अलावा कोई रास्ता नही है कि वे समाजवादी राज्य का विजयी झण्डा लेकर आगे बढ़ते रहे।" सकल्प प्रस्ताव मे समाजवादियों का आवाह्न किया गया था, "सोशलिस्ट पार्टी का यह सम्मेलन जहाँ अपने सदस्यो को काग्रेस से निकल आने का आवाह्न करता है, वहीं पर उम्मीद करता है कि सोशलिस्ट पार्टी के साथ सामान्य अन्य राजनीतिक आदर्शो , निष्ठाओं और आदतो से हिस्सेदारी करते हुए काग्रेस एक प्रगतिशील संगठन बनी रहेगी।" समाजवादी पार्टी का मार्च 1948 मे निर्माण हो गया। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य नरेन्द्र देव बनाये गये तथा महामन्त्री जयप्रकाश नारायण बने। डा राममनोहर लोहिया ने 1949 मे हिन्द किसान पचायत का निर्माण किया तथा उनके राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। यह सोशलिस्ट पार्टी का किसान मोर्चा था। किसानो को शोषण से मुक्त कराने के लिए लोहिया ने कार्यक्रम बनाया था। जमीदारी प्रथा को समाप्त करने के लिए लखनऊ मे एक लाख किसानो का मोर्चा निकाला गया। इसी प्रकार पटना मे विशाल किसान मार्च किया गया।

नेपाल मे राणाशाही के विरुद्ध संग्राम

नेपाल मे 1949 मे विशेश्वरप्रसाद कोइराला के नेतृत्व मे नेपाली कांग्रेस ने लोकतंत्र की बहाली के लिए आन्दोलन चलाया था। इसके लिए वह जयप्रकाश नारायण एव प्रधानमत्री पडित जवाहरलाल नेहरू से सहायता माग रहे थे। अन्त मे डा लोहिया ने इस शर्त पर समर्थन देने का वादा किया कि श्री कोइराला पहले नेपाल मे आन्दोलन प्रारम्भ करे। विशेश्वरप्रसाद कोइराला ने जन आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। सैकडो कार्यकर्त्ता जेल गए। श्री कोइराला ने जेल मे भूख हडताल प्रारम्भ कर दी। समाजवादी पार्टी ने अपने कार्यकर्त्ताओं को आदेश दिया कि 25 मई, 1949 को वह 'नेपाल दिवस मनाये। लोहिया के नेतृत्व में दिल्ली मे एक मोर्चा निकाला गया। इस प्रदर्शन पर ऑसू गैस छोडी गयी तथा लाठी चार्ज किया गया लोहिया के साथ अन्य 46 लोगो को गिरफ़्तार कर जेल भेज दिया गया लोहिया तथा उनके साथियों पर मुकदमा

गया तथा दो महीने का साधारण दण्ड तथा सौ रुपये जुर्माना किया गया। आचार्य कृपलानी ने हस्तक्षेप करत हुए इस मामल को समाप्त करने के लिए पडित नेहरू से अनुरोध किया। पडित नेहरू ने अपने पत्र के साथ आचार्य कृपलानी के पत्र को सलग्न करते हुए गृहमत्री सरदार पटेल को लिखा कि किसी दूतावास पर शातिपूर्ण प्रदर्शन या प्रतिरोध एक साधारण घटना है। लोकतान्त्रिक देशो मे इस प्रकार का शातिपूर्ण विरोध प्रदर्शन होता रहता है। अत. डा लोहिया और उनक साथियो को मुक्त करके इस मामले का समाप्त कर देना चाहिये। किन्तु सरदार पटेल सहमत नही हुए। पडित नेहरू एव सरदार पटेल के मध्य लम्बा पत्राचार हुआ। इस पत्राचार के कारण दोनो के मध्य कटुता भी उत्पन्न हुई। इस दौरान लोहिया से मिलने पडित नेहरू के निजी सचिव मथाई भी गए। नेहरू के कुछ मित्र लोहिया से मिलने गए तथा उन्हे आम भेजा। इदिरा गाधी लोहिया से मिलने जाना चाहती थी किन्तु ऐसा करने से सभवत पडित नेहरू ने मना किया। सरदार पटल यह समझ रहे थे कि उन्हे नीचा दिखाने के लिए ऐसा किया जा रहा है। सरदार पटेल पर अन्य लोगो का दबाव भी पड रहा था। इस बात से सभी सहमत थे कि इस छोटी सी घटना के लिए लोहिया को दण्ड बहुत अधिक दिया गया है। अन्त मे सरकार झुकी और 9 जुलाई 1949 को लोहिया को कारावास से मुक्ति मिली। भारत सरकार के प्रभाव मे नेपाल मे सघर्ष को विराम दिया। इस प्रकार यह विवाद समाप्त हो गया तथा लोकतान्त्रिक सरकार की स्थापना हो गयी।[27]

विश्व भ्रमण

नेपाल दिवस को लेकर लोहिया जेल मे थे तभी उन्हे स्टाकहोम मे होने वाले विश्व सरकार के लिए आन्दोलन" के विश्व सम्मेलन मे भाग लेने का निमत्रण प्राप्त हुआ। लोहिया 'विश्व सरकार' के प्रबल समर्थक थे। इसी कारण इस विचार के भारतीय समर्थको ने उन्हे स्टाकहोम भेजा। लोहिया ने वहाँ विश्व सरकार, विश्व स्वतंत्रता बिना पासपोर्ट के एक देश से दूसरे देश जाने की स्वतत्रता, अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति तथा सुरक्षा एव तीसरी शक्ति आदि मुद्दो पर स्पष्टता के साथ अपने विचार प्रकट किए। स्टाकहोम सम्मेलन के पश्चात लोहिया डेनमार्क के मित्रो के निमत्रण पर कोपेनहेगन होते हुए पश्चिमी जर्मनी की राजधानी बोन भी गए। यहाँ जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के ज्येष्ठ नेता एव अपने शिक्षक शुमाखर से भी मिले। बोन की यात्रा पूरी कर 18 वर्ष बाद लोहिया बर्लिन मे अपने हम्बोल्ट विश्वविद्यालय गए। बर्लिन की समाजवादी नगर परिषद ने लोहिया को अपना अतिथि बनाया था। यहाँ से लोहिया फ्रास की राजधानी पेरिस भी गए। इसके पश्चात एशिया का भी लोहिया ने दौरा किया। लोहिया ने मोरक्को तथा मिस्र का भी दौरा किया। लगभग दो महीने के दौरे के बाद लोहिया बम्बई पहुँचे। 1951 मे लोहिया पुन विदेश यात्रा पर गए। जर्मन मे फ्रैंकफर्ट नगर मे होने वाले समाजवादियो के विश्व सम्मेलन मे भाग लेने के उद्देश्य से लोहिया गए थे। लोहिया ने इस सम्मेलन में स्पष्ट

27 लोहिया बहुआयामी व्यक्तित्व मुख्तार अनीस विजय दीक्षित

रूप से बताया कि धनी देशो को निर्धन देशो की आर्थिक दुर्दशा को दूर करने के लिए सहयोग करना चाहिये। यूगोस्लाविया का दौरा समाप्त कर लोहिया अमेरिका गए। अमेरिका मे लोहिया ने विश्वविख्यात वैज्ञानिक आइस्टीन, प्रसिद्ध लेखक एटन मिकलेयर पर्ल बक, ग्रेटा गार्बो आदि से भेट की।

अमेरिका के दौरे के पश्चात लोहिया ने क्रमशः जापान, हागकाग, इडोनेशिया थाई देश, मलाया और श्रीलका का भी दौरा किया। लोहिया जब जापान से भारत लौट कर आये तो जापान के समाजवादी नेता याशिक होशिगो का एक पत्र मिला। उन्होने लिखा कि उन्होने गाधीवाद तथा विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्त को लोहिया की मार्फत जाना जिसके लिए वह आभारी है।[28]

प्रथम आम चुनाव

स्वतत्र भारत मे लोकसभा एव विधानसभा के प्रथम आम चुनाव 1952 मे करवाये गए। सोशलिस्ट पार्टी के नेताओ का विश्वास था कि काग्रेस के बाद दूसरे नम्बर पर उनकी पार्टी रहेगी तथा एक–दो राज्यो म सोशलिस्ट सरकार भी बन जायेगी। ऐसी आशा करना स्वाभाविक था। पार्टी मे राष्ट्रीय स्तर के कई प्रमुख नेता थे जिनकी लोकप्रियता काग्रेस के नेताओ से कम नही थी। इनकी सभाओ मे भारी भीड एकत्र होती थी तथा जनता मे इनके नाम पर अपूर्व उत्साह दिखाई देता था। नेताओ के नाम देश की जनता के लिए अपरिचित नही थे। पार्टी का सगठित आधार था जो अन्य पार्टियो की तुलना म कही विशाल था। फिर भी पार्टी पिट गयी। नम्बर दो पर कम्युनिस्ट पार्टी रही। पार्टी के अनेक नेताओ ने केरल मे बहुमत प्राप्त करने तथा विध्य प्रदेश एव बिहार मे जीत के लम्बे–चौडे सपने देखे थे। किन्तु निराशा ही हाथ लगी। पार्टी को 10 6 प्रतिशत वोट जो कि लगभग एक करोड सत्तर लाख के आस–पास हैं मिले थे। लोकसभा मे पार्टी को 12 सीट प्राप्त हुई थीं। किन्तु बडे नेताओ को बहुत आघात लगा था विशेषकर अशोक मेहता को। उनकी हार ने उन्हे बहुत हतोत्साहित कर दिया था। इसलिए किसान मजदूर प्रजा पार्टी जो कि कांग्रेस से अलग हुए लोगो की एक जमाअत थी तथा जिसके नेता आचार्य कृपलानी थे, लोहिया एव अशोक मेहता ने एकता की बात चलायी। किसान मजदूर प्रजा पार्टी का कोई सैद्धान्तिक आधार नही था। वह स्वार्थी तत्त्वो की एक जमाअत थी। इस विलय के पीछे लोहिया की मंशा थी कि एक सशक्त पार्टी बने जिसे जनता काग्रेस के विकल्प के रूप मे स्वीकार कर ले, जबकि अशोक मेहता यह वार्ता इसलिए चला रहे थे कि काग्रेस से सहकार का रास्ता खुल जाये तथा सम्बन्ध मधुर हो जाये। सोशलिस्ट पार्टी के अधिकाश युवा कार्यकर्ता विलय वार्ता के विरुद्ध थे। आचार्य नरेन्द्र देव विलय वार्ता को नापसन्द कर रहे थे। पर नेताओं के आग्रह पर उन्होने सोशलिस्ट पार्टी एव किसान मजदूर प्रजा पार्टी के विलय को स्वीकार किया। जयप्रकाश नारायण अशोक मेहता एव डा लोहिया इस विलय से 'अत्यत भाव–विभोर एव खुश थे।' सितम्बर 1962 मे किसान मजदूर प्रजा पार्टी एव साशलिस्ट पार्टी का विलय हो गया।[29]

28 लोहिया इन्दुमति कैलकर

29 ादी आदोलन के दस्तावेज विनोद सुनील

तनाव का दौर

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के गठन (1952) के तुरन्त बाद तत्कालीन प्रधानमत्री पडित जवाहरलाल नेहरू ने जयप्रकाश नारायण एव आचार्य कृपलानी को पत्र लिखा जिसमे दोनो पार्टियो (काग्रेस एव प्रसोपा) के सहयोग की सम्भावना व्यक्त की। इस वार्ता से अशोक मेहता अत्यत प्रसन्न थे। प्रश्न यह है कि पडित नेहरू यह वार्ता क्यो करना चाहते थे जबकि लोकसभा एव विधानसभाओ मे उनका प्रचण्ड बहुमत था। इसके दो कारण हो सकते थे। (1) प्रजा सोशलिस्ट पार्टी को कांग्रेस मे विलय करवाकर अपनी स्थिति मजबूत करना (2) प्रतिपक्ष की एक सशक्त पार्टी को इस प्रकार समाप्त कर देना। वास्तव मे इस एकता मे नेहरू एक दलीय और इस प्रकार एक व्यक्ति का शासन चाहते थे। कमजोर प्रतिपक्ष के कारण वह मनमानी कर सकते थे। लोहिया के शब्दो मे वह स्वय क्रातिकारी नहीं थे बल्कि क्राति को छूकर क्रातिकारी बनना चाहते थे। जयप्रकाश नारायण की सदाशयता का लाभ उठाकर नेहरू प्रसोपा को धोखा दे रहे थे और यही हुआ। जब जयप्रकाश नारायण ने अपना 14 सूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत किया तो नेहरू ने एकता वार्ता समाप्त कर दी। इस से प्रसोपा को भारी आघात लगा। उसकी क्रातिकारिता और पैनापन जाता रहा। कार्यकर्ता नेहरू, जयप्रकाश वार्त्ता मे दुविधाग्रस्त हो गए, तथा पार्टी आन्तरिक विरोध का शिकार होकर खडित हो गयी।

मधु लिमये ने इन घटनाओ की चर्चा करते हुए लिखा था– "इनमे से अधिकाश लोगो ने काग्रेसी नेताओ की स्थानीय दादागिरी के खिलाफ ही काग्रेस छोडी थी। उनका नेहरू से कोई सैद्धान्तिक मतभेद नहीं था। अब तो अशोक मेहता ने भी मान लिया कि किसान मजदूर प्रजा पार्टी के साथ हुआ विलय एक गलत कदम था और इसी से पार्टी मे वैचारिक धारा विकृत हुई। अब सत्ता की राजनीति उभरी। धीरे–धीरे सत्ता इच्छुक लोगो की ही सर्वाधिक चलने लगी। प्रजा सोशलिस्ट पार्टी पर बुरी प्रवृत्तियॉ हावी हो गई (टी प्रकाशम, विश्वनाथन, पत्तम थानु पिल्लै इत्यादि)। 1953 के शुरू मे अखबारो मे एक खबर छपी कि काग्रेस और प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के बीच बातचीत होगी। मैंने पूरे विश्वास से एक बयान जारी कर कहा कि यह खबर निराधार है और मैं निश्चित तौर पर कह सकता हूँ कि सोशलिस्ट पार्टी काग्रेस के जुझारू विरोध की पार्टी बनेगी। लेकिन मेरी गलतफहमी जल्द ही दूर हो गई।[30]

इस विलय से पार्टी मजबूत नहीं हुई बल्कि इससे समझौतावादी प्रवृत्तियॉ पनपीं। नयी लाइन के समर्थन मे लोग वैचारिक तर्को को तोड–मरोडकर पेश करने लगे। पिछडी अर्थव्यवस्था की राजनीतिक अनिवार्यता जैसे अनेक वैचारिक मुहावरे भी चल पडे। अब मुझे लगता है कि सहयोग की इस बहस ने काग्रेस का समाजवादी विकल्प बनने की आशाओ को सदा के लिए समाप्त कर दिया।"[31]

30, 31 समाजवादी आदोलन के दस्तावेज विनोद, सुनील

30
31 मधु लिमये

पिछड़ी अर्थव्यवस्था की राजनीतिक अनिवार्यताएँ

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के बैतूल सम्मेलन (मई 1953) मे अशोक मेहता ने अपनी महामत्री की रपट प्रस्तुत की। इसमे उन्होने पिछडी अर्थव्यस्था की राजनीतिक अनिवार्यता पर बल देते हुए काग्रेस से सहयोग की बात कही। उनका कहना था कि प्रतिपक्ष की अन्य पार्टियो कम्युनिस्ट एवं जनसघ के मुकाबले, नीतिगत विषयो मे प्रजा सोशलिस्ट पार्टी काग्रेस के अधिक समीप है। विरोध के बावजूद धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रीय एव लोकतत्र के मुद्दे पर दोनो पार्टियो के मध्य सहकार हो सकता है। उन्होने आगे कहा भारत जैसे अर्धविकसित देश मे बराबर यह खतरा बना रहता है कि काग्रेस जैसी पार्टी की असफलता के कारण लोकतान्त्रिक एव धर्मनिरपेक्ष नीति बदनाम न हो जाये। इस कठिनाई का सामना निम्नलिखित दो विकल्पो को अपनाकर किया जा सकता है। (1) लोकतान्त्रिक पार्टियो से कार्यक्रम के आधार पर समझौता (2) सहमति एव असहमति के क्षेत्रों का पुनर्सीमन। राष्ट्र निर्माण के कार्यों एव पक्षीय राजनीति का सीमाकन करना होगा। यह बात उस स्थिति मे लागू नही होती है जहॉ हम बेरोजगारी एव अर्धभुखमरी जैसे सामाजिक मुद्दे पर जन आन्दोलन करना चाहते हैं।'

अशोक मेहता की महामत्री रपट से यह स्पष्ट हो गया था कि पार्टी का नेतृत्व काग्रेस सरकार के मुद्दे का समर्थक है। किन्तु लोहिया तथा उनके जैसे अन्य लोग प्रबल विरोधी थे। पार्टी मे तनाव बढता गया और उसने विघटन का रूप ले लिया। बैतूल सम्मेलन ने नेताओ के मध्य कटुता बढा दी थी तथा आक्षेप–प्रत्याक्षेप का पाट खुल गया था कि ट्रावनकोट–कोचीन गोलीकाण्ड ने नये विवाद को न्यौता दे दिया जिसमे पार्टी के विघटन की सम्भावनाये और बलवती हो गयी।[32]

ट्रावनकोट कोचीन गोलीकाण्ड

पार्टी मे अभी बैतूल मे अशोक मेहता द्वारा प्रस्तुत पिछडी अर्थव्यवस्था का सिद्धान्त का मुद्दा बना हुआ था कि केरल मे ट्रावनकोट–कोचीन में हुए गोलीकाण्ड ने तनाव को और बढा दिया। 1 अगस्त 1954 को हुए इस गोलीकाण्ड से लोहिया खिन्न थे। लोहिया नहर रेट आन्दोलन मे जेल मे थे। उन्होने मुख्यमत्री श्री पद्मथाणु पिल्लै को तार भेजा जो इस प्रकार था "हो सकता है उपद्रवकारी पूरी तरह गलती पर हों और घृणित स्थिति पैदा हो। लेकिन पुलिस गोलीबारी, जिसमे लोगो की जाने गयी हो, विद्रोह एव हत्या की हालत को छोडकर अनुचित है। इस सिद्धान्त के अनुसार गैर सरकारी पॉच अफसरो का निलम्बन और साथ–साथ सरकार के इस्तीफे की सिफारिश करता हूॅं। लोहिया एवं मधु लिमये ने अपने पदो से त्याग पत्र दे दिया। मधु लिमये इस घटना का विवरण देते हुए लिखते हैं–

"केरल की पुलिस फायरिंग निश्चित रूप से विवाद का एक कारण बनी लेकिन

32 आदोलन के दस्तावेज खण्ड–1 विनोद सूनेत

असली कारण वही नहीं था। पहले कई बार निहत्थे लोगों पर की गयी फायरिंग पर सोशलिस्ट पार्टी यह लाइन लेती थी कि न केवल उसकी न्यायिक जॉच कराई जाए बल्कि सरकार अपनी जिम्मेदारी न निभाने के कारण इस्तीफा भी दे। कुछ ही वर्षों पूर्व राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने मध्य भारत मे बनी काग्रेसी सरकार से इसी आधार पर इस्तीफा मागा था। केरल मे प्रजा सोशलिस्ट पार्टी की सरकार थी और वह अल्पमत सरकार थी। तमिल प्रदर्शनकारियो की माग थी कि त्रावणकोर का दक्षिणी हिस्सा तमिलनाडु में मिला दिया जाए। इन प्रदर्शनकारियो पर पुलिस ने गोली चलाई। जब लोहिया ने तत्कालीन मुख्यमत्री पत्तम थानु पिल्लै से इस्तीफा मागा तो वे नाराज हो गए और बात नही मानी। प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के दूसरे साथियो ने तकनीकी आधार पर लोहिया की निन्दा की। उनका कहना था कि राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सलाह लिए बगैर डा लोहिया अपनी अधिकार सीमा के बाहर जाकर व्यक्तिगत निर्देश दे रहे है। वास्तव मे इन लोगो को लोहिया के प्रति कोई सहानुभूति नही थी, बल्कि कुछ तो उनसे वैर भी रखते थे। इस सबके बाद एक ढीला-ढाला प्रस्ताव पास हुआ, जिसमे पत्तम को सरकार चलाने की अनुमति दे दी गई। अगर सरकार ने पार्टी की पहले की लाइन के अनुरूप सैद्धान्तिक आधार पर इस्तीफा दे दिया होता, तो इससे पार्टी की प्रतिष्ठा बहुत बढ जाती। यह एक अल्पमत सरकार थी और इसे कभी न कभी जाना ही था। लेकिन एक बार सत्ता मिलने पर कोई न ही इसे छोडना चाहता है, न जोखिम उठाना। संगठन के अधिकाश लोग लोहिया की लाइन के पक्षधर थे। लेकिन इस मामले पर न तो खुली बहस हुई, न इसके गुण के आधार पर फैसला हुआ। उल्टे इससे लोहिया के अधिकार और नेतृत्व के सामने प्रश्नचिन्ह खडा हो गया। ऐसे मे यह नीतिगत सवाल बनने की जगह व्यक्तिगत सवाल बन गया। नागपुर (1954) मे इस विवाद ने लोहिया बनाम जे पी का रूप ले लिया। वास्तविक टूट थोडे समय बाद अवाडी काग्रेस के बाद हुई।[33]

"16 जनवरी, 1955 को अशोक मेहता ने बम्बई में एक संवाददाता सम्मेलन किया और एक वक्तव्य जारी किया। उसमे कहा गया था कि जे पी का 14 सूत्री कार्यक्रम ही समाजवाद का साराश है। चूँकि अब सरकार ने समाजवादी प्रणाली स्वीकार कर ली है इसलिए हमे उनका समर्थन करना चाहिए। यह इलाहाबाद के नीति-वक्तव्य के खिलाफ था। उसकी पुष्टि नागपुर (1954) मे आचार्य नरेन्द्र देव ने भी की थी। 24 जनवरी को मैंने बम्बई की एक बैठक मे भाषण दिया। मैंने कहा कि अधिकाश समाजवादी सरकार के समाजवादी ढॉचे को स्वीकार करने की घोषणा को एक धोखा मानते है। मैंने इसी आधार पर सरकार के समर्थन करने की निन्दा की, लेकिन किसी नेता का नाम नहीं लिया। अशोक गुट के अनेक लोगो की प्रतिक्रिया बहुत तीखी हुई। मेरे खिलाफ तरह-तरह के आरोप लगाए गए। कहा गया, 'यह गलत और शरारतपूर्ण कोशिश है जनता के सामने गलत तस्वीर पेश करना है' आदि। आश्चर्य की बात है कि ये आरोप

33 लिमये

34 आदोलन के दस्तावेज खण्ड–1 विनोद, सुनील

झूठे सरकारी समाजवाद और उसके समर्थन का पक्ष लेने के लिए लगाए गए। इन सदस्यो को लगता था कि अब पार्टी को सरकार का समर्थन करने के लिए तैयार रहना चाहिए। मैंने अपनी टिप्पणी मे स्पष्ट कहा था कि अब पार्टी को बराबर के लिए यह तय कर लेना चाहिए कि एक क्रातिकारी विपक्ष या काग्रेस की दुम बनना चाहती हे। जो लोग काग्रेस की दुम बनने की पक्षधर हैं, वे वहाँ लौट जाएँ। अशोक गुट के लाग इससे बडे नाराज हुए और उन्होने मेरे खिलाफ अनुशासन की कार्रवाई की माग की। आचार्य नरेन्द्र देव ने बीच-बचाव किया। कार्रवाई रोक दी गई। लेकिन अशोक गुट के लोग अपनी बात चलाना और मुझे सबक सिखाना चाहते थे। फिर विवाद उठा और बम्बई कमेटी ने थोडे से बहुमत से मुझे नाजायज ढग से निलम्बित कर दिया। तव लोहिया बीच मे पडे। अब यह दो भिन्न मतो का राष्ट्रीय मुद्दा बन गया। अधिकाश कार्यकर्ताओ ने शुरू मे मेरी बातो का समर्थन किया। लेकिन क्या कारण है कि अन्तत हमे बहुमत नही मिला ?

पूरे विवाद मे व्यक्तित्व का सवाल सबसे ऊपर हो गया एक भावनात्मक उभार आया और डा लोहिया के खिलाफ कार्रवाई हुई। जे पी ने अशोक गुट को समर्थन दिया उन्होने ही लोहिया के निलम्बन का प्रस्ताव रखा था। सारे बडे नेता लोहिया के खिलाफ हो गए। उन्हे कोई उम्मीद नही थी। मामले को वैचारिक आधार पर निपटाया ही नही गया। इसलिए केरल का मसला असल मुद्दा नही था। अशोक मेहता ने सहयोग की नीति की वकालत की, लेकिन उसे बहुत कम लोगो का समर्थन मिला। सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी गोरे, एस एम जोशी, गगा बाबू, बसावन सिह हरेश्वर, स्वामी, मगनलाल बागडी जेसे प्रादेशिक नेताओ ने कभी लोहिया के साथ रहने मे अच्छा महसूस नही किया। इन लोगो ने मात्र जे पी को ही अपना नेता माना। जे पी चाहते तो यह विवाद सुलझ सकता था लेकिन जब उन्होने यह नही किया, तो दल का भविष्य ही जाम हो गया। लोहिया क खिलाफ कार्रवाई हुई और पार्टी टूट गई। इसी बीच मुझे गोवा मे गिरफ्तार कर बन्द कर दिया गया। 1955 के अन्त मे लोहिया ने हैदराबाद मे एक नई पार्टी की घोषणा कर दी। मुझे लगता है कि समाजवादी आन्दोलन की असफलता असल मे दो नेताओ के आपसी तालमेल से काम न कर पाने की असफलता है। साथ मिलकर जे पी और लोहिया ने एक समाजवादी विकल्प बना लिया होता। अकेले लोहिया यह नही कर सके। जे पी उस समय भी प्रजा सोशलिस्ट पार्टी मे थे, लेकिन उसका नेतृत्व करने को तैयार नही थे। अब वे पार्टीविहीन राजनीति की बात करते थे। यह विडम्बना ही है कि जे पी को दुबारा राजनीति मे लौटना पडा और एक विकल्प तैयार करना पडा। लोहिया ने जो विकल्प बनाने (1965–67) की कोशिश की, वह समाजवादी नही था और 1977 मे जे पी द्वारा बनाया गया विकल्प भी क्रातिकारी नहीं था, जिसके लिए उन दोनो ने काग्रेस छोडी थी।[35]

यही प्रश्न थे जिनके कारण समाजवादी आन्दोलन का बिखराव हुआ था। आश्चर्य का विषय है कि विवाद को इतना तूल देने के पश्चात जयप्रकाश नारायण दलीय राजनीति से विभक्त होकर सर्वोदय आन्दोलन मे चले गये। आचार्य नरेन्द्र देव अपनी

35 आदोलन के दस्तावेज खड 1 विनोद सुनील

अस्वस्थता के कारण निष्क्रिय हो गए तथा बाद मे उनका दुखद निधन हो गया। अशोक मेहता काग्रेस मे चले गए किन्तु वहाँ उन्हे इदिरा गाधी का नेतृत्व रास नही आया जिसके कारण वह विभाजित काग्रेस मे सगठन काग्रेस के साथ हो गए। डा लोहिया जीवन-पर्यन्त समाजवाद की मशाल जलाते रहे। वर्षो बाद अशोक मेहता एव जयप्रकाश नारायण को अपनी गलती पर पश्चाताप हुआ। दोनो ही अपनी सोच पर दुखी थे तथा उसे गलत मान रहे थे। स्वर्गीय जयप्रकाश नारायण लिखते हैं–

"सन 1952 मे सोशलिस्ट पार्टी और किसान मजदूर प्रजा पार्टी के विलयन के सम्बन्ध मे मेरा तथा राममनोहर लोहिया एव अशोक मेहता आदि का आचार्य जी से मतभेद हो गया। आचार्य जी उन दिनो चीन गये हुए थे और उनकी अनुपस्थिति मे ही कृपलानी जी आदि के एम पी पी के नेताओ के बातचीत होकर यह तय हो चुका था कि दोनो पार्टियो का सगम हो। जब आचार्यजी चीन से लौटे और इस निर्णय का उन्हे पता चला तो उन्हें बडा खेद हुआ। आज इतने वर्षों के बाद पीछे मुडकर देखने पर मुझे भी लगता है कि अगर यह सगम नही होता तो शायद समाजवादी आन्दोलन के लिये श्रेयस्कर हुआ होता।

अपने मतभेदो की चर्चा छिड गयी है तो एक और मतभेद ध्यान मे आता है। सन 1953 मे जब मैं पूना मे डा दीनशा मेहता की क्लीनिक मे तीन सप्ताह का उपवास कर रहा था तभी जवाहरलाल जी का एक पत्र मिला कि जब दिल्ली आओ तो मुझसे मिलना। मैंने उत्तर दिया कि उपवास के बाद जब स्वास्थ्य लाभ कर लूँगा तो रगून एशियन सोशलिस्ट काफ्रेस मे जाऊँगा और वहाँ से लौटने के बाद दिल्ली आकर उनसे मिलूँगा। मुझे दुख है कि मेरे कतिपय मित्रो ने इतनी सी बात पर यह सन्देह करना शुरू कर दिया कि जवाहरलाल जी के साथ मेरी कोई साजिश चल रही है।

दिल्ली मे जवाहरलाल जी से तीन दिनो तक काग्रेस और प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के परस्पर सहयोग के विषय पर चर्चा हुई। बाद मे मैंने जवाहरलाल जी को एक पत्र मे 14 सूत्री कार्यक्रम लिख भेजा जिसको मैने दोनो पार्टियो के परस्पर सहयोग का आधार बताया। लगभग तीन सप्ताह के बाद जवाहरलाल जी को मिलकर फिर आखिरी निर्णय करना था। उन दिनो कृपलानी जी हमारी पार्टी के अध्यक्ष थे। उन्होने पूरी तरह से सहयोग के विचार का समर्थन किया। दिल्ली वापस जाने के पहले मैं काशी गया और वहाँ काफी विस्तार से नरेन्द्र देव जी से उस विषय पर चर्चा की। वह जवाहरलाल जी के प्रस्ताव के विरुद्ध थे, उनका कहना था कि काग्रेस के साथ मिलकर काम करना असम्भव होगा। काग्रेस, चाहे जवाहरलाल जी की निजी राय कुछ भी हो, समाजवाद से बहुत दूर है। उनका तीसरा कारण यह था कि शासन मे घुसने के बाद अपने लोगो पर बुरा असर पड सकता है और उनकी दुर्बलताएँ बढ सकती है। इन दलीलो मे ताकत थी। फिर भी मैं नरेन्द्र देव जी से सहमत नहीं हुआ। मैंने उनसे कहा कि अपने लोगो पर हमें विश्वास करना चाहिये काग्रेस न होते हुए भी यदि हमारे 14 सूत्री कार्यक्रम को या उसमें से अधिकाश को मान लेती है तो हमारे और उसके

सहयोग से समाजवाद को कुछ आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। पार्टी की शक्ति और प्रभाव बढ़ेगा और यदि अनुभव से यह सिद्ध हुआ कि कांग्रेस ने हमारे कार्यक्रम को सिर्फ ऊपरी दिल से माना है और हम आगे प्रगति नही कर रहे हैं तो हम इस्तीफा देकर बाहर आ सकते है और जनता के सामने इस चीज की सफाई से पेश करके उसको प्रभावित कर सकते है। मेरा यह विचार आज तक बदला नहीं है और आज भी मैं मानता हूँ कि यदि हमारी शर्तों पर सहयोग हो पाता तो समाजवाद के लिए अच्छा होता।

पाठको को स्मरण होगा कि जवाहरलाल जी के प्रस्ताव का कोई परिणाम नहीं निकला। इसका एकमात्र कारण यही था कि जब दुबारा दिल्ली मे उनसे मेरी मुलाकात हुई तो उन्होने कहा कि मेने सहयोग के लिये जो आधार बताया है उसके लिये समय अनुकूल नही है। बिना किसी शर्त के सहयोग हो, यह तो सम्भव था, परन्तु उसके लिये मैं स्वय तैयार नही था और बात वही पर खत्म हो गयी।'

यह बात तो खत्म हो गयी परन्तु दुर्भाग्यवश उसकी प्रतिक्रियाएँ पार्टी मे बहुत खराब हुईं। जिसको अग्रेजी में कैरेक्टर असेसिनेशन (चरित्र–हनन) कहते हैं उसका पूरा कैम्पेन (अभियान) शुरू हो गया जिसका प्रमुख शिकार मैं स्वय था। चूंकि आचार्य जी सहयोग के विरुद्ध थे, इसलिये चरित्र हनन के शस्त्रो से सौभाग्यवश वे उस समय सुरक्षित रहे।

आचार्यजी से मेरा एक दूसरा मतभेद उस समय हुआ जब मैंने प्रजासोशलिस्ट पार्टी से और सत्ता की राजनीति से अलग होकर सर्वोदय आन्दोलन मे प्रवेश किया। मैंने यह कदम उठाने से पहले आचार्यजी से कोई परामर्श नही किया था, इसलिये भी कि मै जानता था कि मै अपनी बात उन्हे समझा नही पाऊँगा। उन्हे इस बात की शिकायत रही लेकिन इससे भी बडी शिकायत यह थी कि मैने पार्टी और राजनीति ही छोड दी।[36]

श्री अशोक मेहता ने 'कम्पलशन्स आफ बैकवर्ड इकानॉमी' की जो बात अपनी बेतूल रिपोर्ट मे लिखी थी, मैं उससे सहमत नही था। उस पर बौद्धिक विचार हो सकता था। पर बैतूल मे तो हवा ही कुछ ऐसी जहरीली हो गयी थी जिसमे विचारो का आदान-प्रदान असम्भव था। वहाँ तो रूप यही दिया गया कि अशोक मेहता ने जयप्रकाश नारायण और सम्भवत नरेन्द्र देव के इशारे से यह बात लिखी है। इस वातावरण से क्षुब्ध हो मैंने पार्टी की कार्यकारिणी से वहाँ इस्तीफा घोषित किया। यद्यपि लोगो के आग्रह पर मैंने अपना इस्तीफा वापस ले लिया, पर मेरे लिये पार्टी मे काम करना कठिन हो गया और मैं धीरे–धीरे पार्टी से अलग हो गया। मेरे विचार मे बैतूल कान्फ्रेस के दिन भारतीय समाजवाद के लिये बुरे दिन थे।[37]

---

36 आचार्य नरेन्द्र देव, जन्मशती ग्रन्थ,
——— नारायण के लेख से साभार मधुलिमये प्रेम भसीन इन्द्रदेव शर्मा विनोद प्रसाद सिह

37 आचार्य नरेन्द्र देव जन्मशती ग्रन्थ में के विस्तृत लेख से साभार
मधु लिमये प्रेम भसीन इन्द्रदेव शर्मा विनोद प्रसाद सिह

लोहिया का निष्कासन

पार्टी के असली मतभेदो पर विचार करने के लिए प्रसोपा का एक विशेष अधिवेशन नवम्बर 1954 मे नागपुर मे बुलाया गया। पदमथाणु पिल्लै की सरकार के रहने के पक्ष मे 303 और विरोध मे 217 मत पडे। लोहिया की यह स्पष्ट हार थी।

गोलीबारी काण्ड के तीन माह बाद आबाडी मे काग्रेस का अधिवेशन हुआ। उसमे कांग्रेस ने अपना लक्ष्य समाजवादी समाज रखा। अशोक मेहता ने इस प्रस्ताव का स्वागत किया। सफतलियम ने इसके विरोध मे बयान दिया। लोहिया ने सफतलियम का समर्थन किया। लोहिया तथा उनके समर्थको को दल से निष्कासित कर दिया गया। इस प्रकार प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का विभाजन हो गया।

नए दल का गठन

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी से निष्कासन के बाद नयी पार्टी का गठन लोहिया के लिए बहुत बडी चुनौती थी। इसके पूर्व सगठन के कार्यों मे लोहिया रुचि नही लेते थे। उन्हें पद का भी कोई मोह नही था। दौरा करना, पार्टी कार्यकर्त्ताओं से सम्पर्क करना और विचारो का प्रसार एव प्रचार यही लोहिया का कार्य था। उन्हे आन्दोलन एव सघर्ष से विशेष रूचि थी। पार्टी को नए विचारो एव अपने चिन्तन से सैद्धान्तिक आधार प्रदान करते थे। स्वतन्त्रता के पश्चात भी वह निरन्तर जेल जाया करते रहे। लोहिया के इसी सघर्ष पूर्ण स्वभाव के कारण क्रातिकारी युवजनो की एक टीम तैयार हो रही थी। इसीलिए उन्होने नई पार्टी के निर्माण को एक चुनौती के रूप मे स्वीकार किया था। यह इसलिए भी कि उनके सम्बन्ध मे यह भ्रम था कि उनमे सगठन क्षमता का अभाव हैं और वह सैलानी किस्म के नेता है।

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के अधिकाश ख्यातिप्राप्त एव प्रादेशिक नेता लोहिया के साथ नही थे। उनके पास थोडी शक्ति उत्तर प्रदेश एव बिहार मे थी। शेष जुझारू नौजवानो की टीम थी जो यद्यपि सघर्षशील थी किन्तु सामान्य जनता मे उसकी कोई विशेष साख नही थी। विभिन्न प्रदशों की जनता के लिए यह अपरिचित नाम थे। संगठन की सम्पूर्ण शक्ति आचार्य नरेन्द्र देव एव जयप्रकाश नारायण के पीछे थी। ऐसी स्थिति मे नवीन पार्टी को खडा करना बहुत बडी चुनौती थी। किन्तु इस चुनौती को लोहिया ने अपने अदम उत्साह के साथ स्वीकार किया।

डा लोहिया ने सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना हैदराबाद में की। 28 दिसम्बर 1955 से पहली जनवरी 1956 तक स्थापना सम्मेलन हुआ। लोहिया ने नयी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष घोषित किये गए और 'सात वर्ष में सत्ता प्राप्ति' की घोषणा की गई। डा लोहिया ने समाजवाद के समग्र रूप पर बल देते हुए अपनी पार्टी को 'न मार्क्सवाद विरोधी और न गांधीवाद की समर्थक बताया।' डा लोहिया ने 'काग्रेस को समाप्ति होती हुई पार्टी तथा सोशलिस्ट पार्टी को जनता की नयी आशाओ का केन्द्र बताया।[38]

38 पार्टी सम्मेलन की रपट

रचना एव संघर्ष

इन्ही आशाओ के साथ तमाम चुनौतियो को स्वीकार करते हुए लोहिया अपने समर्पित कार्यकर्त्ताओ की फौज के साथ महासमर मे उतरे। मार्च 1956 में उत्तर प्रदेश के एक लाख किसानो का विशाल प्रदर्शन लखनऊ मे किया गया जिसे 'किसान मार्च का नाम दिया गया। इसमे सवा छ एकड तक की खेती से लगान की माफी की माग की गयी। इसी प्रकार बिहार में सिविल नाफरमानी प्रारम्भ की गयी जिससे लगभग 5000 लोग जेल गए। इस दौरान समाजवादी नेता महाराष्ट्र के साथ बम्बई को जोडते हुए मराठी भाषी प्रान्त की माग कर रहे थे। उत्तर प्रदेश मे राजनारायण जी के नेतृत्व में काशी मे हरिजन मन्दिर प्रवेश का आन्दोलन प्रारम्भ किया। डा लोहिया ने पार्टी को गतिशील बनाने के उद्देश्य से गश्ती चिट्ठियो का सिलसिला प्रारम्भ किया। अपने निजी दोषो आदतो के प्रति सजग रहने तथा समाजवादी आचरण को अपने जीवन मे उतारने की उसमे सलाह दी जाती थी। अपरिग्रह तथा सतति एव सम्पत्ति का मोह त्यागने तथा एक घटा देश को देने की सलाह दी जाती थी। एक घटा देश को देने का अर्थ था सार्वजनिक स्थानो की सफाई तथा राष्ट्र नियोजन के लिए कार्य करना था। लोहिया ने एक गश्ती चिटठी मे लिखा– 'हम सभी लोग समाज के मध्यम वर्ग मे आते हैं। हमारी ऑखे समाज के उच्च वर्ग पर लगी रहती है। नेता बनने की प्रक्रिया मे समान कार्यकर्त्ता नेता की आदतो एव जीवन-चरित्र की नकल उतारने लगते हैं। इसलिए नेताओ एव कार्यकर्त्ताओ को अपने को नियत्रित करना चाहिए।'[39] लोहिया ने स्त्री एव पुरुषो के सम्बन्धो को स्पष्ट करते हुए कहा कि ' मुक्त आचरण एव उश्रृखल आचरण मे जमीन–आसमान का अन्तर माना जाना चाहिए।'' अपने विचारो के प्रसार एव प्रचार के लिए गश्ती चिट्ठियो के अतिरिक्त लोहिया ने हिन्दी मे 'जन' तथा अग्रेजी मे 'मैनकाइंड' मासिक को प्रारम्भ किया। इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय भाषाओ मे अनेक पत्र एव पत्रिकाये प्रकाशित होने लगीं। इस प्रकार वैचारिक क्षेत्र मे समाजवादी दर्शन का प्रसार प्रारम्भ हुआ। लोहिया चाहते थे कि पार्टी का प्रथम सम्मेलन भारत के भौगोलिक मध्य बिन्दु पर पडने वाले किसी स्थान पर किया जाये। इसके अनुसार सीहोरा, मध्यप्रदेश मे 1956 मे चार दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। लोहिया सम्मेलन के अध्यक्ष थे।

ससद एव विधान सभाओ का दूसरा आम चुनाव (1957) समीप था। पार्टी की 'एकला चलो' की नीति थी। डा लोहिया ने एक परिपत्र के द्वारा कार्यकर्त्ताओ को कठोर अनुशासन के पालन करने का निर्देश देते हुए चुनावी समर मे उतरे। पार्टी ने देशभर मे 33 लोकसभा तथा 335 विधानसभा क्षेत्रो मे चुनाव लडा। पार्टी 4 लोकसभा तथा 55 विधानसभा क्षेत्रो मे सफल रही। पार्टी को और अधिक गतिशील बनाने के उद्देश्य से और अधिक क्रातिकारी कार्यक्रम दिये गये। यह त्रिसूत्री कार्यक्रम के जाति नीति, भाषा नीति तथा दाम नीति, बिना मुनाफे की खेती पर से लगान माफी की बात कही गई। स्थान–स्थान पर जाति तोडो सम्मेलन आयोजित किए गए भाषा नीति के तहत अग्रेजी

39 1२३ लरवको के पत्रों का उ ार लोहिय हैदराबाद

हटाओ आन्दोलन' किए गये तथा 'दाम बॉधो सम्मेलन' का आयोजन किया गया। बिक्री कर कानून को रद्द करने के उद्देश्य से लोहिया ने स्वय आन्दोलन किया। पन्द्रह दिन के रिमाण्ड पर लोहिया को लखनऊ भेज दिया गया। रिमाण्ड के विरुद्ध लोहिया ने अपील की। लोहिया को मजिस्ट्रेट के सामने जबरदस्ती प्रस्तुत किया गया। उनका अनुचित ढग से सादे कागज पर अँगूठा लगवाया गया। कार्यकर्त्ताओ की बुरी तरह पिटाई की गयी। राजनारायण जी ने तुरन्त हाईकोर्ट मे आवेदन दिया। लोहिया के आवेदन पर उच्च न्यायालय ने दो जजो की पीठ के निर्णय भिन्न-भिन्न थे इसलिए मुख्य न्यायाधीश के सामने याचिका प्रस्तुत की गयी। मुख्य न्यायाधीश ने याचिका अस्वीकार कर दी। मामला उच्चतम न्यायालय मे गया। परन्तु सुनवाई से पहले ही लोहिया मुक्त कर दिए गए। देश के अन्य क्षेत्रो मे जो सोशलिस्ट कार्यकर्त्ता बन्द थे। सब रिहा कर दिए गए।

लोहिया ने 1960 के देश के सास्कृतिक पक्ष को उजागर किया। उसे समस्त देशवासियो को ग्राह्य करने लायक बनाने का प्रयास किया। इसी उद्देश्य से उन्होने 1961 के आस–पास रामायण मेला का चित्रकूट मे आयोजन करना सुनिश्चित किया। किन्तु शासन की उदासीनता तथा उसके द्वारा द्वारा उत्पन्न की जा रही बाधाओ के कारण और धन के अभाव मे यह आयोजन सफल नही हो सका। इसी वर्ष नवम्बर के महीने में लोहिया ने विदेश यात्रा की वह ग्रीस (यूनान) की राजधानी ऐथेन्स गए। सभा मे लोहिया ने अपना सप्त क्राति का सुप्रसिद्ध विचार यही व्यक्त किया जिसे 'सात क्रातियों' के नाम से जाना जाता है। वे इस प्रकार हैं–

(1) नर–नारी समानता (2) रगभेद पर आधारित विषमता के विरुद्ध क्राति (3) विदेशियो की गुलामी तथा विश्व ससद की स्थापना के लिए क्राति (4) जन्म एवं जाति पर आधारित व्यवस्था के विरोध मे क्राति (5) निजी पूँजी से उत्पन्न विषमता के विरोध मे तथा योजनाओ के जरिए उत्पादन के लिए क्राति (6) व्यक्तिगत जीवन मे हस्तक्षेप के विरोध मे क्राति (7) शास्त्रो के विरोध मे, सत्याग्रह के लिए क्राति।

लोहिया के वक्तव्य का सभा मे उपस्थित विद्वान प्रतिनिधियो ने पुरजोर स्वागत किया।

नेहरू के विरुद्ध चुनाव

1962 का तीसरा आम चुनाव भी सोशलिस्ट पार्टी को अकेले लडना पडा। प्रारम्भ मे लोहिया के देवरिया से चुनाव लडने की चर्चा थी किन्तु बाद मे लोहिया ने फूलपुर (इलाहाबाद) से नेहरू के विरुद्ध चुनाव लडने का मन बनाया। लोहिया ने कहा मैं चट्टान से टकराने जा रहा हूँ। यदि नही टूटी तो दरार अवश्य पड जायेगी।" अपनी बात को आगे बढाते हुए उन्होंने कहा 'गाधी युग, सादगी, कर्त्तव्य-निष्ठा और त्याग का युग था परन्तु नेहरू युग वैभव फैशन और फिजूल खर्ची का युग है भारत को विजयी बनाने के लिए को पराजित करना है नेहरू के दोहरे चरित्र पर

हमला बोलते हुए लोहिया ने आगे कहा 'पडित नेहरू जब ग्वालियर जाते है तो वहॉ लडती रही राजमाता सिधिया को जिताने के लिए कहते है। राजा और रानी ने देश की बहुत सेवा की है इसलिए इन्हे जिताओ। और जब जयपुर जाते हैं तो जयपुर की रानी गायत्री देवी का विरोध करते हुए कहते है कि 'राजा और रानी ने देश को बरबाद किया है इसलिए इन्हें हराओ।' लोहिया ने ग्वालियर की रानी के विरोध मे सुखो मेहतरानी रानी को खडा किया था। लोहिया का चुनाव साधनहीनता की तस्वीर था किन्तु इलाहाबाद विश्व विद्यालय तथा अन्य स्कूलो के छात्रो तथा युवा वर्ग ने चुनाव को दिलचस्प बना दिया था। इसकी चर्चा सम्पूर्ण देश मे हो रही थी। इसी चुनाव से लोहिया की तस्वीर मूर्तिभजक की थी तथा सम्पूर्ण देश पर इसका प्रभाव पडा। यद्यपि लोहिया चुनाव हारे किन्तु उनको मिले मतो से नेहरू की लोकप्रियता का भ्रम टूट गया।

चीनी हमला

अक्टूबर 1962 मे चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया। चीनी सेनाये आसाम के तेजपुर नगर तक घुसती हुई चली आयी। इसकी प्रतिक्रिया देशव्यापी हुई। प्रतिपक्ष ने हमला तत्कालीन रक्षा मंत्री श्री कृष्णा मेनन पर किया, किन्तु लोहिया ने सीधे प्रधान मत्री से त्यागपत्र की माग की। युद्ध की समाप्ति पर लोहिया ने असम की सीमावर्ती इलाके का व्यापक दौरा किया। लोहिया को गिरफ्तार कर तुरन्त रिहा कर दिया गया। भारत युद्ध मे हार के पश्चात लोहिया ने कहा 'इस लज्जास्पद पराभव वाले राष्ट्र को हिमालय के सरक्षण के लिए एक बहुआयामी सीमा नीति को स्वीकार करना चाहिए।' लोहिया ने हिमालय बचाओ' का नारा दिया तथा स्थान–स्थान पर 'हिमालय बचाओ सम्मेलन' का आयोजन किया जाने लगा। पटना नगर मे आयोजित सम्मेलन मे भू.पू. राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्रप्रसाद उपस्थित थे। उन्होने लोहिया की हिमालय नीति का समर्थन किया था। इस सम्मेलन मे दिये गये भाषण मे लोहिया ने कहा था 'चीनी आक्रमण के कारण हमारा यह भ्रम टूट गया है कि हिमालय भारत का सरक्षक है।' हमे हिमालय का सरक्षण एव सुरक्षा सम्बन्धी नीति के नये उपाय तलाश करने चाहिए। चीनी आक्रमण का देश के सभी राजनीतिक दलो पर प्रभाव पडा। सभी दल सशक्त प्रतिपक्ष की बात करने लगे। उत्तर प्रदेश मे सोपा एव प्रसोपा के विधायको ने डा फरीदी के निमत्रण पर एक बैठक की तथा सयुक्त समाजवादी दल का गठन कर दिया। इन विधायको की सख्या एक सौ से अधिक हो गयी। लोहिया ने निश्चित किया था कि वह अपनी ओर से एकता का कोई प्रस्ताव नही करेगे। लोहिया ने सोशलिस्ट पार्टी के नीतिवक्तव्य एव चुनाव घोषणा पत्र को पार्टी की एकता का आधार बनाने को कहा। प्रसोपा ने उसे मान लिया किन्तु नेतृत्व बाधक बन गया। इस प्रकार वार्ता कुछ समय के लिए स्थगित कर दी गयी।

लोकसभा मे डॉ. लोहिया

1963 में देश की दिशा को बदलने वाली घटनायें प्रारम्भ हो गयीं उत्तर प्रदेश में लोकसभा के तीन उप चुनाव होने थे प्रतिपक्ष ने सहमति के आधार पर साझा

उम्मीदवार लडाने का निर्णय लिया। फर्रूखाबाद से डा लोहिया, अमरोहा से आचार्य कृपलानी तथा जौनपुर से पडित दीनदयाल उपाध्याय उम्मीदवार हुए। लोहिया और कृपलानी चुनाव मे भारी मतो से सफल हुए किन्तु जनसघ के पडित दीनदयाल उपाध्याय पराजित हो गए।

डा लोहिया का लोकसभा के लिए चुनाव वास्तव मे एक जनआन्दोलन था। इसकी चर्चा देश के कोने–कोने मे थी। सोशलिस्ट इस चुनाव को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर लडे थे। सुदूर गैर हिन्दी इलाके के ऐस कार्यकर्त्ता इस चुनाव मे भाग लेने आये थे जो हिन्दी भाषा को नही जानते थे। सम्पूर्ण फर्रुखाबाद लोहिया को विजयी बनाने के लिए एकजुट था। इन पक्तियो के तुच्छ लेखक ने भी इस चुनाव मे भाग लिया था। फतेहगढ में मतगणना हुई थी। फतेहगढ से फर्रुखाबाद तक का रास्ता भी लगभग चार किलोमीटर होगा, विजय जुलूस मे सम्मिलित लोगो से भरा हुआ था। लोग नाच रहे थे उछल रहे थे, होली क रग मे सराबोर नारे लगा रहे थे– 'राष्ट्रपति को दे दो तार– काग्रेस की हो गयी हार' तथा लोकसभा मे डा लोहिया–देश का नेता डा लोहिया' से धरती गुजायमान थी। काग्रेस के विरूद्ध चीनी हमले के बाद जनअसतोष उमड पडा था तथा डा लोहिया प्रतिपक्ष की पहचान बन गए थे। ऐसा वातावरण देश मे फिर लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने ही बनाया जब 1973–74 मे 'जे पी आन्दोलन' प्रारम्भ हुआ।

लोहिया और कृपलानी की जीत प्रतिपक्ष का हौसला बहुत बढा। 1964 में मुगेर से मधुलिमये एव राजकोट मे श्री मीनू मसानी विजयी हुए। विपक्ष की हो रही निरन्तर जीत से काग्रेस के हौसले पस्त हो रहे थे। कलकत्ता मे हुए राष्ट्रीय सम्मेलन ने विपक्षी एकता तथा काग्रेस के विरुद्ध सयुक्त प्रत्याशी के प्रस्ताव पर मुहर लगा दी। उधर प्रजा सोशलिस्ट पार्टी की राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक हुई। इस बैठक मे अशोक मेहता को पार्टी से निष्कासन का प्रस्ताव किया गया। प्रजा सोशलिस्ट पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने निर्णय लिया कि 'नेहरू को सत्ताच्युत करना प्रजा सोशलिस्ट पार्टी की प्रथम जिम्मेदारी है।' इस निर्णय के बाद प्रसोपा एव सोपा की एकता वार्ता चली। लोहिया ने भी विलीनीकरण पर अपनी सहमति दे दी। इसी दरमियान मार्च 1964 मे नयी दिल्ली मे "जनवाणी दिवस" का आयोजन किया गया। दिल्ली के मार्गो पर पहली बार नेहरू से त्याग पत्र मॉगा जा रहा था तथा उन्हे हटाने की आवाज उठ रही थी।

नेहरू के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव

अगस्त 1963 मे ससद का मानसून सत्र प्रथम प्रारम्भ होते ही आचार्य कृपलानी ने नेहरू सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत किया। सोशलिस्ट, प्रजा सोशलिस्ट रीपब्लिकन पार्टी, जनसघ कुछ वामपथी एव निर्दलीय सदस्यो ने प्रस्ताव का समर्थन किया आचार्य कपलानी ने प्रस्ताव प्रस्तुत किया

कुशल सासद

लोहिया के लोकसभा मे आने के पहले वह एक लोहिया के शब्दो मे– 'बच्चो को तहजीब सिखाने की पाठशाला थी।' नेहरू जी के व्यक्तित्व एवं कांग्रेस की सदस्य सख्या से प्रतिपक्ष आतकित था। यही कारण था कि 1963 से पूर्व नेहरू सरकार के विरुद्ध लोकसभा मे अविश्वास प्रस्ताव तक पेश नही हो सका। ऐसा लोहिया के वहॉ पहुँचने के बाद ही हो सका। श्री नेहरू के आतक का उदाहरण उस दिन मिला जिस दिन लोहिया लोकसभा मे पहुँचे। प्रसोपा के सदस्य श्री हेमबरुआ के एक प्रश्न के उत्तर मे पडित नेहरू ने अत्यत रूखे ढग से कहा 'आप बैठ जाये इससे अधिक उत्तर नही दिया जा सकता। हेमबरुआ तो बैठ गए किन्तु इस अहकारपूर्ण जवाब से लोहिया तिलमिला गए। उन्होने कहा, 'प्रधानमत्री नौकर हैं सदन मालिक है। नौकर को मालिक को सतुष्ट करना पडेगा। ससदीय जीवन मे पहली बार प्रधानमत्री को ऐसा सुनना पडा। अपने मालिक के अपमान से काग्रेसी सासद तिलमिला गए। एक शोर उठा 'वापस लो यह अससदीय भाषा है लोहिया ने कहा, 'इस तरह के चपरासी नेहरू ने बहुत पाल लिए हैं। मैं इस क्षुब्ध से डरने वाला नही।' नेहरू ने कहा, 'डा लोहिया सदन मे पहली बार आए है। उन्हे ससदीय आचरण सीखना होगा।' डा लोहिया ने तुरन्त कहा, 'आपको भी जान लेना चाहिए कि आपको अब बदलना होगा।' नेहरू का सारा अहकार चूर–चूर हो गया। समाचार पत्रो ने इस घटना को बहुत महत्त्व दिया था। अविश्वास प्रस्ताव जिसे आचार्य कृपलानी ने प्रस्तुत किया था लोहिया एक घटा बोले थे। समय की कमी थी। सदस्यो ने अपना समय देकर लोहिया को विस्तार से बोलने का अवसर दिया था। श्री नेहरू कागज व कलम लेकर लोहिया के भाषण को नोट कर रहे थे। श्री नेहरू की अज्ञानता का उपहास करते हुए लोहिया ने कहा, हजारो एकड जमीन बेकार पडी है जिसे जोतकर खेती लायक बनाया जा सकता है। किन्तु प्रधानमत्री ने नया नुस्खा दिया है। गमले मे खेती करो मकान की छत पर खेती करो।' सम्पूर्ण सदन हॅसी से लोटपोट हो गया। नेहरू की अज्ञानता पर यह जबरदस्त हमला था। लोहिया ने कहा, 'प्रधानमत्री के कुत्ते पर आठ रुपये रोज खर्च होता है जबकि 27 करोड लोगो की आमदनी तीन आने रोज है' तो सदन स्तब्ध हो गया। पडित नेहरू ने उत्तर देना चाहा तो लोहिया ने यह कहकर कि, 'खेती और कल कारखाने का ज्ञान आपको बहुत कम है।' कहकर नेहरू को बिठा दिया। एक बार फिर जब नेहरू ने अपनी बात कहनी चाही तो लोहिया ने कहा 'जिस अर्थशास्त्री ने आपको नोट दिया है वह गलत है। बहुत पछतायेगे आप' कहकर नेहरू के सलाहकारो की विद्वता को चुनौती दे डाली। अविश्वास प्रस्ताव पर लोहिया ने ऐतिहासिक भाषण पर पूरा सदन मत्रमुग्ध था। यहॉ तक की काग्रेसी भी प्रसन्न थे। लोहिया ने उनकी भावना जान ली थी। इसीलिए उन्होने कहा, 'मेरे विरोध मे और इस सरकार के समर्थन मे वह चाहे जितनी तालियॉ बजाये किन्तु घर जाकर वह कहेगे, लोहिया ने खूब भाषण दिया उसने हमारे दिल की बात कह दी।'

तीन आने के प्रश्न पर लोकसभा में गभीर चर्चा हुई लोहिया ने अपना विस्तृत

भाषण दिया। पडित नेहरू का कहना था कि 27 करोड लोगों की प्रतिदिन की आय 3 आना नही पन्द्रह आना है। लोहिया ने सिद्ध किया कि तीन आना है। गरीवी के प्रश्न को लोहिया ने इस प्रकार तार्किक ढग से उठाया था। सदन को लोहिया ने वताया था कि गाजीपुर के इलाके मे लोग 'गोबर से दाना बीन कर खाते है।' तथा 'वाराणसी के घाटो पर गाय–भैंस जल रहे मुर्दे निकालकर खाती है।' लोहिया के इन मार्मिक वाक्यो पर सदस्यो की ऑखो मे ऑसू आ गए। अनेक पूर्वी उत्तर प्रदेश के सदस्यो ने खडे होकर लोहिया की बातो का समर्थन किया। स्वतत्रता के बीस वर्षों से चल रही काग्रेस सरकार एव उसके प्रधानमत्री जवाहरलाल नेहरू शर्म से पानी–पानी हो गए। लोहिया ने बिना कहे नेहरू को निकम्मा सिद्ध कर दिया था।

लोकसभा मे लोहिया ने रिक्शा चालको के स्वास्थ्य के प्रश्न को मजबूती से उठाया। लोहिया का कहना था कि रिक्शा चालकों मे टी वी की बीमारी आम है। यह चिन्तनीय विषय है। श्रम मत्री श्री जगजीवन राम का कथन था कि रिक्शा चलाने से टी वी नही होती। लोहिया ने गुस्से से कहा 'फिर दो–तीन लोगो को रिक्शा पर बिठाकर आप रिक्शा चलाइये मालूम हो जायेगा।'

लोहिया ने केवल आर्थिक सवालो को ही नहीं उजागर किया किन्तु अन्य विषयो पर भी चर्चा की। भाषा के प्रश्न पर वह लडे। किसी भी समाजवादी सासद को अग्रेजी मे बोलने की अनुमति नही थी। वह या तो मातृभाषा मे बोलते थे या हिन्दी मे। इसके कारण हिन्दी और मातृभाषाओ की प्रतिष्ठा बढ़ी। श्री रामधारी सिह दिनकर जो स्वय उस समय राज्यसभा के सदस्य थे लोहिया के सम्बन्ध मे लिखते है 'अग्रेजी को वह एक क्षण के लिए भी बरदाश्त करने को तैयार नही थे। जब से लोहिया साहब सासद हुए, ससद मे हिन्दी के सबसे बडे प्रवक्ता वही हो गए थे। उन्होने अपने सारे भाषण हिन्दी मे ही दिए और राजनीति के पेचीदा से पेचीदा बातो का उल्लेख भी उन्होने हिन्दी में ही किया। उनकी विशेषता यह भी कि भारी से भारी विषयो पर भी वे बहुत सरल हिन्दी मे बोलते थे। जहॉ तक मुझे याद है वह सेना को पलटन कहना ज्यादा पसन्द करते थे। दिल्ली मे हिन्दी के विरोधी तरह–तरह के लोग हैं किन्तु लोहिया साहब के भाषणों से उन सभी विरोधियो का यह भ्रम दूर हो गया कि हिन्दी केवल कठिन ही हो सकती है और अग्रेजी का सहारा लिये बिना हिन्दी मे पेचीदा बातो का बखान नही किया जा सकता है। मेरा ख्याल है कि हम हिन्दी प्रेमियो ने ससद मे हिन्दी की जितनी सेवा बारह वर्षो मे की थी उतनी सेवा लोहिया साहब ने अपनी सदस्यता के कुछ ही वर्षो मे कर दी। टडन जी के बाद ससद मे वे हिन्दी के सबसे बडे योद्धा थे।'

लोकसभा मे लोहिया ने सामाजिक, सास्कृतिक, कला सम्बन्धी, इतिहास लेखन भाषा के मुद्दो को उठाया जिस पर बहुत कम लोग जबान खोलते हैं। उन्होने देश की सीमाओं, उसके नक्शे और क्षेत्रफल के प्रश्न को उठाया और बहस की। 'पाकिस्तान के 2500 वर्ष' नामक पुस्तक पर उन्होंने घोर आपत्ति की और कहा जो देश है और 20 वर्ष पूर्व जिसका निर्माण हुआ है उसे यूनेस्को ने 2500 वर्ष पर्व का कैसे कह

दिया। उस समय के शिक्षा मत्री मोहम्मद करीम छागला ने सहमति व्यक्त की और इसे सुधारने की बात की। लाहिया जी खोपडी चपरासी, पलटन, नौकर, मजिस्टर आदि शब्दो का प्रचलन किया और उन्हे ससदीय सिद्ध किया।

डा लोहिया ने जब ससद मे प्रवेश किया था तो किसी समाचार पत्र ने लिखा था A bull in China shop (चीन की बाजार मे साड) किन्तु अपनी प्रतिभा, परिश्रम और चितन से समाजवादी सदस्यो ने इस कहावत को झूठ साबित कर दिया। लोकसभा मे स्टालिन की पुत्री स्वेतलाना का प्रश्न उठाया। उसकी भारत की नागरिकता की वकालत की। इधर एक—दो नेहरू समर्थक पत्रकारो न तथा प्रधानमत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने जो पडित नेहरू के अवतार अपने को सिद्ध करने मे लगे है, कहा है कि 'सोशलिस्टो ने ससद को अगभीर बना दिया।' जिस समय लोहिया तथा उसके पश्चात मधुलिमये ससद मे गए सोशलिस्ट सदस्यो की सख्या सात—आठ थी। किन्तु महत्त्वपूर्ण मुददे को उठाकर वह ससद का मान बढाते थे। उनके भाषणो से समाचारपत्रो को नयी जानकारी प्राप्त होती थी। श्री मधुलिमये जब बोलने के लिए खड होते थे तो शोर मचाने पर मोरारजी देसाई काग्रेस सदस्यो से कहते कि 'आप मधुलिमये को शाति के साथ सुनिये वह आपका ज्ञानवर्धन करेगे। लोहिया जी जब बोलते थे तो सदन एकदम शात हो जाता था। वह गभीर मुद्दो को उठाते और सत्तापक्ष पर तार्किक प्रहार करत। स्टेट्समेन के सवाददाता श्री के के. शर्मा ने ससोपा के ससदीय गरिमा की प्रशसा करते हुए लिखा था कि इस दल के सदस्य अत्यत प्रतिभावान एव विद्वान है। उन्हें ससदीय विषयो की पूरी जानकारी है तथा वह सभी लोकसभा मे तैयार होकर आते है।' ब्लिट्ज के सवाददाता श्री राघवन ने लिखा था कि 'ससोपा के सदस्य प्रश्न पूछने मे माहिर है। उनकी प्रतिभा से इकार नही हो सकता' इसी प्रकार हिन्दू के सवाददाता रामास्वामी ने लिखा था, 'ससोपा सदस्य ताजा मुद्दो को सदन मे उठाते है और उसे जीवत बना देते है। वह ससदीय परम्पराओ का सदा निर्वहन करते हैं तथा ससदीय प्रक्रिया एव नियमावली के मुताबिक कार्य करते हैं। इसी प्रकार ट्रिब्यून के सवाददाता ने भी ससोपा के सदस्य की लोकसभा मे भागीदारी की भूरि—भूरि प्रशसा की थी। खेद है कि लोहिया की मृत्यु के 33 वर्ष बाद इस तरह के घृणित आरोप प्रधानमत्री वाजपेयी लगा रहे है। वह स्वयं निन्दा के पात्र है। क्या वह बता सकते हैं कि चालीस वर्षीय ससदीय जीवन मे उनकी क्या उपलब्धियॉ रही हैं ? यहॉ मैं ब्रिटिश प्रधानमत्री चर्चिल का उल्लेख करूगा। वह ससदीय परम्पराओ के सम्बन्ध मे कहते है—

'ससद कानून बनाने की मशीन नही है। यह बहस करने का सशक्त फोरम है यदि ससद उन मुद्दों की चर्चा नहीं करती जिसमे देश की जनता को है तो यह एक निर्जीव सस्था बन जायेगी

अमेरिका में सत्याग्रह एवं नेहरू का निधन

1964 मे डा लोहिया ने अपनी दूसरी विश्व यात्रा की। लगभग दो महीने की यात्रा में उन्होंने 16 देशो का दौरा किया। 28 मई 1964 को मिसिसिपी (अमेरिका) राज्य के जैक्सन नगर मे लोहिया गए थे। स्थानीय नीग्रो कार्यकर्ताओ ने एक कैफेटेरिया मे सभा का आयोजन किया था। उस कैफेटेरिया के गोरे मालिक ने सभा के लिए हामी भर दी थी। किन्तु सभा के लिए जैसे ही लोहिया वहाँ गए उसने मना कर दिया क्योंकि होटल केवल गोरे लोगों के लिए था। लोहिया के जाने की जिद पर उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया। कुछ दूर ले जाकर उन्हे छोड दिया गया। इस घटना के लिए अमेरिका विदेश विभाग ने माफी मागी। लोहिया ने स्पष्ट रूप से कहा 'अमेरिका की त्रुटियो पर उगली रखने का मेरा कोई इरादा नही था। ऐसा अन्याय विश्व भर मे हैं अमेरिका मे ही नही भारत मे भी। मुझसे माफी मागने का कोई औचित्य नही है। राष्ट्रपति जोन्सन को स्वाधीनता की देवी से माफी मागनी चाहिए।'

डॉ राममनोहर लोहिया रगभेद नीति के विरुद्ध जिस दिन सघर्ष कर रहे थे उसी दिन से पडित नेहरू का दुखद निधन हो गया। लोहिया को सूचना देर से मिली। उन्होने इस घटना पर दुख प्रकट करते हुए अमेरिका से वक्तव्य दिया, भारत के प्रधानमत्री, महान स्वतत्रता सग्राम सेनानी एव 1946 तक मेरे नेता रहे पडित जवाहर लाल नेहरू के निधन पर मुझे गहरा दुख है। एक समय था जब उन्होने मर्मस्पर्शी मोहकता के कारण देश के स्वतत्रता सग्राम का नेतृत्व किया था। मै उनकी पुत्री से भी निवेदन करता हूँ जो पिता की मौत के कारण दुखी होगी कि वह अपने ऑसू पोछ डाले। स्मृतियॉ चाहे जितनी धुँधली पड जाये अपनी अमिट छाप छोड जाती हैं। इस समय भारत की शोकसतप्त जनता से मेरा निवेदन है कि वह क्राति को कैद करने वाली बेडियो को तोड डाले। मेरी शोक सवेदना मे इस कारण देर हुई कि में एक अन्याय के क्षेत्र मे जूझ रहा था यही मेरी उस महान नेता की शोक श्रद्धाजलि है।'

भारत वापसी पर लोहिया ने स्पष्ट वाक्यो मे कहा कि 'काग्रेस को समाप्त किए बिना न क्रातिकारी परिवर्तन सम्भव है और न समाजवाद की स्थापना हो सकती है। इसलिए विरोध पक्ष को चाहिए कि अपने मतभेदो को समाप्त कर काग्रेस के विरोध में साझा प्रत्याशी खडा करे।' लोहिया चाहते थे कि सोशलिस्ट पार्टी 1967 में आम चुनाव से पहले विशाल जनआन्दोलन खडा करे। इसके लिए प्रतिपक्ष से वार्ता हुई। कम्युनिस्ट इसके लिए तैयार थे। देश में अकाल की स्थिति थी। नेहरू के निधन के कारण राजनीतिक सत्ता कमजोर पड गयी थी। इसलिए वामपथी दलों के सहयोग से विशाल आन्दोलन खडा किया गया था। सोशलिस्टो ने सरकारी गल्ला गोदामो पर धावा बोल दिया। मध्य प्रदेश एव बिहार में गल्ला गोदामों पर कब्जा किया गया तथा राशन बॉटा गया

पार्टी ने लोहिया के नेतृत्व मे अहम भूमिका निभायी। लोहिया पूर्ण रूप से देश की राजनीति पर हावी थी। लोहिया का सकल्प था कि 1967 के चौथे आम चुनाव में काग्रेस पार्टी की 'राष्ट्रीय शर्म' की सरकार को धराशायी किया जाए तथा प्रतिपक्ष की साझा सरकार का निर्माण किया जाये। इसके लिए उन्होने अथक प्रयास किया। विपक्षी एकता मे अनेक बाधाये थी जिन्हे लोहिया ने दूर करने का प्रयास किया। उन्होने 'गैर काग्रेसवाद' के सिद्धान्त को अमली जामा पहनाया। सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी ने अपने चुनाव घोषणा पत्र मे जिसे लोहिया ने तैयार किया'था'मे लिखा था 'काग्रेस सरकार अकाल की सरकार है। यह झूठ और बेईमानी की सरकार है। परमार्थ और सर्वोदय का विनाश करके विशुद्ध स्वार्थ, सम्पत्ति सचय और फिजूल खर्ची की सरकार है, ऐसी भूमि जो दुश्मनो के कब्जे मे चली गयी और जो देश के नक्शे से हटा दी गयी। औद्योगीकरण के नाम को बेचकर जिन्दा रहने वाली यह सरकार गरीबी की सरकार है। सामती भाषा को पनपाकर लोकभाषाओ को मारनेवाली यह सरकार है। प्रदेश, भाषा, जाति, धर्म के अलगाव और झगडो को बढाकर देश को छिन्न–भिन्न करने वाली तोडक सरकार हे। जनता उबकर अब त्राहि–त्राहि कर रही है और इस सरकार का अत चाहती है' इसलिए इस सरकार को किसी भी तरीके से लोहिया को हटाना एव हराना चाहते थे। लोहिया के प्रयासो से जनसघ को छोडकर शेष प्रगतिशील दलो मे सभव तालमेल हो गया। यह तालमेल लोहिया के शब्दो मे इसलिए आवश्यक था कि 'गरीबी, अकाल, भ्रष्टाचार और राष्ट्रीय शर्म की सरकार जल्दी हटाई जा सके और जनता की उब का सक्रिय और सैद्धान्तिक सगठन हो ताकि विभिन्न विरोधी दल सुधरे अथवा टूटे।' गैर काग्रेसी सरकार के बनने के बाद उसके कार्यक्रमो को भी लोहिया ने निश्चित किया था।

चौथा आम चुनाव जैसे–जैसे समीप आता जा रहा था लोहिया देश की जनता को गरमाने तथा उसे सगठित करने मे लगे थे। काग्रेस के कुशासन की पोल खोलने के उद्देश्य से लोहिया ने अपनी पार्टी के अन्य सांसद विशेषकर मधुलिमये, राजनारायण किशन पटनायक, रामसेवक यादव, मनीराम बागडी, आदि को एकताबद्ध किया तथा सरकार पर जमकर हल्ला बोला। समाचार पत्र इन खबरो से भरे रहते थे। जन तूफान की तरगे हिलोरे ले रही थीं तथा जनता का उत्साह चरमोत्कर्ष पर था।

जुलाई 1965 भारत सुरक्षा कानून के तहत लोहिया, किशन पटनायक एव मनीराम बागडी गिरफ्तार किए गए। 18 अगस्त 65 को उत्तर प्रदेश बन्द की तथा बाद मे भारत बन्द' की घोषणा की गयी। जन आक्रोश सडको पर उमड आया। हजारों लोग गिरफ्तार किए गए। देश की ट्रेड यूनियनो ने भरपूर सहयोग दिया। जगह–जगह रास्ते जाम किए गए तथा रेलगाडियो का आना जाना बन्द किया गया। लखनऊ मे ससोपा ने 'जनवाणी दिवस' मनाया। एक लाख का विशाल मोर्चा डा लोहिया एव एस. एम. जोशी के नेतृत्व मे निकला। सभी वामपथी दल इसमें शरीक थे। दूसरे दिन विधानसभा का घेराव किया गया। विधानसभा के फाटक बन्द कर दिए गए। राजनारायण एव रामसेवक यादव गिरफ्तार किए गए 10 000 एव वामपथी को बन्द किया गया

मध्य प्रदेश की स्थिति और भी विस्फोटक थी। अन्न समस्या को लेकर बस्तर मे आदिवासियो ने प्रदर्शन किया। उत्तेजना फैल गयी। निहत्थे प्रदर्शनकारियो पर गोलियॉ चलाई गयी। इस काड मे 8 लोग मरे तथा बस्तर के राजा प्रवीण चन्द्र भजदेव की भी हत्या कर दी गयी।' उत्तरप्रदेश बन्द के कारण बादा मे गोली चली। कई लोग आहत हुए। इसी बन्द मे लोहिया आगरा मे गिरफ्तार किए गए।

देश के युवजनों के 'बेकारों को काम दो या महगाई भत्ता दो' के नारे के साथ 18 नवम्बर 66 को लोकसभा घेरने की योजना बनाई। ससोपा एव दोनो कम्युनिस्ट पार्टियो तथा कई निर्दलीय सासद लोहिया के नेतृत्व मे गिरफ्तार किए गये। लगभग पॉच हजार युवजन देश के कोने–कोने मे पकडकर जेल मे डाल दिए गए।

बिहार मे सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के नेतृत्व मे जनता का आन्दोलन उग्र हो रहा था। पटना मे लोहिया के पहुँचते ही रेलवे स्टेशन पर गिरफ्तार किया गया। गाधी मैदान की सभा मे भयकर लाठी चार्ज किया गया जिससे कर्पूरी ठाकुर तथा रामानन्द तिवारी भयकर रूप से घायल हो गए। 'बिहार बन्द' मे भारी तोडफोड और हिसा हुई।

1966 मे ही हिन्दू महासभा एव जनसघ ने गोहत्या विरोधी आन्दोलन किया। दिल्ली मे प्रदर्शनकारियो पर गोलियॉ चलाई गयी। अनेक मरे तथा गिरफ्तार किए गए। लोहिया के हस्तक्षेप से वृन्दावन मे प्रभुदत्त ब्रह्मचारी ने भूख हडताल समाप्त की।

यह जन उफान अपने वेग पर था और 'काग्रेस हटाओ–देश बचाओ' का लोहिया का नारा सफल हो रहा था।

चौथा आम चुनाव और गैर काग्रेसी सरकारे

चौथा आम चुनाव समीप आ गया था। जनसघ के अतिरिक्त शेष वामपथी दलो के साथ लोहिया ने सभव तालमेल का प्रयास किया। चुनाव परिणामों से पता चला कि काग्रेस दो तिहाई भारत मे अपना बहुमत खो चुकी थी। पजाब, हरियाणा उत्तर प्रदेश बिहार, बगाल, मध्यप्रदेश, केरल तामिलनाडु, दिल्ली आदि प्रदेशो मे 'गैरकाग्रसी सरकारो' की स्थापना हो चुकी थी। लोकसभा में भी काग्रेस का बहुमत क्षीण हो चुका था। इस विजय से लोहिया अत्यत उत्साहित थे। उत्तर प्रदेश एव बिहार के अतिरिक्त कई राज्यो मे ससोपा सरकार मे शामिल थी। बिहार मे ससोपा सबसे बडा घटक था और कर्पूरी ठाकुर उपमुख्यमत्री थे। लोहिया चाहते थे कि 'गैर काग्रेसी सरकारे ऐसे कार्य करे जो सूरज की तरह प्रकाशमान हो तथा ध्रुवतारे की तरह टिकाऊ हो।'

मत्रिमडल के निर्धारण के पश्चात डा लोहिया ने उन्हे 6 माह का समय काम करने के लिए दिया। इन 6 महीने मे निम्नलिखित कार्य गैर काग्रेसी सरकार करे जिसमे कि काग्रेस सरकार से बेहतर सिद्ध हो सके–

1 सार्वजनिक जीवन में अग्रेजी का खात्मा करें अग्रेजी विषय में फेल बच्चों को पास करें

2 मत्री अत्यत सादगी से रहें। शैडो, चपरासी एव निजी सचिव को साथ लेकर न चले।

3 भोग एव विलास से बचे। गारद की सलामी लेना छोडे।

4 सवा छ एकड तक की खेती से लगान तुरन्त समाप्त करे।

5 पार्टी की नीति के अनुसार समाज के सबसे पिछडे तबको, औरतो, हरिजनो आदिवासियो को विशष अवसर देकर उन्हे जिम्मेदारी के पद पर बिठाया जाये।

6 फौजदारी की दफा 109 की पूर्णरूप से समाप्ति हो।

7 निर्धन, बिना आय के लोगो मे भूमि का बँटवारा तुरन्त किया जाय।

8 सिचाई की व्यवस्था कुशलतापूर्वक की जाए।

9 खाद्यान्न का वितरण किया जाए।

बिहार मे चूँकि सोशलिस्ट सरकार थी इसलिए लोहिया उसके कार्य स सतुष्ट नही थे। उन्होने बिहार जाना तथा मत्रियो यहाँ तक कि कर्पूरी ठाकुर एव रामानन्द तिवारी से भी मिलना बन्द कर दिया था। इन दोनो को डा साहब बहुत सम्मान करते थे। किन्तु जब बिहार मे सरकार ने सोशलिस्ट कार्यक्रम लागू किया तो लोहिया प्रसन्न हो गए।

इसी प्रकार उत्तर प्रदेश की चरणसिह सरकार से सोशलिस्टो ने हटने का प्रस्ताव कर दिया था। लगान माफी के बाद ही उन्हे सनोष हुआ। केरल की सरकार की यही स्थिति थी। लोहिया उडीसा की सरकार से अत्यत प्रसन्न थे। स्वय कहते थे कि यह स्वतत्र पार्टी की दक्षिणपथी सरकार है किन्तु वामपथी सरकारो से उत्तम है। लोहिया के अनुसार, 'गैर काग्रेसी सरकारे कोई बडा काम करे उसके लिए छ माह की अवधि काफी है। याद रखना चाहिए कि शेरशाह ने चार सालो मे देश की शक्ल बदल दी थी। सवाल सकल्प का है। जहाँ तक व्यावहारिकता का सवाल है पन्द्रह सालो तक मैं प्राथमिक शिक्षा मे समानता की बात करता रहा और अब उसे अव्यावहारिक कहा जा रहा है।

लोहिया को छ माह मे बिहार सरकार ने निम्नलिखित कार्य करके दिखाये। लोहिया बेहद प्रसन्न हुए।

1 बिहार सरकार ने जाब्ता फौजदारी की धारा दफा 109 का पूरी तरह इस्तेमाल बन्द कर दिया। देश की कुल कैदियो का पाचवा हिस्सा इस दफा मे बन्द होता है। इसमे नागरिक स्वतत्रता का हनन होता है। यह एक बडा काम था।

2 पहली बार सरकार ने सिचाई की चुनौती को स्वीकारा और अकालग्रस्त क्षेत्रो को अकालग्रस्त घोषित किया।

3 बिहार सरकार ने अग्रेजी मे फेल छात्रो को पास कर दिया।

4 विकास की गति आठ फीसदी करने का सकल्प लिया गया।

5 लगान माफी का ने निर्णय ले लिया

6 मत्री के जीवन में अत्यत सादगी आ गयी और भोग विलास से दर हो गए

लोहिया जीवन मे कठोर अनुशासन चाहते थे। इसी कारण लोकहित के कार्य गैर काग्रेसी सरकारो से करवा रहे थे।

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी एव सोशलिस्ट पार्टी की एकता से सयुक्त समाजवादी पार्टी का गठन हुआ और वाराणसी मे इस एकता के बाद प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन किया गया। प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का एक वर्ग इस एकता के बाद अलग हो गया किन्तु बहुमत पार्टी के साथ रहा। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री एस.एस. जोशी एव महामत्री रामसेवक यादव बनाये गये।

सरहदी गॉधी से भेंट

मई 1965 मे लोहिया मधु लिमये के साथ पूर्वी जर्मनी के दौरे पर गए। वहाँ की ससद ने लोहिया को निमत्रण भेजा था। लोहिया ने जर्मनी के जिस विश्वविद्यालय मे शिक्षा पाई थी अर्थात हम्बोल्ट विश्वविद्यालय ने भी उन्हे आमत्रित किया।

रूस से वापसी पर लोहिया अफगानिस्तान मे रुके और काबुल जाकर खान अब्दुल गफ्फार खॉ से भेंट की। सरहदी गाधी को वह एशिया का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति मानते थे। उन्होने प्रधानमत्री श्री लालबहादुर शास्त्री से सरहदी गाधी को भारत आने का निमत्रण देने को कहा। शास्त्री जी इसके लिए तैयार हो गए। खेद है कि लोहिया के जीवन ने वफा नही की। सरहदी गाधी भारत आये किन्तु लोहिया जीवित नही थे। वह लोहिया को श्रद्धाजलि देने उनके आवास गए थे।

लोहिया का दुखद निधन

अभी गैर काग्रेसी सरकारे अपनी अल्पावस्था मे थी कि उनका सरक्षक उनसे जुदा हो गया। यह सब कैसे हुआ यह एक अचभा है। जिसने भी लोहिया जी की मृत्यु का समाचार सुना स्तब्ध रह गया। उनकी आयु मात्र 57 वर्ष थी। यहाँ हम लोहिया जी के निजी सचिव स्वर्गीय अध्यात्म त्रिपाठी एव दिनमान की रपट प्रस्तुत करते हैं। लखनऊ विश्वविद्यालय के समाजवादी युवजन सभा के साथियों के साथ इन पक्तियो का तुच्छ लेखक लोहिया जी की शवयात्रा और अतिम सस्कार मे मौजूद था। किन्तु ऑखो देखा हाल लिखने का साहस बटोर पाना एक कठिन कार्य है। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि आज तक मैंने किसी शवयात्रा पर लोगो को इतना बेकरार होकर रोते नही देखा है। लोहिया जी के निजी सचिव श्री अध्यात्म त्रिपाठी एव 'दिनमान साप्ताहिक' की रपट इसके लिए काफी है।

आपरेशन : अध्यात्म त्रिपाठी की रपट

डा राममनोहर लोहिया का कोई निजी परिवार नही था। जब वह लोकसभा सदस्य निर्वाचित हुए तो उन्हें सांसद के नाते एक मकान दिल्ली में मिला 1967 में

हम चार व्यक्ति स्थायी रूप से उनके साथ रहते थे रमा मित्र, उर्मिलेश झा और टी राधाकृष्णन और मै।

28 सितबर 1967 दिन के डेढ बजे हम लोग साथ भोजन कर रहे थे। रमाजी ने मुझ से कहा कि विलिंगडन अस्पताल में डा करोली से पूछना कि डाक्टर साहब के लिए कौन सा कमरा दिया गया है ताकि वह उसमे भर्ती हो सके। मैने डाक्टर साहब से पूछा, 'आपको क्या हो गया है?' डाक्टर साहब ने कहा, 'पौरुष ग्रन्थि का आपरेशन कराना है।' मैने कहा, डाक्टर साहब ? इसका इलाज बिना आपरेशन के भी हो सकता है। किसी आयुर्वेद के जानकार को बताना चाहिए। इस पर रमा जी नाराज हो गयीं और कहने लगी कि किस सदी की बात कर रहे हो ? आधुनिक विज्ञान इतना आगे बढ गया है। डाक्टर साहब का आपरेशन हो जाएगा तो उनकी आयु दस बरस बढ जायेगी। फिर भी मैं अपनी बात पर अडा रहा। डाक्टर साहब ने कहा, 'श्री शिव शर्मा को फोन करके बुलाओ।' मैंने शिव शर्मा जी को फोन किया तो पता चला कि वो बबई गये है। डाक्टर साहब ने कहा कि रात मे बंबई बात करना।

ढाई बजे दिन मे डाक्टर करोली का फोन आया कि विलिगडन अस्पताल मे 18 नबर का कमरा डाक्टर साहब के लिए रिजर्व कर दिया गया है और वो उसमे आ जाएँ।

डाक्टर साहब ने मुझे बुलाया। डॉ के एल राव को एक पत्र लिखाया। 'धर्मयुग' के सपादक श्री धर्मवीर भारती को एक लेख भेजने को कहा। लाकसभा के अगले सत्र के लिए कुछ प्रश्न बनाने को कागजात दिये। और कहा कि अब कोई कार्य पेन्डिग नही रह गया है।

'जन' का अक्टूबर अक निकल गया था। डाक्टर साहब ने उसे अस्पताल मे ही देखा। 30 सितम्बर को 'जन' डाक से भेजा जाना था। सब कुछ तैयार हो गया था केवल टिकट चिपकाना बाकी था। हम चारो को समय बॉट दिया गया था। कब कौन डाक्टर साहब के पास रहेगा। उर्मिलेश जी उस समय डाक्टर साहब के पास थे। मै अस्पताल मे गया यह कहने कि उर्मिलेश जी टिकट लगवा कर डाकखाने मे 'जन' भिजवा दे। मैने देखा कमरा न 18 में डाक्टर साहब नही हैं और उर्मिलेश, जो बाहर घूम रहे है। मैंने पूछा कि क्यो बाहर घूम रहे है ? उन्होने बताया कि डाक्टर साहब आपरेशन थियेटर रूम मे गये हैं। अब हम दोनो बाहर खडे हो गये। लगभग 11 30 बजे डाक्टर साहब को स्ट्रेचर पर लाद कर कुछ लोग ले आये। खून की बोतल, ग्लूकोज की बोतल वगैरह थामे सब आये। मैंने जीवन मे वैसा दृश्य कभी नही देखा था। उर्मिलेश जी को भेज दिया और मैं वहाँ बैठ गया। शाम को करीब 5 बजे डाक्टर साहब होश मे आये। मैंने पूछा—डाक्टर साहब कैसा है ? डाक्टर साहब ने कहा— पीडा बहुत है। उनके सिर की हलकी मालिश की। डाक्टर साहब ने मना कर दिया। यह घटना 30 सितबर की है

पहली अक्टूबर को 9 बजे सुबह के करीब मै अस्पताल मे पहुँचा। रमा जी घर चली आयी। डाक्टर साहब से कुशल क्षेम हुई। कुछ डाक्टर निरीक्षण के लिए आये डाक्टर साहब ने मुझ से कहा--इन सभी के पते नोट कर लो ताकि अस्पताल से निकलने के बाद इन सब को धन्यवाद का पत्र लिख सके, और थोडा रुक कर बोले--यदि जिन्दा रहे तो। मैंने तथा उन सभी डाक्टरो ने कहा--ऐसा क्यो कह रहे है ? उसके बाद डाक्टर साहब 15 मिनट सो गये।

इसी दिन करीब 12 बजे दिन में डाक्टर साहब ने मुझसे कहा कि कागज कलम उठाओ, मै एक लेख लिखवाऊँगा। मैने कहा--डाक्टर साहब! अच्छे हो जाइए। अस्पताल से निकलने के बाद लिखवा दीजिएगा। थोडी कडी आवाज मे उन्होने कहा--लेख महत्त्वपूर्ण है विश्व क्रान्ति पर उसे अभी लिखवाना है। कागज--कलम लो। मैं सहम गया। कागज--कलम हाथ मे ली। डाक्टर साहब कुछ सोचते रहे--फिर बोलने लगे--लगान माफ होगा कि नही--मैने कहा--होगा। मैंने कहा-- डाक्टर साहब ये सब क्या कह रहे हैं, आपने तो लेख लिखवाने की बात कही थी। डाक्टर साहब ने कोई उत्तर नही दिया और बडबडाते-रहे। मै घबरा गया। घर पर टेलीफोन किया। सब लोग दौडे आये।

अखबार, रेडिया, फोन, तार गरज को भी साधन मिला, सबको खबर की गयी। राजनारायण जी अफगानिस्तान गये थे। उन्हे खबर मिल गयी और वे चले आये। बदरी-विशाल जी को यूरोप मे फोन मिलाया गया। उनसे सम्पर्क नही हो सका। बाकी सभी लोग दिल्ली पहुँच गये। जयप्रकाश जी दो अक्टूबर को पहुँचे। इसके बाद का सारा किस्सा अखबारो मे आ चुका है।

अध्यात्म त्रिपाठी

डॉ लोहिया : मृत्यु से संघर्ष

गरीब बाप के बेटे राममनोहर लोहिया ने चालीस साल तक इस देश की गरीबी, और भुखमरी के विरुद्ध अकेले सघर्ष किया है--पिछले दस दिनो से यह तमाम डाक्टरो के बावजूद मृत्यु से अकेले सघर्ष कर रहे है। 30 सितम्बर को नयी दिल्ली के विलिंग्डन अस्पताल मे डॉ एल.आर पाठक ने उनकी 'प्रोस्टेट ग्रन्थी' का ऑपरेशन किया। डॉ लोहिया ने इस ऑपरशन के बारे मे अपने नजदीक के लोगो को भी नही बताया था, क्योकि उनसे कहा गया था कि यह एक बहुत मामूली ऑपरेशन है। लेकिन अस्पताल मे भरती होने के तीसरे ही दिन यह ऑपरेशन साधातिक साबित हुआ। डॉ.लोहिया को ज्वर हो आया और उनका रक्तचाप बढने से उनकी-हालत बिगडने लगी। इस अवस्था मे डॉक्टरो के बीच विवाद उठ खड़ा हुआ। कुछ का खयाल था कि यह पेचीदगी इसलिए पैदा हुई है कि डॉ लोहिया का हृदय कमजोर है जबकि औरो की धारणा थी कि इस पेचीदगी का सम्बन्ध ऑपरेशन से है ' दिन मे जब हालत और बिगडी तब इस विवाद को समाप्त करने के लिए मेडिकल इस्टीटयूट के विशेषज्ञ डॉ विग को बुलाया गया

डॉ विग ने इलाज का एक रास्ता सुझाया और दूसरे दिन सवेरे तक डॉ लोहिया की हालत मे कुछ सुधार हुआ।

लेकिन यह सुधार क्षणिक था। 3 तारीख की रात को डॉ लोहिया को कॅपकॅपी होने लगी। विलिग्डन अस्पताल के डॉक्टर इस कॅपकॅपी का कारण समझने मे असमर्थ थे। इस बीच श्री मधु लिमये ओर श्री जॉर्ज फर्नांडीस ने बम्बई के प्रसिद्ध विशेषज्ञ डॉ कोलाबावाला और डॉ दस्तूर को मरीज की परीक्षा के लिए दिल्ली बुलाया। बम्बई के डाक्टरो ने जॉच करने के बाद पाया कि डॉ लोहिया टाक्सीमिया (रक्त मे जहर) से पीडित हैं। उन्होने विलग्डन अस्पताल मे की जा रही दवाओ के स्थान पर 'एम्पीसिलीन का इलाज सुझाया। 'एम्पीसिलीन' के इजक्शन से डॉ लोहिया की तबीयत मे कुछ सुधार हुआ। 5 अक्टूबर को डॉ लोहिया की हालत फिर गम्भीर हो गयी और सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के नेताओ ने स्थानीय इलाज पर पूरी तरह निर्भर करने के बजाय बम्बई के डॉक्टरो को दोबारा बुलाना पसन्द किया। डॉ लाहिया के इलाज के लिए लन्दन से 'पेरिर–टनएन' ओर 'फुरादान्तिन नामक दवाएँ मॅगाने की व्यवस्था की गयी। इस बीच पटना बनारस, लखनऊ और भोपाल के डॉक्टरो ने भी डॉ लोहिया की परीक्षा की। उनके रक्त मे पेशाब–कणो के बढने से सबको चिन्ता होने लगी। डॉ लोहिया को तेज ज्वर भी होने लगा। 2 तारीख के बाद से वह बराबर अचेतावस्था मे रहे हालॉकि जनता तक बार-बार यह खबर पहुॅचती रही कि डॉ लोहिया पहले से ज्यादा होश मे हे।

7 तारीख को सबेरे डॉ लोहिया की हालत मे कुछ सुधार देख विलिग्डन अस्पताल के खुशमिजाज डाक्टरो ने यह घोषणा कर दी कि अगर यही हालत रही तो हम शीघ्र ही डॉ लोहिया को खतरे से बाहर घोषित कर देगे। उन्होने अपनी उत्फुल्लता मे रात का प्रेस सम्मेलन भी स्थगित कर दिया। जब साढे नौ बजे रात को 'दिनमान का विशेष सवाददाता विलिग्डन अस्पताल पहुॅचा तब उसे डॉ लोहिया की देखरेख कर रहे एक नौजवान डॉक्टर ने बताया कि डॉ लोहिया की हालत ठीक है, उन्हे करीब 99 डिग्री बुखार है। मगर इसके दो ही मिनट बाद सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के नेताओ से सवाददाता को मालूम हुआ कि डॉ लाहिया को 102 डिग्री बुखार है और उनकी हालत बहुत बिगडी हुई है, जिसका पता हो सकता है डाक्टरो को न हो। उसके बाद से डॉ लोहिया की हालत मे कोई सुधार नही हुआ। तब श्री मधु लिमये ने लन्दन के विशेषज्ञ डॉ रिचेज से फोन पर सम्पर्क किया जिन्होने यह कहा कि मुझे पूरा शक है कि डॉ लोहिया की सारी गडबडी ऑपरेशन के समय से ही शुरु हुई है। उन्होने कहा कि मेरे ख्याल मे ऑपरेशन की जगह पर घाव हो चुका है। उपप्रधान मन्त्री श्री मोरारजी देसाई के आग्रह पर बम्बई से आये मशहूर सर्जन डॉ शान्तिलाल मेहता ने भी इस धारणा की पुष्टि की कि डॉ लोहिया के आपरेशन स्थल पर घाव हो चुका है। उन्होने विलिग्डन अस्पताल के डॉक्टरो के विरोध के बावजूद डा लोहिया के टाक तोडे और घाव से सारा पीव निकला। लुधियाना के अमेरिकी सर्जन डॉ डेविड ने इस्के दूसरे दिन रक्तचाप के लिए उनके गले के पास की स्नायु खोली 10 तारीख को जर्मनी से डा एल्केन को

बुलाया गया। उन्होंने भी डा मेहता और डा डेविड के इलाज को सही ठहराया, लेकिन डा लोहिया के शरीर मे इतनी पेचीदगियाँ पैदा हो चुकी हैं कि हर इलाज नाकाम साबित हो रहा है। डा लोहिया अपनी अदम्य जीवन-शक्ति के बल पर मृत्यु से लोहा ले रहे है। अब इन पक्तियो के प्रेस मे जाने तक नयी खोज यह हुई है कि डा लोहिया की प्रोस्टेट ग्रन्थि' मे कैन्सर था।

जर्मनी के डाक्टर ने इस सवाददाता को बताया कि इस तरह के केन्सर का कारगर अन्तर्राष्ट्रीय इलाज उपलब्ध है और अगर डा लोहिया मौजूदा सकट से उबर गये तो कैन्सर के लिए विशेष चिन्ता की आवश्यकता नही।

–15 अक्टूबर, 1967 के 'दिनमान' से साभार।

वह ज्योति क्यो कर सो गयी–यह क्यों हुआ?

बुधवार, 11 तारीख की रात को साढे नौ बजे विलिग्डन अस्पताल के मेडिकल सुपरिटेंडेट ब्रिगेडियर लाल ने डॉ लोहिया के मुलाकातियो और सवाददाताओ को अपने कमरे मे प्रसन्नचित्त यह बताया था कि आप लोग आज की रात चैन से सो सकते हैं तत्काल चिन्ता का कोई कारण नही है– डॉ लोहिया की हालत मे कल शाम से जो गिरावट थी उसे हमने रोक दिया है। पिछली कई रातो से डॉ लाहिया के शुभेच्छुक और सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के नेता बराबर जाग रहे थे। डॉ लाल के आश्वासन पर उनमे से अधिकतर अपने-अपने धरो को चले गये। कुछ कार्यकर्त्ता और इस पत्र का विशेष सवाददाता रात देर तक अस्पताल मे रुक गये थे। अभी डॉ लाल के आश्वासन के बावजूद दिल्ली की जनता की नींद भी नहीं आयी थी कि डॉ लोहिया की हालत बिगडने लगी।

अन्तिम क्षण करीब सवा बारह बजे रात को उनकी तबीयत मे गिरावट हुई। रक्तचाप लगातार गिरने लगा और अस्पताल मे भाग–दौड मची डॉक्टरो को बुलाया जाने लगा। दिल्ली मे मौजूद डॉ लोहिया के सभी चिकित्सक मिनटो मे आ पहुँचे। नाडी मन्द हो चली थी और रक्तचाप 40 के करीब पहुँच गया था। ह्रदय की गति मन्द होने लगी थी। डॉक्टरों ने ह्रदय को पुनर्जीवित करने का प्रयत्न किया, लेकिन होनी हो कर रही। रात को एक बज कर पॉच मिनट पर डॉक्टर मरीज के कमरे से बाहर निकले और उन्होने लोगो को बताया कि डॉ लोहिया अब इस ससार मे नही रहे। डॉ लोहिया के अन्तिम समय मे उनके बहुत नजदीक के सहयोगी और प्रियजन उपस्थित थे, जिनमे मुख्य हैं श्रीमती रमा मित्र श्री किशन पटनायक, श्री विनयकुमार, श्री रामसेवक यादव और श्री कृष्णनाथ।

नियति का व्यग्य : डॉ लोहिया के निधन का समाचार तुरन्त ही फैल गया और मन्त्री नेता और कार्यकर्त्ता विलिग्डन के प्रागण में भरने लगे सबसे पहले पहुँचने वालों में थे श्री मोरारजी देसाई श्री तथा उनकी धर्मपत्नी

श्रीमती प्रभावती देवी। डा लोहिया का शव चादर से ढक दिया गया और एम्बुलेस मे रात के दो बजे उसे उनके निवास स्थान 7, गुरुद्वारा रकाबगज रोड पर ले जाया गया। उनके निवास स्थान पर उनके ड्राइग रुम मे जहाँ वह अपने खास मुलाकातियो से मिला करते थे एक चौकी पर यह शव रखा गया। डॉ. लोहिया के थके हुए चेहरे पर हलकी मुस्कान की रेखा थी, जैसे उन्होने नियति के व्यग्य को हमेशा की तरह अपनी मृत्यु के पहले भी पहचान लिया हो। मरने के तीन रोज पहले उन्होने डाक्टरो से कहा भी था कि अपने देश मे जो हाल राजनीति का है वही डाक्टरी का भी।

गुरुद्वारा रकाबगंज - मृत्यु का समाचार मिलने पर डा लोहिया के दर्शनार्थियो की भीड इकट्ठी हाने लगी। श्री और श्रीमती जयप्रकाश नारायण के अलावा रात के तीन बजे आचार्य कृपालानी, श्रीमती सुचेता कृपालानी, केरल के मुख्यमन्त्री श्री नम्बूदिरीपाद बिहार के उप मुख्यमन्त्री श्री कर्पूरी ठाकुर, ससद्–सदस्य श्री उमानाथ और श्री गोपालन श्रीमती अरुणा आसफ अली, श्री गगाशरण सिह, श्री कृष्ण मेनन, श्री मधु लिमये श्री श्रीधर महादेव जोशी, श्री राजनारायण, श्री जे एच पटल, श्री व श्रीमती–तुलसी बोडा तथा अन्य अनेक नेता और कार्यकर्त्ता डा लोहिया के उस बरामदे मे दुखी और उदास बैठे हुए थे जहाँ अक्सर ही वे अपने दिवगत नेता के साथ विचार विमर्श किया करते थे। सुबह होते–होते यह भीड इतनी बढ गयी कि 7 गुरुद्वारा रकाबगज रोड का सारा लान ओर पडोस दुखी मानव–चेहरो से घिर गया। डा लोहिया के बगीचे के पेडो और पौधो ने भी जैसे अपने सिर झुका लिये। जो गली अक्सर सूनी रहती थी उसमे कारो, स्कूटरो साइकिलो और हजारो की तादाद मे पैदल चलने वालों की भीड इतनी अधिक हो गयी थी कि धूल ने समूचे इलाके को ढक लिया। तमाम लोगो के चेहरो पर गहरा शोक था। कोई किसी कोने मे और कोई किसी कोने मे अकेला बैठा हुआ रो रहा था। प्रेस फोटोग्राफर, टेलीविजन और फिल्म्स डिवीजन के लोग इन सभी दु ख–विह्वल लोगो की छबियाँ आँकने मे व्यस्त थे और डा लोहिया का शव फूलो से ढक रहा था।

सारे कश्मीर का सलाम राष्ट्रपति और उप-राष्ट्रपति के अलावा भारत की सभी राजनीतिक पार्टियो की ओर से उनके शव पर पुष्पाजलियाँ अर्पित की गयी। दिन के बारह बजे तक उनका शव फूलो से इतना अधिक ढक गया कि कुछ भी देख सकना सम्भव नही था। तमाम फूलो और श्रद्धांजलियो के बीच कभी–कभी डॉ लोहिया का मुस्कराता हुआ चेहरा झाँक उठता था। जैसे ही इस चेहरे की एक झलक दिखायी पडती थी लोग फूट–फूट कर रो पडते थे। श्रद्धाजलियो और प्रेमाजलियो की इस भीड मे मन्त्रियो और राजनेताओ ने साधारण आदमियो की तरह पैदल आ कर उन्हे अन्तिम नमस्कार किया। मोरारजी देसाई, यशवन्तराव चव्हाण, डॉ चन्द्रशेखर, डॉ त्रिगुण सेन अशोक मेहता, डा रामक्षुमग सिंह, बिहार के मुख्यमन्त्री महामाया प्रसाद सिह, उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री चरण सिह तथा अन्य अनेक मन्त्रियो ने, जो कि अक्सर डा. लोहिया के आक्रमणो को झेलते थे उनके शव की मौन परिक्रमा की। डा लोहिया को प्रणाम करने वालों में दो ऐसे नेता थे बरसों से जिनका उनसे नहीं हुआ था एक थे शेख

अबदुल्ला जिनकी आँखे आँसुओ से भरी हुई थीं और दूसरे थे काग्रेस–अध्यक्ष श्री कामराज, जो डा लोहिया के बगले पर पहली बार गये थे। शेख अब्दुल्ला ने अतिथि–पुस्तिका मे लिखा सारे कश्मीर का सलाम'।

अर्थी के कन्धे इधर लोग डा लोहिया के अन्तिम दर्शन कर रहे थे और उधर सौ गज दूर पर राष्ट्रपति भवन के पीछे एक पुराने गिरजे के नजदीक डा लोहिया की अन्तिम यात्रा के लिए ट्रक फूलो और सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी की पताकाओ से सजाया जा रहा था। करीब दो बजे डा लोहिया का शव अर्थी पर बाहर निकाला गया। अर्थी को अपने कन्धे पर लिये हुए थ श्री मोरारजी देसाई, श्री यशवन्तराव चव्हाण, श्री रामसेवक यादव, आचार्य कृपालानी, मनीराम बागडी और डा लोहिया के सबसे नजदीक के मित्र श्री बालकृष्ण गुप्त, जो पिछले बयालीस वर्षों से उनके सबसे आत्मीय क्षणो के साथी थे। जैसे ही अर्थी बाहर आयी, सारी भीड दु ख कातर होकर रो पडी। यह शव न किसी मन्त्री का था, न किसी सत्ताधारी का, लेकिन डा लोहिया के लिए जितने आँसू बरसाये गये वे किसी भी व्यक्ति की स्मृति को अनन्त काल तक सँजोये रखने के लिए काफी थे। शव के बाहर निकलते ही, गुरुद्वारा रकाबगज रोड उजड गया। जहाँ डा लोहिया का उत्फुल्ल चेहरा नजर आता था वहाँ एक अजीब किस्म की मनहूसी ने अपना घर बना लिया।

एक रास्ते का अभिनन्दन डॉ लोहिया का शव ट्रक पर एक ऊँचे आसन पर रखा गया। दोपहर को सवा दो बजे डा लोहिया की शवयात्रा शुरू हुई। गुरुद्वारा रकाबगज रोड की गली मे धूल उडने लगी और लोगो के आँसुओ से गीली होने लगी। शव–यात्रा पार्लियामेट स्ट्रीट से होती हुई कनॉट प्लेस पहुँची। पार्लियामेट स्ट्रीट के चौडे रास्ते को जुलूस ने भर दिया था। इस रास्ते ने बहुत–से प्रधानमन्त्रियो, राजनेताओ सम्राज्ञियो और सम्राटो का स्वागत किया हे और दोनों किनारो पर खडी जनता ने तालियॉ बजा कर उनका अभिनन्दन किया है। लेकिन 12 अक्टूबर का इस विशाल मार्ग ने अपने इतिहास मे पहली बार मौन हो कर एक ऐसे नेता का अभिनन्दन किया जो न सम्राट था न प्रधानमन्त्री, लेकिन इतिहास मे जिसकी कोई मिसाल नही।

दिग्विजयी रथ : जुलूस पार्लियामेट स्ट्रीट को पार कर कनाट प्लेस मे जनता काफी हाउस के नजदीक पहुँचा जहाँ डा लोहिया अक्सर अपने दोस्तो के साथ बैठ कर काफी पिया करते थे। काफी हाउस के सामने जुलूस–क्षण–भर के लिए रुका, काफी हाउस के मजदूरो और रोजमर्रा आने वालो ने डा लोहिया के शव पर पुष्पाजलियॉ अर्पित की और समूचे काफी हाउस ने खडे हो कर और मौन रह कर उनके प्रति श्रद्धाजलि अर्पित की। कनॉट प्लेस मे भीड और बढ गयी। सारे कनॉट प्लेस की दुकाने बन्द थी और लोग छतो पर खडे हो कर अपने नेता के अन्तिम दर्शन करने का प्रयत्न कर रहे थे। कनॉट प्लेस से निकल कर जुलूस बाराखम्भा रोड पहुँचा, जहाँ रास्ते के दोनो ओर खडे हुए स्त्री पुरुषो ने उन्हे प्रणाम किया इस रास्ते पर दिल्ली की फ़ैशनेबल बस्ती से आने–जाने वाली गाडियों की भीड होती है इसी का खयाल रख

सरकार ने अपनी ओर से विशेष ट्रैफिक पुलिस का इन्तजाम भी कर दिया था। लेकिन पुलिस की कोई जरूरत नही पडी। गरीब और अमीर दोनो ही तरह की गाडियो ने अपने–आप रास्ता छोड दिया और डा लोहिया का दिग्विजयी रथ विजय घाट की ओर निर्बाध बढता गया। तिलक ब्रिज के चौरास्ते पर सभी ओर से आने वाली मोटर गाडियॉ रुकी हुई थी। इनमे से एक गाडी राष्ट्रपति भवन की भी थी, जो कि डा लोहिया के प्रति विशेष सम्मान प्रकट करने के लिए आयी हुई थी।

सिपहसालार का जुलूस तिलक ब्रिज से थोडी दूर लोकमान्य तिलक की प्रतिमा है। अभी 1 अगस्त को लोकमान्य तिलक को श्रद्धांजलि देते हुए गृहमन्त्री चह्वाण ने डा. लोहिया को, जो कि वहॉ मौजूद थे, अपना सिपहसालार और नेता सम्बोधित किया था। जुलूस जैसे ही तिलक ब्रिज के नीच से निकला, आसमान पर एक विमान मॅडराता हुआ आया और उसने डॉ लोहिया के शव पर फूल बरसाये। विमान के फूलो को स्वीकार करती हुई डॉ लोहिया की अर्थी इन्द्रप्रस्थ मार्ग से हो कर प्रसिद्ध रिंग रोड पर पहुॅची जहॉ से होकर गरीब और अमीर दोनो को अपनी अन्तिम यात्रा करनी होती है। इसी रास्ते से 1948 मे महात्मा गॉधी का रथ गुजरा था और इसी पथ स 1964 मे श्री नेहरु ओर 1965 ने श्री लालबहादुर शास्त्री ने अपनी अन्तिम यात्रा तय की थी। लम्बी ओर दूर तक चली गयी रिंग रोड पर जगह–जगह बसे, लारियॉ और मोटर गाडियॉ रुकी हुई थी जिनमे से उतर–उतर कर लोग डा लोहिया की शव-यात्रा मे शामिल हो रहे थे। दिल्ली मे उपस्थित सभी ससद्–सदस्यो के अलावा डा रामसुभग सिह और अन्य अनेक मन्त्री यात्रा मे शामिल थे।

विद्युत दाह : रिंग रोड के किनारे जमुना के कछार मे, महात्मा गॉधी, श्री नेहरू और श्री लालबहादुर शास्त्री की समाधियॉ हैं। इन तीनो समाधियो से गुजरने पर विद्युत–शवदाह–गृह हैं, जहॉ गरीब और अन्ध आस्था से मुक्त लोग शव–दाह करने आते है। तीन घटो की यात्रा समाप्त कर डा लोहिया की अर्थी शाम को पॉच बजे विद्युत–शवदाह–गृह पर पहुॅची। श्मशान पर पहले से ही भीड इकट्ठी थी। श्मशान से दो–ढाई मील दूर के मैदान मे दशहरा मनाया जा रहा था, जिसके पटाखे यहॉ तक सुनायी पडते थे, लेकिन इन पटाखो की आवाज धीमी और बेसुरी मालूम पडती थी। डा लोहिया का शव ट्रक से उतारा गया और विद्युत–शवदाह–गृह के बरामदे मे एक ऊँचे आसन पर रख दिया गया, ताकि सभी लोग उनके दर्शन कर सके और उन्हे पुष्पाजलि दे सके। अपने नेता के आखिरी दर्शन करने के लिए भीड बेचैन हो रही थी और अनुशासन का बॉध टूटने लगा था। लेकिन सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के कार्यकर्ताओ के अनुरोध पर भीड फिर सयत हो गयी और एक के बाद एक सभी राजनैतिक पार्टियो की ओर से उनके शव पर फूल चढाये जाने लगे। शव फूलो से फिर लद गया। इसके बाद जनता को बताया गया कि उनका शव दाह के लिए भीतर ले जाया जाएगा। कुछ ही क्षणों में डा लोहिया का शव विद्युत शवदाह गृह के अन्दर चला गया दरवाजे बन्द हुए और एक लपट सी निकली जिसने डा लोहिया के शरीर को आत्मसात् कर लिया

लोकसभा के अध्यक्ष श्री सजीव रेड्डी के शब्दो मे जो आदमी समूची सल्तनत को आग लगाने की क्षमता रखता था आज अग्नि ने उसे अपना ग्रास बना लिया।'

ज्योति को प्रणाम विद्युत–शव–दाह–गृह के मैदान पर उमड पडी भीड को सम्बोधित करते हुए अनेक राजनेताओ ने डा लोहिया को हार्दिक श्रद्धाजलियाँ अर्पित की। सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के अध्यक्ष श्रीधर महादेव जोशी ने डा लोहिया को 'अपना भाई और नेता' कह कर पुकारा। उन्होने कहा कि डा लोहिया केवल एक दल के नेता नही थे बल्कि समूचे देश के नेता थे। उनकी मान्यता थी कि जो देश के हितो के विरुद्ध है वह अपने दल के हितो के भी विरुद्ध है। जब श्री जयप्रकाश नारायण बोलने को उठे तो उनका कठ रुधा हुआ था। करीब दो मिनट तक वह बोल ही नही पाये। उनकी ऑखो से ऑसुओ की धारा बहती रही। फिर किसी तरह अपने को सयत करने का प्रयत्न करते हुए भर्राये गले से उन्होने कहा, राममनोहर मुझसे आठ बरस छोटे थे—उचित तो यह था कि यहाँ वह मेरी जगह पर होते और मै उनकी जगह पर होता, लेकिन परमात्मा को यह स्वीकार नही था। राममनोहर लोहिया का सारा जीवन आपके और दुनिया के सामने एक खुली हुई किताब है। ऐसा त्यागी और बलिदानी जीवन किसी ही किसी को मयस्सर होता है। वह आजादी की लडाई के नौजवान सिपाही थे उसमे उनके करतब इतिहासमे अमिट है। वह पहले नेता थे जिन्होने आजादी के बाद भारत के भावी स्वरूप की कल्पना की। उन्होने समाजवादी आन्दोलन को बल दिया, विप्लव दिया, ऑधी दी। उन्होने भारत मे समाजवादी आन्दोलन को प्रतिष्ठित किया। वह गरीबो के मसीहा तो थे ही, भारत की परिस्थितियो के अनुकूल उन्होने सामाजिक विषमता को समाप्त करने के लिए भी अपना बलिदान किया। आज यह सारा सघर्षमय जीवन नही रहा। भविष्य–द्रष्टा डा लोहिया ने दस साल पहले ही समझ लिया था कि हिन्दुस्तान किधर जा रहा है। उन्होने जो तसवीर खीची थी वह कितनी सच्ची थी, इसका प्रमाण भारत का चौथा आम चुनाव है जो खुद डॉ लोहिया की एक क्रान्तिकारी यादगार है। इस ज्योति–पुज, इस अद्वितीय प्रतिभा, इस विप्लवकारी आत्मा को प्रणाम।'

क्रुद्ध नवयुवक लोहिया . श्री जयप्रकाश नारायण के बाद लोकसभा के अध्यक्ष श्री नीलम सजीव रेड्डी ने डा. लोहिया को प्रणाम करते हुए कहा कि इस देश मे अनेक नेता हुए, लेकिन लोहिया केवल एक हुआ। काग्रेस अध्यक्ष कामराज ने उन्हे गरीबों और कुचले हुए लोगो के नेता के रुप मे स्मरण किया। गृहमन्त्री चव्हाण ने भी उन्हे पद–दलितों का प्रवक्ता बताया। उन्होंने कहा कि डा लोहिया भारतीय राजनीति के' क्रुद्ध नवयुवक' थे, लेकिन उनका क्रोध व्यक्तिगत द्वेष पर आधारित नहीं था। उसके पीछे वह करुणा थी जो देश की गरीबी के प्रति सवेदनशल लोगो के मन मे पैदा होती है। ससद में हम उनके क्रोध को सहन करते थे– कर्त्तव्यवश उनका उत्तर भी देना पडता था। अब खयाल आएगा कि वह दबग आवाज कहाँ है। ससद में एक जगह खाली रहेगी, जो दिल को चुभेगी। लोकसभा उनके बिना सूनी रहेगी

वह हँसता हुआ चेहरा : कम्युनिस्ट पार्टी के प्रवक्ता प्रो हीरेन मुखर्जीने डा लोहिया के चारित्रिक और बौद्धिक गुणो का स्मरण किया। उन्होने डा लोहिया भारतीय राजनीति के सबसे विवादास्पद व्यक्ति थे– मगर इससे क्या फर्क पडता है ? उनका उज्ज्वल चरित्र, उनकी मेधावी प्रतिभा और उनके भीतर की आग, ये सब ऐसी चीजे हैं जो एक असाधारण व्यक्ति म ही होती है। उनके निधन से आज सारा देश शोक में डूब गया। डा लोहिया की एक पुरानी सहयोगी श्रीमती अरुणा आसफ अली ने भी दु खी मन से डॉ लोहिया को अन्तिम नमस्कार किया। उन्होंने सन् 42 के दिनो की याद ताजी करते हुए कहा कि डा लोहिया का हँसता हुआ चेहरा कभी नहीं भुलाया जा सकता। आज हमारे लम्बे सफर के साथी राममनोहर, जो कि तमाम दुशवारियो के बीच अडिग रहना जानते थे नही रहे। मुड कर देखने पर आज मै पाती हूँ कि डा लोहिया के आदर्शों से हमारा कभी कोई मतभेद नहीं रहा। आज भारत के उन तमाम घरो मे अन्धेरा है जहाँ राममनोहर लोहिया की आवाज गूँजती थी। उनका गुस्सा, उनकी झुँझलाहट कभी नही भूलेगी। वयोवृद्ध आचार्य कृपालानी ने डा लोहिया को अपने परिवार का एक सदस्य सम्बोधित करते हुए कहा कि आज मैं अकेला हो गया हूँ। लोहिया की वाणी मे गुस्सा था, लेकिन यह गुस्सा अकारण नही था। डा लोहिया मे जितना आवेश था उतनी ही कोमलता थी। उनके कोमल स्वभाव को हम लोग समझते थे। श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा ने डा लोहिया को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए अनेक मधुर स्मृतियाँ ताजी कर दी। लोकसभा में उनके साथ डा लोहिया की मीठी झडपे बराबर हुआ करती थी। श्रीमती सिन्हा ने इन सबको स्मरण करते हुए कहा कि न केवल लोकसभा बल्कि सारा देश आज सूना लगता है।

लीलामय जीवन खत्म हुआ : इन तमाम श्रद्धाजलियो का सिलसिला समाप्त होने के पहले ही डा लोहिया का इहलौकिक शरीर अग्नि में स्वाहा हो चुका था। दूर जमुना पर एक नाव आती नजर आयी, जिसमे लेकर डॉ लोहिया की भस्म अनन्तकाल से बहती आयी पवित्र सरिता मे अनन्तकाल के लिए प्रवाहित कर दी गयीं। भारतीय इतिहास के विलक्षण इतिहास-पुरुष राममनोहर लोहिया का वह लीलामय जीवन समाप्त हो गया जो सत्ताधारियो को बेचैन करता था, शोषितो और पीडितो को हौसला देता था बुद्धिजीवियो को आकर्षित करता था और देश की बेजुबान जनता को वाणी देता था।

–22–10–1967 के 'दिनमान' से साभार

डॉ. लोहिया के लेख

समाजवाद और गाधीवाद, 5 फरवरी 1939, सघर्ष

साम्राज्यशाही ने देश को तबाह और बर्बाद कर दिया है, 19 फरवरी 1940, सघर्ष

काग्रेस मे फूट राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए घातक है–''फॉरवर्ड ब्लाक'' के प्रवर्त्तको की का विश्लेषण

4 जून 1939, सघर्ष, पृष्ठ सख्या 3

साम्राज्यशाही लडाई का मुकाबला किस तरह किया जाय–1939 योजना प्रारुप, राष्ट्रपति (पार्टी अध्यक्ष) को भेजा, 25 जून 1939, सघर्ष

विधान–परिषद्–3जनवरी 1938 सघर्ष

भारतीय जनता का घोर सास्कृतिक ह्रास, सघर्ष

काग्रेस की बुनियादी एकता–26 मार्च 1939, संघर्ष

स्वराज्य पचायत क्यों और कैसे–31 दिसम्बर 1939, सघर्ष (चार अको मे)

(स्वराज्य पचायत के नाम से 1939 मे यह पुस्तिका लिखी गई थी जिसे 'सघर्ष' ने चार अको मे छापा)

ससदीय आचरण (जन, सितम्बर 1958, अक 3)

मेरी राजस्थान यात्रा (जन, जुलाई 1959, अक 7)

भारत विभाजन के पापी पुरुष (जन, जुलाई 1959, अक 7)

भारत विभाजन के पापी पुरुष (जन, दिसम्बर 1959, अक 8)

राष्ट्रपति नासिर की विचारधारा (जन, जनवरी 1960)

लोक सभा मे लोहिया (जन, फरवरी 1966, अक 14)

भारत की पलटन (जन, मार्च 1966, पृष्ठ 16)

समता और सम्पन्नता (अप्रैल 1966, पृष्ठ 6)

भारतमाता की विद्रोही सन्ताने (अगस्त 1966, पृष्ठ 3)

समाचार स्वतन्त्र (अगस्त 1966, पृष्ठ 7)

स्वाधीनता के दूध मे कितनी मक्खी (अगस्त 1966, पृष्ठ 38)

हत्यारे का बढता हुआ हाथ (सितम्बर 1966, पृष्ठ 3)

औरते–दो और चौबीस करोड (सितम्बर 1966, पृश्ठ 8)

भारतीय इतिहास लेखन (सितम्बर 1966, पृष्ठ 55)

चार सरकारी बन्दियॉ (नवम्बर 1966 पृष्ठ 28)

विद्यार्थी प्रदर्शन शर्म डर लेकिन कछ भरोसा भी (दिसम्बर 1966 अक 23 पृष्ठ 55

हिन्दी इलाको मे विद्रोह—जन, जनवरी—फरवरी 1967, अक 24

राष्ट्रपति का चुनाव (मई 1967, अक 26)

बजट पराया तन—मन और बेरोक विलासिता, जुलाई 1967, अक 28 पृष्ठ 3

नक्सलवाडी, आसनसोल और कलकत्ता (अगस्त 1967, अक 2 पृष्ठ 3)

गाधी जी का दोष (अक्टूबर 1967, अक 31, पृष्ठ 3)

रूस का घटना क्रम (नवम्बर 1967, अक 32, पृष्ठ 3)

बजट झूठा और पापी (नवम्बर 1967, अंक 32, पृष्ठ 39)

अग्रेजी हटाओ, जनवरी फरवरी 1968, अक 3, पृष्ठ 43

क्रूर हिसा बनाम अहिसा, मई 1968 अक 36, पृष्ठ 27

कच्छ समझौता—एक भविष्यवाणी, मई, 1968, अक 36, पृष्ठ 36

भारत—पाकिस्तान—बुनियादी दृष्टि, मई, 1968, अक 36, पृष्ठ 38

समर्पण से शान्ति नही, युद्ध बढेगा, मई 1968, अक 36, पृष्ठ 39

समाजवादियो के नाम लोहिया की चिट्ठी, जून, 1968,अक 37, पृष्ठ 40

समाजवादियो में चुस्ती कैसे आये, जुलाई 1968, अक 38 पृष्ठ 32

छोटी राजनीति मे क्रान्तिकारिता, अगस्त, 1968, अक 39, पृष्ठ 43

इतिहास चक्र सितम्बर, 1968, अक 40, पृष्ठ 9

इतिहास चक्र, अक्टूबर, 1968, अक 41, पृष्ठ 9

इतिहास चक्र, नवम्बर, 1968, अक 42, पृष्ठ 9

इतिहास चक्र, दिसम्बर, 1968, अक 43, पृष्ठ 9

अग्रेजी कैसे हटे, दिसम्बर, 1968, अक 43, पृष्ठ 34

इतिहास चक्र, जनवरी, फरवरी, 1966, अक 44, पृष्ठ 9

इतिहास चक्र, मार्च, 1969, अक 45, पृष्ठ 9

इतिहास चक्र, अप्रैल, 1969, अक 46 पृष्ठ 9

इतिहास चक्र मई 1969 अक 47 पृष्ठ 9

भारत–पाकिस्तान, मई, 1969, अक 47, पृष्ठ 41

भारत पाक और बगाल, मई, 1969 अक 47, पृष्ठ 43

हिन्दू बनाम हिन्दू, जून, 1969, अक 48, पृष्ठ 3

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान, जुलाई, 1969, अक 49, पृष्ठ 2

ढोगी वादे और असलियत, जुलाई, 1969, अक 49, पृष्ठ 39

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान, अगस्त, 1969, अक 50, पृष्ठ 3

"चित्त जेथा मन शून्य उच्च जेथा शिर", अगस्त, 1969, अक 50, पृष्ठ 36

बैको का राष्ट्रीयकरण, अगस्त, 1969, अक 50, पृष्ठ 44

हिन्दू बनाम हिन्दू, सितम्बर अक्टूबर, 1969, अक 51–52, पृष्ठ 9

ट्रस्टीशिप विधेय, सितम्बर, अक्टूबर, 1969 अक 51–52, पृष्ठ 61

सिविल नाफरमानी की व्यापकता, सितम्बर, अक्टूबर, 1969, अक 51–52, पृष्ठ 65

भूख हडताल , सितम्बर, अक्टूबर, 1969, अक 51–52, पृष्ठ 67

हिन्दू बनाम हिन्दू, नवम्बर, 1969, अक 53, पृष्ठ 3

नर–नारी गैर–बराबरी, नवम्बर, 1969, अक 53, पृष्ठ 47

छोटी मशीन और एशिया मे मार्क्सवाद, दिसम्बर 1969, अक 53, पृष्ठ 97

गाधीवाद सम्पत्ति और सिविल नाफरमानी, जनवरी 1970, अक 54, पृष्ठ 5

उदार दर्शन–उग्र कार्यक्रम, फरवरी, 1970, अक 55, पृष्ठ 9

बिना हथियारो की दुनिया और सात क्रान्तियॉ, 1970, अक 56, पृष्ठ 9

सम्राज्यशाही के पॉच पापो के खिलाफ जनता का सम्मिलित सघर्ष, मार्च–अप्रैल, 1970,अक 56, पृष्ठ 53

कुजात गाधीवाद, मई, 1970,अक 57, पृष्ठ 9

मार्क्सवाद और समाजवाद, जून 1970, अक 58, पृष्ठ 9

मार्क्सवाद और समाजवाद, जुलाई, 1970, अक 59, पृष्ठ 9

सिविल नाफरमानी जुलाई 1970 अक 59 पृष्ठ 42

जाति एक टिप्पणी जलाई 1970 अक 59 पृष्ठ 49

सिविल नाफरमानी एक टिप्पणी, अगस्त, 1970, अक 60, पृष्ठ 9

सोशलिष्ट सिविल नाफरमानी, सितम्बर–अक्टूबर, 1970, अक 61, पृष्ठ 9

दाम और जाति की नाइन्साफी, नवम्बर, 1970, अंक 62, पृष्ठ 9

उर्वसीअ से पत्र, दिसम्बर, 1970, अक 63, पृष्ठ 9

Articles by Dr. Rammanohar Lohia in Mankind

Mankind, Vol. 1, No. 1, August 1956

1 Ram and Krishna and Siva P 52-59.

2 Some Reflections on Internationalism No 2, Sept , P 1-162-179

3 The Meaning of Equality No 4,Nov 1956, P 366-380

4 The Approach to Socialist Planning (Speech delivered at National College Bangalore on 2nd June 1956) No. 4, Nov 1956, P 381-391

5 A Lost Chapter No. 6, January 57, P 553-569

6 Defects of Political Parties in India No 7 Feb 1957, P 666-674

7 Lohia's statement, Hyderabad, 19 Feb 57, No. 9, April 1957, P. 865-867.

8 Documents (Translation of speech in Hindi at Saidraja), April 1957, P 869-871

9 A Call to Truth, Work, Resistance and Character-building, No 12, July 1957, P 1134-1149

10 An Episode in Yoga Vol 2, No. 3, Oct 1957, P 234-246

11 Press Statement Vol 2, No. 2, Sept. 1957, P 161-163

12 Statement on Removal of Statues Vol 2, No 1, Aug 1957, P. 59-61

13 Banish English Vol 2, No 11-12, 1958 June-July, P 1075-1082

14 Questions Before the party and the Nation, April 1958, Vol 2, No 9, P. 839-847

15 Rivers of India April 1958, Vol. 2, No 9, P 847-848

16 The Native and the foreigners in Indian History Vol 2, No 9, April 1958, P 849-852

17. British Capital Indian Capital and Congress Ministers Vol 2, No. 9, P. 852 856

Mankind, Vol II, No 7 to Vol. II, No.1

1 Some Problems of Nation-Building (Press Conf in Hyderabad on 16 Jan 58) Feb 1958, P. 670-673

2 The Loot of the Oil Companies (Statement on 22 Jan 1958) Feb 1958, P 661-663

3 Documents—Lohia in court No 6, Jan 1958, P 561-576

4 correspondence Mankind No 5, Dec 1957, P 501-502

5 On socialist Education and Discipline No 4, Nov 1957, P 376-384

6 Two Speeches of Rammanohar Lohia, Mankind, No.3, Oct. 1957 P. 286-289

7 Lohia's Press Conf No 3, Oct. 1957 P 289-291

8. Documents on socialist Unification in India J P-Lohia Correspondence Mankind, No.3, Oct. 1957, P 247-269

1 Squint Eyed Historian and Cosy Intellectuals Vol 3, No 1, August 1958, P 63-78

2 Women, Harijans And Muslims Vol 2, No 8, March 1958, P 751-763

3 Some Problems of Nation-Building Vol 2, No 7, Feb 1958, P 670-673

Mankind, Vol. 3, No. 7 to Vol. 2 No. 7, Feb. 1959 to Feb 1958

1 Kerala Under Communist Rule I Preconceptions (Statement issued during Kerala visit in Dec 1958) P 621-626

2 For ever, Revolutionary Politics P 616-617

3 More about Alphabet, Language, Instructions, and some oddities P 614-615

4 Indian Alphabets No 6, Jan 1959, P. 508-612

5 Modes of Action No 3,Oct 1958, P 244-246

6 Two Statements Politics of Food Scarcity P 241-243

7 Delhi, A called Delhi Oct. 1958, P 213-223

8 On Schemes of Research At Indian Universities No 2, September 1958, P 133

9 Water Scarcity Vol.3, No 1 Aug. 1958, P 56-58

1 Gyan Chand On Reading Lohia s Whee of H story Vo 1 No 5 Dec 1956 P 7

2 R C Majumdar (Nagpur) On Reading Lohia's statement Vol 2, No 3, October 1957, P 294-295.

Articles by Dr. Rammanohar Lohia in Congress Socialist

1 Ourselves Vol. 1, No. 1, page 2, 29 Sept. 1934

2 Is It Recovery ? Vol 1, No. 8, P 9-11 8th Feb 1936

3 Capitalism Misses The Bus Vol 1, No. 10, P 11-12, 22 Feb 1936

4 The Indian Citizen His Suppressed Personality Vol 1, No 13, P 14 & 18,14 March 1936

5 Socialist Self-Criticism Vol 1, No. 23, P 7-8, 30 may 1936

6 Jawaharlal Nehru's Autobiography Vol 1, No 24, P 16-17 6th June 1936

7 I Hear Anna Marie Hessemer Vol 1, No 36, P. 6 & 16, 29 aug 1936

8 Worker's Education Vol 1, No 44, P 8-9, 24 Oct 1936

9 International Landmarks Vol 1, No 52, P 29-30, 26 Dec 1936

10 The Two Streams Commingle Vol 2, No 23, P 7-8, 12 June 1937

11 Popular Front And French Colonial Policy Vol 2, No 29, P 7-8, 24 July 1937

12 Notes On congress Organisation Vol 2, No. 31, P. 7-9, 7 Aug 1937

13. Jawaharlal On The Frontier Vol 2, No 44, P. 6 & 15-16, 6 Nov 1937

14. Allahabad Army And Old Monuments Vol 2, No 45, P 8-9, 13 Nov. 1937

15 Notes On Education And Culture Vol 2, No 47, P. 7-8, 27 Nov 1937

16 The Rise Of The Indian National Movement Vol 2, No 50, 6 & 15-17, 18 Dec 1937

17. The Constituent Assembly Vol 2, No 51, P. 14-15, 25 Dec 1937

18. The Collapse Of International Morality Vol 3, No 9, P. 147-148, 26 Feb 1938

19 International Balance-Sheet Vol 3, No 10, P 168-169, 5 March 1938

20 The Dilemma Of An Anti-Imperialist Vol 3, No 14, P 247-248, 2 April 1938

From an artic e contributed to the Soc a ist Vanguard of London

21 The Conquest Of Violence Vol 3, No 15, P 275-277, 9 April 1938

22 Jawaharlal Must Answer Vol 3, No 18, P 315-318, 30 April 1938

23 The Russian Trials Vol 3, No 20, P 331-333, 7 May 1938

24 Kripalani Examined The Conquest of Violence 2 Vol 3 No 21, P 367-368, 370, 14 May 1933

25 Kripalani Examined Vol. 3, No 22, P 387-388 & 390, 28 may 1938

26 Kripalani Examined Vol 3, No 23, P 407-408, 4 June 1938

27 Socialism & Democracy 1 Vol 3, No 33, P 6, 13 August 1938

28. Socialism & Democracy 2 Vol 3, No 35, P 3, 27 August 1938

29 socialism & Democracy 3 Vol , No. 36, P 4, 3 Sep 1938

30 Our controversies Vol 3, No 37, P 1 and 11, 10 Sep 1938

31 Socialism & Democracy 4 Vol 3, No 38, P 9, 18 Sep 1938

32 India & Britain's War Vol 3, No 40, P 6 & 7, 2 Oct 1938

33 Colonial Policy Of Socialists & Communists Vol 3, No. 42, P 4 & 10, Oct 1938

34 Echo Of Marching Feet U P in Conference Vol 3, No. 2, P 7 & 2, 8 Ja 1939

35 Indians Born Rebels · How History is Falsified Vol. 4, No 3, P 1 & 11, Jan 1939 (Reproduced from Modern Review)

36 Right & Left Vol 4, No 4, P 6-7, 22 Jan 1939

37 War Resister Vol 4, No. 14, P. 6-7 & 11, 2 April 1939

38 Not an Open Question Vol. 4, No. 15, P 1-2, 9 April 1939

39. Four-Points Basic Unity Vol 4, No. 17, P 5 &7, 23 April 19 (Continuation of Right & Left Published in Vol 4, P 22, Jan 1939)

40 A Plan for War Resistance Vol 4, No 74, P 1 & 9-10, 11 June 1939

41. Congress Should split-Loose And Dangerous Talk Vol 4, No 2 P. 4 & 9, 18 June 1939

42. Problem for congressmen Vol 4, No 26, P. 6-7, 25 June 1939

Articles by Dr. Rammanohar Lohia in Janata

43 ndia & the al Situation The Socialist Approach 23 1947 P 7

44 Partition of Provinces 30 March 1947, P6

45 Socialism & the New Phase 6 April 1947 P 7

46. Caste and the Communal Problem 13 April 1947, P1, 10

47. A Union State, in Bengal A Symposium (Lohia's views on economic democracy), 20 April 1947 P 5

48 The New Challenge 15 June 1947, P 1-2

49 Socialists Ready to Shoulder Responsibility (A Statement) 22 June 1947, P2

50 The Two Dominions Vol. 2, 24 August 1947, No. 30, P7

51. A New Control Policy Vol 2, No. 34, 12 Oct. 1947, P 12-13

52 Principles of Socialist Foreign Policy Vol 3, No. 12, 11 April 1948, P 11

53 Integrate Big States as Provinces Vol 3, No 30, 18 April 1948, P. 12

54 Five Point Programme to Relieve People's Distress in U P Vol 3, No 30, 15 Aug 1948, P 6

55 Two Types of Organization Necessary · New basis for Students Movement Vol 3, No. 31, 22 Aug. 1948, P2

56 Communism Europe's Weapon against Asia Vol 3, No 36, 26 Sept 1948, P 8-9 & 16

57 Address at Delhi State Socialist Convention Vol 3, No 43, 14 Nov 1948, P 5

58 (a) Lohia Committee Report on Indian States, Complete Text Vol 3, No. 43, 14 Nov 1948, P. 8-9 & 11

(b) Further Set up of the States Vol 3, No 43, 14 Nov. 1948, P 11

59 Central Kisan Organisation The Manifesto (Under presidentship of Dr Lohia) Vol 4, No 8, 13 March 1949, P 20

60 Programme for Action-I Vol. 4, No 30, 17 April 1949, P 5-6

61 Programme for Action-II The Structure of the state Vol 4, No 15, 1 may 1949, P7, 12

62 Grain Procurement in U P. Vol 4, No 17, 15 May 1949, P 10-11

63. Between Communist Chaos and Congress Paralysis Vol 4, No 28, 31 July 1949, P10

64 Socialism the only Panacea Vol 4, No 41, 30 Oct 1949, P 1,17

65 Joint Statement of Narendra Dev and Dr Rammanohar Loh a on U P Gover Tactics Vol 4 No 50 1 jan 1950 P 10 16

66 Inside Terror-Stricken Vindhya Vol 5, No 1, 26 jan 1950, P 14-15

67 Rajasthan . A Body without Soul Vol 5, No 3, 5 Feb 1950, P 10, 16

68. Lohia Warns Against Impotent Wrath Vol 5, No 6, 26 Feb 1950, P.2

69 Six Point Programme to End Poverty Vol. 5, No 8, 12 March 1950, P 8-9 (Page 15 Can also be checked for his statement on Pakistan)

70. India and Pakistan Vol. 5, No 9, 19 march 1950, P 5, 14

71 Thirteen point Programme to End Poverty Vol 5, No 16, 7 may 1950, P 5

72. Intoduction to Foundation for World Government Vol 5, No 16, 7 May 1950, P 7, 15

73 five Deadly Foes of the Socialist Party Negativism, Externalism, Electionism, Inserrectionism and Groupism Vol 5, No. 18, 21 May 1950, P 8-9

74 Lohia Commission's Findings on Champaran Vol. 5, No 17, May 21, 1950, P 8-9

75 Third Force and World View Report on Foreign Affairs Vol 5, No 27, 23 July 1950, P 8-11

76 Another Phase of Invited suffering essential to avoid famine on Acquire Democratic Maturity vol 5, No 31, 20 August 1950, P 15

77 Hindu Versus Hindu Vol 5, No 36, September 24, 1950, P 5-6

78 India and pakistan–Two Nations or One Vol 5, No 41, 29 October, 1950, P. 5-6

79 India and Pakistan–The Kashmir Tangle Vol. 5, No 42, 5 November, 1950, P. 5-6

80 Chinese Invasian of Tibet Vol 5, No 42, 5 November, 1950, P 14

81 India and Pakistan The Supreme Weapon Vol 5, No. 43, 12 November, 1950 P 5-6

82 Third Force Alone Can Avert War Vol 5, No 48, 17 December 1950, P 5-6 14

83 Socialism Must Achieve a New Balance Vol 6, No 1, 16th January 1951, P 4, 8

84 The Talk Before Nepal Congress Vol 6, No.1. 26 January 1951, P 19-20

85 Neutralism in nternational Politics Vo 6 No 3 11 February 1951 P 1

86 Save National Flag from Dishonour Vol 6, No 6, 4 March, 1951, P4

87 Lohia's Address at Calcuta Khoj Parishad, World Govt only Hope Vol 6, No. 14, 29 April, 1951 P 3

88 Famine and Murders (Press Conference in Bombay on 2 may) Vol 6, No 15, May 6, 1951, P 1

Dr Lohia's Speech at May Day Rally, P 1

89 People's Charter Aims at Reviving the Nation Materially and Spiritually Vol 6, No 19, June 3, 1951, P1

90 Reinforcing a constructive Foreign Policy of Building the New World Vol 6, No. 19, June 3, 1951, P5

91 Kagod Incident Has Brought out the Bankruptcy of Govt 's Agrarian Policy Vol 6, No 22, 24 June 1951, P 12

92 Equality of all National Essential for World Peace Vol 6, No 28, 12 August, 1951, P 5.

93 Yugoslavia of today Vol 6, No 30, 26 August, 1951, P 6-7

94 A Socialist Approach to our Land Problem Vol 6, No. 31, September 2, 1951, P5

95 All Excitement and No Accomplishment that is Nehru's Foreign Policy Vol 6, No 37, 14 October, 1951, P 3

96 Britain Must Quit (Press Conference) Vol 6, No 42, 18 November, 1951, P 3

97 Foreign Policy Party Versus Government Vol 6 No 45, December 9, 1951, P 1-2

98 Concerning Our Attitude Towards Red China Vol. 6, No 45, December 9, 1951, P 3

99 Joint Statement by Dr Lohia and prof Djumblatte Vol. 6, No 46, Dec 16, 1951, P 12

100 A five Point Foreign Policy for India Vol 6, No 47, 23 December, 1951, P 6-7

101. The Driving Forces of History Dr Lohia's Analysis Vol 7, No 1, 20 July, 1952, P 2

102 Satyagraha is Socialist's Effective Weapon to Wield Vol. 7, No 2, 27 July, 1951, P 1, 11

103 Opinions Rejoinder to Article

a History and Dr Loh a 2 M Balakrishnan Vo 7 No.2 27 July 1952 P 9

(b) History and Dr Lohia–1. Kishan Patnaik Vol 7, No 1 20 July P 9

(c) History and Dr Lohia–3, A K Mukherji Vol 7, No 3, August, p 9

(d) History and Dr Lohia– Readers Take the Floor Vol 7, No 5 August, 1952, P9

104. The Arab World is Potentially of the Third Camp Vol 7, N 7 September, 1952, P 5, 9

105 From Merger to Action Vol 7, No 9, September 14, 1952, P 1, 1

106 Marathon Biography of Mahatma Vol 7, No 13, October 12, 195

107 I am Anti-Coalitionist Vol 8, No. 15, 10 May, 1953, P6

108 The Mind of Dr R M Lohia Vol 8, No 18, 31 May, 1953, P.5

109 Future of Kashmir Vol 8, No 25, 19 July 1953, P5

110 The Policy Commission Vol 8, No 26, July 26, 1953, P5

111 Letter from Kashmir Vol 7, No 29, 16 August, 1953, P 3-4 and

112 Isolate the Reds Vol 7, No 30, 23 August, 1953, P5

113 *Azamgarh Land Satyagrah Vol 7, No 32*, September 6, 1953, I

114. *Dal Singar Dubey · Hero of Ghazipur Vol 7, No 34, 20 Sept* P. 7-8

115. India's Foreign Policy Vol 9, No. 2, 31 January, 1954, P4

116 Radicalisation of Indian Politics Vol 9, No 3, Feb. 7, 1954, P4

117. theory of Equi-Distance Vol 9, No 11, 4 April, 1957, P9

118 *Vol 9*, No *12*, 12 April, 1954, P (Not clear on microfilm)

119 *The UNO Charter Vol 9*, No. 14, *25* April, 1954, P4

120 Vindhya *Affairs Vol* 9, *No. 14, 25 April, 1952, P 5*

121 Revolution, History and Fable Vol. 9, No. 15, May 1, 1954, P6

122. The Emergence of Fascist Police Stare in Uttar Pradesh vol.9, N May 23, 1954, P5

123 Imperialism · communist and Capitalist Vol 9, No. 22, 20 June, 1' 8, 20 (Rammanohar Lohia & V Kyaw Nyein)

124. Changes in Administration of Community Projects Vol 9 No July 1954 P 5 Missing)

125 Letters to Party Activities Vol 9, No 26, 18 July, 1954, P6, 18 and 19

126 A letter to the President of the Rupublic of India Vol 9, No 31, 22 August, 1954, P 5, 18

127. Challenges Validity of Special Powers Act Vol 9, No 32, 29 August, 1954, P 4

128 Congress Vol. No 33, Sept 5, 1954, P 1,4

129 The Special Convention Vol 9, No 41-42, November 7, 1954, P6 Also see Vol. 10, No 1, 26 Jan, 1955 Vol 10, No 17, May 13, 1955

130 Madhu Limaye's Suspension Vol 10, No 11, 3 April, 1955, P 4

131. Letter to the Vice-President of the Rupublic of India Vol 10, No 15, May 1, 1955 P 3-4

Articles by Dr. Rammanohar Lohia in Mankind

132. The Meaning of Equality Vol 1, No 9, Nov 1956, P 366

133 The Approach to Socialist Planning P 381

134 A Lost Chapter Vol 1, No. 6, January 1957

135. The General Election in India Vol 1, No 10, May 1957

136 Guilty Men of India's Partition vol 3, No. 11, June 1959

137 Guilty Men of India's Partition Vol 4, No 1, August, 1959, P 33-48

138 Right to Unrestricted Travel Flouted by India Govt Vol 4, No 2, Sept, 1959, P56-58

139 Correspondence Between Rajaji and Lahia Vol 4, No 1, August, 1959, P 51-56

140 The Unity of the People of India vol. 4, No 1, August, 1959, P 49-51

141 British Election and the Future of Socialism Vol 4, No 4, Nov. 1959, P 36-38

142 A Note on India's Ruling Classes Vol 4, No. 4, November, 1959, P 31-35

143 Gandhism and Socialism Vol 4, No. 8, March 1960, P 41-55

144. Communications Vol. 4, No. 8, March, 1960, P. 96

145. India, China, Congressism and Communism Vol 4, No 6, January 1960, P 23-41

146 nterview to PT On U Vol 4 No 5 December 1959 P61

147 English and People's Languages in India Vol 4, No 5, December, 1959 P 15-28

Articles by Dr. Rammanohar Lohia in National Herald

1 India and Britain's War Way to combat designs of important 12 January 1939

2 Unty in Congress ranks, Presidential election and after, 5 march 1939

3. Four-Point Basic Unity of Congress, 16 March 1939

4. War-Resister, 28 March 1939 Also published in Congress Socialist, 2 April 1939

5 A Plan For War Resistance 14 June 1939. (Also published in Congress Socialist, 11 June 1939)

6 A Plan for War Resistance Part 3, 11 June 1939

7 Dr Lohia charged with sedition, 7 July 1939 (From a correspondent Cross-examination of a public prosecutor)

8 Anti-Imperialist Conference 27 September 1939

9 Mahatma Gandhi–A Tribute of no Importance 15 October 1939

10 The Nation and Communalism 9 November 1939

11 To Hell with Arms 10 November 1939

12 Hindu Muslim Unity 19 November 1939

13 Indian Economy in Figures, 18 January 1940

14 Indian Agriculture in Figures, 20 January 1940

15 Education and Literacy, 26 January 1940

16 Girls in Conference, 30 January 1940

17. An Independence Day manifesto, 18 February 1940

18 India's Public Health and Nutrition, 24 February, 1940

19 Congress conception of India's Freedom, 15 march, 1940

20. Congress Conception of India's Freedom, 16 March, 1940

21 Congress Conception of Freedom, 19 March, 1940

22 The Briton is Rude, 4 May, 1940

23 Opposition to Gandhiji, 22 May, 1940

24 Non-Violence–The Only Salvation' Statement before the Court 17 July. 1940

लोहिया साहित्य

1 अन्न समस्या–हैदराबाद, नवहिन्द प्रकाशन, 1963

2 आजाद हिन्दुस्तान के नये रुझान–लोहिया समता विद्यालय न्यास, प्रकाशन विभाग, 1968

3 133 लेखको के कुछ उत्तर

4 काचन मुक्ति

5 कृष्ण–लो स.वि. न, 1969

6 कृष्णा और गोदावरी के इलाके म

7 जर्मन सोशलिस्ट पार्टी–न प्र, 1962

8 जाति प्रथा–न प्र, 1964

9 नरम और गरम पथ–लो स वि न्, 1969

10 सगुण और निर्गुण–लो स वि न्, 1963

11 पाकिस्तान में पलटनी शासन–न.प्र, 1963

12 भारत, चीन और उत्तरी सीमाएँ– न.म, 1963

13 भारत मे समाजवाद–न प्र, 1968

14 भाषा–न प्र, 1965

15 मर्यादित, उन्मुक्त और असीमित व्यक्तित्व और रामायण मेला

16 समलक्ष्य–समबोध–लो स वि न्, 1969

17 समाजवाद की राजनीति–न प्र 1968

18 समाजवाद की अर्थनीति

19 समाजवादी आन्दोलन का इतिहास–लो.स वि न्, 1969

20 समाजवादी एकता–समाजवादी प्रकाशन

21 सरकार से सहयोग और समाजवादी एकता–न प्र, 1962

22 सरकारी मठी और कुजात गाधीवाद न प्र 1963

23 हिन्द और न प्र

24 देश गरमाओ—लो स वि न्, 1970

25 समदृष्टि—लो स वि न्, 1970

26 क्रान्ति के लिए सगठन—न प्र, 1963

27 देश—विदेश नीति, कुछ पहलू—लो स वि न्, 1970

28 अध्यक्षीय भाषण (सोशलिस्ट पार्टी स्थापना—सम्मेलन)

29 हिन्दू बनाम हिन्दू

30 इतिहास चक्र – इलाहाबाद लोक भारती प्रकाशन, 1977

31 राम, कृष्ण ओर शिव—लो स वि न्, 1969

32 भारत विभाजन के अपराधी—लो स वि न्., 1970

33 राजस्थान और गुजरात के दौरे के कुछ अनुभव—न प्र, 1962

34. 25,000 रुपये रोज

35 सात क्रान्तियॉ—लो स वि न्, 1973

36 हिन्दू पाक युद्ध और एका—लो स वि न्, 1970

37 राग, जिम्मेदारी की भावना, अनुपात की समझ—सो स वि न्, 1971

38 निराशा के कर्त्तव्य—लो स वि न्, 1973

39 निजी ओर सार्वजनिक क्षेत्र—लो स वि न्, 1973

40 धर्म पर एक दृष्टि—लो स वि न्, 1970

41 खर्च पर सीमा

42 क्रान्तिकरण—लो स वि न्, 1973

43 सुधरो अथवा टूटो

44 सत्याग्रह

45 समाजवाद हिन्दूवाद

46 समाजवादी एकता (लोहिया—जयप्रकाश पत्र—व्यवहार)

47. सिविल नाफरमानी सिद्धान्त और अमल—सोशलिस्ट पार्टी

48 सच कर्म प्रतिकार और चरित्र—निर्माण ——— हैदराबाद, समाजवादी प्रकाशन

49 लोहिया के विचार ओंकार शरद लो भा प्र 1969

50 लोकसभा मे लोहिया (भाग 1 से 16 तक)–लो स वि न् 1971–75

51 सघर्ष की ओर-प्रकाशक, सोशलिस्ट पार्टी (बिहार)

52 स्वराज ? कयो और कैसे

53 किसान समस्या और चौखम्भा राज्य

54 द्रोपदी या सावित्री–समाजवादी प्रकाशन, वाराणसी

55 पार्टी सगठन का नया रुप–लखनऊ, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी

56 समाजवादी एकता, राममनोहर लोहिया की टिप्पणी नारायण-लोहिया पत्र-व्यवहार, अखबारों से राममनोहर लोहिया का भाषण, हैदराबाद समाजवादी प्रकाशन–1957

57 उत्तर प्रदेश और बिहार के एक दौरे के कुछ अनुभव-हैदराबाद, नवहिन्द प्रकाशन–1962

Books written by Dr. Rammanohar Lohia

1 A Policy for the War and Peace in the Himalayas, Published by George Fernandes, 204, Charni Road, Bombay-4

2 Action in Goa August Publication House, 1947

3 Aspects of Socialist Policy Bombay, Socialist Party Publication, 1952

4 Caste System Navhind Prakashan, Hyderabad, 1964

5 Foreign Policy P.C. Dwadash Shreni & co (P) Ltd, Aligarh

6 Fragments of a World Mind Maitrayani, 19C, Rajendralal St , Calcutta-6

7 Guilty Men of India's Partition, Hyderabad, Rammanohar Lohia Samta Vidyalaya Nyas, Publication Department, 1970

8 India, China and Northern Frontiers navhind Prakashan, Hyderabad, 1963

9 Indians in Foreign Lands, Allahabad, All India Congress Committee, 1938

10 Interval During Politics, Navhind Prakashan 831, Begum Bazar, Hyderabad

11 Language, Hyderabad, Navhind, 1966

12 Letters to Party Activists Bombay, Praja Socialist Party, 1954

13 Letters to Socialists Calcutta, D P Agarwala, 35, Gora Chand Road

14 Lohia Speaks Madras Young World

15 Marx, Gandhi and socialism, Hyderabad, Rammanohar Lohia Samata Vidyalaya Nyas, Publication Deptt 1978

16 Mystery of Sir Stafford Cripps, Padma Publications Ltd , Bombay, 1942

17 Note and Comments Hyderabad, Rammanohar Lohia Samata Vidyalaya Nyas, 1972-77 Ed by Badrivishal Pitti, 2 volumes

18 On the Move, Progressive Publishing House, Ara Kashn Road, New Delhi, 1951

19 Our Choice Two Speeches, Hyderabad, P S P 1955

20 Presidential Address to the Special Convention of the Socialist Party Pachmarhi (M P), 23rd May, 1952 Western Printers & Publishers Hamam Street, Fort, Bombay

21 Presidential Address, Dec 28, 1955; Socialist Party Foundation Conference, Hyderabad, Hyderabad Commercial Printing Press

22 Programme to End Poverty Published by Madhu Limaye for the Socialist Party, National House, Bombay

23 Rebels Must Advance, Inquilab Publications, January, 1944

24 Report Presented to the 8th national Conference madras 8th to 12th July 1950

25 Rupees Twenty Five Thousand a Day Navahind Prakashan, Hyderabad 1963

26 Socialist Unity Hyderabad, Samajwadi Prakashan

27 Rammanohar Lohia and J P. Narayan, Talks A Flashback New Delhi Praja Socialist Party, 1957

28 Third Camp in World Affairs, Published by Madhu Limaye for the Socialist Party, National House, Bombay

29 Three Letters, Bangalore, Socialist Party

30 Twentieth Russian Congress And Indian Communists Published by Himmat Jhaveri, 204, New Charni Road, Bombay

31 Wheel of History, Hyderabad, Rammanohar Lohia Samata Vidyalaya Nyas, Publication Deptt 1974

32 Will to Power And Other Writings, Navhind Prakashan, 831, Begum Bazar, Hyderabad, 1956

Books on Dr. Rammanohar Lohia

1 Arumugam M Socialist Thought in India The Contribution of Ram[illegible]ar Lohia Sterling Publishers Pvt Ltd New Delhi 1978

2 Mehrotra (N C) Lohia–A Study Atma Ram & Sons, Kashmere Gate, Delhi, 1978

3 Mitra, Roma–Lohia Through Letters Roma Mitra, E-163, Amar Colony, Lajpat Nagar New Delhi-110024

4 Olympus-Lohia in his own Words, May 1977 Editor-Keshav Rao Jadhav

5 Onkar Sharad–Lohia Lucknow Prakashan Kendra, 1972

6 Varma (Rajni Kant)–Lohia, Allahabad, Rashmi Prakashan, 1969

7. Wofford (Harris)–Lohia and America Meet, Madras, Snehlata Ram Reddy, 1961

8 Yusuf Meherally · The Price of Liberty Dr Lohia's letter to Prof Laski National Information & Publication Ltd. National House, Bombay, 1948

डॉ लोहिया पर पुस्तके

1 लोहिया–सिद्धान्त और कर्म, इन्दुमति केलकर, नवहिन्द प्रकाशन, 14–7–71, बेगम बाजार , हैदराबाद

2 डॉ राममनोहर लोहिया के आर्थिक, राजनीतिक एव सामाजिक विचार कृष्ण नन्दन ठाकुर, एस चन्द ऐण्ड कम्पनी लिमिटेड रामनगर, नई दिल्ली–110055

3 समता का दर्शन (लोहिया–एक विश्लेषण) सम्पादक गणेश मन्त्री, समता अध्ययन केन्द्र, गोरे गॉव, बम्बई–62

4 लोहिया–ओंकार शरद, लोक भारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गाधी मार्ग, इलाहाबाद–1

5 लोहिया–एक असमाप्त जीवनी, ओम प्रकाश दीपक–समता अध्ययन न्यास, बम्बई, 1978

6 भारत मात, धरती मात–ओंकार शरद, ल प्र –1983

7 लोहिया–ओंकार शरद, राज रजना प्रकाशन–1967

8 लोहिया–ओंकार शरद, लखनऊ प्रकाशन केन्द्र–1971

9 डॉ राममनोहर लोहिया भारत के गौरव, निर्भीक नेता तथा क्रान्तिकारी विचारक की जीवनी, राजेन्द्रमोहन भटनागर, दिल्ली, किताब घर–1978

10 लोहिया का जीवन दर्शन–राजेन्द्रमोहन भटनागर–किताब घर, दिल्ली–1979

11 समग्र लोहिया–राजेन्द्र मोहन भटनागर–किताब घर–1982

12 डॉ लोहिया अर्थ दर्शन डॉ शर्मा चित्रा प्रकाशन कानपुर 1979

13 डॉ लोहिया एक झलक (उर्दू), श्री सिब्ते मुहम्मद नकवी, अकबरपुर, फैजाबाद

14 लोहिया बहुआयामी व्यक्तित्व मुख्तार अनीस विजय दीक्षित 3/297 विशाल खण्ड गोमती नगर लखनऊ।

डा. राममनोहर लोहिया : जीवनपट

जन्म	23 मार्च 1910, अकबरपुर, जिला फैजाबाद, उत्तर प्रदेश
पिता	श्री हीरालाल
माता	चद्री
खानदान	व्यापारी, अनेक पीढियो से लोहे का व्यापार चला आ रहा था। दादाजी और दादाजी के भाई काग्रेस प्रेमी, पिताजी काग्रेस के कार्यकर्त्ता, सविनय अवज्ञा सत्याग्रह आदोलन (1930–32) मे गिरफ्तारी
प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा	अकबरपुर और बबई में, इसी अवधि मे पडित जवहरलाल नेहरू के अकबरपुर मे अपने घर मे नजदीक से दर्शन, बबई मे महात्मा गाधी के भी नजदीक से दर्शन, 1925 मे मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण
महाविद्यालयीन शिक्षा	काशी और कलकत्ते मे, गौहाटी के काग्रेस अधिवेशन में सहयोग, कलकत्ते मे विद्यार्थी संघटना का कार्य–अखिल बंगाल विद्यार्थी परिषद, नेहरू अध्यक्ष, राममनोहर विषयनियामक समिति के सदस्य, नेहरू से निकट सपर्क, 1929 मे बी ए (ऑनर्स) प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण
उच्च शिक्षा	बर्लिन (जर्मनी) के हम्बोल्ट विश्वविद्यालय में 1929 मे अर्थशास्त्र मे डाक्टरेट की उपाधि के अध्ययन के लिए प्रवेश, स्वातंत्र्यवादी भारतीय विद्यार्थी संघटन में सक्रिय, प्रिटन जिनेवा के लीग आफ नेशन्स के अधिवेशन मे ब्रिटिश विरोधी निषेध प्रदर्शन, 1933 मे पीएच डी उपाधि प्राप्त की और मातृभूमि मे लौट आए। जब जर्मनी में थे तभी आजीवन राजनीति के क्षेत्र में काम करने का निर्णय

1933–34	कलकत्ता के विद्यार्थी जगत मे कार्य किया।
1934	कांग्रेस समाजवादी पक्ष की सस्थापना में सहयोग और पक्ष की राष्ट्रीय कार्यकारी समिति पर सदस्य के नाते नियुक्ति।
1934 से 36–37	कलकत्ता के विद्यार्थी और मजदूर आदोलनों में सक्रिय, 'कांग्रेस सोशलिस्ट' के सपादक।
1936 से 37–39	इलाहाबाद मे अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के विदेश विभाग के प्रमुख के नाते काम। 1937 में केंद्रीय असेबली के चुनावो में कांग्रेस के उम्मीदवार के नाते चयन, परतु चुनाव लड़ना स्वीकर नही किया।
	उत्तर प्रदेश मे कांग्रेस के कार्यक्रमो में सहयोग, नेहरू से निकटता और स्नेह।
1936–37 से 1940–41	अधिकाशत कलकत्ता मे पक्ष कार्य।
1937 से 1948	गाधीजी के निकट सपर्क मे।
1938–1942	द्वितीय महायुद्ध के मसले पर भारत की नीति क्या रहे, इस मुद्दे पर नेहरु के साथ मतभेद।
	सामूहिक सत्याग्रह के लिए गाधीजी के पास सतत और साग्रह प्रतिपादन।
मई 1939	युद्ध विरोधी प्रचार के लिए युद्ध पूर्व गिरफ्तारी निर्दोष पाकर मुक्ति।
7 जून 1940	युद्ध विरोधी प्रचार के लिए युद्धकाल में दूसरी गिरफ्तारी, दो साल की सजा, और डेढ वर्ष के बाद रिहाई।
8 अगस्त 1942	बंबई के प्रसिद्ध 'भारत-छोडों' –अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के अधिवेशन में प्रतिनिधि के नाते उपस्थित, प्रस्ताव पर भाषण।
9 अगस्त 1942	भूमिगत, बंबई और कलकत्ता मे कांग्रेस गुप्त रेडियो केंद्रों की स्थापना में नेतृत्व और गुप्त आकाशवाणी केद्र से कई भाषण दिए, अनेक भूमिगत पत्रको और पुस्तिकाओ का लेखन— देशभर में गुप्त के गठन

मई 1943	ब्रिटिश भारत सरकार के आदेश पर नेपाल सरकार ने नेपाल मे लोहिया और जयप्रकाश को गिरफ्तार किया। क्रातिकारियो के गुप्त दल ने मुक्त किया।
10 मई 1944	इक्कीस महीनो को भूमिगत कार्रवाईयो के बाद बबई में गिरफ्तारी, पहले लाहौर मे, फिर आगरे मे स्थानबद्धता। लाहौर के जेल मे अमानुषिक यत्रणाएँ। पिताजी का निधन, छुट्टी पाकर जेल के बाहर आने से इनकार, चौबीस महीनो के बाद जून 1946 मे रिहाई।
जून 1946	काग्रेस के महामत्री पद का भार उठाने की नेहरू की विनती लोहिया का मना करना सत्तारूढ काग्रेस नेताओं और काग्रेस सघटना के पारस्परिक सबधो को लेकर नेहरू के साथ मतभेद। अन्य मुद्दो पर भी मतभेद होने लगे।
18 जून 1946	मडगॉव–गोवा मे मनाही-हुक्म को तोडकर प्रकट सभा, गोवा सत्याग्रह आदोलन का शुभारभ, गिरफ्तारी और दूसरे दिन रिहाई।
29 सितबर 1946	मनाही हुक्म को तोडकर गोवा में प्रवेश, गिरफ्तारी, नौ दिन के बाद रिहाई।
1946–47	लोहिया से प्रेरणा पाकर नेपाल कोग्रेस की स्थापना हुई, नेपाली जनता की मांगो का प्रचार करने के लिए दार्जिलिग मे गिरफ्तारी और तुरत रिहाई।
16 अगस्त 1946	चटगॉव, पूर्व बगाल–मुस्लिम लीग के गढ मे प्रकट सभा, जान से मारने की लीग के गुडो की धमकी।
1946–47	विभाजन से पहले और बाद मे हिदू–मुस्लिम दगो मे गाधीजी के साथ कलकत्ता, दिल्ली और कुछ दिनों के लिए नोआखाली में शाति प्रस्थापना के काम में जुटे रहे।
फरवरी 1947 :	काग्रेस समाजवादी पक्ष के कानपुर अधिवेशन के अध्यक्ष।
जून 1947	विभाजन के सबध में अतिम निर्णय के लिए

		आयोजित कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक मे लोहिया और जयप्रकाश आमत्रित सदस्य के नाते उपस्थित, विभाजन का दोनो ने सख्त विरोध किया।
29 जनवरी 1948		गाधी जी से आखिरी भेट।
30 जनवरी 1948		गॉधीजी की हत्या।
मार्च 1948	:	काग्रेस समाजवादी पक्ष का काग्रेस-त्याग का निर्णय, लोहिया ने काग्रेस छोड दी।
1949	:	उत्तर भारत की रियासतो की रैयत के सघर्ष का नेतृत्व।
मई 1949		दिल्ली मे 'नेपाल दिवस' के अवसर पर किए गए प्रदर्शन का नेतृत्व, गिरफ्तारी, स्वाधीन भारत मे पहली बार कैद, लगभग डेढ महीने के बाद रिहाई।
सितबर 1949		राजनीतिक नेता के नाते पहली बार विदेश यात्रा, स्टॉक होम मे आयोजित विश्व सरकार सम्मेलन मे उपस्थिति।
जनवरी 1950	:	रीवा (मध्य प्रदेश) के रियासत के सघर्ष मे गिरफ्तारी और मुक्ति।
फरवरी 1950		हिंद किसान पचायत के प्रथम अधिवेशन--(रीवा) के अध्यक्ष।
जून 1951		कागोडू--कर्नाटक मे किसान सत्याग्रह के नेतृत्व के कारण गिरफ्तारी, नौ दिनो के बाद रिहाई।
जुलाई 1951		45 दिनो की अवधि की दूसरी बार विदेश यात्रा, फ्रैंकफर्ट (जर्मनी) में आयोजित अतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन मे भारत के प्रतिनिधि के नाते उपस्थिति, बाद मे यूगोस्लाविया, जापान और अमेरिका का दौरा, अमेरिका में आइन्स्टिन से भेट।
मार्च 1952		लोहिया के प्रयत्नो से एशियाई देशो के समाजवादियों का पहला अधिवेशन, एशियाई समाजवादी सघटना स्थापित करने का निर्णय
1952		पहले सार्वत्रिक चुनाव

मई 1952 — सार्वत्रिक चुनावो में समाजवादी पक्ष की हार की पृष्ठभूमि पर पचमढी (मध्य प्रदेश) में पक्ष का अधिवेशन, लोहिया अध्यक्ष थे।

सितंबर 1952 — समाजवादी पक्ष और आचार्य कृपलानी के कृषक–मजदूर प्रजा पक्ष का विलीनीकरण और प्रजा समाजवादी पक्ष की स्थापना।

फरवरी 1953 — कांग्रेस के साथ सहयोग के लिए नेहरू-जयप्रकाश भेट और बातचीत, लोहिया का सहयोग के लिए विरोध।

जून 1953 — प्रजा समाजवादी पक्ष का बैतुल (मध्य प्रदेश) में कांग्रेस के साथ सहयोग के प्रश्न पर निर्णय करने के लिए विशेष अधिवेशन।

दिसबर 1953 — इलाहाबाद मे प्रजा समाजवादी पक्ष का प्रथम अधिवेशन, पक्ष के महामंत्री पद पर लोहिया का चयन।

जुलाई 1954 — उत्तर प्रदेश मे नहर पानी लगान मे वृद्धि के विरोध मे प्रजा समाजवादी पक्ष के आदोलन का नेतृत्व, गिरफ्तारी, सत्याग्रह के प्रचार के लिए अधिकार को प्रस्थापित करने के लिए इलाहाबाद उच्च न्यायालय मे मामला दायर किया था, लोहिया की जीत, दो महीनों के बाद रिहाई।

अगस्त 1954 — मुख्यमत्री पिले की त्रावणकोर–कोचिन की प्रजा समाजवादी सरकार ने नि शस्त्र नागरिकों पर गोली चलाई थी कुछ लोगो की मौत हुई थी, लोहिया ने जेल से ही महामत्री के नाते पिले सरकार को सुझाव दिया कि वह इस्तीफा दे, परंतु पिले सरकार ने सुझाव नहीं माना, इसलिए लोहिया ने महामत्री पद से त्याग पत्र दिया।

जनवरी 1955 : कांग्रेस ने आवडी (तमिलनाडु) अधिवेशन मे अपना उद्देश्य समाजवादी समाज रचना घोषित किया, अशोक मेहता की ओर से धोषणा का स्वागत और सहयोग के लिए उत्सुकता प्रदर्शित की गई। अशोक मेहता के प्रस्ताव का लोहिया द्वारा तीव्र विरोध मधु लिमये ने अशोक मेहता

	के विरोध मे प्रकट तौर पर अपना मत व्यक्त किया। लिमये का पक्ष--सदस्यत्व स्थगित रखा गया, लोहिया ने इसका भी निषेध किया।
अप्रैल 1955	मणिपुर आदोलन के कारण गिरफ्तारी, कुछ दिनो बाद रिहाई।
जून 1955	प्रजा समाजवादी पक्ष का आतरिक कलह अपनी चरम सीमा पर पहुँचा, लोहिया का सदस्यत्व भी रद्द किया गया।
दिसबर 1955	लोहिया के नेतृत्व में समाजवादी पक्ष की स्थापना, हैदराबाद मे अधिवेशन, लोहिया अध्यक्ष थे।
1957	दूसरे सार्वत्रिक चुनाव, लोहिया चंकिया चदौली (उत्तर प्रदेश) से लोक सभा के लिए उम्मीदवार थे और चुनाव हार गये थे।
1957	जयप्रकाश के नेतृत्व मे प्रजा समाजवादी और समाजवादी पक्षो के ऐक्य के लिए प्रयास, लोहिया का भी सहयोग।
नवबर 1957	समाजवादी पक्ष की आरे से अखिल भारतीय स्तर पर सत्याग्रह, लखनऊ में लोहिया की गिरफ्तारी, गैरकानूनी तरीके से हिरासत मे बद किए जाने के विरोध मे उच्च न्यायालय मे आवेदन, फिर रिहाई।
नवबर 1958	सीमा प्रवेश पर पाबंदी थी, इसके विरोध मे उर्वसीयम (नेफा) सीमा पर सत्याग्रह, गिरफ्तारी और मुक्ति भी।
नवबर 1959	उर्वसीयम मे प्रवेश का पुन प्रयत्न, पुन गिरफ्तारी और पुन रिहाई।
1960	कानपुर के सरकारी सर्किट हाउस मे रहने के लिए मनाही, इसके विरोध में सत्याग्रह। सौ रुपयो का दड, दड भरने से इनकार।
1961	विश्व रामायण मेले के आयोजन का प्रयास।
नवबर दिसंबर 1961	तीसरी बार विदेश यात्रा अथेन्स (ग्रीस) में आयोजित विश्व शाति परिषद में सहभागी

	प्रदेश) लोकसभा चुनाव क्षेत्र से नेहरू के विरोध मे चुनाव लडा, हार हुई।
1963	चीनी आक्रमण मे उपरात भारत–चीन सीमा प्रदेश का दौरा, गिरफ्तारी और मुक्ति।
	उपचुनाव मे लोकसभा के फर्रुखाबाद निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित।
1964	चौथी बार दो महीनो के लिए विदेश यात्रा, जैक्सन (मिसीसिपी राज्य–अमेरिका) मे वाशिक पक्षपात के विरोध मे सत्याग्रह।
1965	'पाचवी बार विदेश यात्रा, मधु लिमये के साथ जर्मनी, रूस और काबुल की यात्रा, सरहदी गाधी से भेट।
1965	कच्छ–पाक सीमा का दौरा।
अगस्त 1965	भुखमरी विरोधी आदोलन में गैरकानूनी गिरफ्तारी, सर्वोच्च न्यायालय की ओर से रिहाई।
जुलाई 1966	'उत्तर प्रदेश बद' के काड के सिलसिले मे कानपुर मे गिरफ्तारी।
नवबर 1966	दिल्ली के विद्यार्थियों की हडताल के प्रसग मे गिरफ्तारी, सर्वोच्च न्यायालय मे गुहार, फिर रिहाई।
1967	चौथे सार्वत्रिक चुनाव, 'काग्रेस हटाओ, देश बचाओ' का नारा कन्नौज (उत्तर प्रदेश) से ससद के लिए विजयी।
29 सितबर 1967	दिल्ली के विलिग्टन अस्पताल मे (वर्तमान नाम राममनोहर लोहिया अस्पताल) प्रोस्टेट ग्लैंड की शल्य क्रिया के लिए पहुँचे।
12 अक्टूबर 1967	रात एक वजकर पाच मिनट पर देहावसानस, इदिरा सरकार और परवर्ती जनता सरकार की ओर से नियुक्त जाच समिति के निष्कर्षों के मुताबिक रोगाणुविनाशयक व्यवस्था के न होने तथा डाक्टरो और अधिकारियो की लापरवाही और बेफिक्री के कारण मृत्यु, विद्युतदाहिनी मे बिना किसी धार्मिक विधियो के दहन किया गया, ससद मे श्रद्धाजलि और उस दिन का काम काज स्थगित कर दिया गया



पत्राचार

लोहिया की रिहाई के लिए वायसराय को गाँधीजी का पत्र

(कैबिनेट मिशन की घोषणा के पहले से ही गॉधीजी राजनैतिक बदियो जिनमे डॉ राममनोहर लोहिया भी थे, की रिहाई के बारे मे चुपचाप कोशिश कर रहे थे। नीचे दिए गए पत्र इससे सबधित हैं।)

खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर (कलकत्ता के निकट)
18 दिसम्बर, 1945

प्रिय श्री एबल,

डॉ राममनोहर लोहिया के साथ तथाकथित दुर्व्यवहार से संबधित पत्र-व्यवहार के क्रम मे इस समय डॉ लोहिया द्वारा अपने कानूनी सलाहकार को दिए गए वक्तव्य की प्रतिलिपि जो आपने चाही है, भेजने की स्थिति मे हूँ।

आपका सुहृद
एम के. गॉधी

श्री जी ई बी एबल
आई सी एस
माननीय वायसराय के निजी सचिव,
वायसराय हाऊस, नई दिल्ली।

अपने वकील को दिया गया लोहिया का वक्तव्य

पजाब हाईकोर्ट को 13 दिसम्बर, 1944 और 19 जनवरी, 1945 को दिए गए आवेदन पत्र मे मैने लाहौर किले मे अपनी नजरबदी का सक्षिप्त विवरण दिया है। उसे मै यहॉ सक्षेप मे और जल्दी मे कुछ घटनाओ के साथ दोहराना चाहूँगा। इसमे मैं कुछ नाम व तारीखे भी जोडूँगा। यद्यपि यह मेरा पूरा बयान नही हे। लाहौर किले के अत्यत क्रूर पक्ष तभी बताए जा सकते हैं जब कोई आराम से बैठ सके, और उसमे लम्बे और कष्टकर अनुभव को बयान करने की क्षमता हो। इनमे से प्रभावी है उन क्रूर तारीखो की आजमाइश जो इच्छा शक्ति को तोडने के लिए किए गए।

में 20 मई, 1944 को बम्बई मे गिरफ्तार हुआ और दो–तीन मौको को छोडकर मुझे बम्बई पुलिस मुख्यालय ले जाया गया और आर्थर जेल मे नजरबद किया गया। 20 जून को मुझे केंद्रीय का 7 जून का एक आदेश दिया गया और 22 जून को मुझे लाहौर लाया गया इस आदेश में कहा गया था कि मुझे 'कहीं पर भी जिनमे पजाब प्रा

भी शामिल है नजरबद किया जा सकता है।" इस आदेश का मुख्य उद्देश्य मुझे शारीरिक यातना देता था। वह जारी रहा। नजरबदी तो प्रासगिक थी। यह दोनो ही उददेश्य थे।

पूछताछ के कमरो में मेरी तलाशी ली गई और मेरी किताब, कलम, शेष करने का सामान जैसी चीजे ले ली गई और फिर अत मे मुझे कोठरी में ले जाया गया और वहाँ मेरी तलाशी ली गई। मुझसे इसी तग जगह मे नहाने–धोने की अपेक्षा की जाती थी। इसके दरवाजे और फर्श के बीच की जगह गदे पानी के लिए जो नाली थी उसी से मुझे अदर खाना दिया जाता था। सारी रात एक तेज बल्ब मेरे सिर पर जलता रहता था। कुछ ही कदम पर इन कोठरियो के सामने की दीवार थी जो हवा को रोकती थी। मच्छरो की भरमार थी और पास का ककरीट लाहौर के तापमान को और अधिक बढा देता था। दूसरे दिन से ही पुलिस अधिकारियो ने मुझसे गालीगलौज करना प्रारम्भ कर दिया। मुझे सिद्धातहीन और कायर कहते रहे। जब वह मुझे सच्चाई और सद्व्यवहार के विषय मे भाषण देते तो उनमे से एक मेरे ऊपर चढ जाता और मुझे खीचता दबाता रहता और यह क्रम लम्बा चलता रहता।

मैं ऐसे में कुछ नही खा सकता था। यह भूख हडत्रताल नहीं थी, खाना निगलने मे असमर्थता थी। दिन भर वह मुझे हथकडी डालकर तफतीश के कमरे में पूछताछ करते रहते। और एक मध्य रात्रि जो मेरे आने का शायद चौथा दिन था, वह मुझे एक घटे के लिए कोठरी से निकालकर अपने कार्यालय मे ले गए।

छठे दिन मेरी पूछताछ करने वाले सुपरिनटेडेट पुलिस ने मुझे कोठरी के बाहर लगे नल पर नहाने देने का वायदा किया, और यह भी कहा खाना मेरी कोठरी का दरवाजा खोलकर दिया जाए और वह खुद भी अब बदजुबानी न करेगा। खाना, खाना शुरू कर मैंने शायद एक गलती की।

इसके दो हफ्ते बाद तक मुझे कुछ राहत रही। वह भी अपने दफ्तर मे मुझे सारा दिन हथकडी लगाकर रखते और खुशामद के साथ-साथ मुझे अज्ञात का भय दिखाकर डराते भी। इस समय सुपरिनटेन्डेट पुलिस के अलावा सैयद अहमद और इस्पेक्टर मुहम्मद हुसैन जो उनके पहले से कार्रवाई कर रहे थे उनमें इस्पेक्टर महराज किशन भी आगए।

मैं अदालत मे जाने को तैयार था और जिन कामों मे मैं अकेला था उससे इकार करने का भी मेरा कोई इरादा न था। मैं केंद्रीय सरकार को यह भी लिखकर देने को तैयार था कि मैं ऐसे कामों को स्वीकार करूँगा अगर वे ऐसा चाहते हैं।

मध्य जुलाई मे मुझे पाच दिन–रात लगातार जगाए रखा गया। आधा घटे के स्नान के अलावा उन्होने मुझे बराबर अपने दफ्तर मे हथकडी लगाकर रखा। जब वे मुझ पर भाषण न झाडते तब वह कांग्रेस को भला–बुरा कहते रहते

मुझे लडखड़ाती हालत मे छोड वह मेरे धीरज और शक्ति की परीक्षा लेने के बाद वह मेरी खुशामद भी करते और पश्चाताप मे मेरे पैर छूने का अभिनय करते।

जब मैंने उन्हे लिखकर देने को कहा था वह उसे जुबानी तो मानने को अब तैयार थे। एक बार फिर उन्होने मेरे प्रस्ताव को अधिक व्यापक बनाने का प्रयास किया और दो रात मुझे बिना सोने दिए वह यह करते रहे और फिर मेरी खुशामद करने लगे। अगस्त के शुरू तक यह मामला रहा कि जो पुस्तिकाएँ और भाषण मैंने लिखे और दिए थे उन्होने उनके सक्षेप तैयार किए।

पर वह इतना ही नही चाहते थे। इससे उनकी भूख और बढ गई। वह केंद्रीय और बगाल गुप्तचर विभाग की रपट के वक्तव्य मुझे पढकर सुनाते जो उनके अनुसार मैंने दिए थे। वह शायद मेरे ऊपर यह असर डालने के लिए करते कि उनके पास केंद्रीय सूचना है और वह मेरा भार हल्का करने के लिए उनकी पुष्टि या इकार भर चाहते हैं। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि महत्त्वपूर्ण मामलो पर उनके पास कोई जानकारी न थी और थी भी तो गलत और अन्य मामलो मे भी ऊपरी ही थी। बार–बार गुस्से से दोहराकर उन्होने मेरी पूछताछ को अपना बना लिया था जो मेरी न थी और जिसका श्रेय वह अपने खोज कौशल को देना चाहते थे। जहॉ कही भी वह थी, चाहे अज्ञान के डर मे या इस बेहूदा धारणा पर कि कोई व्यक्ति कही भी अपने कार्यो को स्वीकार कर सकता है। मैने एक मौलिक गलती जरुर की थी जिससे मैं कुछ ऐसी स्वीकारोक्तियो में फंस गया, जिनमे मैं अकेला भागीदार न था।

अगस्त के शुरू मे उन्होंने एक दूसरा तरीका अपनाा। दोपहर से लेकर आधी रात तक सिर्फ चार घटे को छोडकर उन्होने मुझे बराबर खडा रखा। जब मैं अपने आप खड़ा न रह सका तब मुझे दोनो तरफ से एक एक आदमी ने ऊपर उठाए रखा। दूसरे मौके पर एक इस्टपेक्टर ने मेरा चश्मा छीन लिया था। मैं दूर की चीज नही देख सकता था। मेरे चश्मे का नम्बर 5 है। मैने अपनी ऑंखे बद करली। । फिर दोबारा ऐसा नहीं किया गया। मैं इतना ही कह सकता हूं कि अगले कुछ हफ्ते तक मैं अपने पैरो की पिडलियों पर काले दाग देखता रहा। इसके बाद फिर इसका भी अत इस्पेक्टर द्वारा खुशामद और माफी मॉगने से हुआ। 10 अगस्त से 30 अगस्त तक सुपरिनटेन्डेन्ट सैयद अहमद बाहर दिल्ली मे रहे। वह शायद हिदायत छोड गए कि जब तक वह न लौटें तब तक मेरे धीरज और ताकत की सीमा से ज्यादा परीक्षा न ली जाए। मुझे दिन मे पूछताछ के कमरे में ले जाया जाता और मैं उनकी बचकाना बाते चापलूसी या अज्ञात भविष्य की धमकियॉ सुनता रहता। अगरचे मैं कुछ नही बोलता और न मुझे कुछ कहना ही था। वह अपनी रपट पढते रहते। मुझे लगा कि वह इस तरह मित्र राष्ट्रो के राष्ट्राध्यक्षो और दूतावासों तथा जर्मन य जापानी एजेंटो के बारे मे मुझसे पूछताछ करेगे। जब शरारत मे कभी मै उनके मन मे अतरराष्ट्रीय सदेह पैदा करूँगा। एक बात जो हर समय मेरे मन में बनी रहती वह थी गदी नाली की तस्वीर और किसी तरह यह खुफिया विभाग के लोग यह पानी पीने को मजबर करते हैं

सुपरिनटेडेट के लौटने पर मुझे दोबारा 2 से 6 सितम्बर तक जगाकर रखा गया। सुपरिनटेडेट अपने साथ कुछ फोटो स्टेट नकले और रपटे लाया था। भारी पलको से मुझे यह निष्प्रभावी भाषण सुनने पडे। सुपरिनटेडेट का यह आखिरी प्रयास था ओर 10 सितम्बर को पुन वह दिल्ली लोट गया। इस्पेक्टर महराज किशन पहले ही हटा लिए गए थे। मुझे नही मालूम था कि वह हटा लिए गए हैं। मे इतना ही जानता था कि वह फिर कभी प्रकट हो सकते है।

इस्पेक्टर मुहम्मद हुसैन और उसके सहयोगी सिपाहियो और सतरियो ने मुझे 14 से 30 सितम्बर तक सिर्फ ईद के दिन तक छोडकर बराबर जगाए रखा ईद के दिन तक मुझे रात मे अपनी कोठरी में ले जाया जाता और कुछ ही देर बाद घटे आधा घटे मे दोबारा दफ्तर मे जगाने के लिए लाया जाता था। रात मे लगभग तीन बार ऐसा किया जाता। ईद के दिन से तो मुझे बराबर जगाए रखा गया। इस महीने जब मुझे जगाए रखा गया मुझे खाना छोडना पडा और मै सबेरे सिर्फ एक गिलास दूध और आधा पानी पीता और शाम को गुनगुना पानी जिसे वह चाय कहते। मुझे पीने को भी कम पानी मिलता क्योकि जो सिपाही मुझे जगाए रखने के लिए लगाए गये थे वह इस्पेक्टर से जुडे थे ओर वह कहते कि मुझे दफ्तर से बाहर ले जाने की इजाजत नही है। मैं न अपने पैर फैला सकता था और न चल सकता था। अगर सिपाही समझते कि मैंने अपनी आखे बद करली है जबकि वह सिर्फ भारी थी। वे मेरा सिर हिलाते रहते या मेरी हथकडी मे लगी भारी जजीर को खीचते। अब इस्पेक्टर अपनी गदी जुबान की पराकाष्ठा पर था। हरामजादा जैसे शब्द तो आम थे। 23 सितम्बर को जब उसने मुझे खडा करने का प्रयास किया तब मैने उससे कहा कि वह अकेले ऐसा न करे। उसने अपने सिपाही और हथियारबद सतरी को बुलाया जो मेरी चौकसी करते रहे। वह दोनो मुझे एक एक तरफ से अपने हाथ मे उठाए रहे ओर इस्पेक्टर बदजुबानी करता रहा। मुझे यह आतंक और स्थिरता काफी मिल चुकी थी। मुझे बराबर जगाए रखा जाता था। मेरे साथ पशुवत व्यवहार किया जा रहा था और तब मेरे अदर यह इच्छा उठी कि मै अपनी नजर मे उठूँ। और इस निष्क्रियता को त्यागूँ। मैने इस्पेक्टर से कहा कि वह समस्त आतंक और दुष्कर्मो मे दक्षता प्राप्त होने के बावजूद किले का कायर है। इस पर उसने मेरे गले की तरफ हाथ बढाया फिर पीछे हटा लिया और उसी तरह सब–इस्पेक्टर ने भी जिसने मेरा सिर हिलाने की कोशिश की थी। इसके बाद उसकी कुछ फूहड बातचीत मे कमी लगी। पुन 25 सितम्बर को पौ फटने से पहले इन उनीदे दिनो मे मेरा सिर जला जा रहा था, तब इस्पेक्टर चाहता था कि मैं अपनी कुर्सी खिसकाकर सामने के बिजली के बल्व की ओर कर दूँ। जब उसने मुझें कुर्सी से उठाने की कोशिश की मैंने उसे पुन चेतावनी दी कि वह मुझे हाथ न लगाए। उसने सिपाही और सतरी को पुकारा। उन तीनो ने मुझे कुर्सी से उठाया लेकिन वे मुझे खडा न कर सके। तब सिपाही और सतरी ने मुझे दोनो तरफ से उठाया। इस्पेक्टर ने मेरे टखने दबाए। बाद मे उसने सतरी से अपनी रायफल अलग रखने को कहा और फिर उसने मुझें चटाई वाले फर्श पर गिर जाने दिया और सिपाही से कहा कि वह मेरे हथकडी लगे हार्थो को चक्की की तरह घुमाए यह मेरे नहाने के समय तक

जारी रहा। मेरी नाक में खून के थक्के जमने लगे और मेर थूक मे खून आया और अक्टूबर मे मुझे दस दिन तक बुखार रहा। डाक्टर ने उसे सात दिन का बुखार बताया।

दीवाली के दिन मेरी कोठरी बदली गई, वह किले मे सबसे खराब थी। कुछ घटो के लिए मुझे किले के दफ्तर के तहखाने मे ले जाया जाना था जहॉ मुझे बताया जाता था कि वहॉ एक नई प्रक्रिया शुरु होगी जिसके सामने बडे से बडे बहादुर और कठोर अपराधी भी हिम्मत हार जाते हैं। नए परिवेश मे यही वाक्य दोहराया जाता। इसे मैं सहज ही समझता। चिरौरी भी कभी बद नही हुई। क्या मैं उन्हे एक ऐसा पता दे सकता हूँ जहॉ एक ट्रासमीटर पकड़ा जा सके, कोई विदेशी सपर्क और जब वह नही तो रुपया देने वाले या ठहरने के पते या वह जगहे जहॉ हथियार रखे गए।

25 अक्टूबर को यह यत्रणा समाप्त हुई। मैं अपनी कोठरी मे बना रहा। दिसबर के शुरु मे मुझे समाचार पत्रो और लिखने की सामग्री की इजाजत मिली। 13 दिसबर को पजाब हाई कोर्ट मे हैबियस कार्पस की अर्जी दी। 19 जनवरी को मैंने नई सशोधित अर्जी दी। 30 जनवरी को मेरे आवेदन की सुनवाई हुई और शपथ लेकर मुझसे पूछताछ की गई। विद्वान न्यायाधीश ने मेरे आक्षेपो को गभीर समझा ओर उनके लिए उन्होने भारत सरकार से हलफनामा मागा। बाद मे वह सरकार के इस तर्क से प्रभावित हुए कि वह मुझे नजरबदी के दूसरे स्थान पर भेज देगे। मेरे विचार से यह निष्कर्ष गलत था कि मेरी नजरबदी आदेश का मूल उद्देश्य लाहौर किले मे मेरा स्थानातरण था। तकनीकी पक्ष से पृथक, विद्वान न्यायाधीश को मामले के तथ्यो पर अपनी जॉच जारी रखनी चाहिए थी। एक समय तो मुझे ऐसा लगा कि यह मामला गभीर था जिसका इधर या उधर स्पष्ट निर्णय होना चाहिए। फेडरल कोर्ट मे मेरी अर्जी इसलिए अस्वीकृत हुई कि वह उसके अधिकार क्षेत्र से बाहर थी। केद्रीय सरकार को दो पत्र और इलाहाबाद हाईकोर्ट को एक अर्जी भेजने के बाद अब मुझे अपने वकील श्री मदन पित्ती से मिलने की इजाजत मिल गई है और अगली कार्रवाई के लिए यह नोट लिख रहा हूँ।

27 अक्टूबर, 1945
आगरा सेंट्रल जेल। **राममनोहर लोहिया**

वायसराय हाऊस
नई दिल्ली
20 दिसबर, 1945

प्रिय मि. गॉधी,

डा लोहिया के सबध मे आपके 18 दिसबर के पत्र के लिए धन्यवाद। हिज एक्सीलेसी ने मुझे हिदायत दी कि मैं इस वक्तव्य को होम मेम्बर को भेज दूॅ जो इसकी जॉच करेगे।

भवदीय
मो क गाधी **जी ई बी एबल**

लार्ड पेथिक लारेंस को पत्र

बाल्मीक मदिर, रेडिग रोड
नई दिल्ली
अप्रैल 2, 1946

प्रिय लार्ड लारेस,

हम दोनो के मित्र सुधीर घोष ने मुझे यह बताया है कि आप चाहते हैं कि मैं उन बिदुओ को लिखकर भेज दूँ जिन्हे वह आपसे और सर स्टैफर्ड से अनौपचारिक चर्चा करना चाहते हैं।

हर स्वतंत्रता प्रेमी जनता का एक सार्वभौम सत्य है जो करोडो गूँगो से, चाहे वह कागेसी हो या गैर, पृथक हैं। वह है राजनैतिक बदियो की तुरत रिहाई। चाहे वह हिसा के अपराधी हो या अहिसा के। अब राज्य को कोई खतरा नहीं है जबकि आजादी की आवश्यकता सबका उद्देश्य बन गई है। श्री जयप्रकाश नारायण और डा लोहिया को अब बद रखना हास्यास्पद लगता है। दोनो ही विद्वान और सुसस्कृत व्यक्ति हैं जिन पर कोई भी समाज गर्व कर सकता है और न अब कोई ऐसा मौका है कि हम किसी को भूमिगत कार्यकर्त्ता कहे। इनकी रिहाई के प्रश्न को आगामी राष्ट्रीय सरकार के जिम्मे डाल देना ऐसा कदम होगा जिसे न कोई समझेगा और न कोई सराहना करेगा। स्वाधीनता अपनी गरिमा खो देगी।

भवदीय
मो क. गाधी

राइट आनरेबुल लार्ड पेथिक लारेंस
सेक्रेटरी आफ स्टेट इडिया
नई दिल्ली

(गाधीजी का सरकार के साथ पत्र-व्यवहार 1944–47, पृ 156–157)

नई दिल्ली प्रार्थना सभा में गांधीजी का प्रवचन

13 अप्रैल, 1946

आप लोग श्री जयप्रकाश नारायण और डा लोहिया को जानते हैं। दोनो ही साहसी और विद्वान आदमी हैं। वह आसानी से धनी बन सकते थे पर उन्होंने त्याग और सेवा का रास्ता अपनाया। देश की गुलामी की जंजीर तोडना ही उनका मिशन बन गया।

था कि विदेशी उन्हें अपने लिए समझे और उन्हें जेल में डाल दे

हमारा, गुण को नापने का अलग पैमाना है। उन्हे हम देशभक्त समझते हैं जिन्होंने देश के लिए या जिसने उन्हे जन्म दिया। प्रेमवश अपना सब कुछ बलिदान कर दिया। वे अहिसा के पैमाने पर कम पाए जाएँगे यह प्रश्न आज अप्रासगिक है। प्रासगिक यह है कि भारत की स्वाधीनता आज अग्रेजो और हमारे बीच समान आधार है। उनकी स्वाधीनता इसलिए अब सरकार के लिए खतरनाक नहीं है। इस नजरिए से उनकी और आजाद हिद फौज के सैनिको की कल की रिहाई को कैबिनेट मिशन और वायसराय की ईमानदारी का पेशगी सबूत समझा जाना चाहिए। हम उनकी ईमानदारी के लिए आभारी होगे और हमारी धन्यवाद की प्रार्थना ईश्वर तक पहुँचेगी जो यह सम्मति दे रहे हैं।

(हरिजन 21–4–1946 और हिंदुस्तान टाइम्स 14–4–1946)

राममनोहर लोहिया को पत्र

दिल्ली
अप्रैल 17, 1946

भाई राममनोहर,

भाई हुमायूँ यह चिट्ठी ला रहे हैं। मैने समझा था तुम मुझे दिल्ली मिलकर आगे चले जाओगे और जब तुम कलकत्ता गए तो मैं समझा कि तुम इसलिए गए कि तुम्हे अपने पिता के श्राद्ध करने का कर्त्तव्य पालन करना था। मुझे पूरी उम्मीद है कि हम जल्दी ही किसी समय सुविधानुसार मिलेंगे। क्या तुम्हारे पिता के समाज सेवा कार्यक्रमों को कोई चला रहा है ?

डा रामनोहर लोहिया **बापू के आशीर्वाद**

लार्ड लिनलिथगो के नाम डा. राममनोहर लोहिया का खुला पत्र

(नीचे डा लोहिया के लार्ड लिनलिथगो, वायसराय और हेरल्ड लास्की ब्रिटिश लेबर पार्टी के चेयरमैन को लिखे गए दो पत्र दिए जा रहे हैं।)

प्रिय लार्ड लिनलिथगो,

मैं नही जानता कि मैं आपको यह क्यों लिख रहा हूँ ? मैं आपकी व्यवस्था से कुछ भी अपेक्षा नहीं रखता। घूसखोरी और कत्लेआम जो आपके नीचे हो रहा है और वह ताकत जिसका मैं प्रतिनिधित्व करता हूँ मेरे देश मे साथ-साथ नहीं रह सकती और आप दुनिया की और उसके अतरात्मा की और काग्रेसियों के अपराधो की और उन्हे मिलने वाले अतिम निर्णय की बात करते हैं। यह हल्क-फुल्के मे बात करने वाले विचार नहीं हैं। शायद इसीलिए मैं आपको लिख रहा हूँ।

इतिहास ने अभी तक अतिम निर्णय की एक ही कसौटी जानी है क्या जनता

जुल्म के सामने घुटने टेके या उसका प्रतिरोध करे ? विश्व की अतरात्मा का निर्णय आपके और आपकी व्यवस्था के विरुद्ध है और प्रतिशोध करने वाले हमारी जनता के पक्ष मे । आपके लिए यह बद किताब है। आपके बच्चो के बच्चे इसे पढेगे और शायद आप भी कुछ धुँधली स्मृतियो से।

गाधीजी ने एक नई कसौटी दी है कि जुल्म को खत्म करो, बिना किसी के मारे और नुकसान पहुँचाए। इसे अभी तक सार्वभौम कसौटी के रूप मे नही स्वीकार किया गया है। सिर्फ भारत मे ही इसे आजमाया गया है और उसे सत्यापित करने का प्रयास किया गया है। क्या आप इस कसौटी को मानने के लिए सचमुच तैयार है क्योकि आप यह भी जानते होगे कि इसके साथ कुछ दायित्व भी जुडे हुए है।

आपने इस कसोटी को काग्रेस के उन नेताओ पर लागू करने का प्रयास किया है जो 9 अगस्त से पहले बदी बनाए गए थे और बाद मे भीड और जाने माने काग्रेसियो पर। आपने इन तीनो को कमतर पाया है। ऐसा ही होना चाहिए था। जब आपकी व्यवस्था सारी दुनिया मे घोरतम हिसा के लिए जानी जाती है तब आप निर्णायक बने, यह उचित नही बल्कि कोई निष्पक्ष व्यक्ति किसी दूसरे निष्कर्ष पर पहुँचेगा।

आपने गाधीजी और अन्य काग्रेसी नेताओं पर ऐसी योजनाएँ और सगठन तैयार करने का इल्जाम लगाया है जिसक फलस्वरूप हिसा हुई। अगर आप जमीन की फुसफुसाहट सुन लेते और बाद मे अधिक आग्रह करते तब आप जानते कि न काग्रेसियो के पास ऐसी कोई योजना थी और न सगठन। हिसात्मक या गैर–हिसात्मक जैसा कि मैं योजना और सगठन शब्दो से समझता हूँ और जैसा कि आप का भी यह आक्षेप सर्वथा गलत है। काग्रेस के पास ऐसी कोई योजना न थी और आपको खामख्याली मे भूतप्रेत दीख रहे है।

अहिसक क्राति पहाडो के नीचे के पानी की तरह व्याप्त है या उस मिटटी की तरह है जो सैकडो धाराओ मे बहती है, कोई नहरें नही खोदी जाती हैं।

9 अगस्त को जो क्राति शुरू हुई उसके ऊपर कोई योजना नही थोपी गई। वहाँ सिर्फ भारत के जीवन की यथार्थता उसके जीवन की महान स्मृतियाँ भी, सपूर्ण जनता की स्वाधीन होने की उत्कट कामना थी। उस गुरु की 23 वर्ष की साधना थी जिसने इस यथार्थ को एक नशे मे बदला, सिर्फ यही था। मैं आपको जनता की ललक के बारे मे बता दूँ जिसने आपसे कही अधिक कम से कम पॉच गुना अधिक सदियो तक यह सब सहा है। एक अमूर्त वस्तु है। न इसे कुत्तो का झुड पकड सकता है और न ही गालियाँ मार सकती हैं। आपने दसियो हजार लोगो को मार दिया है, जला दिया है, लूट लिया है बलात्कार कर उन पर जो जबरदस्ती की है, सगठनो को तोड दिया है, पता नही कितने लाख लोगों को गिरफ्तार किया है। पर क्या नए लोगो और सगठनो ने इस ललक के लिए आपको स्वेच्छा से अर्पित नहीं किया है। चाहे जो कुछ भी हो, यह ललक आपका पीछा करेगी जब तक कि आप टूट नहीं जायगे आप काग्रेस को तोडने में हो

सकते है लेकिन इससे पहले कि आप ऐसा कर सके एक नई और अधिक काग्रेस उठ खडी होगी। आपको चैन नही मिलेगी।

यदि मिट्टी मे स्वाधीनता की ललक है तो कुम्हार एक क्रातिकारी तकनीक है जिसे उन लोगो ने गढा है जिन्होने जानबूझकर हथियारो को फेक दिया है। जनता क उस महत प्रयासो के पीछे जिसमें उद्योगो को बद कर कस्बो और शहरो के बीच व्यापार स्थगित कर, नागरिक प्रशासन को हटाना, यातायात को भग करना, वहाँ यह महान नई तकनीक है। यह तकनीक हथियारो के टकराव की नही है बल्कि देश मे वह शून्यता पैदा करने की है जिससे कि स्वेच्छाचारी ताकते आत्म-समर्पण कर दे। यह तकनीक कुछ लोगो द्वारा शहरो मे ताकत हथियाने की नही है बल्कि सारे देश से जालिम शासन को हटाने की है। यह तकनीक शासन हथियाने की नही बल्कि उसे तोडने की है। इसी से ही स्पष्ट होता है कि भारतीय क्रांति ने वह आयाम दिया जिसके सामने फ्रास और रूसी क्राति भी मध्यम पड जाती हे। यह क्राति हथियारबद अल्पसख्यक का काम नही है बल्कि समग्र जनता की है। पहली बार इतिहास मे सामान्यजन विद्रोही बना है। उसका हथियार उसकी आत्मा है। उसके पास कोई असलाह नही है।

आपने भी हिसा की बात की है। एक वाकए का सुनें। इराद के पक्के बीस हजार निहत्थे लोगो की भीड ने 18 अगस्त को गॉव के एक पुलिस थाने पर हमला किया। वहॉ के थानेदार ने उनसे विनती की कि वह उन्हे थाने से अपनी औरतो और बच्चो को निकालने की अनुमति दे ओर उसके बाद उस पर कब्जा करे। हम हिदुस्तानी विश्वासी लोग हैं। भीड चुपचाप शाति से बाहर अहाते मे बैठ गई। कुछ देर बाद भीड ने देखा कि कुछ सिपाही और वह थानेदार एक बदूक लेकर छत पर चढ गया। दरवाजे अदर से बद कर लिए गए थे। 23 साल का एक नौजवान इस धोखे से लडना चाहता था। वह छत पर चढा और थानेदार का हथियार छीनने की कोशिश की। उसे चारो तरफ से सगीनो से गोद दिया गया और गोलियो से उसका शरीर छलनी कर दिया गया। वहॉ इस गोलीबारी से 18 आदमी मरे और 200 जख्मी हुए। भीड वहॉ से नही हटी। गोली बारूद खत्म हो गया। भीड ने थाने पर कब्जा कर लिया और उसके बाद जो कुछ हुआ वह दिव्य दृश्य था। थाना जला दिया गया लेकिन सिपाहियों को बिना कोई हानि पहुँचाए जाने दिया गया। मैंने जानबूझकर इस थाने का नाम नही दिया है। मैं जानता हूॅ कि देश मे ऐसे सैकडो वाकए हुए हैं।

आपके लोगो ने भारतीय माताओ को नगा किया है, उन्हे पेड़ो से बॉधा है, उनके अगो के साथ खिलवाड किया है ओर उन्हे मारा है। आपके आदमियो ने भारतीय माताओ को नगा किया, उन्हे सडक पर आने को मजबूर किया, उनके साथ बलात्कार किया और उन्हे मारा। आप फासिस्ट प्रतिशोध की बात करते हैं। आपके लोगो ने उन देशभक्तो के साथ जिन्हे आप न पकड सके उनकी पत्नियो की हत्या की है। जल्दी वह समय आएगा जब आपको और आपके लोगों को इस साक्षी का सामना करना पडेगा

आप कहते है कि आपने एक हजार से कम देशभक्तो को मारा है। आपने 50 हजार से अधिक लोग मारे हैं और उनसे कई गुना जख्मी किए है। मुझे 15 दिन बिना पुलिस द्वारा बाधा पहुँचाए सारे देश मे दौरा करने का मौका दे। मैं आपको 10 हजार से अधिक मारे गए लोगो के नाम और पते दे दूँगा। और नामो का देना मै मानता हूँ कि मुश्किल होगा। यह शायद तभी हो सके जब मेरा देश आजाद हो जाए।

पिछले छह महीने म बीसियो जलियाँवाला बाग दोहराए जा चुके हैं। फर्क सिर्फ एक हे। आपका निजाम अब ज्यादा अधिक कातिल है लेकिन हमारी भीडे अब उस तरह नही फॅसती। हिदुस्तान के निहत्थे साधारण लोगो मे गोलियो के सामने दिव्य साहस दिखाया है और वह आगे बढ रहे हैं।

हम करीब-करीब सफल हो चुके थे। देश के 15 प्रतिशत से अधिक क्षेत्रो पर आपका पशासन हटाया जा चुका था। आपकी सेना ने हमारे स्वाधीन क्षेत्रो को दुबारा जीता। क्या आप समझते है कि आप ऐसा कर सकते है अगर हमारी जनता हिसा अपनाती ? आपकी सेना दो हिस्सो मे बॅट जाती–हिदुस्तानी और ब्रिटिश। अगर हम सशस्त्र क्राति की योजना बनाते और हमारी भीडे हिसा का सहारा लेती, लिनलिथगो। आप विश्वास करे आज गाधीजी स्वाधीन जनता ओर उनकी सरकार से आप क्षमा याचना करते होते।

लेकिन मैं नाखुश नही हूँ। भारत की सदा ही यह नियत ही रही है कि वह दूसरो क लिए कष्ट सहे और गलत रास्ते से लोगो को हटाए। निहत्थे सामान्यजन का इतिहास 9 अगस्त की भारतीय क्राति से शुरू होता है।

50 हजार देशभक्तो की मृत्यु और उनसे कही कई गुना जख्मी लोगो की पृष्ठभूमि मे आपके सौ से कम लोगो की मृत्यु और दुखद है। इस दुनिया मे दुखद मिश्रण अवश्यभावी हे। आश्चर्य की बात है कि यह मिलावट ज्यादा न थी। इस शक्ति का कोई रहस्य होना चाहिए 1 लोगा के मार्गदर्शन के लिए कोई सगठन न थे जिसे कि आपने तोडा है। सिर्फ आतरिक अनुशासन था। लाखो उतेजित लोगो की भीड ने अत्यत गभीर उत्तेजना के बीच जो अनुशासन दर्शाया वह अंदर से ही आ सकता है। आप इस विस्मयजनक मानवता को नहीं समझ सकते। हम प्राचीन लोग है। हमे 23 साल तक एक महात्मा गुरु से प्रशिक्षण मिला है। आप एक राष्ट्र को कोस रहे हैं। कौन कह सकता है कि निहत्थे सामान्यजन की इस कथा मे कुछ खेदजनक कमियाँ न होगी।

अब कुछ प्रसिद्ध काग्रेसवालो की गतिविधियो पर मैं आपका ध्यान आपके गृह विभाग के गुप्त सर्वेक्षण न 2 का हवाला दूँ जहाँ आपक सचिव ने अहिंसक हिदायतो की जानकारी दी है

आपका प्रशासन फुर्ती से चोट करना जानता है। 9 अगस्त के कुछ ही दिनो मे आप काग्रेसियो के सामने हार गए। काग्रेसी भी बाहर हो गए। हर एक सच्चा भारतीय काग्रेसी है। मैं शुद्ध अत करण से कह सकता हूँ कि अन्य देशो के क्रातिकारियो से भिन्न काग्रेसी शत्रुओ को मारने और हानि पहुँचाने से बचे है। निरपराध लोगो पर आक्रमण न करके, जैसा कि आपके देश के क्रातिकारी करेगे। उन्होने जनता के निकृष्टतम हत्यारो को न मारा, न हानि पहुचाई। क्या किसी से ऐसे क्रातिकारी के बारे में सुना है कि जो ऐसे कामो से बचे जिससे जीवन को हानि होती। लेकिन ऐसा हमारे देश मे नही हुआ है। इसके कुछ छिटपुट अपवाद हैं। हो सकता है कि वह कुछ बढ जाएँ। मूलत भारत और ब्रिटेन के बीच युद्ध का निर्णय हो चुका है। सिर्फ जिसका निर्णय नहीं हुआ है वह है कि आखिरी लडाई किस तरह होगी।

आपने साक्षियो और निर्णय की बात की है। आप सिर्फ एक ही काम कर सकते हैं वह है बद दरवाजो मे मुकदमा कर कानून की हत्या करे। जबकि आपकी पुलिस और सिपाही देखते ही उन्हे गोली न मार दिए होते। अगर आप मे साहस है तो खुला मुकदमा करे। तब भी आप और आपके आदमी फैसला करेग। हम सभी जीने के प्रेमी हैं और भविष्य के बारे मे जिज्ञासु भी। आपकी साक्षी एक मजाक होगी और अर्थपूर्ण।

हम भविष्य के बारे मे उत्सुक हैं। चाहे आप जीते या ध्रुव राष्ट्र। हर तरफ अधेरा ही अधेरा होगा। आशा की सिर्फ एक किरण है स्वतत्र भारत जो इस युद्ध का एक लोकतान्त्रिक अत कर सकेगी।

आपने अपने कधो पर वह जिम्मेदारी ली है जिसे आपकी सब जनता भी नही उठा सकती। एक समय पाटियस पाइलेट था। उसकी कुछ शान थी। वह सत्य पर हँसता था और अविश्वासी था। आप ऐसी बात करते हैं कि जैसे आप आस्तिक हो। इतिहास आपका नाम भूलना चाहेगा और जब तक ऐसा न करे गहरा दर्द बना रहेगा।

अपनी ही अतरआत्मा से घबराकर या जनता के आक्रोश से अभी भी आप गाधीजी को रिहा कर सकते हैं। पर आप करे या न करे। आजादी की आग आपका पीछा करेगी जब तक कि आप घुटने न टेक दे।

मै यह पत्र आपको उस साधन से भेज रहा हूँ जो निरकुश राज में मुझे उपलब्ध है।

भवदीय
राममनोहर लोहिया

प्रोफेसर हेरल्ड लास्की के नाम लोहिया का पत्र

सेंट्रल जेल
आगरा

प्रिय प्रो. लास्की

बताने जा रहा हूँ जिसके बारे मे आप नही जानते। भारत के अडर सेक्रेटरी आर्थर हेंडरसन ने कहा है कि मैने लाहौर किले की नजरबदी के सिलसिले मे कुछ बेबुनियाद आक्षेप लगाए हैं। मुझे सदेह है कि अडर सेक्रेटरी को यह भी पता है कि मेरे क्या आक्षेप थे। हैरत की बात तो यह है कि इस तरह ब्रिटिश सरकार ने मेरे देश को उन आक्षेपो को खारिज करने के लिए कहा है जबकि मैने इसके प्रकाशन को दबाने के भरसक प्रयास किए। छुटपुट बातो के अलावा मेरे देश को यह पता नही है कि मैने सरकार पर क्या आक्षेप लगाए है।

जब मै लाहौर किले मे था और मुझे हाईकोर्ट को लिखने की इजाजत मिली मैने दिसम्बर 1944 को हैबियस कार्पस की अर्जी दी और जनवरी 1945 मे उसमे कुछ ओर ब्यौरे जोडे। जब पेशी हुई तब जज ने उसे गोपनीय रखा। सरकार ने और अधिक एहतियात बरती और एक अध्यादेश के तहत समाचार पत्रो मे इस हैबियस कार्पस मामले के प्रकाशन पर रोक लगा दी। पेशी मे जज ने मेरी अर्जी के तथ्यो पर गुणात्मक आधार पर सुनवाई करने का विचार व्यक्त किया और हलफ लेकर मेरी जॉच की गई। और जब वह मेरे आक्षेप की जॉच कर रह थे तब न्यायाधीश ने सरकार की यह बात मान ली कि मेरा तबादला दूसरे प्रात मे हो रहा हे और इस तरह कार्यवाई खत्म कर दी गई।

मेरी अर्जी को खारिज करते हुए न्यायाधीश ने भी महसूस किया कि केन्द्रीय सरकार द्वारा मुझे नजरबद करने का एकमात्र उद्देश्य यत्रणा देना नही था। मुझे खेद है कि मै आपको इस विचित्र आदेश के सही सही शब्द जुटाने मे असमर्थ हू। मै बता दूँ कि मुझे मई 1944 मे बम्बई मे गिरफ्तार किया गया था ओर वहाँ एक महीने तक रखा गया। यदि सरकार की मशा शाति कायम रखने की थी तो वह मुझे बम्बई की जेल मे रखकर या किसी अन्य जगह मेरे प्रात उत्तर प्रदेश मे ले जाकर पूरी की जा सकती थी।

लाहौर किले मे बदियो के साथ पजाब सरकार के दुर्व्यवहार को लेकर देश म खासी मजाक बनी हे। जहाँ यह जिम्मेदारी केन्द्रीय सरकार पर डाल दी गई। अब यह जिम्मेदारी ब्रिटिश अडर सेक्रेटरी ने पजाब सरकार पर पलट कर डाल दी है। जहाँ तक मेरा ताल्लुक हे, भारत सरकार अपराधी है। मै कानूनन और तथ्यत, उसका कैदी हूँ और मेरे साथ दुर्व्यवहार के आदेश उन्ही के द्वारा जारी हुए है और पजाब सरकार इस अपराध मे सहयोगी है।

आपके देश मे कोई सरकार इस तरह न्याय मे दखल नही दे सकती ओर न इस तरह के अपराधिक आक्षेप से अपने दायित्व से अलग हो सकती है। इस जेल मे मेरे तबादले के बाद मैने फेडरल कोर्ट को अर्जी दी। उस पर भारत के मुख्य न्यायाधीश ने मुझे बताया कि यह उनके क्षेत्राधिकार से बाहर हे। कई माह के दौरान के बाद मै अपने वकील मदनलाल पित्ती से सपर्क करने मे सफल हुआ हूँ। लेकिन मुझे नही मालूम कि उन्हे कब मेरे लाहौर हाई कोर्ट मे दी गई अर्जियो की नकलें मिल सकेगी। लाहौर से आगरा स्थानान्तरण करते समय वह मुझसे छीन ली गई थीं

लाहौर किले मे यत्रणा

मै लाहौर किले के अपने लम्बे अनुभवो का ब्यौरा नही देना चाहता। यदि आपका ससदीय दल या उसका कोई सदस्य सचमुच इसमें दिलचस्पी रखता हो तो वह आसानी से इन दोनो अर्जियो को लाहौर हाईकार्ट से और तीसरी को फेडरल कोर्ट से अदालत के दस्तावेज के रूप मे मॉग सकता है। मै यह भी जोड दूॅ कि यह अर्जी जो कुछ मेरे ऊपर बीता है उसका कम–बयानी ही हैं। मैंने अश्लीलताओ का जिक्र नही किया हे। दूसरे मैंने कोई नाटकीय वक्तव्य नही दिया जो कि उबाऊ क्रूरता को बताने मे प्रयोग आता। मैने आशा की थी कि अदालत की सुनवाई मे वह अधिक उजागर होगा। मै यहॉ सिर्फ यही सकेत करूॅगा कि मूझे अनेक प्रकार चार महीने तक सताया गया ओर मुझे रातोदिन जगाए रखा गया जिनमे कि सबसे लम्बी अवधि 10 दिन थी। और जब मेने पुलिस के इन प्रयासो का प्रतिरोध किया तब उन्होने मेरे हथकडी बॅधे हाथो को फर्श पर चारो तरफ घुमाया। इसे सहने मे मुझे कुछ वक्त लगा जिससे इस सबक को मै कभी नही भूलूंगा। कोई भी दर्द वास्तव मे असहनीय है। यह अतीत मे असह्य था पर तब मनुष्य बेहोश या मृत था। और या यह दूसरे क्षण असहाय कल्पित स्थिति लगती थी।

यह सही है कि मेरी पिटाई नही की गई। मेरे पैर के नाखूनो मे सुई नही चुभोई गई। मैं तुलना करना नही चाहता। एक चूरोपीय जिसमे मानव शरीर के प्रति अधिक सवेदनशीलता है यदि वह आतक से सुन्न नही हो गया है, वह समझ सकता है कि मरे ऊपर क्या गुजरी। पीटना ओर तलुओ पर चोट करते मृत्यु निकट तक पहॅुचा देना ओर या मनुष्य को यत्रणा देना यह उससे भी बुरी बाते हुई । मै आपको एक ही मिसाल दूॅगा जो मुझे ध्यान मे आ रही हं। बम्बई प्रांत की एक पुलिस चौकी मे एक आदमी न जहर खा लिया। उत्तर प्रदेश की एक जेल मे एक आदमी कुऍ मे कूद पडा ओर गिरफ्तारी के बाद जो लोग मारने पीटने या दुर्व्यवहार से मरे उनकी कोई गिनती नही। सिर्फ उडीसा की एक जेल मे ही जो 300 मे एक है, ऐस मरने वाला की सख्या 29 या 39 थी मुझ इस समय ठीक याद नही आ रहा हे।

पिछले साढे तीन सालो मे मेरे देश ने बहुत कुछ सहा है। हजारो की सख्या मे लोग गोली से मारे गए। कुछ को चलते वाहनो मे निशाना साधने के लिए या आतक पैदा करने के लिए स्त्रियो को पेडो पर टाग दिया गया ओर जख्मी किया गया या सडको पर उनके साथ बलात्कार किया गया और बहशियाना तरीके से मकानो को तोडा गया गिराया गया। किसी एक सीमित क्षेत्र मे नही, बल्कि समग्र व्यापक क्षेत्र मे। यह हेरत की बात नही है कि एकबार देश पर आतक और प्रतिशोध द्वारा दोबारा कब्जा किया गया। अगस्त क्राति से बडी कोई घटना आधुनिक इतिहास में नही हुई हे। इसी से यह स्पष्ट है कि 30 से 40 लाख व्यक्ति सरकार द्वारा सृजित अकाल मे मारे गए। 15 साल पहले भी दूसरी तरह की मार पीट होती थी। मेरे पिता जो दो सप्ताह पहले एक बस मे मारे गए उन्हे पीट पीट कर बेहोश कर दिय गया जबकि वे दर्शना के नमक डिपो पर शातिपूर्वक धरना दे रहे थे। मुझे इस बात का अफसोस रहा कि हम लोग ज्यादा समय तक साथ नही बिता सके। यह अच्छा ही रहा कि वह बारबार की गिरफ्तारी से अपने देश में मुक्ति पा गए और राष्ट्र के कष्ट की यत्रणा के भाव से मुक्ति पा गए

व्यवस्थित शासन का अंत

मैने आपको अपने अनुभव के एक छोटे अश के रूप मे राष्ट्र की तस्वीर दी है ब्रिटिश श्रम आदालन अन्य समाजवादी आदोलनो की तरह गलतियॉ कर रहा है क्योकि वह लोकतत्र या फासिस्टवाद या अपने देश के राजनैतिक रूप पर विदेशी शासन को माप रहा है या ऑक रहा है। यदि पूर्वाग्रह छोड दिया जाए तो हमारे देश की ब्रिटिश राज्य व्यवस्था अन्य किसी व्यवस्था से बदतर पाई जाएगी या थोडी बेहतर। यह बहुत कुछ तथ्यो तथा सूचनाओ पर निर्भर करेगा। कोई इस बात से इकार नही करेगा कि हिदुस्तान मे अग्रेजो राज एक तरुण जालिम की तरह अत्यत क्रूर रहा है और जैसे जैसे उसकी उमर बढती जा रही है एक राक्षस सा बनता जा रहा है। मध्यम अवधि को अपेक्षतया व्यवस्थित शासन अब याद नही आता। मैं नही कह सकता कि इस राक्षस की क्रूरताऍ खत्म या कम करना सभव है। लेकिन यह मै जानता हूँ कि ब्रिटिश श्रम आदालन भी कोइ ऐसा प्रयास नही करेगा अगर वह विदेशी शासन को खूरेज तरुण और क्रूरतर पतन के सिद्वातो से परिभाषित करे। और या उस मध्यम अवधि को ध्यान मे रख जो मेरे देश मे समाप्त हो चुकी है।

इस सबके बावजूद, अडर सक्रेटरी ने कुछ झूठ कहने का साहस किया है। सब सरकारे, जैसा कि सब जानते हैं, उच्च नीति के नाम पर झूठ बोलती है। पर जब एक सरकार व्यक्तियो के ओर मामूली स्तर पर झूठ बोलती है ता वह पूर्णत भ्रष्ट है। क्या ब्रिटिश ससद की लेबर पार्टी मे एक भी ऐसा सदस्य नही है जो इस सच को प्रकट कर सके। क्या यह कहा जाए कि इन सब अत्याचारो को करने वाले ब्रिटिश नोकरी करने वाले अधिकाश मेरे देशवाशी ही है ?

मे इस बात मे इकार नही कर सकता कि मेरे देश मे पर्याप्त अधिक भ्रष्टता नही है लेकिन अग्रेज सोचता है कि जब तक वह इसका इस्तेमाल न करे, वह यहॉ नही रहा सकता।

कु ऊषा मेहता का मामला

मुझे न छोडना चाहते हुए अडर सेक्रेटरी ने यह भी कहा कि सरकार मुझ पर मुकदमा चालू करने पर विचार कर रही है। मै युद्धकाल मे दो साल की जेल के बाद डेढ साल से अधिक नजरबदी मे हूँ। अगर अभी तक भी सरकार यह निश्चय नही कर सकती है तो शायद यह प्रशासन अनतकाल तक चलता रहेगा। बम्बई की जेल मे एक तरुण युवती ऊषा मेहता ने जो इस प्रात मे शायद अकेली राजनैतिक बदी है। वह स्वाधीन रेडियो चलाने के कारण चार साल से बद है। मुझे उसकी सजा पर झगडा नही। यदि यह असाधारण प्रतिभासंपन्न और साहसी स्त्री स्पेनी या रूसी होती तो आपके देशवासी एक नायिका के रूप मे इसका गुणगान करते। वह एक साल और कई महीनो तक हवालात मे रखी गयी और अगर यह भूल न होती, वह अभी तक अपनी सजा पूरी कर लेती। मैं यह भी बता दूँ कि उसका और उसके साथियो का मुकदमा अखबारो मे छापना वर्जित था।

आठ से दस हजार राजनैतिक बदी जिनमे से काफी अधिक समान्य की तरह वर्गीकत है वह अपनी सजा या नजरबदी में किसी न किसी मूल

के कारण बद हे। कुछ दिन पहले आजन्म कारावास भोग रहे दस व्यक्तियो को इलाहाबाद हाई कार्ट ने छोडा। उन्होने यह माना कि उन्हे झूठी गवाही पर यह दड मिला था।

जयप्रकाश नारायण

सोशलिस्ट पार्टी के सचिव जयप्रकाश नारायण दो साल से ज्यादा स नजरबद है। इससे पहल वह लगभग तीन साल की सजा और नजरबदी भुगत चुक हैं और भारत सरकार कहती है कि वह उनकी गिरफ्तारी के समय से ही उनपर मुकदमा चलाने का विचार कर रही हे। वह उन्हे जेल मे बद रख इस प्रश्न पर विचार ही करती रहेगी। मै नही जानता कि यदि कोई मि ल्योपाल्ड एमरी से मेरी नजरबदी के बार मे यह सवाल पूछता और वह मुझे जेल में ही रखना चाहते, तब वह क्या जवाब देते। मै सोचता हूँ वह अपहर्ता की निरकुश शक्ति की दुहाई देकर कहते कि मुझे वह देश के कानून के तहत बद किए हुए हे जो भी वह है वह कम से कम लेबर पार्टी के अडर सक्रेटरी द्वारा एक कुकृत्य को छुपाने से बेहतर होता।

सरकार हम पर मुकदमा चलाने से डरती है और वह बारबार डरती रहेगी। हमारा मुकदमा उन पर ही मुकदमा हो जाएगा। भारतीय-रूसियों के अलावा शायद कोई भी ऐसा नही है जो यह सोचे कि हमने कभी ध्रुव राष्ट्रो के लिए काम किया है या उसका कुछ ऐसा अप्रत्याशित परिणाम हुआ है। जयप्रकाश नारायण तो वास्तव मे चाहते थे कि वह देश को स्वाधीन प्रेस द्वारा ब्रिटिश सोशलिस्ट आदोलन के लिए एक अपील प्रसारित करे पर तब मैने महसूस किया कि तब इस आदालन के लिए एक अपील प्रसारित करे पर तब मैने महसूस किया कि तब इस आदोलन का काई योग्य मुखिया न था और न ही कोई ऐसा अनुकूल तत्त्व जिसे ऐसी अपील भेजी जा सकती।

एक अस्पष्ट आरोप

हमारे ऊपर यह आरोप लगाया जाता है कि हम हिसा द्वारा अपना लक्ष्य पूरा करना चाहते थे। यह एक अस्पष्ट आरोप है जिसके लिए कानून मे कोई जगह नही हे न ही किसी युक्तिसगत राजनेतिक चर्चा मे।

राजनैतिक व्यवहार के तरीके के रूप मे हिसा और अहिसा के बीच विभाजक रेखा खीचना मूलल भारतीय शुरुआत है और स्वीकृत साविधानिक और असाविधानिक साधनो के स्वीकृत विरोध से भिन्न है। इसलिए अभी उसकी स्वीकृति के लिए रुकना होगा जब तक कि वह अपनी राजनीति से एक राज्य स्थापित करने मे समर्थ नही होती। ऐसी घटना राज्य की अवधारणा और उसके दायित्वो को भी आमूलचूल बदल देगी। तब तक ब्रिटिश सरकार को और किसी और को यह कहने का अधिकार नही है कि वह हिसा के प्रयोग का आरोप हम पर लगाएँ क्योकि शासित दुनिया मे हिसा का अधिकार मनुष्य के सुदरतम प्रयासो से जुडा हुआ है। यदि मुझे ब्रिटिश प्रधानमत्री क्लीमेंट एटली या केंटरबरी के का अनुसरण करना होता तब मैं इस हिसा को पवित्र अधिकार कहता

बाकी के लिए भारतीय दड सहिता पर्याप्त कठोर है और अन्य प्रचलित सहिताओ से भी। इसमे राजनैतिक हत्याओ और उससे तनिक भी सबद्ध अपराध या राजद्रोह के लिए या मात्र हथियार रखने के लिए क्रूर प्रावधान है। मुझ पर इनम से किसी भी जुर्म के लिए मुकदमा नही चलाया गया है, न ही सैकडो उन लोगो पर जो महीनो युद्धकाल मे बद रहे और आज भी कई महीनो बाद जेलो मे बद हैं जबकि आपके देश मे अतिम फासिस्ट को रिहा किया जा चुका है। सरकार की इस युक्ति को तनिक सा भी समर्थन देकर कि जेल मे बद हर एक व्यक्ति समाजवादी और हिसा का पैरोकार है, ब्रिटिश सोशलिस्ट जानबूझकर इस देश मे ब्रिटिश फासिस्टो को भारतीय सोशलिस्टो पर अपना गैर कानूनी गुस्सा उतारने का अवसर दे रहा है।

अगर आपके ससदीय दल के मि० स्टीफन डेविस ने एक अडर सेक्रेटरी से प्रश्न करना उचित समझा, तो उनके पास कम से कम जरूरी सूचनाएँ तो होनी चाहिए थी। जिनसे वह पूरक प्रश्नो द्वारा यह बता सकते कि उत्तर कितना अनुचित और भ्रात था। जल्दी मे पूछे गए या एक अप्रिय कर्तव्य के रूप मे या भ्रम पैदा करने के लिए पूछे प्रश्नो से तो प्रश्न नही पूछना बेहतर है। फिलहाल मुझे रिहा होने की कोई जल्दी या ख्वाहिश नही है। ब्रिटिश सरकार जब तक कि देश मे उसका शासन है मुझे कैदखाने मे रख सकती है। लेकिन यह सच्चाई है कि आपके ससदीय दल मे एक आदमी भी ऐसा नही था जो तथ्यो के साथ अडर सक्रेटरी को यह बता सकता कि वह झूठ बोल रहा है और उसने अभी तक और न कभी वह मुकदमा चलाएगा और उसने आदतन वह परदा डाला है जिससे मेरी नजरबदी मूर्खो की नजर मे अधिक रुचिकर लगे।

गुलाम देश से शासक देश को लिखना बेअसर और थकाने वाला है, पर मै आशा करता हूँ कि आप अपने से यह पूछेगे कि मैने यह पत्र आपके ससदीय दल को लिखने के बजाए आपको ही क्यो लिखा।

भवदीय

राममनोहर लोहिया

(यूसुफ मेहर अली द्वारा सपादित 'आजादी की कीमत' ग्रथ से)

गोवा मे डा. लोहिया की गिरफ्तारी पर गॉधी जी

(गांधी जी ने गोवा मे नागरिक स्वाधीनता के अभियान मे डा लोहिया का प्रबल समर्थन किया। नीचे हम गाधीजी की लोहिया की गिरफ्तारी पर हरिजन मे प्रकाशित टिप्पणी, पुर्तगाली भारत के गवर्नर जनरल के पत्र और महात्मा द्वारा दिए गए उनके उत्तर उनके प्रवचन और हरिजन की टिप्पणी दी जा रही है।)

समाचार पत्रो से यह जाहिर है कि डा लोहिया गोवावासियो के निमत्रण पर गोवा गए और वहाँ उन्हे भाषण न देने की निषेधाज्ञा दी गई। डा लोहिया के कथन के अनुसार 188 वर्षो से गोवा मे वहाँ नागरिको को सार्वजनिक सभाएँ और बनाने के अधिकार से वचित रखा गया है यह था कि वह इस आदेश का

करते। उन्होने इस तरह स्वाधीनता और विशेषकर गोवावासियो की सेवा की है। छोटीसी पुर्तगाली बस्ती जो ब्रिटिश सरकार की कृपा पर जिदा है, वह उनके दुर्व्यवहार का अनुकरण करने का जोखिम नही उठा सकती। स्वाधीन भारत मे पृथक राज्य के रूप मे और स्वतत्र राज के कानूनो का विरोध करते हुए कायम नही रखा जा सकता। बिना एक भी गोली चलाए गोवावासी स्वाधीन राज की नागरिकता का दावा कर सकेगे और उसे पा लेगे। वर्तमान पुर्तगाली शासन ब्रिटिश हथियारो की सुरक्षा पर निर्भर न रह सकेगा और न ही गोवावासियों को अपनी इच्छा के विरुद्ध गुलाम रख सकेगा। मैं गोवा की पुर्तगाली सरकार को सलाह दूँगा कि वह समय की पुकार को सुने और अपने निवासियो के साथ सम्मानजनक समझौता करे बजाय ऐसी सधि के जो उसके और ब्रिटिश सरकार के बीच कभी हुई थी।

गोवावासियो से मै यह कहूँगा कि वह पुर्तगाली सरकार का डर अपने दिलो से निकाल दे जैसा कि भारत के अन्य भागो मे वहा के लोगो ने ताकतवर ब्रिटिश सरकार का डर अपने दिलो स निकाल दिया है और वह नागरिक स्वाधीनता और उसके साधनो के बुनियादी अधिकारो को प्राप्त करे। गोवावासियो के बीच धार्मिक भिन्नताएँ समान नागरिक जीवन मे बाधक नही होनी चाहिए। धर्म प्रत्येक व्यक्ति क लिए है और वह उसके अनुसार आचरण करने से कभी भी धार्मिक समूहो मे विवाद या झगडे का कारण नही बनता है।

नई दिल्ली 26–6–46 **मो क गाधी**

(हरिजन जून 30 1946)

गाधीजी को पुर्तगाली गवर्नर जनरल का पत्र

महोदय,

कुछ दिन पहले मैने प्रेस के जरिए उस चेतावनी को पढा जो आपने मेरी सरकार को दी है।

उन तानाशाहो को छोडकर जिनकी स्वाधीन लोगो ने निदा की है मैं आज तक किसी ऐसे राजनीतिक नेता को नहीं जानता जिसने अन्य देशो के आतरिक मामला मे इस तरह दखल दिया हो। लेकिन मैं पहले ही मानता हूँ कि आपको अपनी सिधाई मे गलत और दुर्भावनापूर्ण सूचनाएँ देकर भडकाया गया है। मै आपका इस मामले मे भ्रम निवारण करना चाहता हूँ ताकि आप अपने इस नैतिक पक्ष को न छोडे जो कि मैं समझता हूँ आपके राजनेतिक आदर्श का आधार रही है।

मै लम्बे अरसे से आपकी विधिक सस्कृति से अवगत हूँ और आशा करता हूँ कि आप भी मेरी स्थिति को बेहतर समझ सकेगे। जब आप यह जानेगे कि मैने भी अपने देश में कानून की शिक्षा प्राप्त की है और मैं अपने देश की से सबधित रहा

हूँ। तब क्या आप यह विश्वास कर सकेगे कि न्यायाधीश होने के नाते मै उस जनता के नागरिक अधिकारो से अनिभिज्ञ हूँ जहॉ पर मैं शासन कर रहा हूँ ?

यदि आप इस पर विश्वास करे तब आप विधि विज्ञान के महत्त्व को अस्वीकार करेगे जो हम दोनो ने सीखा और भारत के इस भाग मे पुर्तगाली शासन के चार सौ से अधिक वर्षों तक राजनैतिक तथ्य पर आघात करेगे।

मै समझता हूँ कि आप पुर्तगाली लोगो के इतिहास ओर चरित्र से भलीभॉति परिचित नही हे। एक सौ अट्ठासी वर्ष क शासन को उनकी इच्छा के विरुद्ध दासता कहना ऐसा लगता है कि आप न तो वर्तमान स्थिति को जानते है और न ही भारत के इतिहास को।

पुर्तगाली भारत मे न तो देश को गुलाम बनाने न आर्थिक शोषण के लिए आए थे। वह आए थे भ्रातृत्व के उच्च आदर्शों को लेकर और उन्होने भारतवासियो को सदा अपना भाई समझा और कभी अपनी प्रजा नही। यह कोरे शब्द ही नही है बल्कि यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि दस हजार से अधिक भारतवासी पुर्तगाली उपनिवेशो मे हर ऊँचे पेशे मे कार्यरत हैं। इसके विपरीत पुर्तगाली भारत मे कुछ सौ ही यूरोपीय पुर्तगाली कार्य कर रहे हैं।

अलबुकर्क के बहुत पहले के समय स लेकर आज तक त्याग करते हुए उन्होने भारतीयो को भारतीय सभ्यता के कलक से मुक्त किया हे और उन्हे इसमे इतनी सफलता मिली कि गोवावासी जाति और अश्पृश्यता के अत्याचारी और अन्यायपूर्ण नियमो से मुक्त हुए।

गोवा के लोग जो समझदार और ईमानदार है वह इस नागरिक स्वाधीनता के लाभ को समझते हैं जो कि कुछ अराजकतावादी तत्वो के लिए ही अज्ञात है। जो लोग युद्धोन्माद से पीडित है वह समझते हैं कि विश्व शाति अभी सभव नही है।

आपके प्रबुद्ध मन के साथ न्याय करते हुए और आपके विपुल राजनैतिक दायित्वो को समझते हुए मुझे यकीन नही होता कि आप उन युद्धोन्मादी तत्त्वो का पक्ष ले रहे है जो कि डा लोहिया द्वारा दी गई गलत साक्षियो पर आधारित है।

किस नैतिक या विधिक सिद्धांत ने डा लोहिया को यह अधिकार दिया कि वह वहॉ के शातिप्रिय लोगो मे अव्यवस्था फैलाएँ जबकि वह पुर्तगाली आतिथ्य स्वीकार रहे थे ?

क्या कोई ऐसा देश है जहॉ कि नागरिक स्वाधीनता के नाम पर आदोलनकर्त्ताओ को सरल लोगो को तथ्यों को तोडमरोड कर बहकाने को छोड दिया जाए और इस तरह सच्ची स्वाधीनता और शाति, कार्य और प्रगति जिसका वह उपयोग कर रहे हैं उसको आघात पहुँचाया जाए।

अपने कर्त्तव्य को नकार कर कोई विधि-सम्मत सत्ता स्वाधीनता के इस दुरुपयोग को नहीं सहन कर सकती और न ही वह एक छोटे से गुट को जनता के न्यायोचित और सच्ची की कीमत पर ऐसा कर सकते हैं

पुर्तगाल एक शातिप्रिय देश है। वह अत्याचारी निरकुश शक्ति नहीं है। जैसा कि हाल के युद्ध मे भी स्पष्ट हुआ है वह एक व्यवस्थित राष्ट्र है।

यहाँ के प्रशासन मे व्यवस्था है। मन मे व्यवस्था है, सडको पर व्यवस्था है। यहाँ के सावैधानिक नियम, यहाँ की परपराएँ, रिवाज जनता के स्वभाव के अनुकूल है। वह उन्हे सामान्यत वे सब अधिकार देते है जो अन्य लोगो को किसी सभ्य देश मे प्राप्त हैं।

आप जानते है कि पूर्ण स्वाधीनता एक अप्राप्त कल्पना लोक है। सामाजिक जीवन मे पूर्ण अधिकार नहीं हो सकते क्योकि प्रत्येक व्यक्ति के अधिकार को दूसरे के भी अधिकारा पर ध्यान देना पडता है और इसमे और सही सत्ता को भी।

सत्ता का प्रथम अधिकार ओर कर्त्तव्य भी जनता के कल्याण की रक्षा करना है ओर जिस तरह सत्ताधारी का यह कर्त्तव्य है कि वह जनता के स्वास्थ्य की रक्षा कर और उसे महामारियो और नशाखोरी से बचाए उतनी यह भी कि वह उनके मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा करे और उन्हे उदड विचारो से बचाए। मै नही मानता कि कल्याणकारी सेसरशिप मे, जो बिना दलगत भावनाओ के जनमत को शिक्षित कर रहे है सिर्फ स्वाधीनता की कमी है, बनिस्बत राज्य द्वारा उन अन्य प्रकार के हस्तक्षेपो के जो आज हम तथाकथित लोकतात्रिक देशो मे देख रहे हैं।

उदाहरण के लिए, हमारे देश मे भारत सरकार की तरह वस्तुओ के मूल्य नही छपते जैसा कि हाल मे मैंने बम्बई क्रानिकल के पॉच जुलाई के अक मे देखा। एक दो अति अनिवार्य वस्तुआ को छोड हमारे यहाँ कीमते स्वतत्र रूप से तय होती हैं राज्य द्वारा नही। तब व्यापारिक स्वतत्रता कहाँ है ?

निष्कर्ष रूप मे अपने न्यायिक पेशे और सरकारी पद की जिम्मेदारी को देखते हुए मै आपको यह विश्वास दिला दूँ कि गोवा मे नागरिक स्वाधीनता को कोई खतरा नही है। उसे खतरा पहुँचा रहे है वह आदोलनकर्त्ता हैं जो घूस देकर य दबाव डालकर सरल जनता को शातिपूर्ण कामो से अलग कर रहे हैं।

मुझे विश्वास है कि आप अपनी स्थिति पर पुनर्विचार कर ऐसे आदोलनकर्त्ताओ को अपने नाम पर काम करने की इजाजत न देगे जैसा कि उन्होने अभी तक किया है।

भवदीय

नोवा गोवा
जोस बोसा

18 जुलाई, 1946
गवर्नर जनरल पुर्तगाली भारत

पुर्तगाली भारत के गवर्नर जनरल को गाधी जी का उत्तर

उर्ली काचन पूना
2 अगस्त, 1946

प्रिय मित्र,

मेरे द्वारा हरिजन में लिखे गए लेख के उत्तर में आपने मुझे कपापूर्वक लिखा है मै हूँ कि आप जानते हैं कि मैं मोजबीक डेलगाओ और इनहामबेन गया हू

वहॉ मुझे परोपकार के लिए कोई सरकार नहीं दिखाई दी। हॉ मुझे यह देखकर हैरत हुए कि वहॉ की सरकार भारतीयो, पुर्तगालियो और स्वय अफ्रीकनो के बीच भेदभाव बरतती है। न ही भारत मे पुर्तगाली निवासियो का इतिहास इस दावे को सिद्ध करता है जो आप कर रहे है।

वास्तव मे जो मैने लिखा और जो मुझे मालूम है गोवा की स्थिति तनिक भी शिक्षाप्रद नही है। गोवा मे भारतीय इसलिए बेजुबान नही है कि वह पुर्तगाली सरकार के परोपकारी स्वभाव से अपरिचित हैं, बल्कि इसका कारण वहॉ आतक का राज है। आप मुझे क्षमा करेग कि मै आपके इस वक्तव्य से सहमत नही हूँ कि गोवा मे पूरी स्वाधीनता है और वहॉ का आदोलन कुछ थोड़े असतुष्टो तक सीमित है।

प्रत्येक विवरण जो मुझे निजी तौर पर मिला है और जो मैने समाचार पत्रो मे देखा है वह विपरीत मत की ही पुष्टि करता है। मै समझता हूँ कि आप कोर्ट मार्शल द्वारा डा ब्रैगेजा को आठ साल की सजा और दूर स्थित पुर्तगाली उपनिवेश मे उनका देशनिकाला अपने आप मे इस बात का पुष्ट प्रमाण है कि गोवा मे नागरिक स्वाधीनता एक विरल वस्तु है। क्यो एक डा ब्रैगेजा जेसे कानून पालक नागरिक को इतना खतरनाक समझा गया और उन्हे देश निकाले के लिए चुना गया ?

यद्यपि डा लोहिया की राजनीति सभवत मरे से भिन्न है फिर भी उन्होने गोवा के काले कारनामो पर ध्यान आकृष्ट कर मेरी प्रशसा अर्जित की है। गोवावासी तब तक स्वाधीनता का इतजार नही कर सकते जब तक कि बृहद भारत इसे प्राप्त न कर ले। कोई भी व्यक्ति या समूह बिना नागरिक स्वाधीनता पाए अपना स्वाभिमान खो देता है। डा लोहिया ने एक मशाल जला दी है जिसे गोवावासियो को बुझने नही देना चाहिए अन्यथा उनका विनाश होगा। आपको और गोवावासियो को डा लोहिया का इस मशाल को जलाने के लिए धन्यवाद देना चाहिए इसलिए आपका उन्हे अजनबी कहना यदि दुखद नही तो हास्यास्पद है। सच तो यह है कि पुर्तगाली ही यहाँ अजनबी हैं चाहे वह परोपकारी के रूप मे आएँ या विश्व के तथाकथित कमजोर जातियो का शोषण करने के लिए।

यहॉ आपने जातिभेद के उन्मूलन की बात की है। जो कुछ मैं देख रहा हूँ वह यह है कि कोई जातिभेद नष्ट नही हुआ बल्कि पुर्तगाली शासको की एक नई जाति बढ गई हे जो हमारी जाति व्यवस्था से कही आधिक भयकर है।

मै आशा करता हूँ कि आप परोपकार, नागरिक स्वाधीनता और जातिभेद के बारे मे अपने विचारो को सशोधित करेगे और सारी पुलिस को वापस बुला लेगे और पूरे दिल से नागरिक स्वाधीनता के पक्ष मे खडे होगे, और यदि सभव हो तो गोवावासियो को अपनी सरकार बनाने के अधिकार देगे तथा उसे बनाने मे वृहद भारत के अधिक अनुभवी भारतीयों को भी इनकी सहायता के लिए आमत्रित करेगे कि वह ऐसी सरकार बना सके।

भवदीय

मो.क गॉधी

पुनश्च

चूँकि आपका पत्र प्रेस मे छपा था मैं भी इसे हरिजन में छपने भेज रहा हूँ (हरिजन 11 अगस्त 1946

गाधीजी का प्रार्थना सभा मे प्रवचन

नई दिल्ली
2 अक्टूबर, 1946

ऐसा लगता है कि ईश्वर ने हमे इस गीत के माध्यम से विशेष सदेश दिया है। सच मे भारत के जीवन स्रोत सूख रहे है। यह सोचना बेवकूफी है। चूँकि केंद्र मे काग्रेस की सरकार है इसलिए सब ठीक ठाक हैं। मैं उन छुरेबाजियो का जिक्र नही करूँगा जो सचमुच दिल दहलाने वाली है। अब दर्शन के लिए कि हमारी जीवनधारा सूख रही है। मै गोवा के बारे मे कुछ कहूँगा जो वहॉ हो रहा है।

गोवा एक छोटा सा द्वीप है। यह भारत का अभिन्न अग है। खबर मिली है कि वहॉ पहुँचते ही डा राममनोहर लोहिया गिरफ्तार कर लिए गए हैं और उन्हे एकात कालकोठरी मे डाल दिया गया है। कुछ दिन पहले वहॉ श्री काकोडकर को नागरिक स्वाधीनता के पक्ष मे आवाज उठान के लिए नौ साल की सजा दी गई। यह भी सुना जा रहा है कि उन्हे देश निकाला दिया जाएगा।

डा लोहिया एक विद्वान आदमी हैं। मै उनके विचारो से असहमत हो सकता हूँ लेकिन इसका यह मतलव नही कि मै उनका मामला मेर दिल को नही छूता। आप सब को मेरी तरह डा लाहिया की गिरफ्तारी और गोवा की घटनाओ पर उतना ही दुखित होना चाहिए। मैने वहॉ के अधिकारियो से कुछ पत्र व्यवहार किया लेकिन वह निरर्थक रहा। किसी हिदुस्तानी से यह कहना कि वह गोवा मे प्रवेश नही कर सकता ऐसा ही है कि मुझसे कहा जाए कि मैं भारत के किसी विशेष हिस्से म नही जा सकता। गोवा भारत का उतना ही अग है जितना कि कश्मीर या अन्य कोई राज्य। यह असहनीय है कि डा लोहिया को एक विदेशी समझा जाए और उन्हे गोवा मे प्रवश की मनाही हो।

देखो पडित नेहरू क्या कदम उठाते हैं जिन्होने कॉटो का ताज पहना हुआ है और लार्ड बेबल क्या करते हैं जिससे कि गोवा के अधिकारियो की मनमानी खत्म हो।

(हिदुस्तान 3–10–1946)

डॉ. लोहिया का गोवा के चीफ जज को पत्र

(गोवा हाईकोर्ट के चीफ जज को लिखा गया डा राममनोहर लोहिया का पत्र दृष्टव्य है। दैनिक प्रेस से उद्धृत उसकी नकल)

जहॉ तक मैं जानता हूँ कि मेरी गिरफ्तारी के समय मैने कोई गोवा का कानून नही तोडा मेरा इरादा हो सकता है कि मैं ऐसा करुँ लेकिन वह अप्रासगिक है। कोल्लम स्टेशन पर पुलिस मेरे डिब्बे मे घुसी उसने मुझसे कुछ सवाल नही पूछे और मुझे तुरत कर लिया आज का कानून शायद पुर्तगाली को किसी ऐसे व्यक्ति को गिरफतार करने या देश निकाला देने का अधिकार देता है जिसे कि वह

खराब विदेशी समझते हैं। लेकिन उसको यह अधिकार नही देता कि वह उसे जेल मे बद कर दे जब तक कि वह कोई कानून नही तोडता। अतीत म पुर्तगाली सरकार ने मुझे विदेशी घोषित किया है और मेरे ऊपर अतरराष्ट्रीय कानून लागू किया है। उन्हे मुझसे माफी मागनी चाहिए और गैर कानूनी कारावास के लिए मुवावजा देना चाहिए। या उन्हे भारत ओर गोवा के बीच अतर्राष्ट्रीय कानून लागू करने का प्रयास त्याग देना चाहिए। 29 सितम्बर से 2 अक्टूबर के बीच उन्होने मुझे एक ऐसी कोठरी मे रखा जिसमे इतनी ही हवा आने की जगह थी कि आदमी जिदा भर रह सके। उन्हे इस तरह के व्यवहार के लिए मुझसे माफी मागनी चाहिए ओर मुआवजा देना चाहिए। मुझे बराबर एकात कोठरी मे रखा जा रहा है यद्यपि कुछ बेहतर स्थिति मे मुझे नहाने के अलावा कोठरी से नही निकाला जाता और न ही मुझसे कोई सपर्क कर सकता है। इससे मेरी कारावास की अवैधता ओर बढ जाती है। कोई डा लोहिया के मुआवजा मागने के अधिकार पर न हॅसे। यदि उसके पीछे ताकत होती तो गोवा के अधिकारी तुरत माफी मागते और मुआवजा देकर क्षतिपूर्ति करते। बडी ताकतो के लिए हानि या अपनी प्रजा के थोडे से अपमान से भी मुआवजा मागना कोई अनहोनी बात नही है। डा लोहिया छोटे आदमी नहीं हैं। भारत मे राष्ट्रीय सरकार है। मुझे भरोसा है कि वह उतनी ही सवेदनशील है जैसा कि अन्य कोई हो सकती है। मुझे आश्चर्य होगा कि उन्होने अपना विरोध प्रकट कर दिया होगा और गोवा सरकार से अपनी गलती सुधारने के लिए कहा होगा। जो भी हो राष्ट्रीय सरकार और आहत डा लोहिया को जन समर्थन की शक्ति मिलनी चाहिए। उन्हे पहुँचाई गई हानि हमारे गावा देशवासियो को पहुँचाई गई हानि है। और उनके माध्यम से सारे भारत को।

नई दिल्ली राम मनोहर लोहिया
अक्टूबर 13, 1946
(हरिजन 20–10–1946)

डा. राममनोहर लोहिया को तार

नई दिल्ली
15 अक्टूबर, 1946

डा राममनोहर लोहिया
राम निवास, थलवाबाडी, बेलगाव

तुम्हे गोवा में पुन प्रवेश करना है। ऐसा करने से पहले यहाँ आओ। कोई जल्दी नही। तार से जवाब दो।

बापू

(प्यारेलाल के सकलन से)

गोवा का सघर्ष और डॉ० लोहिया

मैं श्री विनायक कुलकर्णी के निबध की सराहना करता हूँ। वह गोवा की सच्चाई की कहानी की शुरुआत हं। गोवा क बारे मे लोगो की इतनी अधिक दिलचस्पी हे और इतनी अधिक समृद्ध सामग्री कि इसके लिए विद्वान की अनुभवी ऑख और थोडी भावुकता चाहिए। गोवा की कहानी महानता और नीचता का मिश्रण है। महानता साधारण जन की जिसका अतिम कृत्य है दुश्मन की गोलियो के सामने अपनी छाती कर देना ओर नेताओ की नीचता। सहानुभूतिपूर्वक इस मिश्रण क अध्ययन की आवश्यकता है। भारतीय राजनेतिक वातावरण मे ऐसी क्या चीज हे जो सामान्यजन मे महानता और असाधारण लोगो मे ऐसी नीचता पैदा करती हे ? गोवा के मामले मे हमारे देश के वातावरण ने ऐसी क्रूरता दिखाई है ? अग्रणी दलो और व्यक्तियो द्वारा घटनावार तिथिवार एव वक्तव्यवार इसका अध्ययन किया जाना चाहिए। यह अध्ययन सबके लिए बहुत ही दिलचस्प होगा। वह एक कथाकार की कला और ऐतिहासिक विद्वता की कृति होगा और वह जनता की आत्मा को उद्‌घाटित करेगा। श्री कुलकर्णी को अपना कार्य सफल समझना चाहिए जिससे कि ऐसी किताबो निबधों पुस्तिकाओ की श्रृखला शुरू हो जा अतत गोवा पर एक प्रामाणिक पुस्तक दे।

18 जून का एक वाकया मेरे एक मित्र के यहॉ जाने ओर बिना किसी जानकारी के सर्वथा स्वत प्रसूत था। दूसरी कार्रवाई तीन महीने बाद हुई। यह लिखते हुए कि मै पहला भारतीय था जो गोवा सरकार द्वारा दो बार गिरफ्तार कर बाहर निकाला गया मैं अपने किसी गुण विशेष पर ध्यान आकृष्ट कराना नही चाहता, सिवाय इस चमत्कार के कि महात्मा गाधी उस समय जीवित थे। मेरा पहला निष्कासन जनता के सहज विद्रोह का परिणाम हो सकता है जो पहले या बाद मे कभी इस प्रकार की गिरफ्तारी के बाद नही हुआ था। मेरा दूसरा निष्कासन निस्सदेह महात्मा गाधी के हस्तक्षेप का नतीजा था। देशी मत्रियो ने महात्मा गांधी से "ना" कह दिया था। ब्रिटिश वायसराय तब था। 2 अक्टूबर को जनता ने गाधी का जन्म दिन मनाया लेकिन गाधीजी ने उसे मेरे पक्ष मे मनाया और सार्वजनिक तौर पर वायसराय से हस्तक्षेप करने को कहा। गाधीजी जो कुछ भी कहते थे, वह बडे नपे-तुले शब्दो मे और बडी दृढता के साथ। गोवा के राष्ट्रवादियो और भारत सरकार के बीच कोई मध्यस्थता करने वाला नही रहा। यह 1948 या 1949 के करीब की बात है। इस बीच दूषित धन का परिमाण बढ रहा था— 1000 रु महीने से शुरू होकर मै समझता हूँ पिछले वर्षो मे 5000 रु तक और शायद अभी बढ रहा है।

मै इस दूषित धन कहता हूँ क्योकि जिस गोवा के देशभक्त ने इसे लिया उसकी आत्मा कलुषित हुई। यह एक विचित्र घटना है। यह धन विदेशी नही है। यह भारत का अपना पैसा है। और इसका पानेवाला इससे दूषित हुआ है। यह इसलिए कि कोई भी जनआदोलन आज तक सरकारी पैसे से नही चला है। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि हमारे देश के सरकारी मत्री अभी यह महसूस नहीं करते कि उन्हें अपनी सत्ता पर स्वय नियत्रण रखना चाहिए राष्ट्रवादी कामों के लिए जो धन वह दे रहे हैं

वह उनकी बपौती नही है। वे उसे द भर सकते हैं, वह उस पर नियत्रण नही कर सकते। मै गोवा के उन देशभक्तो से क्या कहूँ जिन्होने इतनी छोटी रकम ली जिससे एक–दो व्यक्तियो का भले ही भला हो, किसी समूह का कभी नहीं हो सकता। उन्होने अपनी आत्मा बेच दी। उनमे से कुछ लोग है जिन्होने सघर्ष के पहले दौर मे बडे आडबर से घोषणा की थी कि भारत के महान मसलो मे उलझे हुए है और उनके पास गोवा के लिए समय नही बच पाता। मै स्मरण कराऊँ कि किस प्रकार 1946 मे अशक्त समाजवादियो की एक मराठी पत्रिका ने मुझपर अनुशासनहीनता का आरोप लगाया। अब इसने अपना सुर बदल दिया है, विशेषकर जब से इसकी बागडोर सरकारी जीहजूरो के हाथ मे आ गइ है।

गोवा की कहानी जनता के अमर गौरव की कहानी है और दूसरी तरफ उसके नेताओ, सरकार और विरोधियो के निर्लज्ज कमीनेपन की। कर्नेल सिह हीखे गुरुजी पन्नालाल यादव, अमीचद गुप्ता और उनकी तरह बीसियो की अमर गौरव गाथा है। वह लोग थे जिन्होने जीवन के नियम को नकारा। वह जान बचाने के लिए भाग सकते थे। पर नही। दुनिया ने मृत्यु मार्ग पर बढते सिपाहियो को देखा है। पर उन्होने सदा ऐसा किया जब उनके हाथ मे हथियार थे और वह शत्रु पर घातक प्रहार कर रहे थे जो उन्हे विजय दिलाएगे। इन लोगो के पास कोई हथियार न थ। उन्होने जीवन के नियम का उच्चतम आचार या आध्यात्मिक सकल्प से नकारा। उस परम क्षण पर इन लोगो के चेहरे दमक रहे होगे। मै आनेवाले इतिहास की आशा मे हूँ। जब मनुष्य के ऐसे कबीले जन्म लेगे जो हजारो की सख्या मे निहत्थे अन्याय के विरुद्ध, दैनिक जीवनके छोटे अन्यायो और गोवा जैसे बडे अन्यायो के विरुद्ध लडगे और नई सभ्यता मे प्रवेश करेगे। उस दिन सागर ने सागर को पुकारा, उस दिन पर्याप्त सख्या मे गोरे पत्रकार निष्पक्ष और शकालु रहे उनमे से कुछ मरते हुए सत्यग्रहियो की पुकार पर आगे बढे जहाँ उनकी भी मौत हो सकती थी। ठीक उसी समय मरते हुए स्वयसेवको के नेता उसी तरह जान बचाने को भाग रहे थे जैसे कि बडे नेता जो पहले ही अपनी शारीरिक और आध्यात्मिक सुरक्षा पा गए थे।

गोवा के बारे मे सरकार और विरोधी दलो के व्यवहार का रहस्य अभी खुलना बाकी है। विरोधियो के व्यवहार के बारे मे मै कुछ जानता हूँ। कुछ सालो से देश के विरोधी दल हैं कम्यूनिस्ट, जनसघ, प्रजा (या लकवाग्रस्त) सोशलिस्ट हैं जिनके पास कोई काम नही है। इनके पास आतरिक राजनीति को शुद्ध करने का साहस नही है। देशी सरकार के सामने सीधा खडा होने का इनमे दम नही है। वह उसके साथ सौदा चाहते हैं विरोध की जनशक्ति कहीं और अभिव्यक्त होनी थी। उन पर दबाव पड़ रहा था। गोवा से बेहतर और कौन मामला उन्हे मिलता ? इसने सरकार से उनकी सौदेबाजी मे भी बहुत बाधा नही डाली। वह उन्हे कम जोखिम की अच्छी तफरी लगी और किसे मालूम था कि पुर्तगाली सरकार इतनी वहशी और क्रूर होगी और भारत इतनी नपुसक ? लेकिन सरकार का व्यवहार कुछ अधिक जटिल है मै दो पूर्व रख सकता हूँ जब

कश्मीर का मामला बिगडा और जब अन्य क्षेत्रो मे भारत की विदेश नीति की मूर्खता प्रकट हुई, गोवा अभियान का सहारा लिया गया। मई 1954 से सितम्बर 1955 की अवधि मे भारत की विदेश नीति के उतार चढाव का तारीखवार गहन अध्ययन किया जाना चाहिए। इसी तरह इस अवधि मे गोवा आदोलन का तारीखवार ब्यौरे से अध्ययन हो। तभी भारत की विदेश नीति की असफलता के साथ गोवा मामले पर उत्साहपूर्ण भाषणो की सगति को अतत समझा जा सकता है।

दूसरी पूर्व–स्थापना सरकार और उसके अन्यायो के विरुद्ध जनादोलनो के उतार चढाव की है। अप्रैल–मई 1954 मे भारत के सबसे बडे राज्य सरकारी अन्याय के विरुद्ध आवाज उठनी शुरू हुई। सितबर तक इसका चरमोत्कर्ष हुआ। सारे देशकी जनता मे उत्तेजना फैल रही थी। अदालतो मे शानदार जीतो ओर सिचाई की अत्यधिक दरो म कमी कराने की जीतो ने अपना असर दिखाया। सरकार बडी सासत मे थी और तब उसने समाजवादियो के अशक्त नेतृत्व की मदद से आदोलन को कमजोर करना चाहा। सरकार समाजवादी आदोलन को विभक्त करना तो नही चाहती थी, क्योकि उससे अप्रत्याशित ऊर्जावान आदोलन के उठने की आशका थी। आतरिक विरोधी दलो के साथ इन चालबाजियो को कर आतरिक अन्यायो ओर गोवा मे वाहय अन्याय के विरुद्ध जनता का ध्यान बॅटाने मे सरकार को कोई परहेज न था। मोटे तौर पर जनता सरकारी साजिश का शिकार बनी। 1955 के पूर्वार्ध मे उन्होने मणीपुर के आतरिक सघर्ष पर उतना ध्यान नही दिया जितना कि गोवा के बाहरी सघर्ष पर। निस्सदेह भारतीय सरकार और विरोधी दलो के नेतृत्व ने गोवा के मुद्दे का एक घटिया और कायरतापूर्ण तरीके से अपने स्वार्थो के लिए शोषण किया जबकि उनके अनुचर ईसा और गाधी की मृत्यु के ऐसे साक्षी बने जो नए इतिहास को जन्म देता है।

मैं नही समझता कि तब तक गोवा के लिए कुछ किया जा सकता है जब तक कि दिल्ली की वर्तमान हुकूमत कायम हे। या तो इन शासको को हटना चाहिए अन्यथा जनता को इन्हे सच और विवेक शब्द बोलने पर मजबूर करना चाहिए।

मै अक्सर गोवा तथा अफ्रीका और यूरोप के सुदूर जेलो के कैदियो के बारे मे सोचता हूँ जिनमे मधु लिमए भी है, जिनकी सजाऍ इतनी क्रूर हैं। मै नही जानता कि पुर्तगाली सरकार जो कई सदियो से गोवा पर हुकूमत कर रही है अपने पहले राजनैतिक कैदी और नागरिक विरोधी के रूप मे मेरी सुनवाई करेगी। पुर्तगाली यूरोपीय इतिहास मे पहले है जिन्होने एशिया के दरवाजे पर दस्तक दी। इतिहास की पीडा और पश्चाताप के पचने के बाद पहले विजेता और पहले विजित पुर्तगाल और भारत के बीच एक नया सबध बना। डा सालाजार ओर उनके लातीनी सहकर्मियों से मैं एक बात कहना चाहूँगा। गोवा की लडाई अभी हो सकती है, और अधिक खून बह सकता है, पर अभी उसमे देरी है और कोई जरूरी नही कि ऐसा हो। फिलहाल गोवा मे पुर्तगाली हकूमत को कोई खतरा नही है। मैं यहाँ अन्य किसी नैतिकता की बात नही करूँगा सिवाय उसके जिसका सबंध राजनैतिक शासन से है और उसे कैसे निरतर जारी रखा जाए। ऐसी नैतिकता अवश्य जब उस शासन को खतरा होगी कैदी बनाएगी वह आज नहीं है वह तब तक नहीं है जब तक मौजूदा दिल्ली के तख्त पर बैठे हैं पुर्तगाली उनसे डरकर अपने

को बेवकूफ बना रहे है। उन्हे हँसाना चाहिए। उन्हे जब तक हँसना चाहिए जब तक कि भारत के राजनैतिक दल तिनको के बने हुए है और यह अभी काफी अरसे तक चलेगा। जब तक वर्तमान मे कोई खतरा नही है, जल मे राजनैतिक कैदियो का रखना लातीनी बुद्धि का अपमान है।

राममनोहर लोहिया

लोहिया की गिरफ्तारी पर सरदार पटेल और नेहरू का पत्र-व्यवहार

(जवाहरलाल नेहरू और बल्लभभाई पटेल के बीच उनके पत्र व्यवहार का सबध लोहिया द्वारा दिल्ली के नेपाली दूतावास के सामने किए गए शातिपूर्ण प्रदर्शन मे उनकी गिरफ्तारी और मुकदमे से सबधित है। इसमे नेहरू के लिए आचार्य कृपालानी का एक पत्र भी है जिससे यह पत्र व्यवहार शुरू हुआ।)

नई दिल्ली
13,जून, 1949

मेरे प्रिय वल्लभ भाई,

कृपालानी द्वारा प्राप्त पत्र की नकल भेज रहा हूँ। यह मेरे यहाँ इतजार कर रहे थे। मेरे देहरादून जाने से पहला सविधान सभा के कुछ सदस्य मुझसे इस विषय पर बातचीत की और लिखा। कुछ ऐसा अहसास था कि जो कदम उठाए गए वह कुछ ज्यादा कडे थे और वह सरकार के प्रति अनावश्यक दुर्भावना पैदा कर रहे है। जुलूस बनाकर राजदूत के घर जाना और वहाँ अर्जी देना या मांग करना विदेशी देशो मे जेसे होता है उसकी नकल है। सामान्यत पुलिस उन्हे रोक लेती है और एक-दो व्यक्तियो को अंदर जाकर आवेदन देने की इजाजत दे देती है। वे उन्हे तब तक गिरफ्तार नही करते जब तक कि वे हिसक न हो और यदि गिरफ्तार भी करती है तो उन्हे अक्सर उसी दिन के अगले दिन उनके विरुद्ध विना कोई कार्रवाई किए छोड दिया जाता है।

यह आमतौर पर स्वीकार किया जाता है कि लोहिया यह जुलूस गैरजिम्मेदारी से गलत कार्य कर रहे थे। लेकिन अब उनके और उनके साथियो के प्रति व्यापक सहानुभूति है और यह समझा जा रहा है कि उनके साथ ज्यादती की गई है मैं चाहूँगा कि आप इस मामले पर विचार करें। विद्यमान वातावरण में जबकि सरकार के प्रति दुर्भाव बढ रहा है यह उचित होगा कि हम जरा धीरें चले और ऐसा प्रभाव न छोडें कि हम मामूली अपराधो के लिए लोगो को सख्त सजा दे रहे हैं।

आपका
जवाहरलाल नेहरू

माननीय सरदार बल्लभभाई पटेल

सलग्नक

नई दिल्ली
11 जून, 1949

प्रिय जवाहर,

मै लोहिया और उनके साथियो के मुकदमे के बारे मे तुम्हे लिखने की सोच रहा था। मैं इसलिए भी हिचक रहा था कि मुझे इसका पूरा भरोसा न था कि कही तुम इसे एक दखलदाजी न समझो। फिर भी मै जोखिम उठा रहा हूँ।

मै समझता हूँ कि ऑसूगेस का छोडना परिस्थितियो को देखते हुए थोडी ज्यादती थी। प्रदर्शनकारियो को गिरफ्तार किया जा सकता था। मैं समझता हूँ कि लोहिया के नेतृत्व मे वह गिरफ्तारी का लोभ न करते। गिरफ्तारी के बाद उन्हे अगले सबेरे छोडा जा सकता था। मैं यह आशा नही करता था कि ऑसूगैस छोडना और गिरफ्तारी के बाद जो कि सामान्य परिस्थितियो मे एक तकनीकी अपराध था, उन पर मुकदमा चलाया जाता।

मैं समझता हूँ कि लोहिया और उनकी पार्टी को बद रखना और उन पर मुकदमा करना अधिकारियो के लिए लाभकर होगा। वह इस मामले को इतना महत्त्व दे रहे हैं जिसके वह योग्य नही है। मै बता दूँ कि मै लोहिया के आचरण का समर्थन नही करता और मैं यह उन्हे बता भी चुका हूँ। यदि ज्यादा देर नही हुई है और यह प्रतिष्ठा का प्रश्न नही है या यह सिर्फ प्रतिष्ठा का प्रश्न है, मै समझता हूँ कि मुकदमा वापस ले लेना चाहिए और उन्हें रिहा कर देना चाहिए। मेरा विश्लेषण गलत हो सकता है फिर भी मैं तुम्हारे सामने अपने विचार रखने का साहस कर रहा हूँ। आशा है तुम बुरा न मानोगे।

सादर,

सदा तुम्हारा
जीवत
(जे बी कृपालानी)

माननीय जवाहरलाल नेहरू
नई दिल्ली

●

देहरादून
18 जून, 1949

मेरे प्रिय जवाहरलाल

तुम्हारे 13 जून, 1949 के पत्र के लिए धन्यवाद।

पहले पत्र के साथ तुमने राममनोहर लोहिया के बारे मे कृपालानी का पत्र भेजा था मैंने को आज देहरादून बुलाया और उनसे बात की तुम्हें मालूम होगा कि दिल्ली में धारा 144 लगी हुई है और वहाँ जिला मैजिस्ट्रेट की के बिना

सभाएँ नही की जा सकती और जुलूस नही निकाले जा सकते। इस मामले मे समाजवादियो ने सभा करने की तो इजाजत ली थी पर जुलूस निकालने की नही। सभा करने की इजाजत दे दी गई थी। वह तीन बजे थी। सभा वाले दिन जिला मैजिस्ट्रेट को सूचना मिली कि बारहखभा रोड पर जुलूस भी निकाला जाएगा। जिला मैजिस्ट्रेट ने कहा कि वह इसकी इजाजत नही देगे। फिर भी सभा के बाद यह फैसला किया गया कि जुलूस निकाला जाए और पुलिस अधिकारियो के प्रतिरोध करने और समझाने के बावजूद जुलूस निकाला गया। इसमें बडी भीड आकृष्ट हुई और जब तक यह बारहखभा रोड पर पहुँचे कई हजार लोग इक्ट्ठा हो गए थे। जुलूस द्वारा लगाए गए नारे ओर लिखी हुई पट्टिकाएँ आपत्तिजनक थी। इनमे से एक मे नेपाल मे लूट बलात्कार और आतक का राज बताया गया था। मेरे विचार से स्थानीय अधिकारियो ने शाति और व्यवस्था के भग होने की आशका और दूतावास के प्रति असम्मान को देखते हुए ठीक ही किया। तुम इससे सहमत होगे कि यह बडा दुर्भाग्यपूर्ण होता। इसलिए उन्होने यह निर्णय लिया कि जुलूस को आगे न बढने दिया जाए और उसे तितरबितर कर दिया जाए।

इतनी बडी भीड से कुछ लोगो की गिरफ्तारी करना ज्यादा जोखिम भरा था। पुलिस ने निर्णय किया कि वह किसी जोखिम को न ले। हमे गैर सरकारी लोग बराबर यह कहते कि बल प्रयोग कर भीड को हटाने से पहले ऑसूगैस छोडी जानी चाहिए। पुलिस ने वही किया ओर भीड तितरबितर हो गइ।

इस बात मे कुछ दम है कि इस मामले को कुछ कम गभीर समझा जाता। लेकिन इस रुख को देखते हुए जो हमने किया जब सिख ओर अन्य लोग ऐसे जुलूस निकालना चाहते थे, स्थानीय शासन के लिए किसी दल विशेष द्वारा अपनी मनमर्जी से सत्ता के आदेशो को न मानने की इजाजत नही दी जा सकती। तुम्हे याद होगा कि इस घटना के बाद समाजवादियो ने उचित रुख न अपनाकर हमे मदद करने के बजाए पुलिस के विरुद्ध कुछ बेसिर पैर के आरोप लगाए। इस पर चीफ कमिश्नर ने यह महसूस किया कि कानून को अपना काम करना चाहिए। अब यह मामला आखिरी दौर मे पहुँच गया है और एक-दो दिन मे अतिम सुनवाई हो जाएगी और फैसला हो जाएगा।

मै नही समझता कि हमारे लिए यह बुद्धिमत्ता होगी कि हम इस समय न्याय के मार्ग मे बाधा डाले। इससे दूतावासियो के परिसर मे यह दुर्भाग्यपूर्ण भावना पहुँचेगी कि इस तरह के प्रदर्शन वहाँ प्रदर्शनकारी बिना किसी डर के कर सकते हैं। राममनोहर लोहिया ने अपने वक्तव्य मे कहा है कि उनका विचार था कि वह दूतावास मे कुछ लोगो को अदर जाकर अपना प्रस्ताव देने की अनुमति लेते। लेकिन इतनी बड़ी भीड के साथ और भावनाओ के उठान में ऐसे मे किसी को दूतावास के अदर जाने देना दुस्साहसी कार्य होता। तब वहाँ दूतावास के किसी कार्यकर्ता के साथ हाथापाई हो सकती थी और रक्षकदल उस पर नियत्रण न कर पाते और वहाँ हिसा प्रतिहिसा हो सकती थी। ऐसी किसी घटना का कूटनीतिज्ञो पर विपरीत प्रभाव पडता है। मैं जानता हूँ कि यह मामला एक ही दूतावास पर जाकर नही थमता। इन परिस्थितियो में मै समझता हूँ कि बेहतर होगा कि कानून का पालन किया जाए फैसला होने के बाद हम विचार करेंगे और उन में जिनकी ओर आपने ध्यान दिलाया है क्या कदम उठाए जा सकते हैं

जहॉ तक दूसरे पत्र का सबध है वह जेल मेमो से सबधित है। जहॉ तक कि जेल नियम स्वविवेक के प्रयोग की राय देते है। मैं सहमत हूँ कि जेल अधिकारियो को नरमी और सूझबूझ से काम लेना चाहिए। लेकिन यह भी असभव है कि वह कानून की बिलकुल ही परवाह न करे। मुझे शकरप्रसाद से पता चला है कि हवालातियो के लिए जेल के नियम काफी उदार हैं और जहॉ तक नियमो के अदर सभव था डा लोहिया और उनके साथियो को यथासभव ढील दी गई। वह तुम्हे अलग से विस्तार से लिखेगे। इसमे कोई शक नही कि ऐसी घटनाऍ जैसी कि मथाई का राममनोहर लोहिया का जेल मे मिलना और बाद मे आचार्य कृपालानी और सुचेता के वहॉ जाने से जनता की सहानुभूति को बढाने मे मदद मिली। स्वाभाविक हे कि अब हर एक यह निष्कर्ष निकालता है कि जब हमारे अपने ही लोगो का रुख ढीला है, तब कुछ गलती जरूर होगी। यह मामला इस बात को लेकर और अधिक खराब हुआ कि ऐसी गलत धारणा फैलाई गई कि मथाई वहॉ तुम्हारे प्रतिनिधि के रूप मे या तुम्हारी तरफ से भेजे गए थे।

तुम्हारा
बल्लभभाई पटेल

माननीय पडित जवाहरलाल नेहरू,
नई दिल्ली

•

नई दिल्ली
19 जून, 1949

मेरे प्रिय बल्लभभाई,

लोहिया के मामले मे आपको 18 जून के पत्र के लिए धन्यवाद। मामले के तथ्य सुविदित हैं और उनके बारे मे कोई विवाद नही। पर लोहिया के कृत्य को भी सभवत लोगो ने नापसद किया है। लेकिन यह सामान्य नापसदगी एक व्यापक सहानुभूति का रूप धारण कर चुकी है– उनके कार्य से नही बल्कि अपेक्षतया छोटे से अपराध के लिए लम्बी कार्रवाई और महीने भर से अधिक जेल मे बद रखने के कारण। राजनीति से असबद्ध लोग मेरे पास आते है और मेरे से पूछते है कि हम इस मामले को क्या जारी रखे हुए है। इसकी रोज पब्लिसिटी हो रही है ओर उससे सहानुभूति पैदा हो रही है। सामान्यत विदेशो मे ऐसे अपराधो को बहुत हल्का समझा जाता है और हम लोग इसे अधिक तूल दे रहे है। आपने न्यूस्टेट्समैन का लेख देखा होगा। यह सतुलित लेख नही था। लेकिन यह इग्लैंड के प्रगतिशल वर्गो की भावना को व्यक्त करता है। हमारी सरकार को एक पुलिस राज के रूप मे देखा जा रहा है जो बंदीकरण और पुलिस कार्रवाई पर निर्भर है। विदेशो मे हमारी प्रतिष्ठा काफी कम हो रही है।

आपने जेल मे मथाई के जाने का जिक्र किया है वह वहॉ मेरे प्रतिनिधि के रुप मे नही गए। उसने मुझे सूचित अवश्य किया था। मैने इस पर एतराज नही किया ओर न उसकी स्वाधीनता पर अकुश लगाया। इदू भी जाना चहती थी। मैंने उससे भी कहा कि वह जाना चाहती है तो जाने के लिए आजाद है वह नहीं गई मैं उसका जाना यदि पसद नहीं करता तो भी उसे नहीं रोकता मेरी सूचना है कि मथाई क वहा जाने क

परिणाम अच्छा ही रहा। इससे यह दिखा कि हमने सरकार की हैसियत से कानून तोडने पर कार्रवाई की लेकिन इसमे कोई निजी बात न थी।

तेजी से हमारा जनमत से सपर्क टूट रहा है और हम मात्र एक सरकार बनते जा रहे है। और उससे अधिक कुछ नही। इसका एक अतिशय नतीजा कलकत्ता है। लेकिन दिल्ली मे भी काग्रेस का कोई वजूद नही रहा है। वह सार्वजनिक सभा करने मे डरते हैं जब तक कि कोई बडा व्यक्तित्व मौजूद न हो। जब तक कि हम इस यथार्थ से नही निपटते तो हम पूरी तरह अलग थलग पड जाएँगे।

पुलिस एक जरूरी ताकत है लेकिन पुलिस का नजरिया कम ही सही या सतुलित होता है। यह राजनीतिज्ञ का नजरिया नही होता।

जहॉ तक नेपाल का सबध है वहॉ के हालात बहुत खराब हे और हमने इसके बारे मे उन्हे लिखा भी है। मै समझता हूँ कि वहॉ जल्द ही भारी उलटफेर हो सकता है।

मरे और काग्रेस के इर्दगिर्द जो कुछ हो रहा है उससे मैं बहुत चितित हूँ और ऐसा देखता हूँ कि हम समुदाय के महत्त्वपूर्ण वर्गों से बराबर अलग होते जा रहे हैं। हमारे साथ बहुत ही कम नौजवान हैं जो लोग अभी भी हमारे साथ है वह या तो कुछ अतीत के खडहर हैं या कुछ ऐसे लोग जिनका जनमत बनाने मे कोई खास असर नही है और या कुछ ऐसे जिनके विरुद्ध काफी जनाक्रोश है।

इस सदर्भ मे मैने लोहिया के मामले को देखा और इसके खिचने को अपने लक्ष्य के लिए दुर्भाग्यपूर्ण और हानिकारक माना।

आपका स्नेहभाजन

माननीय सरदार बल्लभभाई पटेल

जवाहरलाल नेहरू

देहरादून
21 जून, 1949

प्रिय जवाहरलाल,

लोहिया के बारे में तुम्हारे **19** जून, **1949** के पत्र के लिए धन्यवाद। मै समझता हूँ कि इस मामले पर विचार तब तक मुल्तवी करना ठीक रहेगा जब तक कि हम आपस मे मिलकर बात न करे। मैं तुमसे अगले हफ्ते मिलने की आशा कर रहा हूँ और तब हम अपना रुख तय कर सकते हैं। मैं आशा करता हूँ कि तुम यहॉ आने के लिए समय निकाल सकोगे।

तुम्हारा

माननीय पडित नेहरू

बल्लभभाई पटेल

नई दिल्ली
21 जून, 1949

प्रिय बल्लभभाई,

मैने कल आपको लोहिया के मामले मे लिखा। आज मुझे परोक्ष और विश्वस्त सूत्र से कुछ सूचना मिली है जो मै आपको देना चाहूँगा।

सोशलिस्ट पार्टी कम्यूनिस्टो की गतिविधियो और प्रभाव से बहुत चिंतित है। वह अपनी शक्ति को उनके खिलाफ लगाना चाहती है और सरकार को विभिन्न कामो मे यथासभव जैसे कि राहत कार्य इत्यादि मे सहयोग देना चाहती है। उनके दो गुट हैं। एक बडा है जो उपरोक्त दिशा मे सोच रहा है और एक छोटा जिसके नेता लोहिया हैं और जो समय समय पर गैर जिम्मेदाराना व्यवहार करते है। इनमे से अधिकाश लोहिया की गतिविधियो को नापसंद करते है और वह अदरखाने उनकी निदा करते हैं ओर उन्होने हाल मे लोहिया के खिलाफ काफी कडा भी कहा है। लेकिन दलगत निष्ठा या जो भी कुछ है उन्ही के कारण उन्हं सार्वजनिक तौर पर चुप रहना पडता है। जबकि लोहिया पर अदालत मे मुकदमा चल रहा है। लोहिया के कुछ साथियो ने 26 जून को लोहिया दिवस मनाने की घोषणा की है। अगर वह इस कार्रवाई को पसद नही करते। फिर भी मुकदमे आदि के कारण वह इसके बारे मे कुछ नहीं कर सकते। वह महसूस करते हैं कि अगर यह मुकदमा आदि खत्म हो जाए लोहिया का बाजार भाव गिर जाएगा और तब उनके लिए भिन्न और अधिक सहकारी दिशा में बढना आसान हो जाएगा। कहॉ तक ऐसा हो सकता है मैं नही कह सकता। फिर भी मैं समझता हूँ कि यह विचार योग्य है अन्यथा स्थिति को देखते हुए और उसका फायदा उठाते हुए जिससे कि मौजूदा तनाव घटेगे।

मै समझता हूँ कि लोहिया वगेरह ने आज घोषणा की है कि वह अपना कानूनी बचाव नहीं करेगे। इससे यह मुकदमा जल्दी खत्म हो सकेगा। यह अपनी समस्त गरिमा और महत्त्व को खो चुका है और जितनी ही जल्दी यह खत्म हो और यह अध्याय बद हो उतना ही बेहतर है।

आपका
जवाहरलाल नेहरू

माननीय सरदार बल्लभभाई पटेल

●

नई दिल्ली
29 जून, 1949

प्रिय बल्लभभाई,

जब मैं देहरादून मे था मैने आपसे समान स्थिति पर विचार किया। तब मैने आपसे कहा था कि इससे पहले लोहिया और उन समाजवादियों के बारे मे लिखा था जो यहॉ जेल मे हैं। अब उनका मुकदमा खत्म हो चुका है। मैं समझता हूँ कि यह ठीक रहेगा कि उन सबको अब रिहा कर दिया जाए मेरा सुझाव है कि नीति के अन्तर्गत जिसका कि मैं ऊपर जिक्र कर चुका हू और खासतौर से इस मामले पर विचार करते

हुए। यह एक बहुत तुच्छ सा मामला था और अगर हम इसे ऐसा ही समझे तो अच्छा रहेगा। मैं समझता हूँ कि अगर हम उन सबको रिहा कर दे तो उसका अच्छा असर पडेगा। वे सब एक महीने से ज्यादा जेल मे रह चुके है। समान्य तौर पर वह लगभग ओर सात हफ्ते और जुर्माने की अवधि तक वह रहते। उन्हे इस अवधि के अत तक बद रखने से कोई फायदा न होगा सिवाय इसके कि बहुत से लोग कटुता अनुभव करेगे और यह समझेगे कि हम बदला लेना चाहते है।

कुछ लोग जो जेल मे हैं अचानक ही इस चक्र मे पड गए है। वह एक दिन के लिए दूरदराज जगहो से दिल्ली आए हुए थे और उन्हे यह पता नही था कि दिल्ली मे सत्याग्रह या ऐसी कोई बात होने वाली है। लोहिया के इशारे पर वह जुलूस मे शामिल हो गए और मुश्किल मे पड गए।

मैने आज सुना कि कुछ दिन पहले लोहिया को वन वर्ल्ड मूवमेट का भारतीय समिति के प्रतिनिधि के रूप मे चुना गया है। यह समझा जाता है कि इस हैसियत से वह अगले महीने होने वाले एक विशेष सम्मेलन मे स्टाकहोम जाएँगे। इस एक विशेष विश्व धधे के सस्थापक कुछ ब्रिटिश सासद और खाद्य विशेषज्ञ लार्ड बायड आर जैसे लोग है। यह झक्की और अव्यावहारिक किस्म के है। लेकिन इनकी नीयत अच्छी है। जब वह मेरे पास आए थे तब मैंने उन्हे स्पष्ट कर दिया था कि मैं एक विश्व के विचार के पूर्णत पक्ष मे हूँ लेकिन मैं उनकी योजना को अव्यावहारिक समझता हूँ और मैं औपचारिक रूप से अपने को उनके साथ सबद्ध नही कर सकता।

अब जबकि इस समिति ने लोहिया को सभवत जुलाई मे स्टाकहोम जाने के लिए चुन लिया है, उनके वहॉ जाने का सवाल उठेगा। हम इस मामले को ढीला छोड सकते हैं और उन्हे जेल में रखकर उनको जाने से रोक सकते है। मेरे ख्याल से यह गलत नीति होगी और इसका बुरा असर पडेगा। उनके लिए यह बेहतर होगा कि वह वहॉ जाएँ। विदेश जाना शायद उनके लिए अच्छा साबित हो।

मेरा सुझाव है कि आप इन 42 समाजवादियो या जितने भी उनकी सख्या दिल्ली जेल मे है, बिना शर्त रिहा कर दे और उनकी सजा की बाकी अवधि और जुर्माने को भी माफ कर दिया जाए।

आपका

माननीय सरदार बल्लभभाई पटेल

जवाहरलाल नेहरू

●

देहरादून
30 जून, 1949

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे आज सबेरे भेजे गए तुम्हारे तीनो पत्र मिले। लोहिया और उनके समूह के **बारे में मैं** से जो एक--दो दिनों में कुर्ग से लौट रहे हैं और से मशिवरा करूँगा

मुझे मालूम हुआ है कि अशोक मेहता ने ब्लिट्ज मे चद्रलेखा के बारे मे एक बहुत भद्दा आर्टिकल लिखा है। मुझे शका है कि इस समूह के प्रति तुम्हारी सहानुभूति ठीक नही है। वह उस सौजन्य के योग्य नहीं है जे तुमने उन्हे सदा दिया है। मै चाहता था कि वह रचनात्मक और जिम्मेदाराना दृष्टिकोण अपनाते, लेकिन बावजूद निरतर प्रयासो के हमे निराशा ही हाथ लगी है। इस वर्तमान सकट को बढाने मे उनका योगदान कम नही है। फिर भी मैं तुम्हारे विचारो पर पूरा ध्यान दूँगा।

तुम्हारा

माननीय पडित जवाहरलाल नेहरू

बल्लभभाई पटेल

नई दिल्ली।

•

नई दिल्ली

30 जून, 1949

प्रिय बल्लभभाई,

आज की तारीख के पाटिल के द्वारा लाए गए पत्रो के लिए धन्यवाद।

जहॉ तक समाजवादियो का ताल्लुक है उनमे जिम्मेदारी और रचनात्मक वृत्ति का अभाव है। वे सब कुठाग्रस्त हैं और उनका मनोबल टूट रहा हे। जब मैंने आपको लोहिया और उनके साथी जो जेल मे है, उनके बारे मे लिखा तब मैंने भारत की योजना मे उनके महत्त्व के कारण या विशेष व्यक्तियो को ध्यान मे रखते हुए नही लिखा था। मै अधिक बडे मसले पर और इन मामलो मे सपूर्ण नीति पर सोच रहा था। मैं समझता हूँ कि इनके कुछ सशोधनो पर विचार किया जाना चाहिए। इसी लिए मैं आपके सुझाव का स्वागत किया था कि कुछ महत्त्वपूर्ण लोगो को छोड दिया जाए।

एक तुच्छ से अपराध पर लोहिया को दी गई सजा यह बताती है कि हमारी इस नीति पर प्रतिक्रिया हमारे लिए अनुकूल नही हुई। उदाहरण के लिए, आज मेरी मुलाकात एक विख्यात अमरीकी पत्रकार से हुई जो दिल्ली से गुजर रहा था और जिसे अमेरिकी राजदूत ने मेरे पास भेजा था। उसकी एक टिप्पणी थी कि उसे यह देखकर हैरत हुई कि हमने कुछ समाजवादियो को जेल भेज दिया है। मुझसे पूछा कि हमने ऐसा क्यो किया । मैने उसे एक माकूल जवाब दिया। मैं समझता हू कि लोहिया और उनके साथियो को जेल मे रखना हमारे लिए अच्छा न होगा और इससे विदेशो मे और यहॉ भी हमारी ख्याति को नुकसान पहुँचेगा। जबकि हमारे द्वारा छोडने से अच्छा प्रभाव पडेगा। इसका लोहिया या समाजवादियो से उतना वास्ता नही है जितना कि जनता मे हमारे सामान्य दृष्टिकोण और उसकी प्रतिक्रिया का है।

आपका

माननीय सरदार बल्लभभाई पटेल

नेहरू

देहरादून
9 जुलाई, 1949

प्रिय जवाहरलाल,

जिस रात तुम वापस आए उस दिन लोहिया के बारे मे मैने तुम्हे बताया था कि उन्हे छोडने का निश्चय कर लिया गया है। तुमने हमारी विज्ञप्ति देख ली होगी। उसके बाद लोहिया प्रेस वालो से मिले। लगता है वह अभी भी समझदार नही बने हें और अगर बने भी है तो उनमे बहुत कम परिवर्तन हुआ हे। बहरहाल वह हमारी तुलना मे अपनी पार्टी के लिए ज्यादा बडा सिरदर्द हैं।

प्रेस विज्ञप्ति का प्रारूप

डा राममनोहर लोहिया और उनके साथी जो नेपाल दिवस के सदर्भ मे दिल्ली के जिला मैजिस्ट्रेट के वैध आदेशो के उल्लघन के कारण जिन्हे सजा मिली थी उस पर भारत सरकार ने विचार किया। आरोपी ने अदालत मे इसके उल्लघन के तथाकथित कारण बताए। दिल्ली के चीफ कमिश्नर ने 29 जून 1949 के अपने प्रेस सम्मेलन मे इन आदेशो की स्थिति को स्पष्ट किया। यहॉ इस बात पर जोर देने की जरूरत है कि सभाएँ करने और जुलूस निकालने के लिए इन नियमो का जारी रखना जरूरी है ताकि राजधानी मे शाति और व्यवस्था कायम रहे जहॉ कि पिछले पॉच वर्षो मे आबादी अत्यधिक बढ गई है और अनेक तत्त्व यहॉ पर है जिनमे से कुछ समाज–विरोधी भी हैं। सभाओ और उनमे दी गई वक्ताओ की सख्या से यह स्पष्ट हे कि सरकार ने कभी भी राजनैतिक विरोध को दबाने या इन गतिविधियो को बद करने मे कभी इस्तेमाल किया हो। सरकार की यह नीति रही है कि वह विरोधियो का इन उल्लंघनो का कोई राजनैतिक फायदा न उठाए और वह यह भी महसूस करती है कि आरोपी को कानून की रक्षा के लिए अधिक सख्त दड न मिले। गुणो के आधार पर इन मामलो पर विचार कर सरकार इस नतीजे पर पहुँची है कि जितनी सजा आरोपी काट चुके हैं उससे न्याय का उद्देश्य पूरा हो जाता है। इसलिए यह निश्चय किया गया है कि उनकी बकाया सजा और उन पर लगाए गए जुर्मानों को माफ कर दिया जाए।

लोहिया को महात्मा गांधी का पत्र

22 अगस्त, 1947

चि राममनोहर,

मैं नेपाल के बारे में तुम्हे कल लिखूँगा।

सिगरेट पीना एकदम छोडा जा सकता है। जो कम धूम्रपान करते हैं, वह उसे सीमित नहीं कर सकते। हम कार्यकर्त्ताओं में ऐसी इच्छा शक्ति नहीं है तब हम कैसे कार्य करने की आशा रख सकते हैं? अब असली काम करने का समय आ गया है

क्या तुम गोवा समस्या को पूरी तरह समझ गए हो?

बापू के आशीर्वाद

(गांधीजी की समग्र रचनाएँ, खड 89, प्रकाशन विभाग, पृ 76–77)

लोहिया को नेहरू के पत्र

आनन्द भवन
इलाहाबाद
16 जनवरी 1940

डा राममनोहर लोहिया
द्वारा आचार्य नरेन्द्रदव एम एल ए
कौंसिलर्स रेजीडेस, लखनऊ

प्रिय राममनोहर,

मैने तुम्हारा लेख पढा। ताज्जुब है तुमने कैसे सोच लिया कि हेरल्ड मे छपे अनेक लेखो पर मेरी शैली और विचारो की छाप है। अतिम लेख मैने दिसम्बर के शुरू मे लिखा था। उसका शीर्षक "रूस और फिन्लैंड" था। मै तब जनता को सावधान करना चाहता था कि जो खबरे आ रही है उन्हे पूरी तरह सच न समझे। तब से मैंने हेरल्ड मे कोई लेख नही लिखा है और न ही जो उसमे छपा रहा है पढा है। चूँकि मैं बहुत सफर कर रहा हूँ। सिर्फ तुम्हारे लेख से मुझे कुछ सकेत मिला है कि हेरल्ड मे क्या छप रहा है। हॉ, मुझे मालूम था कि प्रिट की पुस्तक प्रकाशित हो रही है।

मै हेरल्ड के लिए आज एक लेख भेज रहा हूँ। वह मेरे नाम से छपगा। इसमे मैंने तुम्हारे लेख का जिक्र नही किया, पर स्वतत्र रूप से स्थिति पर विचार किया है।

तुम्हारा स्नेहभाजन
जवाहरलाल नेहरू

23 मार्च, 1940

प्रिय राममनोहर,

अमरीका का इस्टिट्यूट आफ पेसिफिक रिलेशस भारत और सुदूर पूर्व तथ पैसिफिक क्षेत्र के अन्य देशो के साथ भारत के आर्थिक सबधो पर एक अध्ययन निकालन चाहता है। यह उनकी अतरराष्ट्रीय शोध ग्रथमाला के लिए है। मुझसे कहा गया है वि मैं श्रेष्ठतम कोटि के विद्वान को चुनूँ जिनपर मुझे और लाहौर के डा एस के दत्त को पूरा भरोसा हो यह शोध ग्रथ 150 पृ का होगा वह एक असली अच्छी चीज चाहते हैं और कुछ अन्य भी भेज रहे हैं जिससे यह पता चल जाए कि वह क्य

चाहते है। वह एक छिछला सर्वेक्षण नही, बल्कि एक विद्वतापूर्ण वस्तुगत लेखाजोखा चाहते हैं। वह संतोषजनक पाडुलिपि के लिए 350 डालर देने को तैयार है और 30 नवबर तक अपने हाथो मे पाडुलिपि चाहते हैं। इसका मतलब है कि यह उन्हे अक्टूबर के शुरू मे जरूर भेज दी जाए। मै इस बारे मे डा एस के दत्त से यह जानने के लिए पत्र–व्यवहार कर रहा हूँ कि उनके क्या सुझाव हैं। मुझे ऐसा लगा कि तुम यदि इस काम को हाथ मे ले सको और समय दे सको तो इस काम को बखूबी कर सकते हो। इसलिए मैं इस पर तुम्हारी प्रतिक्रिया जानना चाहता हूँ।

राजनैतिक हालात को देखते हुए कोई वायदा करना मुश्किल है। फिलहाल हम इस उद्देश्य के लिए इसकी अवहेलना भी कर सकते है, यद्दपि इसे ध्यान मे रखने की जरूरत है।

तुम्हारा स्नेहभाजन
जवाहरलाल नेहरू

❑ ❑ ❑

एक समर्पित जीवन – मधु लिमये

जन्म, बाल्यकाल एव शिक्षा

विचारक, दार्शनिक, स्वतत्रता सग्राम सेनानी, समाजवादी नेता स्वर्गीय मधु लिमये का जन्म 1 मई 1922 को महाराष्ट्र की सास्कृतिक नगरी पुणे मे हुआ था। मधु जी के पिता रामचन्द्र महादेव लिमये न्यू इगलिश स्कूल पुणे मे ही अग्रेजी तथा सगीत के अध्यापक थे। मधु जी के अनुसार उनके पिता जी का "अग्रेजी पढाने मे कोई सानी नही था। गाने बजाने मे उन्हे रुचि थी। वार्षिक विदाई सम्मेलनो के लिए सास्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन करना, बच्चो को गाना सिखाना आदि अतिरिक्त काम भी उनके जिम्मे था, जिसे वे प्रसन्नतापूर्वक करते थे। अध्यापन कुशलता की वजह से वे छात्रो एव सहकर्मियों के चहेते थे। समाजवादी नेता एस एम जोशी इसी स्कूल के छात्र थे। उनसे परिचय होने पर एक बार उन्होने मुझसे पूछा था, "हमे गाने की शिक्षा देने वाले लिमये मास्टर जी के बेटे हो तुम ?"[1] किन्तु श्री मधु लिमये के पिता स्वर्गीय रामचन्द्र महादेव लिमये का स्कूल की प्रबन्ध समिति से विवाद हो गया जिसके फलस्वरूप उन्होने स्कूल से त्याग-पत्र दे दिया। इसके बाद वह किसी एक जगह जम कर रह न पाये और परिवार की आर्थिक कठिनाईयों का दोर प्रारम्भ हो गया।

मधु लिमये जी की विद्यार्थी जीवन मे अधिकाश शिक्षा पुणे मे उनके ननिहाल मे हुई। उनके नाना जी मधु जी को सस्कृत भी पढाते थे। नाना जी की धार्मिक प्रवृत्ति थी। किन्तु मधु जी उससे दूर रहते थे क्योकि सनातन धर्म के प्रति उनके मन मे आस्था नहीं थी। छोटी उम्र मे ही मधु लिमये को अग्रेजी, सगीत और सस्कृत की शिक्षा दी जाने लगी। यही कारण था कि अल्प आयु मे ही उनके ज्ञान मे विस्तार हो गया था। मधु लिमये को मराठी स्कूल मे दिल उचटता था। इसलिए उन्हे बम्बई के राबर्ट मनी स्कूल मे दाखिल किया गया। इस दाखिले से उन्हे बहुत सतोष हुआ। स्वय लिखते हैं, "मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। मेरी स्कूली जिन्दगी मे मुझे अभी तक एक ही स्कूल पसन्द आया है और वह है बम्बई का राबर्ट मनी स्कूल।"[2] किन्तु छुट्टियों में जब मधु जी पुणे गये तो पिता जी उन्हे पुन बम्बई भेजने के लिए तैयार नही हुए। उन्होने कक्षा चार तक का अध्ययन प्राइवेट छात्र के रूप में घर पर ही रहकर एक साथ कराना प्रारम्भ कर दिया।

---

1 लिमये पृष्ठ–13

2 लिमये पृष्ठ–31

1934 मे वह चौथी कक्षा उत्तीर्ण कर पॉचवी मे गए। इस दौरान वह पुणे की प्रसिद्ध नागर वाचन मन्दिर (पुस्तकालय) के सदस्य बन गए। इस पुस्तकालय मे उन्होने साहित्य, कला तथा इतिहास का गभीर अध्ययन किया। यह ज्ञान उस शिक्षा के अतिरिक्त था जिसका अध्ययन वह डिग्री प्राप्त करने के उद्देश्य से कर रहे थे। उनका कथन था कि यदि वह नागर वाचन मन्दिर के सदस्य न बनते तो उनके ज्ञान-चक्षु विकसित न होते। इसी वाचनालय के कारण वह अपनी आयु से अधिक योग्य तथा अग्रेजी एव सस्कृत मे पारगत हो गये। इसी दौरान उन्हे बाल गधर्व के नाटक देखने का शोक हुआ। उन्होने अनेक उपन्यास भी पढे। किन्तु लोकमान्य तिलक का "तिलक चरित्र" केसरी के लेख तथा आगरकर जी की लखन शैली ने मधु जी को बहुत प्रभावित किया, उन्होने मराठी भाषा का गभीर अध्ययन किया। "पाचवी ओर छठवी कक्षा तक इन दो सालो तक मेरे द्वारा किया गया उन्मुक्त अध्ययन मेरे लिए वरदान सिद्ध हुआ।"[3] मधु जी आगे लिखते है कि मेरे मामले मे नागर वाचन मन्दिर का आधुनिक मराठी साहित्य सिर्फ शेरनी का दूध ही नही बल्कि विद्रोह का नशा देने वाली मदिरा बन गया था। मेरे जीवन के विकास की राह का यह एक महत्त्वपूर्ण पडाव था।"[4] इस प्रकार मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण होने से पहले ही मधु जी का सस्कृत, अग्रेजी एव मराठी भाषा पर पूरा अधिकार हो चुका था। किन्तु वह अभी तक किसी विद्यालय के विधिवत छात्र नही थे।

वर्ष 1936 मे उनके पिता जी को बम्बई विश्वविद्यालयल से एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमे बाहरी छात्रो को भी मैट्रिक परीक्षा मे सम्मिलित होने की अनुमति प्रदान की गयी थी। इस अनुमति से मधु जी के पिता को बहुत सतोष हुआ। मधु जी ने मैट्रिक परीक्षा की कोई विशेष तैयारी नहीं की थी। वह तो सगीत नाटक मे डूबे थे। किसी को इस बात पर विश्वास नही था कि वह परीक्षा मे उत्तीर्ण हो जायेंगे। किन्तु मधु जी ने गहन अध्ययन किया था और उन्हे अपनी सफलता पर पूरा भरोसा था। मधु जी ने अच्छे अक प्राप्त कर मात्र पन्द्रह वर्ष की आयु मे मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। माता एव पिता जी को सतोष हुआ। यह घटना 1937 की है।

मैट्रिक की परीक्षा मधु जी के लिए एक चुनौती थी। इससे उनके आत्मबल मे दृढता आयी। उन्होने पढाई को आगे बढ़ाने के लिए अत्यन्त उत्सुकता दिखाई। मधु लिमये के अनुसार, "परीक्षा का परिणाम निकलने के बाद मैंने बडे उत्साह के साथ सबको पत्र लिखे। प्रवेश कार्यालय के खुलते ही मैंने प्रवेश हेतु फार्ग्यूसन कालेज (पुणे) की ओर दोड लगायी। शायद मुझे डर था कि कालेज जाने की बात का कोई विरोध करेगा। कालेज प्रवेश के साथ ही एक नयी दुनिया मेरे सामने खुल गई। अब तक मेरे निराश जीवन मे एक नयी बहार आ गयी थी।" मधु जी आगे लिखते हैं कि "घर की गरीबी, मेरे स्कूली जीवन की हुई खींचतान, रिश्तेदारों की ओर से की जाने वाली उपेक्षा इन सभी बालो ने मेरे मन को उदास कर दिया था। भविष्य के बारे मे मेरे द्वारा सजोये

3 आत्मकथा–मधु लिमये, पृष्ठ–69

4 लिमये पृष्ठ–70

गये सपने यही मेरी अपनी पूँजी थी। कालेज प्रवेश से मेरा मन इन सभी दबावो से मुक्त हो गया। घुटन एव हीन भावना से मुझे मुक्ति मिल गयी। ऑखो के सामने नयी मजिल दिखने लगी। उसने एक ही पल मे एक कीडे को तितली मे बदल दिया था। यह तितली बिल्कुल मुक्त और खुली थी। उस पर किसी चीज का दबाव नही था।"[5]

महाराष्ट्र की सास्कृतिक नगरी पुणे की आत्मा फार्ग्यूसन कालेज था। इस कालेज मे अध्ययन करने वाले छात्रो की दृष्टि व्यापक हो जाती थी तथा मस्तिष्क उन्मुक्त हो जाता था। वह स्वतत्रता, समानता तथा लोकतन्त्र का अर्थ समझने लगते थे। उनका साहित्य बोध बढ जाता था तथा कला एव कविता के पारखी हो जाते थे। इस कालेज की अनेक राष्ट्रीय विभूतियॉ विद्यार्थी रही हैं। मधु जी क अनुसार "उन दिनो महाराष्ट्र के समृद्ध सोच वाले लेकिन पूरी तरह से अग्रेजमय न हुए परिवारो का वह पसदीदा कालज था। केवल महाराष्ट्र के खानदेश आदि हिस्सो से ही नही विदर्भ–नागपुर के परिवार भी अपने लडको तथा लडकियो को पढने हेतु इसी कालेज मे भेजते थे। आज जितन विश्वविद्यालय तब नही थे (1937–40 के मध्य)। कुल मिलाकर महाराष्ट्र की मध्यमवर्गीय जिन्दगी मे फार्ग्यूसन कालज का अपना विशिष्ट स्थान था।"[6] फार्ग्यूसन कालेज को इस बात का गर्व रहेगा कि इसके सस्थापको मे से एक लोकमान्य बाल गगाधर तिलक है तथा राष्ट्रीय स्वतत्रता सग्राम के अनेक नेता सर्वश्री एस एम जोशी एन जी गोरे, एव आचार्य कृपालानी इस विद्यालय के छात्र रहे थे।

एस. एम. जोशी से सम्पर्क

20 जून (1937) मधु जी के जीवन का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दिन था। उस दिन फार्ग्यूसन कालेज के वे विधिवत छात्र बन गये थे। मधु जी के विषय थे अग्रेजी, सस्कृत इतिहास, प्रशासन आदि। इतिहास एव प्रशासन के अध्यापक प्रो केलावाला थे। दो विषयो के अध्यापक होने के कारण उनकी घनिष्ठता मधु जी से बढ गयी थी। प्रो केलावाला जी ने मधु जी से अग्रेजी समाचार पत्र "टाइम्स आफ इडिया" पढने को कहा तथा सम्पादकीय लेखो के पढने पर विशेष बल दिया। उन्होने अग्रेजी मे वार्तालाप करने की आदत डाली। केलावाला जी ने मधु जी की योग्यता देखकर ग्रीक सस्कृति का योरोप सस्कृति पर प्रभाव" विषय पर निबन्ध लिखने को दिया। इसमें सफल हो जाने के पश्चात उन्होने "भारत के 1935 के सविधान कानून" पर निबन्ध लिखने तथा पुणे के राजनीतिक नेताओ की उस पर राय जानने को कहा। इस सिलसिले मे मधु जी श्री एस एम जोशी से मिले। जोशी जी ने 1935 के सुधार कानून पर कम बात की किन्तु स्वतत्रता आन्दोलन, अपनी जेल यात्रा, काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सगठन तथा समाजवाद आदि विषयो पर लम्बी चर्चा की। मधु जी ने उनकी बातो को ध्यान से सुना। प्रथम भेट मे मधु जी पर एस एम. जोशी का क्या प्रभाव पडा वह स्वय लिखते है– "एस एम जी की

---

5 आत्मकथा–मधु लिमये, पृष्ठ–75

6 मधु लिमये पृष्ठ–85

लम्बाई काफी अच्छी थी। पतली, छरहरी काया, भव्य भाल और गोल चेहरा। उनका रग गोरा चिट्टा था। ऑखे बडी और हरे रग की। उस पर एक सौम्य सात्विक भाव था। आयु भी 31–32 वर्ष की। पहली नजर में अच्छी छाप छोडने वाला उनका व्यक्तित्व था। उनकी जिन्दगी की कहानी ने मुझे प्रेरणा दी।"[7] निबन्ध पूरा होने पर मधु जी ने उसे प्रो केलावाला को दिखाया। उन्होने उसे पसन्द किया तथा इतनी जानकारी इकट्ठा करने की प्रशसा की। इस दौरान मधु लिमये ने इतिहास तथा भारतीय शासन व्यवस्था का अध्ययन किया इसके अध्ययन से मुझमे छिपी राष्ट्रीय वृत्ति, देशभक्ति की भावना तथा सार्वजनिक जिन्दगी के बारे मे "सुप्त आस्था" की कल्पना, न उनको और न उनके अध्यापक को थी। किन्तु अब वह देश-भक्ति की भावना से परिचित हो चुके थे।

राजनीति मे बढता रुझान

मधु जी परीक्षा खत्म होने के पश्चात पुन एस एम. जोशी जी से मिलने गए। जोशी जी ने बताया कि श्री नारायण गणेश गोरे के घर पर काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के कार्यकर्त्ताओ का स्टडी सर्किल चलता है जिसमे मधु जी से शामिल होने का उन्होने आग्रह किया। इस प्रकार मधु जी का समाजवाद के प्रति रुझान बढने लगा। उस समय पुणे मे जोशी, गोरे, खाडिलकर" इन तीनो को लोग जानते थे। मधु जी एन जी गोरे के सम्बन्ध मे लिखते है, "ऑखे विशाल और चेहरा तरोताजा था। साथ ही गठा हुआ बदन। इस आदमी ने अपनी जवानी मे काफी कसरत की होगी ऐसा लगता था। साफ सुथरे कपडे और चेहरे पर बुद्धिमानी का तेज था। कुल मिलाकर एक आकर्षक व्यक्तित्व था उनका।"[8] मधु जी आगे लिखते हैं "अध्ययन कक्षा के बाद सबका परिचय कराया गया। नाना साहेब ने मुझसे फिर घर आने का निमन्त्रण दिया। फिर श्री भाऊ लिमये से भी पहचान हो गयी। उस बैठक मे सर्वश्री अन्ना उर्फ वी वी साने, गगाधर ओगले बडू उर्फ केशव गोरे, माधव लिमये, दत्तू साठे, विनायक कुलकर्णी भी उपस्थित थे। दत्तू साठे के अलावा शेष सभी लोग भविष्य मे महाराष्ट्र के समाजवादी आन्दोलन के विभिन्न क्षेत्रो मे काफी ख्यातिनामा हुए।"[9] किन्तु मधु लिमये पर एस एम जोशी के व्यक्तित्व का प्रभाव अत तक रहा जिसे वह स्वीकार करते हुए लिखते है, "इन सालो मे एस एम जी मेरे लिए शिक्षक, मित्र, भाई, पिता, माता आदि सभी भूमिकाये एक साथ निभा रहे थे। ऐसा मैं कृतज्ञतापूर्वक कह सकता हूँ।" मधु जी के अनुसार उनका व्यक्तित्व बनाने मे एस एम जी का बहुत बडा हाथ था उन्होने मधु जी को अपार स्नेह दिया तथा आगे बढने के लिए प्रोत्साहित किया।

बडू अर्थात केशव गोरे, स्वर्गीय एन जी गोरे के चचेरे भाई थे। वह गोरे जी के आवास के समीप ही रहते थे। इस प्रकार मधु लिमये एव केशव गोरे मे घनिष्ठ मित्रता

---

7 आत्मकथा—मधु लिमये, पृष्ठ—105

8 लिमये पृष्ठ—108

9 लिमये पृष्ठ—111

हो गयी। केशव गोरे की मृत्यु अल्प आयु मे ही हो गयी। केशव गोरे का विवाह महाराष्ट्र की प्रसिद्ध समाजवादी नेता मृणाल गोरे से हुआ था।[10] समाजवादियो के अध्ययन कक्ष के सचालक प वा गाडगिल थे। वे मार्क्सवाद के विद्वान थे। समाजवाद पर भी उनका अध्ययन गहरा था। उनके सत्सग मे मधु जी ने मार्क्स, एंजेल्स, लेनिन का गहन अध्ययन किया। किन्तु बाद मे अध्ययन के विस्तार के साथ ही मार्क्सवाद की कमियॉ भी दिखाई देनी लगी। 1937–38 के दौरान एस एम जोशी पुणे जिला काग्रेस कमेटी के सचिव थे। वह काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के प्रान्तीय सचिव भी थे। मधु लिमये सायकाल काग्रेस कमेटी के कार्यालय मे जाते तथा जोशी जी की पार्टी कार्य मे सहायता करते।

मधु जी ने 1939 मे इटर की परीक्षा पास कर ली। उन्हे प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण होने का शौक नही था। किन्तु वह परीक्षा में असफल भी होना नही चाहते थे। द्वितीय श्रेणी मे ही वह सतोष कर लेते थे। उनके मन मे राजनीति के लिए तरगे उठ रही थीं और इसी को उन्होने अपने जीवन का ध्येय बना लिया था। उनमे यह इच्छा हाईस्कूल उत्तीर्ण करते ही उत्पन्न होनी प्रारम्भ हो गयी थी। किन्तु इटर परीक्षा मे सफल होने के पश्चात मधु जी ने बी ए प्रथम वर्ष की परीक्षा पास की। एस एम जोशी ने उन्हे बी ए पास करने को कहा। किन्तु उनका पढाई मे मन उाचट गया था। उन्होने बी ए द्वितीय वर्ष की परीक्षा नही दी तथा उनके मित्रो ने पूर्णकालिक राजनीतिक कार्यकर्त्ता बनने की बात ठान ली और इसी रास्ते पर चल पडे। मधु जी लिखते हैं, "वह वर्ष 1938 की अतिम शाम यानी 31 दिसम्बर की अतिम शाम थी। पुराने साल का अत हो रहा था, नए साल का उदय हो रहा था। नये सवालो के लिए यह शुभ दिन था।" वडू और मेरे अलावा माधव लिमये, अन्ना साने, विनायक कुलकर्णी तथा गगाधर ओगले, उस बैठक मे उपस्थित थे। हमारी यह बैठक डेढ–दो घटे चली। मतभेद का सवाल ही नही था। हमने एकदम से निर्णय लिया कि हम अपना जीवन राष्ट्रीय स्वतत्रता तथा समाजवादी आन्दोलन हेतु समर्पित करेगे। हमारी चर्चा का साराश तथा निर्णय निम्नानुसार था।

- सम्पूर्ण स्वतत्रता की प्राप्ति यह हमारा सर्वोच्च ध्येय है।
- लेकिन समाजवाद की सस्थापना के बगैर हिन्दुस्तान की गरीबी नहीं मिटेगी तथा देश का चतुर्मुखी विकास भी नही होगा।
- समाजवादी विचार प्रणाली को श्रमिकों के बीच ठोस रूप से बोये बगैर मजदूर तथा किसान स्वतत्रता आन्दोलन मे बडे पैमाने पर न हिस्सा लेगे और न ही काग्रेस आन्दोलन मे नया जोश आएगा।
- घर–परिवार, शिक्षा, नौकरी, कैरियर, पैसा–सपत्ति (सत्ता–लोभ के बार मे तब सवाल ही नही उठता था) सम्पत्ति एव परिवार का मोह त्याग कर स्वतंत्रता तथा समाजवाद के लिए अपनी जिन्दगी को दॉव पर लगाना चाहिए और तद्नुसार कठोर निर्णय लेना चाहिए।

10 मधु लिमये पृष्ठ–122

- काग्रेस समाजवादी पक्ष ही इन दोनो ध्येयो की प्राप्ति करवा सकता है इसलिए इस पक्ष के झडे तले हमे कार्य करना होगा।
- समाजवादी आदोलन का पूरे महाराष्ट्र मे प्रचार तथा प्रसार करने हेतु नेताओ के साथ विचार-विमर्श कर, अपना-अपना कार्य क्षेत्र छाँटकर, एक सुनिश्चित योजना के अनुसार समाजवादी युवजनो को सम्पूर्ण प्रात मे सगठन का जाल बिछाना पड़ेगा।

मधु जी लिखते हैं–

"बडे उत्साह तथा एकमत से और बडी गम्भीरता के साथ हमने यह निर्णय लिया। यह नये साल का साधारण सकल्प नही था, बल्कि आगे आने वाले सभी नये वर्षो तक चलने वाला सकल्प था। इस सकल्प के साथ मैं बिल्कुल हलका महसूस करने लगा था। लग रहा था, जमीन से बँधी किसी चीज से, गुरुत्वाकर्षण से, सारे बधनो से मैं मुक्त हो गया हूँ और अब बधनमुक्त होकर खुले आकाश मे विचरण करने के लिए मैं आजाद हो गया हूँ। एक तरह की मस्ती का मैने अनुभव किया था। इसी मन स्थिति मे नये साल का आगमन हुआ। मेरे सभी दोस्तो की मानसिक स्थिति तकरीबन मेरे जैसी ही थी। अब यह सकल्प हमने कितनी ईमानदारी से निभाया। लेकिन ये यादे उस सकल्प को पूरा करने हेतु किए गए प्रयासो की ही कहानी है।"[11]

1939 मे दो समाजवादी नेताओ ने पुणे का दौरा किया वह थे डा राममनोहर लोहिया तथा जयप्रकाश नारायण। युवा समाजवादियो को इन नेताओ को अत्यन्त समीप से देखने का मौका मिला। उस समय मधु जी पुणे काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के महामत्री थे। मधु जी ने जयप्रकाश जी के कार्यक्रम लगवाये। द्वितीय विश्व युद्व का बादल मडरा रहा था। भारत अंग्रेजी साम्राज्य का एक अग था। इसलिए अग्रेजो को उनसे युद्ध मे सहायता की आशा थी। किन्तु गाधी जी का मत था कि भारत अग्रेजी साम्राज्य का स्वय दास है। इसलिए द्वितीय विश्व युद्ध मे उससे सहायता की अपेक्षा करना व्यर्थ है। काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का भी यही मत था। मधु जी तथा अन्य समाजवादी इसी बात का प्रचार कर अग्रेजो से सहयोग या सहकार न करने की जनता से अपील कर रहे थे। डा लोहिया जयप्रकाश नारायण, अच्युत पटवर्धन तथा अन्य समाजवादी नेता इसी प्रचार के उद्देश्य से तूफानी दौरा कर रहे थे। विभिन्न प्रदेशो मे काग्रेस शासित सरकारो ने युद्ध मे असहयोग करते हुए त्याग पत्र दे दिए। पुणे के काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के समर्पित कार्यकर्त्ताओ ने घर–परिवार की बिना कोई परवाह किए राष्ट्रीय स्वतत्रता तथा समाजवाद के प्रति अपने को समर्पित करते हुए इस क्रान्ति के समर मे अपनी तरुणाई को भी समर्पित करने की ठान ली थी। इस बात की सूचना एस एम जोशी को कर दी गयी थी। महात्मा गाधी द्वितीय विश्व युद्ध मे अंग्रेज शासन को किसी प्रकार की सहायता देने के विरोधी थे। काग्रेस का नारा था,– "न एक पाई न एक भाई"

11 लिमये पृष्ठ–130

प्रथम जेल यात्रा

उस समय खानदेश मे सभी ट्रेड यूनियन सगठन तथा किसान संगठन कम्युनिस्टो के कब्जे मे जा चुके थे। धूलिया मे कुछ समाजवादी कार्यकर्त्ता थे किन्तु अमलनेर मे साने गुरु जी अकेले थे। वह कम्युन्स्टिो के प्रभाव मे पूर्णरूप से आ चुके थे। वरिष्ठ एव प्रतिष्ठित समाजवादी नेताओ मे अकेले एस एम जोशी स्थिति को सभाले थे। ऐसी स्थिति मे खानदेश में मधु जी ने कम्युनिस्टो के विरुद्ध मोर्चा सभाला। सभी युवा समाजवादी कार्यकर्त्ताओ ने अपने कार्य क्षेत्रो को बॉट लिया और काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सगठन को चुस्त करना प्रारम्भ कर दिया। धूलिया को केन्द्र बनाकर एस एम जोशी के साथ पार्टी कार्यकर्त्ता रुक गए। उधर समाजवादी कार्यकर्त्ताओं ने युद्ध विरोधी अभियान तेज कर दिया था। मधु जी धुलिया मे गिरफ्तार किए गए। मधु जी की आयु बहुत कम थी। पुलिस प्रोजीक्यूटर ने मजिस्ट्रेट से अनुरोध किया कि "अभियुक्त समाजवादी, युद्ध विरोधी तथा सम्राज्यशाही विरोधी हे। इसकी उम्र छोटी है लेकिन अपराध बडा है। अत उसे माफी देने का सवाल ही नही उठता। उसे कडी से कडी सजा दी जाए। अभियुक्त की छोटी उम्र को मद्‌देनजर रखते हुए तथा यह उसका पहला अपराध है इसलिए उसे नौ महीने की कैद ब-मशक्कत और सौ रु जुर्माना न देने की स्थिति मे तीन महीने कैद ब-मशक्कत की सजा दी जा रही है।" इस प्रकार मधु जी दशहरा के दिन गिरफ्तार हुए थे और एक वर्ष की कठोर कारावास की सजा सुनाई गयी।

धूलिया जेल मे प्रारम्भ मे मधु जी अकेले ही थे किन्तु धीरे धीर अनेक राजनीतिक बदी वहाँ एकत्र होना प्रारम्भ हो गए। जनवरी 1942 मे साने गुरुजी धूलिया जेल मे आ गये। नासिक जेल मे एस.एम. जोशी, केशव गोरे, (बड्डू), माधव लिमये तथा युसुफ मेहर अली भी थे। इस प्रकार सम्पूर्ण देश मे काग्रेसी बन्द किये जा रहे थे। साने गुरु जी से मधु लिमये की यही निकटता हुई जो साने गुरु जी की मृत्यु तक रही। साने गुरु जी को कम्युनिस्टो से अलग करने तथा उन्हे पूर्णरूपेण समाजवादी परिधि मे लाने का मधु जी का बहुत हाथ था। धूलिया जेल में ही कम्युनिस्टो को समाप्त करने की तथा समाजवादी विचारधारा को तेजी से प्रचारित करने की योजना बनाई गयी। कम्युनिस्टो की गतिविधियो से जब साने गुरुजी परिचित हुए तो उन्हे बहुत पश्चाताप हुआ। कभी--कभी इसका प्रायश्चित करने के लिए वह आत्महत्या करने की बात करते थे। इससे मधु जी स्वाभाविक रूप से डर जाते थे।

जेल से छूटने के बाद एक नयी समस्या सामने आयी थी। वह थी हिन्दुत्ववाद तथा अध राष्ट्रवाद की। गुरु गोलवलकर तथा डा हेडगेवार की साम्प्रदायिक विचारधारा का प्रचार करने वाला राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ का सगठन था। किन्तु नाम अधिकतर हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सावरकर जी का था। काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी तथा काग्रेस को यह लोग तग करते थे। सभाओ मे बाधा पहुँचाते थे तथा कातिलाना हमला करते थे। काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के कार्यकर्त्ताओं के प्रति रोक से यह बडी हद तक शात हुए

स्वतत्रता का अन्तिम युद्ध–1942

1942 देश मे स्वतत्रता सग्राम का अन्तिम युद्ध था। अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की बैठक गोवलिया टैक के मैदान मे बम्बई मे होने वाली थी। गाधी जी "अग्रेज भारत छोडो" की घोषणा करने वाले थे। इस मैदान मे "करो या मरो" तथा "अंग्रेज भारत छोडो" का प्रस्ताव पारित करते हुए कहा गया था कि देश मे अब किसान–मजदूर तथा सर्वहारा की सरकार बनाई जायेगी। वर्किंग कमेटी की बैठक म आचार्य नरेन्द्र देव अच्युतराव पटवर्धन, डा लोहिया आमन्त्रित थे। युसुफ मेहर अली बम्बई के मेयर थे वह भी उपस्थित थे। समाजवादियो के लिए यह हर्ष की बात थी कि काग्रेस अधिवेशन की व्यवस्था की पूरी जिम्मेदारी अशोक मेहता तथा युसुफ मेहर अली पर थी। काग्रेस सघर्ष के लिए तैयार थी।

9 अगस्त 1942 के सभी समाचार पत्र महात्मा गाधी सहित वर्किंग कमेटी की गिरफ्तारी से भरे हुए थे। हजारो कांग्रेसी गिरफ्तार किए जा चुके थे। बहुत से सोशलिस्ट भूमिगत हो गए थे। मधु जी लगभग 13 महीने भूमिगत रहे। समाचार पत्र समाजवादी नेताओ डा. लोहिया, अच्युत पटवर्धन, अरुणा आसफ अली, कमला देवी चट्टोपाध्याय उषा मेहता, एस एम जाशी आदि के कारनामो से भरे हुए थे। इसी दौरान जयप्रकाश नारायण अपने दो साथियो रामनन्दन मिश्र एव बसावन सिह के साथ जेल से फरार हो गए। इस घटना से सम्पूर्ण देश में नए उत्साह का सचार हुआ। एस एम जोशी ने मुस्लिम युवक का वेश बदल लिया और वह "इमाम साहब" बन गए। इसी नाम से उन्हे उस समय जाना जाता था। मधु जी को 13 महीने बाद गिरफ्तार किया गया। वह एव श्री एस एम जोशी सितम्बर 1943 मे पकडे गए तथा मई 1945 मे छूटे। महाराष्ट्र स्वतत्रता आन्दोलन का प्रभाव केन्द्र बन गया था। मधु जी ने अपनी आत्मकथा मे विस्तार से चर्चा की है।

1945 में योरोप का युद्ध खत्म हो गया। युद्ध से इग्लैण्ड तग आ गया था। जर्मन ने आत्म-समर्पण कर दिया। 14 जून को काग्रेस के नेताओ को रिहा किया गया। 14 जुलाई को मधु जी छूट गए। लोहिया एव जयप्रकाश जी को काफी समय बाद छोडा गया। अन्तत 15 अगस्त 1947 मे देश को पूर्ण स्वतत्रता मिली जिसके लिए लाखो युवजनो ने बलिदान दिया था।

1939 और 1942 के मध्य मधु जी की भेट देश के प्राय सभी राष्ट्रीय नेताओ से हो चुकी थी। वहाँ थे पडित जवाहरलाल नेहरु, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, आचार्य विनोबा भावे, आचार्य कृपलानी, आचार्य नरेन्द्र देव, डा राममनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण आदि। किन्तु मधु जी के राजनीतिक जीवन पर गहरा प्रभाव एस एम जोशी का ही पडा।

आपसी मतभेद

भूमिगत जीवन से बाहर आने के पश्चात लोहिया अरुणा आसफ अली अच्युतराव पटवर्धन जहाँ भी गए उनका अभूतपूर्व स्वागत हुआ काग्रेस में

भी इन युवा नेताओ की प्रतिष्ठा बहुत बढ गयी थी। महात्मा गॉधी की इच्छा थी कि इन काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के नेताओ को काग्रेस पार्टी प्रतिष्ठा के पदों पर बिठाये। इससे इन नेताओ मे जिम्मेदारी की भावना उत्पन्न होगी और अनावश्यक टीकाटिप्पणी करने की आदत कम हो जायेगी। पडित जवाहरलाल नेहरू ने डा लोहिया को काग्रेस पार्टी का महामत्री बनने का प्रस्ताव किया। किन्तु लोहिया जी की शर्त थी कि पडित नेहरू काग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अथवा प्रधानमत्री दो मे से एक ही पद स्वीकार करे तभी वह महामत्री पद स्वीकार करेगे। पडित नेहरू इसके लिए तेयार नही थे। इसलिए वार्ता टूट गयी।

किन्तु समाजवादी नेताओ मे इस दौरान एक दोष उभर रहा था। उनमे पूर्व की तरह प्रेम सम्बन्ध नही रह गए थे। उसके स्थान पर ईर्ष्या एव कटुता के अकुर फूट रहे थे। आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण दूरी बढ रही थी। यह एहसास मधु जी को हो रहा था। मधु जी समझ रहे थे कि काग्रेस के वरिष्ठ नेताओ की तुलना मे काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के नेताओ की लोकप्रियता क्षणभगुर है। इसमे कोई टिकाऊपन नही था। आगे चलकर यह बात सत्य सिद्ध हुई। 1952 के चुनाव मे हुई असफलता ने इस पर गहरा आघात किया और यह नेतृत्व निराशा एव हताशा के गर्त मे डूब गया।

1945 और 1950 के मध्य देश की परिस्थितियॉ बहुत विषम थी। साम्प्रदायिक दगों ने वातावरण दूषित कर दिया। 14 अगस्त 1947 को देश का विभाजन हो गया और नक्शे पर पाकिस्तान उभर आया। बॅटवारे का दर्द बहुत गहरा था। कांग्रेस का मंत्रिमडल तो बन गया किन्तु मत्रियो मे शासन चलाने के अनुभव की कमी थी। देसी रियासते सघ राज्य से अलग अथवा स्वतत्र अस्तित्व चाहती थी। कश्मीर पर पाकिस्तान का हमला हो चुका था। महात्मा गाधी की दुखद हत्या हो चुकी थी। काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी इस सकट की घड़ी मे विचित्र स्थिति मे थी। वह कांग्रेस पार्टी के साथ इन लोगो का व्यवहार "प्यार और घृणा" से भरा था। मधु जी तथा अन्य युवा समाजवादी महाराष्ट्र मे अपना सगठन तैयार करने मे जुटे थे। इनको साम्प्रदायिक सगठन राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ एव कम्युनिस्टो से लोहा लेना पड रहा था। इन दोनो से कभी–कभी उग्र विवाद हो जाता। किन्तु काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सदस्यो को सतोषजनक सफलता मिली तथा चुनाव मे उनकी प्रतिष्ठा मे वृद्धि हुई।

चपा गुप्ते से भेट

साने गुरु जी राष्ट्र सेवा दल के मुखिया थे। मधु जी राष्ट्र सेवा दल के रचनात्मक कार्यों मे विशेष रुचि लेते थे। खान देश मे इसका कार्य बहुत बढिया ढंग से चल रहा था। स्कूल की वार्षिक छुट्टियो मे लडकियो ने अपना अध्ययन मडल चलाने का कार्यक्रम बनाया। लडकियो ने अध्ययन के लिए "राष्ट्रीय स्वतत्रता आन्दोलन का इतिहास" विषय चुना। इसमे मधु जी ने 15 भाषण दिये। लडकियॉ बहुत रुचि के साथ मधु जी के भाषणों को सुनती तथा नोट बनाती थीं मधु जी बहुत संकोची थे इसलिरे

वह केवल भाषण दे देते थे, लडकियो से बात नही करते थे। बाद मे यह बात चपा गुप्ते ने मधु जी को बताई जो स्वय उस अध्ययन मडल की सदस्या थी। पार्टी सगठन के विस्तार के लिए मधु लिमये अमलनेर मे ठहरे हुए थे। एक दिन चंपा गुप्ते तथा अन्य कई लडकियॉ मधु जी से यह कहने के लिए आई कि वे अध्ययन मडल की कक्षाये पुन प्रारम्भ करे। मधु जी ने पहली बार अपने सामने चपा गुप्ते को देखा था। यही से दोनो एक दूसरे के समीप आ गये।

चपा गुप्ते के पिता अमलनेर के प्रसिद्ध वकील थे। घर मे किसी प्रकार का आर्थिक सकट नहीं था। उसका प्रेम एक ऐसे युवक से हो गया जिसका जीवन कठिनाइयो से भरा हुआ तथा रहने का कोई ठिकाना नही था। 1951 में मधु लिमये एक बार पुन अमलनेर के प्रशिक्षण शिविर मे अशोक मेहता के साथ गए। इस मुलाकात के बाद मधु लिमये एवं चपा गुप्ते एक दूसरे को दिल से पसद करने लगे। चपा गुप्ते एक अत्यन्त सुशील, सुन्दर एव आकर्षक लडकी थी। वह उच्च शिक्षा ग्रहण कर रही थी तथा राष्ट्र सेवा दल के रचनात्मक कार्यो म सक्रिय थी। दोनो के प्रेम सम्बन्ध मे प्यार के साथ–साथ राजनीति के प्रति आकर्षण एव सार्वजनिक जीवन मे सक्रियता का व्यापक चाव था। इस प्रकार मानसिक रूप से भी दोनो एक दूसरे जुड गये थे। इन्ही चपा गुप्ते को बाद मे चपा लिमये के नाम से लोग जानने लगे। यदि मधु जी को उनके जीवन से अलग कर दिया जाये तो स्वय उनका समाजवादी आन्दोलन मे योगदान किसी से भी कम नही है। 1951 मे दोनो का अत्यन्त सादगी के साथ विवाह हो गया। विवाह के बाद मधु लिमये जिन्हे चपा लिमये के पिता "सन्यासी" कहते थ अपना घर आबाद किया। चंपा लिमये एक सम्पन्न परिवार से आयी थी और मधु लिमये ने जीवन मे विपन्नता के अतिरिक्त कुछ भी नही देखा था। इस प्रकार चपा जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन मधु लिमये के लिए समर्पित कर दिया था। अब समाजवादी आन्दोलन मे दोनो एक साथ कार्य कर रहे थे।

दो सम्मेलनो में उपस्थिति

स्वतत्रता के बाद आल इडिया ट्रेड यूनियन काग्रेस का प्रथम सम्मेलन कलकत्ता मे होने जा रहा था। उसमे भाग लेने के लिए मधु लिमये अपने कुछ साथियो के साथ कलकत्ता गए। किन्तु इस सम्मेलन पर कम्युनिस्ट पार्टी के लोग हावी थे। इडियन ट्रेड यूनियन काग्रेस का अध्यक्ष श्रीपाद अमृत डागे को चुना गया। मच पर श्री वी टी रणदिवे विराजमान थे। मधुजी कम्युनिस्टो के बढते हुये प्रभाव से दुखी थे। कलकत्ता मे ही उनकी मुलाकात डा लोहिया के मित्र बालकिशन गुप्त एव रमा मित्र से हुई। यही पर उनकी भेट प्रसिद्ध ट्रेड यूनियन नेला विश्वनाथ बनर्जी से भी हुई थी। मधुजी यहॉ से वाराणसी होते हुए आगरा गए। उन्होने कानपुर में काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सम्मेलन मे भाग लिया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता डा राममनोहर लोहिया कर रहे थे पार्टी के संविधान में सोशलिस्ट पार्टी के नाम के साथ 'काग्रेस' शब्द जुडा था उसे निकाल दिया गया इस सम्मेलन में यूसुफ मेहर अली ने प्रस्ताव किया था कि चकि

भारतीय समाजवाद योरोप के सोशल डमोक्रेट से भिन्न है अत नीति वक्तव्य के मस्विदे मे इसका स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। किन्तु मतभेद हो जाने के भय से यह प्रस्ताव टाल दिया गया। स्वागताध्यक्ष आचार्य नरेन्द्र देव थे। उनका मत था कि स्वतत्रता एव समानता बिना समाजवाद के मूर्त रुप नही ले सकती। इसलिये समाजवाद आज स्वतत्र भारत मे पहली आवश्यकता हे। इसलिये समाजवादी भारत के निर्माण मे हमे जुटना चाहिए। जयप्रकाश नारायण पुन सोशलिस्ट पार्टी के महासचिव मनोनीत किए गए। सयुक्त मत्री पद के लिए प्रेम भसीन एव मधु लिमये के नाम प्रस्तावित थे जिसकी सूचना एस एम जोशी ने मधुजी को दी थी किन्तु उनको नही बनाया जा सका। प्रेम भसीन जी को ही सयुक्त मत्री बनाया गया। इस यात्रा से मधु जी ने प्रथम बार उत्तर भारत का भ्रमण किया तथा उनकी सोच का दायरा तथा परिचय व्यापक रूप से बढ गया।

रचनात्मक कार्यो मे व्यस्त

समाजवादी आन्दोलन का वैचारिक सघर्ष साम्प्रदायिक राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ एव कम्युनिस्टो से था। इसलिए युवजनो के प्रशिक्षण शिविर एव बौद्धिक विकास पर बल दिया जाता था। मधु लिमये अनेक विषयो पर व्याख्यान देते थे। आचार्य नरेन्द्र देव जी एव डा लोहिया ने युवजनो के लिए पाठ्यक्रम भी तैयार किये थे। खेल एव शारीरिक श्रम भी करवाया जाता। सघर्षशीलता और आन्दोलनो मे कूद पडने के साहस के कारण कार्यकर्त्ताओ को कानूनी शिक्षा भी दी जाती थी। 1947 मे केशव गोरे (बडू) ने प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया था जिसमे सैकडो युवको ने भाग लिया था। मधु लिमये ने काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का इतिहास इन्ही दिनो लिखा था। जयप्रकाश जी, आचार्य जी एव अन्य नेताओ का जीवन चरित्र भी इन्ही दिनो लिखा गया था जिससे कार्यकर्त्ता अपने नेताओ के जीवन की जानकारी प्राप्त कर सकें। जीवन चरित्र लिखने मे युसूफ मेहर अली का विशेष योगदान था। पार्टी का निरन्तर कार्य करने के कारण मधु लिमये काफी थक गए थे। उन्हे दमा की बीमारी ने जकड लिया था। इसलिए उन्हे डा ने दो--तीन महीने आराम करने को कहा। किन्तु इसी दौरान एक और घटना हो गयी।

साने गुरु जी ने पढरपुर के विट्ठल मन्दिर मे हरिजनो के प्रवेश को लेकर आमरण अनशन करने का व्रत लिया। मधु जी ने निवेदन किया कि जब इसके लिए परिस्थितियॉ अनुकूल हो जाये उसी समय मन्दिर प्रवेश उपयुक्त होगा। चार माह बाद गुरु जी ने अनशन प्रारम्भ किया। हरिजन सेवक सघ महाराष्ट्र, जयप्रकाश नारायण, एस एम जोशी तथा केन्द्रीय असेम्बली के अध्यक्ष भावलकर जी के प्रयास से हरिजन मन्दिर प्रवेश सफल हुआ जिससे मधुजी को बहुत सतोष हुआ। मधुजी का स्वास्थ्य फिर खराब हो गया तथा दमे की तकलीफ उभर आई। गुरु जी ने उन्हें अपने भाई के पास भेज दिया जहॉ उन्होने थोडा आराम किया।

1947 मे देश का विभाजन होना निश्चित हो गया। समाजवादियो को इससे काफी आघात लगा 15 अगस्त 1947 को सारा देश स्वतत्रता का जश्न मनाने मे व्यस्त था किन्तु मधु लिमये एव अन्य उदास मन से इस जश्न के दर्शक थे

सोशलिस्ट इन्टरनेशनल कान्फ्रेन्स मे भारतीय प्रतिनिधि

स्वतंत्रता से पूर्व श्री अच्युत पटवर्धन योरोप के दौरे पर गए थे। वहॉ के सोशलिस्टो ने भारतीय सोशलिस्ट पार्टी के नेताओ के साथ सबध बनाने का प्रयास किया था। सोशलिस्ट इन्टरनेशनल का सम्मेलन एटवर्थ (बेलजियम) मे होने वाला था उसमे भारतीय प्रतिनिधि को भेजने का राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने प्रस्ताव किया। नाना जी गोरे ने मधु लिमये का नाम प्रस्तावित किया। जयप्रकाश जी ने यह कह कर "हा वह अच्छा बौद्धिक है" मधु जी को मात्र 25 वर्ष की अवस्था मे अन्तर्राष्ट्रीय सोशलिस्ट सम्मेलन मे भारतीय प्रतिनिधि बनाकर भेजा गया।

मधुजी एटवर्थ गये थे दर्शक के रूप मे, किन्तु पार्टी के प्रतिनिधि के रूप मे वहॉ उपस्थित रहे। उन्होंने अन्य देशों जैसे इग्लैन्ड, फ्रान्स, चेकोस्लोवाकिया, स्विटजरलैन्ड इटली की भी यात्रा की थी। उन्होने 21 नवम्बर, 1947 से 7 मार्च 1948 तक योरोप का भ्रमण किया। उन्होने एटवर्थ सम्मेलन की विस्तृत रपट वार्षिक सम्मेलन के पहले हुई राष्ट्रीय समिति की बैठक में प्रस्तुत की थी। यह नासिक सम्मेलन की प्रकाशित रपट मे सम्मिलित है।

मधु जी 1948 मे नासिक मे राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य के रूप मे कम आयु के सदस्य थे। 1949 में पटना सम्मेलन में मधु जी पार्टी के सयुक्त मत्री चुने गये। वह केन्द्रीय कार्यालय को वह अपना पूरा समय देते और इस दौरान उन्होने अनेक पम्फलेट निकाले। 1951 मे मद्रास मे पार्टी के सयुक्त मत्री निर्वाचित हुए। इसी दौरान उन्होने "कम्युनिस्ट पार्टी-फैक्ट्स एण्ड फिकशस" नामक पुस्तक लिखी जिसका कई भारतीय भाषाओं मे अनुवाद हुआ। 1952 में फिर पचमढी मे सोशलिस्ट पार्टी के सम्मेलन मे संयुक्त मत्री चुने गये। 1953 के प्रारम्भ मे एशिया सोशलिस्ट ब्यूरो के सयुक्तमत्री के रूप मे जयप्रकाश जी की पहल पर कार्य प्रारम्भ किया। मधु लिमये को रगून जाना पडा। इस दौरे मे उनके साथ चपा लिमये भी थी। रगून जाते समय वह दिल्ली, वाराणसी एव पटना भी गए जहॉ उन्होने समाजवादी पार्टी के आतरिक सकट पर जयप्रकाश जी एव आचार्य नरेन्द्र देव मे विस्तृत चर्चा की।

समाजवादी आन्दोलन में बिखराव

1952 के प्रथम आम चुनाव मे सोशलिस्ट पार्टी के नेताओ को चुनाव परिणाम से घोर निराशा हुयी। जयप्रकाश जी एव अशोक मेहता के पैर डगमगा गए। 1953 के पार्टी के वैतूल सम्मेलन में अशोक मेहता ने "पिछडी अर्थव्यवस्था की अनिवार्यताये तथा सहमति के क्षेत्र" नामक एक थीसिस सम्मेलन के सामने प्रस्तुत की जिसका अर्थ काग्रेस से सहकार करना था। मधुजी ने इसका विरोध किया। 1954 मे ट्रावनकोर कोचीन मे जब अपनी सरकार ने निहत्थे लोगो पर गोली चलाई तो सरकार से त्यागपत्र की माग की गयी। फलत डा. लोहिया के साथ मधु जी भी पार्टी से निष्कासित कर दिये गये इस प्रकार पार्टी दो भागों में विभक्त हो गयी 1 प्रजा सोशलिस्ट पार्टी (2 पार्टी

गोवा मुक्ति आन्दोलन मे शिरकत

1955 मे डा लोहिया ने हैदराबाद मे सोशलिस्ट पार्टी का स्थापना सम्मेलन किया किन्तु उसमे मधुजी शरीक नही हो सके थे। उन्होंने गोवा मुक्ति आन्दोलन मे भाग लिया था।

गोवा यूरोपीय एवं पुर्तगाली साम्राज्य का पहला उपनिवेश था। बम्बई के दक्षिणी तट पर बसा यह सुरम्य प्रदेश सबसे बाद मे विदेशी दासता से मुक्त हुआ। इस सघर्ष के नायक डा लोहिया थे जिन्होने 1946–47 मे इसकी दासता की बेडियों को तोडने के लिए सघर्ष प्रारम्भ किया था। उन्हे महात्मा गाधी का आशीर्वाद प्राप्त था। इस परम्परा का निर्वहन करते हुए महाराष्ट्र के प्रतिपक्ष के नेताओं ने निरन्तर सघर्ष किया। मधुजी ने भी अपने अदम्य उत्साह से सत्याग्रह किया।

15 मई, 1955 को मधु जी एव चपा लिमये अपनी शादी की तीसरी वर्षगाठ समुद्र के किनारे मना रहे थे। तभी मधु जी ने अपने निर्णय की घोषणा की। कैसा सुन्दर उपहार मधु जी दे रहे थे अपनी पत्नी को। चपा जी ने इस कठिन निश्चय का स्वागत किया। 11 जुलाई 1955 को मधु जी के पुत्र अनुरुद्ध का तीसरा जन्मदिन था। मधु जी के मित्र उसे बधाई देने आये थे। उन्हे इस उत्सव का पता था। मधु जी का विदाई भी समारोह किया गया। उनको दादर रेलवे स्टेशन पर लोगों ने विदाई दी। 25 जुलाई को जिस दिन मधु जी को गोवा की यात्रा करनी थी उन्हें काफी बुखार था तथा दमा की बीमारी से पीडित थे। पैदल चलते हुए उनका पैर एक धारदार पत्थर से कट गया। घाव गहरा था जिसमे काफी खून निकलने लगा। वह जैसे ही गोवा की सरहद पर पहुँचे पुर्तगाली पुलिस ने उनपर बर्बर आक्रमण कर दिया। लाठी वर्षा से वह बुरी तरह घायल हो गए। मधु जी ने पेट पर एक फौजी ने लात मारी जिससे उन्हे गभीर चोट आई। मधु जी को अत्यन्त निर्दयता से आहत किया गया था। उनके कपडे फट गए। वह स्वय खून से लहूलुहान हो गए। उन्हें पीने के लिए पानी भी नही दिया गया। उन्हे 10 वर्ष की कठोर कारावास की सजा तथा जुर्माना न भरने पर दो वर्ष की और सजा, इस प्रकार 12 वर्ष का कठोर दण्ड दिया गया। पुर्तगाली जेले हिन्दुस्तानी सत्याग्रहियो से भर गयी थी। अन्तर्राष्ट्रीय मानव आयोग ने पोप की मध्यस्तता पर हस्तक्षेप किया। लगभग दो वर्ष बाद 12 फरवरी, 1957 को सभी कैदी छूट गए। अब मधु जी खुली हवा मे सास ले रहे थे। उनका बच्चा अनिरुद्ध (पोपट) चार वर्ष का हो चुका था। बम्बई रेलवे स्टेशन पर उनका नागरिको की ओर से अभूतपूर्व स्वागत किया गया। अपनी माता चपा लिमये के साथ पोपट भी उस स्वागत मे शरीक था।

बम्बई के श्रमिको का संगठन

जेल से मुक्त होने के पश्चात हैदराबाद मे नवगठित सोशलिस्ट पार्टी का सगठन बम्बई सहित सम्पूर्ण महाराष्ट्र मे खडा करना था। उस समय बम्बई मे सयुक्त महाराष्ट्र समिति का आन्दोलन उफान पर था महाराष्ट्र और गुजरात के

बटवारे के पश्चात् बम्बई को महाराष्ट्र का एक अग बनाया जाए यह मॉग की जा रही थी। उस समय बम्बई मे तीन महत्त्वपूर्ण नेता थे, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के एस एम जोशी, कम्युनिस्ट पार्टी के श्रीपाद अमृत डागे एव तीसरे श्री प्रहलाद केशव थे (आचार्य अत्रे)। इसी त्रिमूर्ति को जनता जानती थी और उनको सामान्य जनता का भारी जन समर्थन प्राप्त हो रहा था। बम्बई की जनता भी दो भागो मे विभक्त हो गयी थी, सयुक्त महाराष्ट्र समिति एव महा गुजरात परिषद। सोशलिस्ट पार्टी इस आन्दोलन का समर्थन कर रही थी। पार्टी के नेता जार्ज फर्नांडिस, सदाशिव, बागाडतका, मृणाल गोरे, केशव गोरे, प्रभाकर गोरे दादा नाईक, तथा दिनकर ने सक्रिय होकर इस आन्दोलन में बढ चढ कर हिस्सा लिया था। किन्तु जब 1957 के आम चुनाव का समय आया तो डा लोहिया के प्रस्ताव पर पार्टी की राष्ट्रीय समिति ने सयुक्त महाराष्ट्र समिति के साथ मिलकर चुनाव लडने से मना कर दिया। इससे स्थानीय पार्टी को गहरा धक्का लगा। चुनाव मे सोशलिस्ट पार्टी के नेताओ की बुरी तरह पराजय हुई। जमानते जब्त हो गयीं किन्तु समाजवादी नेता इस सदमे से जल्दी ही उबरे। उन्होने सगठन का निर्माण पुन करना प्रारम्भ किया।

1954 मे जार्ज फर्नांडिस के नेतृत्व मे म्युनिस्पल मजदूर यूनियन का गठन किया गया। 1957–58 तक यह यूनियन तेजी से बढी और काफी मजबूत हुई। इसक अतिरिक्त (1) टैक्सी यूनियन (2) गोदी मजदूर यूनियन (3) बम्बई लेबर यूनियन (4) अस्पताल मजदूर यूनियन (5) होटल वर्कर्स यूनियन (6) सैलून मजदूर यूनियन (7) इलेक्ट्रिक एण्ड इजीनियरिंग मजदूर यूनियन, आदि का भी गठन किया गया।

इस प्रकार 1954 से 1960 के मध्य बम्बई मे श्रमिक मोर्चे पर सोशलिस्ट पार्टी अत्यन्त प्रभावशाली हो गयी थी। लगभग तीन लाख मजदूर पार्टी के इशारे पर कार्य कर रहे थे। 1958 मे पहली बार म्यूनिस्पल मजदूर यूनियन की हडताल बम्बई मे हुई। उस समय बम्बई महानगर पालिका पर सोशलिस्ट पार्टी का व्यापक प्रभाव था। जार्ज फर्नांडिस आदोलन करते तथा मधु लिमये यूनियन एव सरकार के मध्य समझौता करवा कर रास्ता निकालते। जार्ज फर्नांडिस एव मधुलिमये की जोडी बम्बई मे प्रसिद्ध हो गयी थी।

बम्बई के वी आई एस टी (बेस्ट यूनियन) पहले से थी। डीमिलो उसके नेता थे। डीमिलो की कलकत्ता मे दुखद मृत्यु हो गयी थी। जार्ज को उसका अध्यक्ष बनाने का मधु लिमये ने प्रयास किया और वह बन गए। यह बम्बई की ट्रान्सपोर्ट का सबसे बडा सगठन था। अप्रैल, 1961 को होटल यूनियन की हडताल की गयी। इस मोर्चे का पहला जुलूस मधु लिमये के नेतृत्व मे निकला। लगभग 25 हजार लोग कामगार मैदान मे एकत्र हो गए। होटल मजदूरो की मागो को लेकर मजदूरो की सगठित शक्ति का प्रदर्शन 15 मई 1962 को किया गया जब बेस्ट यूनियन, म्यूनिस्पिल मजदूर यूनियन तथा अन्य कामगार एक साथ एकत्र हुए। 16 मई को बम्बई के सारे होटल बन्द हो गए। अत मे मधु जी ने मध्यस्तता की। होटल मजदूरो के लिए न्यूनतम वेतन समिति गठित की गयी जिसका लाभ उन्हे आज भी प्राप्त हो रहा है।

1960 मे केन्द्रीय की का सोशलिस्ट पार्टी ने नेतृत्व किया

जार्ज फर्नांडिस भूमिगत रहकर आन्दोलन की तैयारी कर रहे थे। जार्ज एव मधु जी ने "बम्बई बन्द" का ऐलान किया। चलती ट्रेनो को रोका गया। जार्ज को बुरी तरह मारा गया। मधुजी ने एक मार्गदर्शक के रूप मे कार्य किया। जार्ज फर्नांडिस के अनुसार मजदूरो के मामले मे मधुजी का योगदान सगठनात्मक भी था, वैचारिक भी था। जब हम जेल मे रहे उस समय वह हमारे सगठन के अभिभावक के रूप मे कार्य करते थे। "1963 मे जार्ज फर्नांडिस को डी आई आर के तहत गिरफतार कर लिया गया। सम्पूर्ण बम्बई लगभग 15 दिन बन्द रहा। इस बन्द का मधुलिमये ने कुशलतापूर्वक नेतृत्व किया। इस प्रकार बम्बई तथा महाराष्ट्र मे सोशलिस्ट पार्टी एक विशाल जन आन्दोलन की पार्टी बन गयी जिसका लाभ आगे चुनाव मे मिला। जार्ज ने ठीक ही कहा है–

"मधु जी आधार-स्तम्भ थे"।

गैर कांग्रेसवाद की रणनीति को लेकर मतभेद

मधु लिमये को 1968 मे सोशलिस्ट पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया था। 1963 मे फर्रुखाबाद के उप चुनाव मे डा लोहिया लोकसभा मे पहुँच गए थे। वह इस निश्चिय मत के हो गये थे कि काग्रेस को पराजित करने के लिए "शैतान के साथ भी समझौता किया जा सकता है"।

"किन्तु जनसघ के साथ समझौता करने को समाजवादी, विशेषकर महाराष्ट्र के समाजवादी तैयार नही थे। प्राय महाराष्ट्र के सम्पूर्ण सगठन की यही भावना थी। सोशलिस्ट पार्टी का राष्ट्रीय सम्मेलन कलकत्ता मे आयोजित किया गया। मधु लिमये तथा महाराष्ट्र के अन्य कार्यकर्त्ता उस सम्मेलन मे उपस्थित नही थे। जार्ज फर्नांडिस सम्मेलन मे गए तथा उन्होने गैर काग्रेसवाद के प्रस्ताव के विरोध मे भाषण दिया तथा कहा, "इस प्रस्ताव के पारित होने के बाद डा लोहिया का मुँह काला हो जायेगा।" डा साहब गभीरता से उनका भाषण सुन रहे थे। उन्होने कहा कि "जार्ज फर्नांडिस को मालूम होना चाहिए कि यह प्रस्ताव मेरा लिखा हुआ है। जार्ज फर्नांडिस ने कहा इस प्रस्ताव को लेकर जो चलेगा उसका मुँह काला हो जायेगा। मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि मेरा मुँह काला होने से पहले उनका मुँह डबल काला हो जायेगा।' डा लोहिया के प्रस्ताव को पास होना ही था। मधु जी किसी भी कीमत पर जनसघ के साथ समझौता नही चाहते थे। डा लोहिया मधु जी से अकेले मिले और कहा, "तुम मुझे काग्रेस को हटाने के लिए यह प्रयोग कर लेने दो।" मधु जी शात हो गए।

गैर काग्रेसवाद की रणनीति निश्चित होने के पश्चात् दोनो सोशलिस्ट पार्टियो को तत्काल एक करने का प्रयास प्रारम्भ हुआ। किन्तु उसमे आशिक सफलता ही मिल सकी। सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी का गठन हुआ। श्री एस.एम. जोशी पुन पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गये। डा. राममनोहर लोहिया भी अब पार्टी के विधिवत सदस्य बन चुके थे। 1964 मे मुगेर (बिहार) में हुए उप चुनाव में मधु लिमये लोक सभा में पहुँच गए इससे

पार्टी मे आत्मविश्वास बढा और डॉ लोहिया को एक सासद के रूप में कुशल सहयोगी प्राप्त हो गया। 1964–67 की अवधि मे मधु लिमये ने अनेक घोटालों का पर्दाफाश किया जिससे काग्रेस सरकार की छवि अत्यन्त धूमिल हो गयी। पूरे देश मे "काग्रेस हटाओ–देश बचाओ" का डा लोहिया का नारा सफल हो रहा था।

सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी द्वारा लोकसभा मे अदा की जा रही भूमिका से जनता बेहद सन्तुष्ट थी। मधु जी ने अनेक भ्रष्टाचार की पोल खोली तथा मत्रियो को कठघरे मे खड़ा किया।

1967 का आम चुनाव मुख्य रूप से सोशलिस्टो की राजनीति का आम चुनाव था जो काग्रेस के विपरीत गया। काग्रेस ने अनेक महत्त्वपूर्ण नेता धराशायी हो गए प्रतिपक्ष के सभी महत्त्वपूर्ण नेता चुनाव जीत गए। मधु जी एक बार फिर मुगेर से ससद मे पहुँचे। इस चुनाव मे उनपर कातिलाना हमला हुआ था किन्तु वह बाल-बाल बच गये थे। उन्हे ससोपा ससदीय दल का नेता बनाया गया।

चुनाव के अभी एक वर्ष भी पूरे नही हुये थे कि डा लोहिया का दुखद निधन हो गया। मधु लिमये के लिए यह क्षण अत्यन्त अहम् थे। अब पार्टी की जिम्मेदारी उनके ऊपर आ गयी थी। उधर काग्रेस मे राष्ट्रपति के चुनाव को लेकर घमासान हो गया। वी वी गिरि एव नीलम सजीव रेड्डी के चुनाव को लेकर उभरा मतभेद काग्रेस के विभाजन मे परिणित हो गया। इन्दिरा गाधी ने चतुराई के साथ बैंको का राष्ट्रीयकरण किया तथा राजा महाराजाओ का प्रीवी पर्स समाप्त कर दिया। जनता मे उत्साह की लहर दौड गयी। लोक सभा भग कर दी गयी और 1971 मे चुनाव हुआ। इस चुनाव में मै भी मुंगेर गया था। चुनाव में लोगो में जोश था किन्तु महाराजा गिद्धौर के चुनाव लडने से मधु जी 25000 मतो से पराजित हो गए। प्राय सभी विपक्ष के नेता धराशायी हो गये थे। प्रतिपक्षी दलो की सख्या भी कम हो गयी थी। ऐसे मे फिर एक चमत्कार हो गया।

1973 मे बाँका ससदीय क्षेत्र के काग्रेसी सासद की मृत्यु हो गयी। अब उस स्थान पर चुनाव लडने के लिए मधु जी को फिर आमन्त्रित किया जाने लगा। बाँका क्षेत्र मुगेर से मिला हुआ है। मुगेर की हार से जनता दुखी थी। वह बाँका मे मधुजी को विजयी बनाकर हार का बदला लेना चाहती थी। एक बार फिर समाजवादियों को उत्साह के साथ कार्य करने का मौका मिला। मधु जी भारी बहुमत से जीते और काग्रेस की जमानत जब्त हो गयी। दो वर्ष मे ही यह चमत्कार हो गया। लोकसभा में उस समय समाजवादियो की शक्ति क्षीण हो चुकी थी। सम्पूर्ण विपक्ष किकर्त्तव्यविमूढ था। ऐसी स्थिति मे मधु लिमये के ससद मे जाने से प्रतिपक्ष को बहुत बल मिला। बाँका में मधु जी कहते थे कि मैं लोक सभा में जब जाऊँगा तो इस मदाध सरकार पर अकुश लगाने का कार्य करूँगा। "मधु जी को इस चुनाव मे जयप्रकाश जी ने भी अपना सहयोग दिया था। उन्होंने समर्थन का सदेश सर्वोदय कार्यकर्त्ताओ को भेज दिया था। प्रभावती जी ने भी महिला चर्खा समिति की कुछ महिला को बाँका भेजा था आम लोगों में यही प्रचार हो रहा था

कि जयप्रकाश जी को मधु लिमये का समर्थन प्राप्त है। श्री जार्ज फर्नांडिस एव लैल कबीर के साथ मैं उनसे मिलने गया था। उस समय भी उन्होने यह बात स्पष्ट रूप से कही थी। जार्ज साहब काफी प्रसन्न थे। इस प्रकार जयप्रकाश जी का नैतिक समर्थन प्राप्त हो गया था।

जयप्रकाश आन्दोलन और आपातकाल

बॉका के चुनाव के बाद देश मे तेजी से परिवर्तन आया। 1974 मे जयप्रकाश जी का छात्र--युवा आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। मधुजी ने इस आन्दोलन में बढ–चढकर हिस्सा लिया। जयप्रकाश जी की समाजवादी पृष्ठभूमि थी। उन्हें समाजवादियो पर पूरा भरोसा था। उनके कारण बिखरा हुआ समाजवादी आन्दोलन एकजुट हो गया। समाजवादी आन्दोलन का दिया बुझ रहा था जिसके लिए जयप्रकाश जी तेल सिद्ध हुए। उन्होने सार्वजनिक सभाओ मे डा. लोहिया, का बार--बार नाम लेकर उनकी न केवल प्रतिष्ठा बढाई बल्कि लोगो को बता दिया उनके सम्पूर्ण क्रान्ति के आन्दोलन पर समाजवादी चितन का कितना गहरा प्रभाव है। डा लोहिया का यह कथन कि "देश को हिलाने की ताकत जयप्रकाश नारायण मे है," सत्य सिद्ध हो रहा था।

आपातकाल

12 जून, 1975 को प्रधानमत्री उच्चतम न्यायालय इलाहाबाद से चुनाव याचिका हार गयीं। उन्होंने चुनाव याचिका के स्थगन के लिए उच्च न्यायालय मे अपील की । 24 जून 1975 की सुबह नाश्ते पर मधु जी एव जयप्रकाश जी की भेंट हुई। मधु जी एव जे पी दोनों का मत था कि उच्चतम न्यायलय कुछ शर्तो के साथ स्थगन आदेश जरूर देगा। दोनो की राय थी कि सशर्त स्थगन के बावजूद प्रधानमत्री अपने पद से त्यागपत्र नहीं देंगी। सुप्रीम कोर्ट ने यही किया। कुछ शर्तों के साथ स्थगन आदेश दिया और कहा, "प्रधानमंत्री सदन मे बोल सकती हैं किन्तु वोट नही दे सकतीं। "1967 मे इस्पात मत्री चेन्ना रेड्डी के बारे में इसी तरह का निर्णय सुप्रीम कोर्ट ने दिया था तब प्रधानमत्री ने उनका त्यागपत्र दिलवा दिया था। किन्तु अपने मामले में उन्होने ऐसा नही किया। प्रधानमत्री से त्याग पत्र मॉगा जा रहा था। जनता आन्दोलित थी उनके त्याग-पत्र को लेकर 25 जून को रामलीला मैदान नई दिल्ली मे एक विशाल सभा का आयोजन किया जा रहा था।

मधुजी 25 जून को विलासपुर (भोपाल) पहुँचे। दिन भर कार्यक्रम करने के बाद शाम को जब वह सभा के लिए विलासपुर पहुँचे तो देखा शहर में काफी तनाव था। युवक कांग्रेस के कार्यकर्त्ता जे पी का पुतला फूँक रहे थे। मधु जी की गिरफ्तारी का वारट आ चुका था किन्तु आपातकाल क्या बला है यह जिला मजिस्ट्रेट नही समझ सका। क्योंकि आपातकाल तो पहले से ही लगा हुआ था। बाद मे मधु जी ने समझा कि आपातकाल का अर्थ ही है मधु जी दूसरे दिन अर्थात 26 जून को रायपुर

पहुँचे। यहाँ सभा के बाद मधु जी आगे बढे और महासमुदर मे गिरफ्तार किये गये। उन्हे नरसिंहगढ जेल मे रखा गया।

नवम्बर 1975 को गुर्दे की खराबी के कारण जयप्रकाश जी को छोड दिया गया। मधुजी ने इन्दिरा गाधी को पत्र लिखा कि वह लोकसभा कार्यकाल पूरा हाने के बाद चुनाव करवा दे वर्ना लोग सडको पर उतर आयेगे और भीषण उपद्रव होगा। किन्तु प्रधानमत्री ने दो बार लोकसभा का कार्यकाल बढाया। पतिपक्ष के नेता लोकसभा से त्यागपत्र देने को तैयार नही थे। 18 मार्च, 1976 को लोकसभा का निर्धारित कार्यकाल समाप्त होने पर मधु जी ने त्यागपत्र दे दिया। उनके साथ शरद यादव ने भी ऐसा ही किया। किन्तु सेसरशिप लगी होने के कारण सीमित संख्या में ही लोग जान सके। प्रतिपक्ष तक समाचार पहुँचाने का मात्र बी.बी सी ही सहारा था।

शेख मुजीबुर्रहमान की अगस्त 1975 मे हत्या हो गयी थी। बगला देश मे सेना का शासन हो गया था। इसलिये प्रधानमत्री का जनता की नब्ज पर ध्यान था। चापलूस एव खुशामद खोर जो भी कहते हो जब बाबू जगजीवन राम ने दृढता के साथ आपातकाल समाप्त करने की सलाह दी तो श्रीमती गाधी ने उसे गभीरता से लिया। 1977 के प्रारम्भ मे आपातकाल उठा लिया गया। राजनीतिक बन्दी छोड दिये गये। राजनारायण जी मधु लिमये, ज्योतिर्मय वसु एव नानाजी दशमुख को बाद मे छोडा गया। जार्ज फर्नांडिस की मुक्ति 1977 के लोकसभा के चुनाव के बाद हुई। जेल से छूटने के बाद दिल्ली के रामलीला मैदान मे एक विशाल सार्वजनिक सभा की गयी। इस सभा मे काग्रेस के नेता बाबू जगजीवन राम, हेमवतीनन्दन बहुगुणा एव नन्दनी सत्पथी भी उपस्थिति थी। एक तूफान था तथा क्रान्ति हिलोरे ले रही थी। चुनाव के बाद जे.पी के नाम पर जनता पार्टी का गठन किया गया। यह आपातकाल के विरुद्ध जनमत सग्रह था जिसमे प्रतिपक्ष विशेष रूप से हिन्दी इलाको मे भारी बहुमत से जीता था। सगठन काग्रेस, सोशलिस्ट पार्टी भारतीय जनसघ, लोक दल आदि ने अपने–अपने दलो का "सर्जन के लिए विसर्जन कर **दिया**। नयी पार्टी का नाम जे पी के नाम पर जनता पार्टी रखा गया।

बहुमत मिल जाने एव जनता पार्टी के गठन के बाद सरकार बनाने की बात आयी। राजघाट पर गाधी जी की समाधि पर शपथ ग्रहण हुआ। लोकदल के चौधरी चरण सिह एव राजनारायण, सगठन काग्रेस एव जनसंघ के कुछ नेता मोरारजी को प्रधानमत्री बनाने पर एक राय बना चुके थे। केवल मधुलिमये तथा जनसघ के नानाजी देशमुख एव अटलबिहारी बाजपेयी, बाबू जगजीवन राम को प्रधानमत्री बनाना चाहते थे। मधुजी का मानना था कि मोरारजी देसाई अत्यन्त रूखे एव जिद्दी व्यक्ति हैं। वह सरकार नही चला सकते। किन्तु जयप्रकाश जी के कहने पर मधु जी मान गए। प्रारम्भ में यह निर्णय लिया गया था कि प्रत्येक घटक के दो–दो प्रतिनिधियो को सरकार मे शामिल किया जाये। किन्तु मोरार जी ने वचन भग किया। सगठन काग्रेस के मंत्रियों की सूची लम्बी–चौडी थी मोरार जी के पुत्र कांती देसाई का में दबाव बढने लगा इन तमाम बातों को लेकर मधु लिमये एव मोरार जी देसाई में कटुता काफी बढ गयी उन्होंने

में जाने से मना कर दिया। पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रशेखर जी को बनाया गया। नाना जी देशमुख एव मधुलिमये पार्टी के महामत्री बने।

दुर्भाग्यपूर्ण विघटन

जनता पार्टी के गठन मे तथा इन्दिरा गाधी को सत्ताच्युत करने मे प्रमुख भूमिका पिछडे मुसलमान एव अत्यजो की थी। हिन्दी इलाको मे टिकट का वितरण अधिकाश चौधरी चरण सिह ने किया था। बिहार मे कर्पूरी ठाकुर, हरियाणा मे देवीलाल, उत्तर प्रदेश मे रामनरेश यादव एव मुलायम सिह यादव, उडीसा मे बीजू पटनायक, मध्यप्रदेश मे पुरुषोत्तम कौशिक एव सकलेचा, पजाब मे प्रकाश सिह बादल, महाराष्ट्र मे शरद पवार राजस्थान मे भैरो सिह शेखावत आदि पिछडे वर्ग के अथवा गैर ब्राम्हण मुख्यमत्री थे। केवल हिमाचल प्रदेश मे शाता कुमार ब्राम्हण मुख्यमत्री थे। जगजीवनराम हरिजनो को तथा राज्यो के मत्रिमण्डलो मे भारी–भरकम मुसलमानो को प्रतिनिधित्व इन वर्गो को आकर्षित कर रहा था। 1978 मे जनता पार्टी का आन्तरिक विवाद तेज हो गया। मधु लिमये अमेरिका मे थे। उन्हे बुलाया गया। मौरार जी ने चोधरी चरण सिह एव राजनारायण को मत्रिमण्डल से हटा दिया। चौधरी चरण सिह ने ससद के सामने वोट क्लब पर एक विशाल रैली करने की घोषणा की। मधुजी ने मध्यस्थता की। चौधरी चरण सिह तो सरकार मे वापस हो गए किन्तु मोरार जी ने राजनारायण को सरकार मे नही लिया। किन्तु मोरार जी कहते थे कि उनकी सरकार भगवान के सहारे चल रही है। इसलिये राजनारायण को लेना बेमानी था। इस दौरान कर्पूरी ठाकुर, देवीलाल, रामनरेश यादव पर हमला हो चुका था। प्राय सभी हट गये थे या उनको हटाने का षडयन्त्र हो रहा था। यह सब पिछडे वर्ग के नेता राजनारायणजी के झडे के नीचे एकत्र हो रहे थे। राजनारायण जी ने सीधे आर एस एस का मामला उठाया और "दोहरी सदस्यता" पर आपत्ति की। अब मधु लिमये, जवजीवनराम, बहुगुणा जी एकत्र हुये। सबका निशाना मोरार जी देसाई थे। प्रधानमत्री बनने की महत्त्वाकाक्षा वर्षो से चौधरी साहब के मन मे थी। वह जग चुकी थी। मोरार जी की सरकार धाराशयी हो गयी। चौधरी साहब ने एक क्षण के लिये भी लोकसभा का सामना नही किया। 1980 मे लोकसभा के नए चुनाव हो गए। इस चुनाव मे जनतौ पार्टी की भयकर हार हुई। मधु जी भी हारे।

1982 मे मधु जी अपनी अस्वस्थता के कारण सक्रिय राजनीति से अलग हो गये। उन्होने अपने जीवन का शेष समय लिखने–पढने मे व्यतीत किया। उन्होने राजनीति, समाजवादी दर्शन, इतिहास व्यक्तित्व एव सस्मरण पर लगभग पाच दर्जन पुस्तके लिखीं जो अत्यन्त उपयोगी हैं। अपनी लेखन कला से उन्होंने अमरत्व प्राप्त कर लिया।

आज वह इस ससार मे नही है। उन्होने सादगी एव सदचरित्र की जो मिसाल छोडी है, राजनीति के जिन ऊँचे मूल्यो के कारण उन्होने अमरत्व प्राप्त कर लिया है वह हमारी थाती है जिनसे हमें प्रेरणा मिलती रहेगी

व्यक्तित्व एव विचार--कुछ संस्मरण

मधु लिमये जी की मृत्यु का समाचार मुझे 8 जनवरी 95 की रात को मिला। इस दुखद घटना से मै अवाक रह गया। पन्द्रह दिन पहले मैं उनसे मिलकर आया था। दमा उस समय भी उनको परेशान कर रहा था। बोलने मे वह कठिनाई महसूस कर रहे थे। किन्तु इतनी जल्दी वह हमसे रूठ जायेगे इसकी कल्पना नही थी। उनकी जुदाई का आघात मेरे लिए असह्य था। मेरे मानस पटल पर उनके साथ बिताये गए दिनो की घटनाये घूम रही थीं।

मधु लिमये का सम्बन्ध राजनीतिज्ञो की उस पीढी से था जिसने देश के स्वतत्रता सग्राम को न केवल अत्यन्त समीप से देखा था बल्कि उसमे प्रबल भागीदारी की थी और यातना भोगी थी। राष्ट्रीय स्वतत्रता सग्राम मे कूदने का अर्थ कोई लाभ अर्जित करना अथवा पद या प्रतिष्ठा प्राप्त करना नही था। केवल एक ही लक्ष्य था भारत माता को गुलामी के बधन से मुक्त करना एव स्वतत्र देश के नागरिक के रूप मे एक स्वाभिमानी की भॉति जीवित रहना। स्वर्गीय श्रीधर महादेव जोशी से मधु लिमये की भेट एक विद्यार्थी के रूप मे हुई थी किन्तु इस भेट ने मधु लिमये के जीवन को बदल डाला। वह एक सक्रिय राजनीतिक कार्यकर्त्ता बन गए। उन्होने समाजवादी अध्ययन मडल की गोष्ठियो मे, जो अकसर नानाजी गोरे के आवास पर होती थी, में शरीक होकर राष्ट्रीयता, लोकतंत्र, धर्म-निरपेक्षता एव सिविल नाफरमानी का जो पाठ पढा था उस पर जीवन भर अडिग रहे। महात्मा गांधी के नेतृत्व मे चलाये गए राष्ट्रीय स्वतत्रता सग्राम के यही मूल्य हैं। इन पर जब हमला होता था या इनको समाप्त करने का प्रयास किया जाता था, तो मधु लिमये घायल शेर की भॉति इन मूल्यों की रक्षा करते। इसके कारण उन्हे "पार्टी तोडक" के रूप में बदनाम किया गया। किन्तु इस तरह के प्रचार की उन्होने कभी परवाह नही की। वह उन मूल्यो की रक्षा का सतत प्रयास करते रहे जिसके लिए उन्होंने अपनी जवानी खपायी थी और यातना भोगी थी।

मधु जी से मेरी प्रथम मुलाकात 1967 मे लखनऊ मे हुई। उस समय समाजवादी आन्दोलन चरमोत्कर्ष पर था। डा लोहिया के "गैर काग्रेसवाद" के नारे का जनता पर गहरा प्रभाव था। उनकी राजनीतिक दिशा एव समाजवादी कार्यकर्त्ताओ के परिश्रम एव जुझारू तेवर के कारण ही 1967 मे हुए आम चुनाव मे समाजवादियो को सफलता मिली थी। समस्त हिन्दी इलाके मे काग्रेस साफ हो गयी थी तथा ससद मे उसका बहुमत क्षीण हो गया था। उस समय एक कहावत प्रसिद्ध हो गयी थी कि "अमृत-शहर से कलकत्ता के मध्य का सम्पूर्ण क्षेत्र गैर काग्रेसी है।" उत्तर प्रदेश मे भी गैर काग्रेसी सरकार थी और चौधरी चरण सिह मुख्यमत्री। विश्वविद्यालयो की छात्र यूनियन मे भी सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी की युवा शाखा समाजवादी युवजन सभा का वर्चस्व स्थापित हो गया था। लखनऊ विश्वविद्यालय मे भी छात्र यूनियन पर समाजवादी युवजन सभा का एकाधिकार था राणा छात्र यूनियन के अध्यक्ष थे उस समय भाई सत्यदेव त्रिपाठी युवजन सभा के प्रमुख नेता थे

सत्यदेव जी की प्रेरणा से छात्र संघ भवन मे छात्रो की एक बैठक बुलायी गयी जिसमे निश्चय किया गया कि छात्र यूनियन का उदघाटन ससोपा ससदीय दल के नेता श्री मधु लिमये से करवाया जाए। मधु लिमये जी युवजनो एव विश्वविद्यालयो क छात्रो एव अध्यापको मे अत्यन्त लोकप्रिय थे। काग्रेस सरकार के विरुद्ध भ्रष्टाचार के अनेक मामले उठाने के कारण वह समाचार पत्रो की सुर्खियो मे रहते थे। जिस समय वह लोकसभा मे खडे होते थे और मानीय अध्यक्ष महोदय" कहकर व्यवस्था का प्रश्न उठाते थे, सम्पूर्ण सदन स्तब्ध रह जाता था। प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी सहित सम्पूर्ण सत्ताधारी काग्रेस पार्टी उनसे भय भी खाती थी। इसलिए मधु जी छात्र यूनियन का उदघाटन करने वाले है यह बात पूरे शहर मे आग की तरह फैल गयी। उत्तर प्रदेश सरकार मे समाजवादी भागीदार थ तथा लखनऊ शहर मे पार्टी का अच्छा प्रभाव था। इसलिए लखनऊ मेल पर जो करीब साढे सात बजे प्रात लखनऊ आती है रेलवे स्टेशन पर उनका स्वागत करने के लिए एक जन सैलाब उमड पडा था। विशाल भीड के कारण प्लेटफार्म पर तिल रखने की जगह नही थी। हम लोगो ने प्लेटफार्म का कोना–काना छान मारा किन्तु मधु जी का कही पता नही था। अब क्या होगा ? दिन मे 11 बजे छात्र यूनियन का उदघाटन था। भाई सत्यदेव त्रिपाठी तथा श्री सत्यप्रकाश राणा के हाथ–पेर फूल गए थे। निराशा की स्थिति मे हम लोग वित्तमत्री श्री रामस्वरूप वर्मा के आवास पर पहुँचे। देखा मधु जी हँसते हुए चले आ रहे हैं। हम लोगो ने बहुत शिकायत की। सकोची स्वभाव के मधु जी कहने लगे कि अपना स्वागत करवाना मुझे अच्छा नही लगता। मेरा और उनका प्रथम बार यही आमना–सामना हुआ। फिर तो मधु जी से घनिष्ठता बढती ही गयी यह क्रम उनके जीवन-पर्यन्त जारी रहा।

जिस समय मैं मधु जी स मिला उस समय वह अत्यन्त गभीर, सकोची और हम उत्तर प्रदेश वालो की भाषा मे बिल्कुल "बोर किस्म" के आदमी थे। वह गुरुद्वारा रकाबगज रोड पर रहते थे। उनका और डा साहब का मकान थोडी ही दूरी पर था। इसलिए जो कार्यकर्त्ता डा लोहिया के यहाँ जाता वह मधु जी से भी मिलता। काम की बात हो जाने पर पूछते 'और कोई बात तो नही।" यह कहते हुए अन्दर चले जाते। जो राजनारायण जी और कर्पूरी ठाकुर जी के यहाँ दरबारगिरी करते थे तथा चाटुकारिता के पेशे से अपनी राजनीति चलाते थे, उनके मध्य मधु जी अलोकप्रिय थे, यद्यपि सम्मान सब करते थे। बाद के दिनो मे वह घुल–मिल गए थे। साथियो के साथ उनकी आत्मीयता बढ गयी थी। उनके निकट के शिष्य-सहयोगियो ने भी जी भर कर उन पर प्यार उडेला था।

1969 मे मुझे उ प्र समाजवादी युवजन सभा का मत्री बनाया गया था। उस समय तक समाजवादी युवजन सभा का सगठन सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के समानान्तर शक्तिशाली युवा सगठन के रूप मे खडा हो गया था। लगभग सभी विश्वविद्यालयो तथा डिग्री कालेजों यहा तक इन्टर कालेज तक में हमारे विजयी होते थे शिक्षित वर्ग में डा लोहिया का प्रभाव एव विचार फैल रहे थे मधु लिमये जार्ज

फर्नांडिस एव राजनारायण आकर्षण का केन्द्र थे। यह नेता यथास्थितिवाद विरोधी आगे देखूँ, प्रगतिशील विचारो के वाहक तथा सत्ताधारी दल काग्रेस के विरोधी के रूप मे जाने–माने जाते थे। इसलिए समाजवादी युवजन सभा का मन्त्री होने के नाते मुझे दिल्ली जाना होता और मधु जी से भेट होती। धीरे–धीरे यह सम्बन्ध इतने बढे कि मुझे एव मोहन सिह को घर पर ठहरने का न्यौता भी मिला एव वापसी का किराया भी मिल जाता था। नेता एवं कार्यकर्त्ता जब यह सुनते तो उन्हे आश्चर्य होता। लोग समझते थे कि उनका स्वभाव रूखा है। किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं था। यदि उनकी किसी से आत्मीयता हो जाती तो वह उसके लिए अत्यन्त उदार हो जाते। उनका मन अत्यन्त कोमल एव स्वच्छ था। राजनीति के साथ ही वह कला, सगीत, और गायन के भी प्रेमी थे। राजनीतिक कार्यो मे डूबे मधु जी के सम्बन्ध मे यह बात बहुत कम लोग जानते हैं कि वह कितने रसिक थे। वह सगीत एव गायन का भरपूर रसास्वादन करते थे। सगीत विद्या उनको विरासत मे मिली थी। उनके पिता जी भी सगीत एव अग्रेजी के अध्यापक थे। इसलिए सगीत के रागो से वह भलीभॉति परिचित थे। विख्यात नर्तकी सोनल मानसिह उनके सगीत प्रेम ओर परख का लोहा मानती थी। कुमार गधर्व, भीमसेन जोशी को वह शौक से सुनते थे। बेगम अख्तर के गजल गायन के भी वह प्रशंसक थे। उन्हें लखनवी तहजीब बहुत भाती थी। लखनऊ की सस्कृति, कला और कविता की जानकारी के लिए उन्होने मुझसे अब्दुल हलीम शरर की पुस्तक "गुजश्ता लखनऊ" पढने हेतु मगाई थी। उन्होने राजनीति शास्त्र एव पाश्चात्य दर्शन का गभीर अध्ययन किया था। पाश्चात्य विचारधारा का उनके लेखन पर प्रभाव देखा जा सकता है। किन्तु उन्होने वेदो का और विशाल काव्य ग्रन्थ महाभारत का भी गहन अध्ययन किया था। वह अपनी पत्नी चपा लिमये के साथ ही साथ स्वय भी सस्कृत भाषा के पडित थे। इसी कारण उनको भारतीय दर्शन की व्यापक जानकारी थी।

इस लम्बे समय मे मैने देखा कि उनका जीवन कितना सादा था। उनके घर पर फ्रिज, टी वी तथा वह समस्त चीजे जो एक आधुनिक व्यक्ति के पास होती है नही थी। वह घडे का पानी पीते थे। जब कोई पानी मागता तो स्वय पिलाते। खाना और चाय अपने हाथ से बनाते। मैले कपडे स्वय ही धो लेते। इस प्रकार एक जोगी का जीवन जीते थे। शासन तत्र के घेरे मे रहने के बावजूद वह विदेही थे और इस जीवन पर उन्हे गर्व था। जब वह अस्वस्थ रहने लगे तो मुझे उनके इस कष्टपूर्ण जीवन पर रोना आ गया। मुझे देखकर उन्होने भॉप लिया। बोले "तुम क्या समझते हो। मुझे इस जीवन पर कोई ग्लानि है ? मैंने इसे स्वय स्वीकार किया है।"

स्वतत्रता सग्राम मे अपने सैनिकों को सार्वजनिक जीवन मे शुचिता एव सादगी का जो पाठ महात्मा गाधी ने पढाया था उसका गहरा प्रभाव मधुजी के जीवन पर था। एस एम जोशी एव साने गुरु जी का जीवन भी अत्यन्त सादा था। इस परिवेश का भी मधुलिमये के जीवन पर प्रभाव पडा होगा। किन्तु मेरी तरह के हजारो कार्यकर्त्ताओ के लिए उनका जीवन मिसाली था उनके सान्निध्य में जो भी आता उसको उनका व्यक्तित्व अवश्य करता उनका से दर का भी नाता नहीं था उनके

सम्बन्ध मे हम जिन वस्तुओ को विलासिता कहते हैं– टी वी , फ्रिज, एअर–कडीशनर, रूम हीटर आदि वह आज के युग मे अनिवार्यताये हैं। जो व्यक्ति चार बार सासद रहा हो, जिसकी गणना देश के स्थापित नेताओ मे हो, जिसे धन देने और उपहार देने मे लोग प्रसन्नता महसूस करे तथा जिसके इशारे पर न जाने कितने मंत्री एव सासद बनते हो वह एक "फकीर" का जीवन जिये और उस पर गर्व महसूस करे, यह एक मनीषी ही कर सकता है। साधारण व्यक्ति के वश मे यह नही है। आचार्य नरेन्द्र देव, डा लोहिया, जयप्रकाश नारायण तथा समाजवादी आन्दोलन के अन्य नेता प्राय सभी मूल्यो के लिए समर्पित रहे एव अभाव का ही जीवन जिए। किन्तु मधुलिमये उनमे भी एक मिसाल थे। उनका जीवन निष्कलक एव स्वच्छ था।

मधु जी ने 1971 मे लोकसभा चुनाव मे मुझसे मुगेर मे रहने तथा चुनाव प्रचार करने का आदेश दिया। मुगेर से यह उनका तीसरा चुनाव था इससे पहले दो चुनाव यही से वह जीत चुके थे। मै उन्ही की जीप से दिल्ली से मुगेर गया। हम लोगो ने अपनी शक्ति भर प्रचार किया किन्तु मुस्लिम मतदाताओ का रुझान इन्दिरा काग्रेस के पक्ष मे था। फिर गिद्धौर के राजा के खडे हो जाने के कारण मधु जी चुनाव मे पराजित हो गए।

करीब दो वर्ष बाद 1973 मे बाका (बिहार) मे उप चुनाव हुआ। मधु जी वहॉ से खडे हुए। चम्पा जी की चिट्ठी आई कि तुम्हे मधु जी ने बुलाया है। तुरन्त बॉका पहुँचे। मैं उन दिनो लखनऊ विश्वविद्यालय मे आचार्य नरेन्द्र देव छात्रावास मे रहता था। साथियो से मेने बॉका जाने की इच्छा प्रकट की। उन लोगो ने कुछ धन एकत्र कर दिया और मैं बॉका पहुँच गया। मुझे यह देखकर बहुत दुख हुआ कि मधु जी के विरुद्ध राजनारायण जी उम्मीदवार थे और कर्पूरी जी उनके पैरोकार थे। बॉका के भूगोल से मैं अपरिचत था। मुझे राजवनधुरैया विधानसभा क्षेत्र सगठित करने का कार्य सौंपा गया। वहॉ पहुँचने पर मेरे हाथ-पैर फूल गए। वह क्षेत्र कम्युनिस्टो का गढ था। मेरी तो यह अग्नि परीक्षा थी। काफी परिश्रम के बाद हम लोग स्थिति को थोडा नियत्रित कर सके। अन्य क्षेत्रो से उत्साहवर्धक सूचनाये मिल रही थी। इसलिए जब शाम को अन्य क्षेत्रो के कार्यकर्त्ताओ से मिलता तो उनकी बातो को सुनकर मन मसोस कर रह जाता। मधु जी सदा मेरा उत्साहवर्धन करते। उन्हे स्थिति का ज्ञान था। मधु जी अच्छे बहुमत से विजयी हुए किन्तु मेरे क्षेत्र रजवनधुरैया से बुरी तरह पराजित हो गए। मैं वापस लखनऊ चला आया और ग्लानिवश कई महीने दिल्ली नही गया। नरेन्द्र गुरु के द्वारा उनका सदेश प्राप्त हुआ कि दिल्ली आओ। मैं दिल्ली गया मुझे देखते ही बहुत प्यार से मिले और स्वय उस क्षेत्र की विषय की सफाई देने लगे इस प्रकार उन्होंने मेरी ग्लानि को कम कर दिया मधु जी की हई थी

भी करूँगा।" उन्होने ऐसा ही किया। उत्तर प्रदेश मे समाजवादी पार्टी शक्तिहीन थी किन्तु मधु जी के कारण उसमे कुछ जान आ गयी थी। विपक्ष मे भी सलाह मशविरे पारम्भ हो गये थे। बॉका लोकसभा के चुनाव मे जयप्रकाश जी ने अपने ढग से मधु जी का समर्थन किया था। श्री जार्ज फर्नाडिस एव लैला कबीर के साथ मै भी उनसे मिलने गया था। राजनारायण जी के खडे होने और कर्पूरी जी के द्वारा उनको समर्थन देने से जयप्रकाश जी दुखी थे। धीरे से कहा था, "देखिए मै अपनी तरह से कुछ करूँगा।" उन्होंने जो भी किया हो किन्तु यह चर्चा आम हो गयी थी कि जे पी मधु लिमये को जिताना चाहते हैं। जे पी का नैतिक समर्थन ही बहुत था।

1971 के चुनाव मे मिले प्रचड बहुमत के दम पर श्रीमती इन्दिरा गाधी ने सभी लोकतान्त्रिक मर्यादाओ की धज्जी उडानी प्रारम्भ कर दी थी। सविधान को अपने मन माफिक तोडना प्रारम्भ कर दिया था। उनके इर्द-गिर्द चाटुकारो की एक जमाअत इकट्ठा हो गयी थी। राष्ट्रीय स्वतत्रता सग्राम के मूल्यो को नकारा जा रहा था। इस मडली मे कम्युनिस्ट बराबर के शरीक थे। पहला हमला अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के अल्पसख्यक चरित्र को बदलने का किया गया। अलीगढ विश्वविद्यालय एक स्वायत्त सस्था थी। इसलिए उसके अल्पसख्यक चरित्र को समाप्त करना एक धृष्टता थी। कम्युनिस्ट इस षडयत्र मे पेश-पेश थे। इसके विरोधस्वरूप डा फरीदी ने उत्तर प्रदेश बन्द की घोषणा की। स्थान-स्थान पर साम्प्रदायिक दगे फूट पडे। अलीगढ एव फीरोजाबाद मे भीषण नरसहार हुआ। डा फरीदी साहब से मेरी वार्ता हुई। मैंने उनसे निवेदन किया कि यह स्वायत्तता का प्रश्न है। इसे आप मुस्लिम समस्या मत बनाईये। यदि स्वायत्तता के प्रश्न को आगे करके आप चलेगे तो विभिन्न राजनीतिक दलो का समर्थन प्राप्त होगा। डा फरीदी साहब ने मरी बात मान ली। मैने मधु जी से वार्ता की। एक बैठक मेरे और अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के भूतपूर्व अध्यक्ष मोहम्मद अदीब साहब के सयोजकत्व मे डा फरीदी साहब के आवास पर बुलायी गयी। विभिन्न राजनीतिक दलो के नेता उसमे उपस्थित थे। निश्चित किया गया कि एक विशाल सम्मेलन स्वायत्तता बहाली के समर्थन मे बुलाया जाए। लखनऊ नगर पालिका के त्रिलोकनाथ हाल मे सम्मेलन हुआ। हाल खचाखच भरा था। सम्मेलन का उद्घाटन मधु लिमये जी ने किया और विभिन्न राजनीतिक दलो ने "लखनऊ बन्द" की घोषणा की। मधु लिमये जी की सायकाल विभिन्न मुस्लिम नेताओ से लम्बी मत्रणा हुई और निश्चित किया गया कि लडाई "अल्पसख्यक चरित्र" के लिए नही "स्वायत्तता" के प्रश्न पर की जाए। इस प्रकार इस लडाई को मधु जी ने साम्प्रदायिक होने से बचा लिया। यह लडाई लम्बी चली। मधु जी के प्रयास से जनता पार्टी के शासन मे अलीगढ विश्वविद्यालय का अल्पसख्यक चरित्र बहाल हो सका।

1974-75 मे जयप्रकाश जी के नेतृत्व मे चले नवनिर्माण आदोलन गुजरात तथा सम्पूर्ण क्रान्ति के आन्दोलन (बिहार में मधु जी ने बढ भाग लिया 1975 में की घोषणा के बाद मध्य प्रदेश में महासमुद में गिरफ्तार किए गए तथा

बाद मे रामपुर जेल मे रखा गया। लोक सभा की अवधि समाप्त होने पर ससद की सदस्यता से त्याग पत्र दे दिया। 7 फरवरी 1977 को लोकसभा के लिए बॉका ससदीय क्षेत्र से पुन निर्वाचित हुए तथा नवगठित जनता पार्टी के महामत्री बने। मधु जी 1980 के उप चुनाव मे बॉका ससदीय क्षेत्र से चुनाव हार गए। उनके ससदीय जीवन की यही समाप्ति हो गयी। वह चार बार लोक सभा के लिए निर्वाचित हुए।

मधु जी के मन मे समाज के कमजोर तबको ओर अल्पसख्यक वर्ग के प्रति सदा स्नेह रहता था। किन्तु यह स्नेह उनके मध्य लोकप्रिय बनने अथवा वोट बटोरने के उद्देश्य से नही था। यह स्नेह मात्र इस कारण था क्योकि यह कमजोर वर्ग है। 1970 मे जावेद एव जयती के प्रेम सम्बन्धो ने काफी तूल पकडा तथा समाचार पत्रो मे छाया रहा था। जावेद दिल्ली के किसी कालेज मे अध्यापक थे। उनका प्रेम सम्बन्ध जयती नामक एक छात्रा से हो गया। दिल्ली के आर्यसमाजियो एव राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ के कार्यकर्त्ताओ ने साम्प्रदायिक रग दे दिया। मधु जी ने इस सारे प्रकरण का लोकसभा मे उठाया ओर बिना धर्म परिवर्तन किए हुए दोनो के विवाह का समर्थन किया। दोनो की जान को खतरा था इसलिए उनका अपने घर मे शरण दी ओर समाचार पत्रो मे इसकी सूचना भेज दी कि दोनो उनके आवास मे हैं। उनको अपने इसी विशाल दृष्टिकोण का 1971 के चुनाव मे परिणाम भुगतना पडा। यद्यपि 1971 मे "महागठबन्धन" के उम्मीदवार थे और जनसघ का उन्हे समर्थन प्राप्त था। किन्तु जनसघियो ने मुगेर मे षडयत्र करके एक निर्दलीय उम्मीदवार महाराजा गिद्धौर को खडा कर दिया और अपना भरपूर समर्थन दिया। अलीगढ विश्वविद्यालय एव जावेद–जयती के मामलो को खूब हवा दी गयी और मधु जी पराजित हो गए। मधु जी सकीर्णता एव साम्प्रदायिकता स समझौता करने को कभी तैयार नही थे। राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ से उनका विरोध इसी कारण था। उनकी श्रद्धाजलि सभा मे श्री लालकृष्ण आडवानी ने अपने भाषण मे कहा था। "समाजवादी नेताओ विशेष कर डा लोहिया एव जयप्रकाश नारायण जी से हमारी वार्ता होती थी ओर सहमति के मुद्दे निकल आते थे किन्तु मधु जी किसी भी मुद्दे पर सहकार के लिए हमसे तेयार नही थे।"

1977 मे उनकी कृपा से मै विधायक भी बना और मत्री भी। जब मत्री के रूप मे मैं उनसे मिलने गया तो वह अपनी खुशी छुपा नही पाये। उन्होने मुझे गले से लगा लिया और उनकी ऑखो मे ऑसू छलकने लगे। खुशी से बोले "शोभन मुख्तार मत्री बन गया है। इसे कुछ खिलाओ।" हम कार्यकर्त्ताओ के लिए उनके मन मे कितना स्नेह था।

1978 मे सामन्तशाही के खिलाफ ईरान मे विशाल आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। हिन्दुस्तान मे अधिकाश समाजवादी इसके पक्ष मे थे। जब शाह ईरान भारत आया तो उसको कनाट प्लेस मे काला झडा दिखाया गया। झडा दिखाने वालो मे अधिकाश समाजवादी शरीक थे जिनमे जार्ज फर्नान्डिस का निजी सचिव रवि नायर भी शामिल था। समाचार पत्रों ने यह समाचार सुर्खियो मे छापा। अटलबिहारी बाजपेयी अपनी छवि बनाने के उद्देश्य से सभी विदेशी राजनेताओ से मीठी मीठी बातें करते थे उन्होने इस बात

की शिकायत मधु जी से भी की। इसे सयोग ही समझिये कि लखनऊ मे एक शाम को आल इण्डिया शिया कान्फ्रेन्स के महामत्री श्री ताहिर जरवली मुझसे मिलने आये। उनके साथ एक ईरानी आलिमेदीन भी थे। उन्होने आयतुल्ला खुमैनी का एक पत्र मुझे दिया जिसमे भारत के लोकतत्रवादियो से अपील की गयी थी कि अधिनायकवाद के जुये को उतार फेकने तथा लोकतत्र की स्थापना के लिए ईरानी क्रान्ति का समर्थन करे। उधर ईरान मे शिया सम्प्रदाय के पवित्र शहरो मशहद एव कुम मे हत्याओ का सिलसिला जारी था, जिसके समाचार निरन्तर आ रहे थे। इसलिए मैंने और स्वर्गीय ताहिर जरवली ने एक विरोध-पत्र ईरान के राजदूत को प्रेषित किया। उस समय श्री जगत मेहता विदेश सचिव थे। हमारी गतिविधि का समाचार उनको मिल गया था। मधु जी ने खुमैनी साहब के पत्र का हवाला देते हुए प्रधानमत्री श्री मोरार जी देसाई एव विदेश मत्री श्री अटलबिहारी बाजपेयी से अपील की कि भारत सरकार अपना एक प्रतिनिधि खुमैनी साहब के पास पेरिस भेजे और उन्हे नैतिक समर्थन दे। मधु जी ने इस कार्य के लिए श्री अशोक मेहता को भजने का आग्रह किया। श्री मेहता पेरिस गए तथा भारत के समर्थन देने से ईरानी क्रान्ति को बहुत बल मिला। उधर विदेश सचिव श्री जगत मेहता अपना खेल, खेल रहे थे। उन्होने शाह समर्थित प्रधानमंत्री शापुर बख्तियार की अस्थाई सरकार को मान्यता दे दी। सम्भवत भारत पहला देश था जिसने यह लज्जाजनक कार्य करके फासिस्टवाद का समर्थन किया था। तेरह दिन बाद ही वह सरकार भी गिर गयी। मधु जी इस बात से बहुत क्रोधित हुए। उन्होने मोरार जी को विरोध मे पत्र लिखा तथा पत्र की प्रतियॉ समाचार पत्रो को दे दी। मधु जी के पत्र से काफी हगामा मचा तथा विदेशो मे भी यह समाचार प्रथम पृष्ठ पर छपा। इससे ईरान के क्रान्तिकारियो को बहुत बल मिला। एक समारोह मे मेरी अटल जी से भेट हो गयी। मुझे देखते ही बोले "आप समाजवादी अब सरकार मे हैं। कृपया अनुशासित रहिए। आप लोग चाहते हैं कि विदेश विभाग का सत्यानाश हो जाए।" जो कुछ भी हो मधु जी की इस कृत्य से ईरान के क्रान्तिकारियो के मध्य भारत का सम्मान बढ़ा। मधु जी को कई बार ईरान जाने का निमन्त्रण मिला किन्तु स्वास्थ्य की खराबी बाधा बन जाती थी।

समाजवादी पाठशाला मे मधु लिमये को पहली शिक्षा राष्ट्रभक्ति या राष्ट्रप्रेम की मिली थी। मधु लिमये के बालकाल से युवा अवस्था तक जाने के समय तक देश गुलाम था। देश की स्वतत्रता के लिए काग्रेस के नेतृत्व मे सग्राम हो रहा था। मधु लिमये स्वतत्रता सग्राम के हवन कुड मे कूद पडे। बी ए प्रथम वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात समाजवादी युवजनों ने शपथ ली कि जीवन का शेष समय वह भारत की स्वतत्रता के लिए होम कर देगे। इन सभी युवजनो ने ऐसा ही किया। अल्प आयु के होने के बाद भी इन्हे जेल मे कठोर यत्रणा दी गयी। देश के स्वतत्र होने तक इन्हे तीन वर्ष के कठोर कारावास की सजा दी गयी। देश की स्वतत्रता के बाद भी भारत माता का एक अश अर्थात पुर्तगाली दास्ता से मुक्त नहीं हुआ था। मधु लिमये ने अपनी शादी की दूसरी वर्षगॉठ पर शपथ ली कि वह "गोवा मुक्ति आन्दोलन" मे शरीक होगे। उनका बेटा अनिरुद्ध मात्र एक वर्ष का था उन्हें 12 वर्ष का कठोर दड दिया गया यह और बात है कि पोप के

हस्तक्षेप के कारण वह 19 महीने बाद जेल से मुक्त हो सके। उनकी राष्ट्रभक्ति के यह प्रमाण हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात देश के विभाजन से वह दुखी थे। देश के हिस्से-बँटवारे न होने पायें यह उनकी इच्छा थी। इसलिए वह व्याधियॉ जिनसे देश के विघटन को खतरा था वह थीं-साम्प्रदायिकता, जातिवाद एव असहिष्णुता। इनसे लोहा लेने को वह हर दम तैयार रहते।

मधु लिमये किसी भी स्तर पर साम्प्रदायिकता को स्वीकार करने को तैयार नही थे। साम्प्रदायिकता किसी भी तरह की हो वह देश के लिए खतरा मानते थे। चूँकि देश मे बहुमत हिन्दुओ का है इसलिए वह राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ को देश की एकता मे मुख्य बाधा मानते थे और उस पर शक्ति भर हमला करते थे। इस सस्था पर उनके हमले बहुत कराल होते थे। उन्होने अपने बाल्यकाल मे इसकी साम्प्रदायिकता का नग्न रूप देखा था। एक बार तो आर एस एस के लोगो ने पुणे मे समाजवादियो पर हमला कर दिया था जिसमे एस एम जोशी सहित अन्य नेता घायल हो गए थे। अग्रेजों से मिलकर इन्होने देश के साथ गद्दारी की ऐसा मधु जी मानते थे। भारतीय जनता पार्टी के नेताओ ने जब महात्मा गाधी को राष्ट्रपिता मानने से इकार किया तो मधुलिमये ने एक अग्र लेख मे कहा जिन लोगो ने स्वतन्त्रता के सघर्ष मे कोई योगदान नही दिया और जिन्होने दूसरे मुक्ति आदोलन (इमरजेन्सी) मे जेलो से सैकडो माफीनामे लिखकर आदोलन को कलकित किया वे यह बात नहीं समझ सकते कि सुभाषचन्द्र बोस ने गाधी जी को राष्ट्रपिता क्यो कहा"।

मधु जी का मानना था कि भारत जो कि एक विविधता भरा देश है, उसमे असहिष्णुता से देश नही चल सकता। भाजपा एवं उसकी जननी जनसंघ ने अल्पसख्यको के लिए जो रणनीति बनायी थी उसका अर्थ वोट प्राप्त करना था। किन्तु इससे देश के विघटन का भी भारी खतरा था। बाबरी मस्जिद -राम जन्मभूमि का मुद्दा उसका एक उदाहरण था। मधु लिमये उदार राष्ट्रीयता के पक्षधर थे जिस पर वह जीवनपर्यन्त चलते रहे।

राष्ट्रीयता एव लोकतत्र के सुदृढीकरण के लिए मधु लिमये हरिजनो एव पिछडो को सरकारी नौकरियो एव प्रतिष्ठा के पदो पर आरक्षण के प्रबल समर्थक थे। डा लोहिया की भॉति वह भी "पिछडो को विशेष अवसर" के सिद्धान्त के हिमायती थे। उनका मत था कि जब तक इन वर्गो को "विशेष अवसर" देकर इनको सम्मानित नहीं किया जाएगा सामाजिक समता सभव नही हो पायेगी। वह लिखते हैं कि "मेरी यह निश्चित राय है कि जन्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था का सम्पूर्ण नाश किए बिना न देश की स्वतत्रता बच पायेगी, न ही देश की एकता बनाये रखने मे हमे सफलता मिल पायेगी। हम लोगो ने लोकतान्त्रिक प्रणाली को स्वीकारा है। और ऊँच-नीच के भेदभाव सामाजिक व्यवस्था मे यह प्रणाली कभी ठीक नही चल सकती। लोकतत्र का आधार है राजनीति और कानूनी बराबरी इसान-इसान के बीच में अगर जाति और वर्ण को जल्दी समाप्त नहीं किया जाएगा तो सस्थाओं की रक्षा करने

का प्रयास अनिवार्य रूप से विफल हो जाएगा। मेरा हमेशा यह मत रहा है कि शोषित दबे हुए और सदियो से जो जुल्म के शिकार हे, उनको "विशेष अवसर" और सरक्षण दिए बिना उनकी उन्नति कदापि नही हो सकती।"

इसी आधार पर मधु जी ने मडल कमीशन का समर्थन किया। जब वह जनता पार्टी के महामत्री थ तो उन्होने प्रयास किया कि पिछड़ वर्ग के, हरिजन एव मुसलमानो को शासन मे सर्वोच्च स्थान दिया जाए। अनेक राज्यो मे पिछड़े वर्ग के मुख्यमत्री बनाये गए थे। इस मुद्दे पर उनका मोरार जी से अक्सर टकराव हो जाता था। यही कारण था कि उनके आपसी रिश्ते कटु हो गए थे। मधु जी का मानना था कि विविधताओ के इस देश मे उदार मानसिकता एवं सहिष्णुता से ही चला जा सकता है। इसीलिए वह दबे–कुचले, अल्पसख्यक, हरिजन एव पिछडे वर्ग के साथ उदारता का व्यवहार करत थे।

मधु लिमये की लोकतत्र में पूर्ण आस्था थी। वह लोकतत्र मे हिंसा के सहारे के विरुद्ध थे। सत्ता परिवर्तन के लिए सिविल नाफरमानी और सत्याग्रह को वह कारगर हथियार मानते थे। इसी नीति पर अमल करते हुए वे अनेक बार जल गए। लाकतत्र के मार्ग मे वह मुख्य बाधाये सत्ता का केन्द्रीयकरण, लोकतात्रिक सस्थाओ का अवमूल्यन प्रतिष्ठा के पदो पर विराजमान नेताओ का अलोकतांत्रिक व्यवहार, परिवारवाद, दलो मे ह्रासोन्मुख आतरिक लोकतत्र मानते थे। इस विषय पर उन्होने विस्तार से लिखा है। जनता सरकार के दौरान मोराजी देसाई तथा जगजीवन राम से उनकी तकरार मे वह मुख्य दोषी मोरार जी क पुत्र काती देसाई एव जगजीवनराम के पुत्र सुरेशराम को मानते थे। उन्होने खीझकर लिखा था "कभी–कभी मेरा मन होता है कि महत्त्वपूर्ण पदो पर कुवारे लोगो को ही बिठाया जाए।" इसका अर्थ यह कदापि नही था कि वह राजनीतिक नेताओ के उन पुत्रो को जो राजनीति कर रहे हैं उनके विरुद्ध थे। मधु जी मात्र यह चाहते थे कि उनको राजनीति मे आरोपित न करके उनको स्वत' स्फूर्ति बढाने का अवसर दिया जाए। किन्तु राजनेताओं के पुत्रो की महत्त्वाकाक्षाये असीमित हो जाती हैं जिससे पार्टियो के विघटन की सभावना बढती है।

1980 से उनका स्वास्थ्य ठीक नही रहता था। उनका दमा बढ गया था जिसके कारण हृदय कमजोर हो गया था। मधु जी को 1982 मे शल्य क्रिया के लिए मित्रो ने अमेरिका भजा। किन्तु फेफड़ो के कमजोर होने के कारण आपरेशन सफल नही हो सकता था इसलिए वापस आना पड़ा। मधु जी के लिए सक्रिय राजनीति मे रहना सभव नही था। उनका स्वास्थ्य जवाब दे चुका था। उन्होन अपने समय का सदुपयोग वाचन एव लेखन मे किया।

समाजवादी नेताओं मे मधु लिमये अत्यन्त अध्ययनशील नेता थे। उनकी कल्पना शक्ति अत्यन्त प्रखर थी होने वाली देश एव विदेश में राजनीतिक घटनाओं पर उनकी पैनी दृष्टि रहती थी और वह उन घटनाओं का सही मूल्याकन करते

थे। विभिन्न क्षेत्रो मे उनका ज्ञान इतना गहन एव विस्तृत था जिसकी थाह पाना कठिन था। उन्होने जब स्थिरता के साथ लेखन कार्य प्रारम्भ किया तो स्वर्गीय अशोक मेहता ने उसकी प्रशसा करते हुए कहा था, "बीमारी के समय का आपने अच्छा सदुपयोग किया।" मधु जी के साथ मैं कई बार अशोक मेहता जी से मिलने गया। दोनो मे राजनीति, श्रमिक आन्दोलन तथा विभिन्न देशो मे समाजवाद की धाराओ पर वार्ता होती।

राजनीति से निष्क्रिय हो जाने के बाद उनका चितन स्वतत्र हो गया था। मधु जी के आवास पिंडारा रोड पर विभिन्न दलो के राजनीतिक कार्यकर्त्ताओ तथा नेताओ की भीड लगी रहती। एक तरह से उनका आवास एक राजनीतिक पाठशाला के रूप मे परिवर्तित हो गया था। अपने राजनीतिक विचारो से परे उनका किसी भी पार्टी के कार्यकर्त्ता से कोई परहेज नही था। वह सभी से वार्ता करते और मार्गदर्शन देते। समाजवादी आन्दोलन के पचास वर्ष पूरे होने पर उन्होने मुझे डा लोहिया के "बहुआयामी व्यक्तित्व" पर निबधो का सग्रह एकत्र करने का आदेश दिया। पुस्तक के छपने के पश्चात वह बहुत प्रसन्न हुए। उसके विमोचन की उन्होने स्वय व्यवस्था की। विमोचन मे समाजवादी आन्दोलन के समस्त नेता जो डा लोहिया के भी अत्यन्त निकट थे उपस्थित थे। सर्वश्री राजनारायण, मधु दंडवत, सुरेन्द्र मोहन, रविराय जार्ज फर्नान्डिस मुलायम सिह यादव, जनेश्वर मिश्र एव चन्द्रशेखर के अतिरिक्त नम्बूदरीपाद, कमला देवी चट्टोपाध्याय पत्रकारों मे सर्वश्री कुलदीप नेयर, राजेन्द्र माथुर कलाकारो में सोनल मानसिह भी उपस्थित थी। मधु जी ने सभी को स्वय आमत्रित किया था। सभा की अध्यक्षता स्वतत्रता सग्राम सेनानी तथा समाजवादी आन्दोलन की वयोवृद्ध नेता कमला देवी चट्टोपाध्याय ने की थी। मधु जी स्वयं सभा का सचालन कर रहे थे। यह उनका बडप्पन था कि मेरी तरह के तुच्छ कार्यकर्त्ता को उन्होने इतना सम्मान दिया था। अब ऐसा प्यार और सम्मान देने वाले नेता को ऑखे तलाश करती है।

मधु लिमये : जीवन वृत्त

जन्म हुआ 1 मई 1992 मे महाराष्ट्र की सांस्कृतिक राजधानी पुणे मे। पिता शिक्षक थे अग्रेजी और सगीत के। अक्षर ज्ञान माता–पिता से हुआ। प्राथमिक शिक्षा ननिहाल मे नाना जी के पास रहकर हुई। नाना जी हाईस्कूल के अवकाश प्राप्त सस्कृत शिक्षक थे।

आर्थिक स्थिति मे विषमता का अनुभव नजदीकी रिश्तेदारो के यहाँ बचपन मे ही हुआ। जब चौथा दर्जा पास किया तो 'नूतन मराठी विद्यालय' में दाखिला लेना था लेकिन ममेरे भाई को वहाँ दाखिला नहीं मिला, इसलिए मधुजी को भी उस स्कूल मे नहीं भेजा गया। उसी तरह पॉचवे दर्जे मे ममेरे भाई को तो रॉबर्ट स्कूल मे दाखिला दिलाया गया और मधु जी को मराठी स्कूल मे। जब वे इससे दुःखी हुए तो उनका नाम भी रॉबर्ट स्कूल मे लिखाया गया।

1933–34 मे सरस्वती स्कूल मे पढने लगे। प्रधानाध्यापक पिताजी के मित्र थे। उम्र कम होने के कारण उनका नाम रजिस्टर मे नहीं था और जब स्कूल का इस्पेक्टर निरीक्षण करने आने वाले होते तो उन्हे स्कूल न जाने को कह दिया जाता। स्कूल जाने के प्रति यह कहकर विद्रोह किया कि नाम रजिस्टर मे नही है तो स्कूल क्यो जाऊँ। घर पर पिताजी अग्रेजी पढाने लगे और बाकी समय वाचनालय मे बीतने लगा। अतरराष्ट्रीय घटनाओ में उसी समय से रुचि रही। इसका प्रभाव यह हुआ कि पुस्तकालय मे जाकर विभिन्न विषयो की पुस्तके पढने की आदत हो गई। वाचनालय का प्रभारी भी पूछता कि कैसे छात्र हो कि स्कूल नही जाते ? मधुजी ने प्राइवेट छात्र की हैसियत से परीक्षा दी। किसी को उम्मीद नही थी कि यह लडका पास करेगा, लेकिन पास किया ओर वह भी प्रथम श्रेणी मे।

बचपन मे ही शायद छठे दर्जे मे कुछ महीनो तक मुम्बई मे बदामबाडी मुहल्ले मे मामा के घर रहते थे। नजदीक ही काग्रेस हाउस या जिन्ना हॉल था। वहाँ सत्याग्रह चलते रहते थे, गिरफ्तारियाँ होती रहती थी। पुलिस से मार पडती थी। इसमे महिलाएँ भी बडी संख्या मे हिस्सा लेती थी। यहाँ छाप पडी राष्ट्रीय आदोलन की।

उन्ही दिनो साप्रदायिक दगे का भी बाल मन पर प्रभाव पडा। मामी बीमार थीं कामा अस्पताल मे भर्ती थी। मधुजी अस्पताल खाना पहुँचाने जाते थे। उन दिनो साप्रदायिक दगे होते रहते थे। एक शाम वे ट्राम से खाना लेकर अस्पताल जा रहे थे। दगे की खबर फैल गई। सभी लोग भाग लिए, मधु लिमये को अकेले जाना पड़ा।

सामाजिक विषमता का दृश्य भी बचपन में ही देखा। मौसी थीं, विधवा हो गई थीं शादी नहीं की शिक्षिका बनीं उनकी एक सहेली मराठी थीं जब वे घर आतीं तो

स्वागत तो होता लेकिन मराठी होने के कारण दूर अलग बैठाया जाता।

कर्मकाडी पूजा–पाठ के प्रति आलोचनात्मक रुझान भी बचपन में ही बन गया। नानाजी पूजा–पाठ मे आस्था वाले। भगवान को प्रसाद चढाया जाता जिसका अधिकतर भाग मदिर के पुजारी भगवान के भोग लगाने के नाम पर रख लेते। बालक मधु पूछते कि प्रसाद भगवान पुजारी को ही क्यो दे देते है, उन्हे क्यो नही देते ?

मैट्रिक पास करने के बाद 1937 मे फर्ग्युसन कॉलेज मे दाखिला लिया। वहाँ इतिहास तथा राजनीति शास्त्र के प्राध्यापक एच डी केलावाला थे। उन्ही की प्रेरणा से कॉलेज के इतिहास परिषद् के लिए 'ग्रीक सस्कृति और आधुनिक पाश्चात्य समाज' पर एक निबध तैयार किया जिसे सराहा गया।

1937 मे ही अच्युत पटवर्धन का फर्ग्युसन कॉलेज मे 'क्षितिज पर युद्ध के मडराते बादल' विषय पर प्रभावशाली भाषण हुआ। उनके व्यक्तित्व तथा भाषण शैली ने प्रभावित किया। तत्कालीन वामपथी रुझान के युवजनो की तीन धाराएँ थी। कुछ कम्युनिस्ट थे, कुछ रायवादी और कुछ कांग्रेस समाजवादी। अच्युत जी के भाषण ने अरविन्द चिटणिस, मधु चापेकर जैसे मित्रो के साथ काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की ओर आकृष्ट किया लेकिन 'सकोची और शर्मीले स्वभाव' के कारण नेताओ से परिचय करने की पहल नही की।

प्रो केलावाला ने 1935 के सविधान अधिनियम पर प्रबध लिखने के लिए प्रेरित किया और उसी सिलसिले मे विभिन्न विचारो के नेताओ से भेट करने की सलाह दी। एस एम जोशी से पहली बार उसी सिलसिले मे मिले। एस एम के व्यक्तित्व ने आकर्षित किया। दो–तीन बार बाद मे भी मिले लेकिन चर्चा सविधान अधिनियम पर कम "स्वतन्त्रता आदोलन और समाजवाद" पर अधिक हुई। इन चर्चाओ ने और "खासकर उनके व्यक्तित्व के मूल स्वभाव को सहेजने और विकसित करने का कार्य किया।"

सन् 1938 के मार्च महीने की एक शाम एस एम नारायण राव गोरे (एन जी गोरे) के बँगले मे चलने वाले समाजवादियो के अध्ययन मंडल मे ले गए। वहीं नाना साहब गोरे, उनकी पत्नी सुमति बाई, विनायकराव कुलकर्णी, माधव लिमये, गगाधर ओगले, अण्णा साने और अध्ययन मडल के सचिव बडू अर्थात् केशव गोरे से परिचय कराया। उसी साल पार्टी के सदस्य बने।

सन् 1938 के मई दिवस के अवसर पर हिन्दुत्ववादियो एव सावरकरवादियो ने वामपथी एव समाजवादियो के जुलूस पर हमला किया। सेनापति बापट तथा एस. एम जैसे लोग घायल हुए। एस एम हिन्दुत्ववादियो के कट्टर विरोधी थे। "धर्म–निरपेक्ष राष्ट्रवाद की शिक्षा राष्ट्रीय नेताओ और एस एम जैसे समाजवादी नेताओं से मिली।"

सन् 1937 38 के दौरान एस एम पुणे जिला काग्रेस कमेटी के सचिव थे और साथ ही प्रान्तीय काग्रेस पार्टी के भी सचिव थे मधु लिमये शनिवार पेठ

स्थिति काग्रेस कार्यालय मे शाम को जाने लगे और एस एम के काम मे हाथ बैठाने लगे। एसएम की "दृष्टि की व्यापकता और बहुजन समाज तथा दलितो के प्रति सहानुभूति के झरने के कारण इन वर्गो मे उनके प्रति आत्मीयता थी। एस एम की ये सारी विशेषताएँ उनके (मधुजी के) हृदय पटल पर अंकित हो गई।"

1938 मे अमलनेर मे मजदूर सम्मेलन हुआ। केशव गोरे के साथ मधु लिमये को एस एम वहाँ ले गए। दिसबर 1938 मे ही विद्यार्थी सप्ताह उत्साह के साथ मनाया गया। उसमे सक्रिय भागीदारी निभाई।

31 दिसम्बर 1938 को विनायकराव कुलकर्णी, केशव गोरे, अण्णा साने गगाधर ओगले माधव लिमये के साथ मिलकर रायने पार्टी का पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता बनने का फैसला किया।

अक्टूबर 1939 मे अण्णा साने के साथ खानदेश को अपना कार्यक्षेत्र चुना। बी.ए. पास करने मे एक साल बाकी था, इसलिए एसएम तथा अच्युत जी ने समझाया कि परीक्षा देने के बाद पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता बनना, लेकिन नही माने। जोशी जी (एसएम) दोनो को धुलिया छोडने गए। साने गुरुजी उस क्षेत्र के प्रभावशाली नेता थे। उनसे परिचय हुआ। खानदेश मे कम्युनिस्टो का प्रभाव था। वह वामपथी एकता का युग था लेकिन कम्युनिस्ट भीतर ही भीतर अन्य समाजवादियो की जड खोदने म लगे थे। उन लोगो ने युवक मधु लिमये को प्रभावित करने के लिए अपने द्वारा वितरित एक दस्तावेज दिया जिसमे काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी सुभाषचद्र बोस तथा एम एन राय की कडी आलोचना की गई थी। उस दस्तावेज की नकल अण्णा साने के साथ मिलकर रातोरात की और उसकी प्रति एसएम तथा अच्युत जी को भेजी। कम्युनिस्टो के प्रति मन मे वितृष्णा जागी।

सन 1939 के सितम्बर मे द्वितीय महायुद्ध छिड गया। युद्ध–विरोधी आदोलन की अगुआई समाजवादियो ने की थी। इस सिलसिले मे जयप्रकाश नारायण, युसूफ मेहरअली, राममनोहर लोहिया पुणे आए। उनसे मुलाकात हुई।

1940 के मध्य मे कुलाबा जिले मे किसान परिषद् हुई। एसएम के साथ गॉव–गॉव का दौरा किया। युद्ध–विरोधी भाषण देने के अपराध मे दशहरा के दिन गिरफ्तारी हुई और एक साल के सश्रम कारावास की सजा मिली। एसएम, यूसुफ मेहरअली चिट्ठियॉ तथा किताबे भेजा करते थे। वही साने गुरुजी से आत्मीयता हुई।

1940 मे पुणे मे अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी का अधिवेशन होने वाला था। उससे पहले सी.एस.पी की कार्यकारिणी की बैठक बुलाई गई। आचार्य जी आए थे। यूसुफ महरअली ने उनके साथ रहने का काम सौंपा क्योकि आचार्य जी बीमार थे। अच्छी पहचान और विभिन्न विषयो पर चर्चा का अवसर मिला।

सन् 1941 मे भुसावल के छात्रों का सम्मेलन हुआ कम्युनिस्टों की लाइन

ग्रदलने लगी थी। मधु जी ने सार्वजनिक तौर पर उस सम्मेलन मे उनकी आलोचना की जिसे अधिकाश छात्रो ने पसद किया।

सन् 1942 के प्रारभ मे आचार्य नरेन्द्रदेव बीमार थे। अच्युत जी तथा राव साहब पटवर्धन के निमत्रण पर आराम करने अहमदनगर आए। मधु लिमये कुछ साथियो के साथ वहाँ गए। दूसरी बार नजदीकी साहचर्य का मौका मिला।

सन् 1942 का प्रसिद्ध काग्रेस अधिवेशन बबई मे हुआ। मधु लिमये उसके लिए रवाना हुए। साने गुरुजी अगस्त को छूटने वाले थे। उनको पत्र लिखा कि कुछ भी हो सकता है, गिरफ्तारी हो सकती है। आप सीधे बम्बई चले आएँ।

जब 9 अगस्त को बडे नेताओ की गिरफ्तारी हो गई तो मधु लिमये अन्य साथियो के साथ भूमिगत हो गए और अच्युत जी क मार्गदर्शन मे एक कार्य योजना को लागू करने का सगठित प्रयास किया। कचहरियो, थानो पर हमले किये गए। रेल पटरियाँ भी उखाडी गई ।

पेशावर एक्सप्रेस की दुर्घटना का भयानक दृश्य देखा। मन उदास हुआ, हृदय म ग्लानि हुई। फिर पजाब मेल की दुर्घटना हुई। अच्युत जी को पत्र लिखा और उन्ही के आदेश पर रेल पटरी उखाडने का कार्यक्रम छोड दिया गया।

भूमिगत दिनो मे बबई से 'क्रातिकारी' नामक भूमिगत पत्र निकलना शुरू हुआ। सपादक अच्युत जी थे, परन्तु अधिकतर काम मधु जी को ही करना पडता था। उन्ही दिनो जयप्रकाश जी से भी मुलाकात होती थी।

सितम्बर 1943 मे एसएम तथा मधु लिमये पकडे हुए। मई 1945 मे जेल से छूटे इसके बाद बबई और महाराष्ट्र मे काम बढता गया। सचालन के लिए अच्युत जी ने तीन व्यक्तियो की एक कमेटी बना दी। उसमे नेवालकर, पी स भागवत तथा मधु लिमये थे। राष्ट्र सेवादल के लिए भी काम किया।

सन् 1947 ई0 मे जयप्रकाश नारायण, अशाक मेहता, एस एम जोशी की पहल पर एटवर्प मे होनेवाले सोशलिस्ट इटरनेशनल के सम्मेलन म भारत के सोशलिस्ट आदोलन का प्रतिनिधित्व दर्शक प्रतिनिधि के रूप मे किया। और एक अच्छी रपट पेश की।

मार्च 1948 ई0 मे समाजवादी पार्टी के छठे राष्ट्रीय सम्मेलन (मासिक) मे राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य चुने गए और ससदीय उपसमिति के अध्यक्ष डॉ. राममनोहर लोहिया और सचिव मधु लिमये मनोनीत हुए।

सन् 1949 ई0 मे पटना सम्मेलन के अवसर पर सोशलिस्ट पार्टी को खुली पार्टी बनाने के लिए जो नया सविधान पारित किया गया, उसे पेश किया। और पार्टी के सयुक्त मत्री निर्वाचित हुए डॉ लोहिया की मे विदेश समिति बनी उसके सदस्य बनाए गए

सन् 1951 ई0 के मद्रास सम्मेलन मे पुन सयुक्त मत्री निर्वाचित हुए। 1951 मे 'कम्युनिस्ट पार्टी फैक्ट एड फिक्शन' पुस्तक की रचना की जिसका कई भारतीय भाषाओ मे अनुवाद हुआ। 1952 ई0 के पचमढी सम्मेलन मे भी संयुक्त मत्री निर्वाचित हुए और विदेश विभाग के सदस्य बने। सन् 1953 ई0 के प्रारम्भ मे एशियाई सोशलिस्ट ब्यूरो के सयुक्त मत्री के रूप मे जेपी की पहल पर कार्य आरम्भ किया।

सन् 1953 ई0 मे प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के बैतूल के विशेष सम्मेलन के अवसर पर अशोक मेहता के "पिछडी अर्थव्यवस्था की अनिवार्यताएँ तथा सहमति के क्षेत्र" के विचार के जबाब मे रगून से एक लम्बा पत्र भेजा।

1953 ई0 में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के प्रथम सम्मेलन मे सयुक्त मत्री निर्वाचित हुए।

1954 ई0 मे पार्टी के अदरूनी विवाद के प्रमुख व्यक्तियो मे एक रहे।

दिसम्बर 1954 के नागपुर विशेष सम्मेलन के बाद भी पार्टी मे बिखराव जारी रहा और 1955 में पार्टी से निलबित और निष्कासित हुए।

इसी साल 15 अगस्त को गोवा मुक्ति आदोलन मे शिरकत की और 12 वर्ष के कठोर कारावास की सजा मिली।

1957 मे गोवा जेल से मुक्त हुए। सयुक्त महाराष्ट्र समिति से अलग हटकर पार्टी के निर्देश पर चुनाव लडे और बुरी तरह पराजित हुए। बबई के मजदूरो को सगठित करने मे योगदान किया।

1958 मे सोशलिस्ट पार्टी के अध्यक्ष बने।

1964 मे सोशलिस्ट पार्टी का गठन हुआ और बिहार के मुगेर संसदीय क्षेत्र से उपचुनाव मे निर्वाचित हुए। 1964–67 की अवधि मे संसद में कई घोटालो का पर्दाफाश किया। जयति शिपिग कपनी आदि के घोटाले की व्यापक चर्चा हुई।

1967 में ससद के लिए पुन निर्वाचित हुए और लोकसभा मे ससोपा ग्रुप के नेता बने। फिर ससदीय बोर्ड के अध्यक्ष बने। 1967–71 के बीच लोकसभा मे प्रखर सासद के रूप मे ख्याति मिली।

1971 के ससदीय चुनाव में पराजित हुए। पुन प्रसोपा और ससोपा का विलय हुआ और सोपा का गठन हुआ।

1973 मे बिहार के बॉका क्षेत्र से उपचुनाव मे निर्वाचित हुए।

1974–75 में जेपी के नेतृत्व में चले नवनिर्माण आदोलन (गुजरात) तथा (बिहार) को पूर्ण समर्थन दिया और सक्रिय भागीदारी की

1973 से कारगर राजनैतिक विकल्प की खोज के लिए प्रयत्नशील रहे।

1975 मे आपातकाल की घोषणा हुई और गिरफ्तार हुए। लोकसभा की अवधि पूरा होने पर जेल से ही सदस्यता से इस्तीफा दिया।

7 फरवरी 1977 को जेल से रिहा हुए और 1977 मे लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए (बाका ससदीय क्षेत्र से)। जनता पार्टी के महामत्री बने।

1978 जनता पार्टी मे मिलने वाले सभी सगठनो के विभिन्न मोर्चो के विलय की पेशकश की और प्रयत्न किया। इसी साल अमेरिका की यात्रा की। पार्टी मे सकट उत्पन्न होने के कारण यात्रा से जल्द वापस आये।

1979 मे मोरारजी सरकार द्वारा पेश दलबदल विधेयक का सैद्धान्तिक विरोध किया। दोहरी सदस्यता के सवाल पर विवाद हुआ। पार्टी मे टूट हुई। मोरारजी भाई का इस्तीफा हुआ। चौधरी चरणसिह को प्रधानमत्री बनवाने मे महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। जनता पार्टी (स) और बाद मे लोकदल मे महामंत्री बने।

1980 मे बाका ससदीय क्षेत्र से लोकसभा के चुनाव मे पराजित हुए।

1981 मे हृदय शल्य चिकित्सा के लिए अमेरिका गए और बिना शल्य क्रिया के वापस आए। एक ऑख की रोशनी चली गई। धीरे–धीरे सक्रिय राजनीति से अलग हटते गए।

1982–1994 के बीच विभिन्न पुस्तको की रचना एव पहले की रचनाओ के सग्रहों का प्रकाशन हुआ लगभग तीन दर्जन किताबे लिखी।

8 जनवरी 1995 को राममनोहर लोहिया अस्पताल मे देहावसान हुआ।

Books written by Madhu Limaye

Politics after Freedom,
Atma Ram & Sons
Kashmiri Gate, New Delhi - 110 006

Prime Movers (Role of the Individual in History),
Radient Publishers,
E-155 Kalka Ji, New Delhi - 110 019

Problems of India's Foreign Policy,
Atma Ram & Sons, Kashmiri Gate,
New Delhi - 110 006

Birth of Non-Congressism,
B R Publishing Corporation
29 / 9, Nangia Park, Shakti Nagar, Delhi - 110 007

Janta Party Experiment (An Insider's Account of Opposition Politics 1975-77-1977-80-Two Volumes)
B R Publishes,
29 / 9, Nangia Park, Shakti Nagar, Delhi - 110 097

Decline of a Political System (Indian Politics at Crossroads),
Wheeler Publishing House,
L B Shastri Marg, Allahabad

Limits of Authority (Political Controversies and Religious Conflicts in Contemporary India),
Shipra Publications,
115 A, Vikas Marg, Shakarpur, Delhi - 110 092

Musings on Current Problems and Past Events;
B R Publishing Corporation,
29 / 9, Nangia Park, Shakti Nagar, Delhi - 110 007

Indian Polity in Transition;
Radiant Publishers
E 155 Kalkaj
New Delh 110 019

Socialist Communist Interaction in India,
Ajanta Publications,
Jawahar Nagar, Delhi-110 007

Indian National Movement (Its Ideological and Socio-Economic Dimensions),
Radiant Publishers,
E-155, Kalkaji, New Delhi - 110 019

Religious Bigotry (A Threat to Ordered State),
Ajanta Publications,
P Box-2192, Malha Ganj, Delhi - 110 007

The Age of Hope (Phases of the Socialist Movement),
Atma Ram and Sons,
Kashmiri Gate, Delhi - 110 006

Contemporary Indian Politics
Radiant Publishers
E-155, Kalkaji, New Delhi - 110 019

Mahatma Gandhi and Jawahar Lal Nehru
A Historic Partnership - 4 Volumes - I (1916-1931), II (1932-1942)
B R Publishing Corporation - III (1942-1946)
29 / 9, Nangia Park, New Delhi - IV (1947-1948)

Cabinet Government in India,
Radiant Publishers,
E-155, Kalkaji New Delhi - 110 019

August Struggle.
An Appraisal of Quit India Movement,
P J Santoskar
For Sindhu Publications Ltd,
101, Sidh Ratnakar, P Bolu Marg,
Prabhadevi, Mumbai - 400 025

Parliament Judiciary and Parties,
Ajanta Publications,
P Box - 2192, Malha Ganj, Delhi - 110 007

Last Writings;
B R Publishing Corporation,
A-6 Nimri Community Centre
Ashok Vihar Phase IV Near Bharat Nagar
Delhi 110 052

मधु लिमये द्वारा लिखित पुस्तके

डॉ अम्बेडकर एक चिन्तन

प्रकाशक सरदार वल्लभभाई पटेल एज्युकेशनल सोसायटी, नई दिल्ली।

सक्रमणकालीन राजनीति ,

प्रकाशक मुख्तार अनीस
राममनोहर लोहिया स्मारक समिति, 12/6, डालीबाग, लखनऊ

समस्याएँ और विकल्प ,

प्रकाशक राजकुमार जैन,
समता पुस्तक माला
ए–45, फ्रैन्ड्स कालोनी, नई दिल्ली– 110 014

भारतीय राजनीति का सकट ,

प्रकाशक विकास पेपरबैक्स,
मेन रोड, 9/221 गॉधी नगर, दिल्ली–110 031

भारतीय राजनीति के अंतर्विरोध ,

प्रकाशक सारांश प्रकाशन प्रा लि.,
142–ई, पॉकेट–4, मयूर विहार–1, दिल्ली–110 091

भारतीय राजनीति का नया मोड ,

समता पुस्तक माला, ए–45, फ्रैन्ड्स कालोनी, नयी दिल्ली

आत्मकथा ,

भारतीय प्रकाशन संस्थान
दरियागज, असारी रोड,, नयी दिल्ली

मधु लिमये पर पुस्तकें

मधु जी

उदयन शर्मा
लोहिया ट्रस्ट 1 मार्ग 226 001

रचना एवं संघर्ष के प्रतीक – एस. एम. जोशी

रचना एव सघर्ष के प्रतीक, सादगी एव त्याग भावना की मिसाल, सयुक्त महाराष्ट्र समिति के आन्दोलन के कारण महाराष्ट्र के अत्यन्त लोकप्रिय नेता, ससोपा के तीन बार राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे स्वर्गीय श्रीधर महादेव जोशी जिन्हे स्नेहवश समाजवादी आन्दोलन मे उनसे कम आयु के लोग उन्हे 'अन्ना' कहते थे का जन्म 12 नवम्बर 1904 को जुन्नर कस्बे म हुआ था। जुन्नर पुणे नगर के समीप ही आबाद है। वास्तव मे जुन्नर कसबा एस एम का पुश्तैनी स्थान नही था। वह था गोलप– रत्नागिरी से 6 मील दूर। जुन्नर मे एस एम के पिता नाजिर थे। इस कारण परिवार वही रहने लगा। एस एम के पिता की 10 दिसम्बर 1915 को मृत्यु हो गयी। परिवार पर वज्रघात हो गया। परिवार वैसे भी खुशहाल नही था। उनकी मृत्यु के बाद गरीबी ने घर मे कदम रखे थे। परिवार बडा था। इसलिए एस. एम को तथा परिवार के अन्य सदस्यो को घोर आर्थिक तगी का सामना करना पडा। एस एम लिखते है–

"पिता जी को पेशन मिलती थी पच्चीस रुपये। इसके अलावा जुन्नर मे एक ट्रस्ट के व्यवस्थापक के रूप मे वह काम करते थे। जिसके लिए ट्रस्ट से प्रतिमाह पच्चीस रुपये मिलते थे। पुणे मे दादा का खर्च, गोलप के घर का खर्च, जुन्नर मे हम लोगों का खर्च–सब इन्ही पचास रुपये मे होता था। घर मे कमाने वाला कोई नहीं था। सारा बोझ एक ही व्यक्ति पर था। पिताजी टाइफाएड से बीमार हुए और उसी से अनका अंत हो गया। इस प्रकार हमारा परिवार दरिदता की खाई मे जा गिरा।"[1]

पिताजी की मृत्यु से दुखी जोशी जी आगे लिखते है " गृहस्थी का भार संभालने वाले हमारे पिताजी जब एकाएक चल बसे तब हमारा घोसला इस बुरी तरह ध्वस्त हो गया कि तिनका–तिनका जुटाकर उसे फिर से तैयार करने के लिए हम सबको बहुत ही कठिनाईयो मे से गुजरना पडा"।[2]

जुन्नर के छूटने का भारी बोझ लिए दुखी एस एम के अनुसार–

पिताजी की मृत्यु की दाहक स्मृति और जुन्नर का दशहरा, उस दिन वहॉ होने वाली घुडदौड और बच्चो के लिए खरीदी जाने वाली टोपियॉ श्रावण सोमवार के दिन

यादों की जुगाली–एस एम जोशी– पृष्ठ–10

जुन्नर में होने वाली कुश्ती–दगल आदि की यादे लेकर हम जुन्नार रा फिर बम्बई के रास्ते गोलप को रवाना हुए। इस दरिद्रता मे परिवार को उबारने के लिए बडे भाई ने नौकरी प्रारम्भ की। उन्हे बीस रुपय महीना मिलता था। आठ रु0 मे वह जीवन व्यतीत करते तथा शेष बारह सब परिवार को मनी आर्डर कर देते। इस घोर आर्थिक तगी म घर–परिवार रह रहा था।"[3]

जुन्नर मे पिता के जीवन मे ही एस एम ने चौथी कक्षा पास की थी तथा पॉचवे मे दाखिला लिया था। एस एम के बडे भाई तो नौकरी के कारण पुण म थे परिवार की देखभाल एक अजनबी करने लगा जिसे एसेम 'पूर्शा मामा' कहत थे। उसने इस परिवार के लिए बहुत कष्ट झेले तथा दरिद्रता से उबारने मे सहायता की।

एस एम के चचेरे भाई तात्या ने 1916 मे उन्हे नागपुर मे पाचवी कक्षा म दाखिला करवा दिया। गरीब ब्राह्मणो को सप्ताह मे एक–एक दिन अलग–अलग घरो मे खाना खिलाकर पुण्य कमाया जाता था। इसे महाराष्ट्र मे "वर" कहते है। इस प्रकार कुछ दिन एस एम का गुजारा हुआ। उनके कुछ रिश्तेदारो ने सहायता की। उन्हे पुणे ले गए जहॉ उनकी बी ए तक की फीस माफ हो गयी। उन्होने अत्यन्त परिश्रम से आगे की पढाई प्रारम्भ की। जोशी जी का कथन है कि "फर्ग्यूसन कालेज से मेरे बी ए होने तक बिना फीस लिए ही मेरी शिक्षा, लोकमान्य तिलक द्वारा स्थापित न्यू इग्लिश स्कूल मे हुई।"[4]

1918 मे रमणबाग मे स्थापित न्यू इगलिश स्कूल मे एस एम जोशी को वह तमाम मित्र मिले जो आगे चलकर महाराष्ट्र के और देश के ख्याति प्राप्त नेता बने जिन्हे देश मे आदर भाव से देखा जाता है। सर्वश्री वी एस तारकुडे नाना साहब र क खादिलकर ग भ निरतर, गोपीनाथ तलवलकर, उमाराणीका, पुरदरे नासिक के राव साहब ओक, शिखर–यह सभी एस एम जोशी के सहपाठी तथा स्कूल के मित्र थे। न्यू इगलिश स्कूल पुणे मे जोशी जी अपनी कक्षा मे सदा प्रथम स्थान पाते। वह अपने स्कूल के अत्यन्त मेधावी छात्र थे।

रमणबाग के सामने ही गायकवाड बाडा था। एक बार पानी पीने के उद्देश्य से छात्र लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के घर गए जहॉ उनके दर्शन हुए। उनके स्नेहमय व्यवहार का छात्रो पर गहरा प्रभाव पडा। 1920 मे तिलक महाराज की मृत्यु के अवसर पर छात्र स्कूल में अनुपस्थित रहे जिसके कारण जोशी जी सहित छात्रों को बेत खाना पडा।

न्यू इगलिश स्कूल का वातावरण देशभक्ति-पूर्ण था। प्राय सभी कांग्रेस के समर्थक थे। स्कूल "नरम-गरम दलीय" मे बॅटा हुआ था। अध्यापक खादी पहनते थे। छात्र अक्सर ब्लैक बोर्ड पर देशभक्ति के नारे अथवा गाने लिख देते थे। किन्तु अध्यापक चाहते

---

3 यादो की जुगाली एस एम जोशी पृष्ठ– 0

4 यादों की जुगाली एस एम जोशी–पृष्ठ–9

थे कि देशभक्ति बहुत अधिक उजागर न होने पाये। यदि छात्र सीमा पार कर जा‹ उन्हे दड मिलता। वह सभी छात्र जिनका ऊपर उल्लेख किया गया है कट्टर देशभक्त थे। उस समय तक पुणे मे राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ की शाखाये लगने लगी थी। किन्तु सयोग से गाधी जी का प्रभाव तथा यूसुफ मेहर अली एव आत्माराम राव जी से इनकी भेट हो गयी। इन दोनो का इन पर गहरा प्रभाव पडा। इस प्रकार एसेम काग्रेस की धारा मे आ गए ओर हिन्दुत्ववादी होने से बच गए।

1918 से 1928 तक एक दशक की कालावधि मे जब जोशी जी ने बी ए पास किया उन पर देश की सामाजिक, राजनीतिक एव आर्थिक परिस्थितियो का प्रभाव पडता रहा। 1919–20 के मध्य लोकमान्य तिलक का इगलैड जाना, रौलट बिल का पास होना जलियॉवाला बाग काड की गूज, महात्मा गाधी द्वारा प्रारम्भ किया गया सत्याग्रह, उनकी भूख हडताल, यह सब ऐसी घटनाये थी जिनका एसेम के किशोर मन पर गहरा प्रभाव पड रहा था। वे "लोक सग्रह" नामक लोकमान्य तिलक का समाचार पत्र पढते थे। 1919 मे कुछ साम्प्रदायिक लोगो ने स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या कर दी। इससे साम्प्रदायिकता को बहुत बल मिला। किन्तु इसी दौरान मुम्बई मे यूथ लीग ' की स्थापना हुई। 1927 मे यूथ लीग का सम्मेलन हुआ जिसके सचिव यूसुफ मेहर अली और आत्माराम राव जी सूचना और प्रचार सचिव थे। जोशी जी यूथ लीग मे ओर विशेषकर यूसुफ मेहर अली के व्यक्तित्व से प्रभावित हुए और इस सस्था के सदस्य बन गए। इसी दौरान उनकी पडित नेहरू से भेट हुई।

'यूसुफ मेहर अली ने युवक परिषद की अध्यक्षता के लिए पडित नेहरू को बुलाया था। वे **काका साहब गाडगिल** के घर पर ठहरे थे। उनके भाषण का एस एम पर बहुत प्रभाव पडा।' वे लिखते है "उनके विचार हमारे विचारो से मिलते–जुलते थे। पडित नेहरू के आने पर उनसे परिचय के लिए हम युवक कतार बॉधकर खडे हो गए। एक के बाद एक–एक कर परिचय कराते हुए जब गाडगिल मेरे पास आये तो बोले, दिस इज एस एम जोशी। ही वान्ट्स टू बी जवाहरलाल नेहरू आफ पूना।" नेहरू जी हॅसकर बोले, "व्हाई सच ए लो एम्बीशन (इतनी छोटी महत्वाकाक्षा क्यों ?) और यह कहते हुए वह आगे बढ गए।"[5]

1928 मे देश मे हो रही घटनाओ का प्रभाव पुणे के युवा–छात्रो पर पड रहा था। छात्र गाधी जी का 'यग इण्डिया 'केसरी' आदि समाचार पत्र पढते थे। एसेम अर्थशास्त्र के साथ ही साथ राजनीति मे भी रुचि ले रहे थे।

पुणे एक ब्राह्मण बाहुल्य नगर था। ब्राह्मण एव गैर ब्राह्मण के मध्य मतभेद अपनी पराकाष्ठा पर था। गैर ब्राह्मणो को नगरपालिका के हौज मे ब्राह्मण पानी नही लेने देते थे। महात्मा फुले ने अपना हौज गैर ब्राह्मणो के लिए खोल दिया था बाद मे महात्मा फुले के विरुद्ध अत्यन्त अपमानजनक भाषा का प्रयोग किया गया। सेनापति बापट ने पुणे जिले के सम्पूर्ण क्षेत्र का सघन दौरा किया और जनचेतना उत्पन्न की।

---

5 यादों की जुगाली–एस एम जोशी

सक्रिय राजनीति में प्रवेश – प्रथम जेल यात्रा

1928 में बी ए पास होने तक एस एम अपने बडे भाई पर आश्रित थे। किन्तु अब सक्रिय राजनीति मे प्रवेश करने की स्थिति मे उन्हे अपनी आवश्यकताओ को स्वय पूर्ण करना था। जोशी जी यूथ लीग के सचिव थे। उस समय तक पुणे के राजनीतिक लोगो से उनका परिचय हो गया था। वे 'केसरी' साप्ताहिक के तात्या साहब केलकर से मिले। उन्होने समाचार पत्र के सवाददाता के रूप मे 30 रु0 महीने का परितोषिक देना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार उन्हे आर्थिक सकट से मुक्ति मिल गयी। एस एम ने अस्पृश्यता के विरुद्ध गाधीजी के निर्देश पर आन्दोलन प्रारम्भ किया। नमक सत्याग्रह मे पहली बार शकर राव देव जी के साथ गिरफ्तार किए गए। इनके साथ नानाजी गोरे बापू मेहेन्दले आदि कुल 16–17 युवक थे। नमक सत्याग्रह मे जोशी जी को 6 माह की साधारण कैद की सजा दी गयी।

ठाणे जेल के अन्दर जाते समय एस एम हतोत्साहित हो गए। उसका कारण था इससे पूर्व काग्रेसी सत्याग्रहियो को दी गयी अमानुषिक यातना। शकरराव देव तथा अन्य नेताओ के पैरो को टिकटी मे बाधकर, शरीर पर नमक लगाकर कोडे मारे जाते थे। इस अमानुषिक यातना की गाधी जी ने तीव्र शब्दो मे निन्दा की थी।

जेलर ने जोशी जी तथा अन्य बन्दियो को "काला पानी" वार्ड मे रवाना किया। शकरराव देव और काका साहब गाडगिल ने जो दरवाजे पर खडे थे बन्दियो का स्वागत किया। इससे इन नवागन्तुको को सहारा मिला। जोशी जी को "बी" क्लास मिला जिससे यह लाभ हुआ कि उनका परिचय प्राय सभी नेताओ से हो गया। "बी" क्लास मे काका साहब गाडगिल, बाला साहब खेर, बान्द्रेकर, स्वामी आनन्द, शकरराव देव, बाबू राव मेहता, चितामणिक जोशी, काणे, आचार्य भागवत, आबिद अली जाफर भाई, वीर जी भाई घाटे, महाडके, तुलजाराम सेठ, नाना साहब रामेल आदि लोग थे। मराठे और घाटे कम्युनिस्ट हो गए तथा बापू साहब जोशी हिन्दू महसभा मे चले गए। इन सब बन्दियो मे जो महाराष्ट्र के लोक जीवन के प्रसिद्ध नेता बने, एस एम से ऐसा सम्बन्ध बना जो बाद तक कायम रहा। एस एम को दरी बुनने का काम दिया गया। प्रतिदिन 60 फुट दरी बिननी पडती थी। यही उन्होने हिन्दी और उर्दू भाषा सीखी थी। जेल से छूटने के बाद जोशी जी ने एल–एल बी करने का सकल्प लिया।

23 मार्च 1931 को भगत सिह को फांसी दी गयी। उसके एक सप्ताह बाद कराची काग्रेस हुई। उसकी उपलब्धि यह थी कि जमीन्दारी उन्मूलन का प्रस्ताव पारित किया गया

वर्ग ने उनका कार्यकर्त्ताओ मे घुल मिल जाने का स्वाभाव पसन्द किया। उन्होंने पुणे मे रुक कर ऐतिहासिक इमारतो को देखा। मुम्बई मे काग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक होने वाली थी। इसलिए सुरक्षा को दृष्टि मे रखकर काग्रेस कार्यकत्ताओ को गिरफ्तार किया जा रहा था। एस एम एव नाना जी गोरे आदि को दो महीने के लिए जेल मे बन्द कर दिया गया। 23 मार्च को शहीद भगत सिंह की शहादत का पहला वर्ष था। जोशी जी ने तथा अन्य काग्रेस के कार्यकर्त्ताओ ने सत्याग्रह किया। जोशी जी को गिरफ्तार करके यर्वदा जेल भेज दिया गया। जेल भर जाने के कारण कैदियो को कैम्प जेल मे स्थानान्तरित कर दिया गया था। काग्रेसी जेल बन्दियो ने "ए" अथवा "बी" श्रेणी के स्थान पर "सी" श्रेणी ही ली थी। ऐसा इसलिए किया था जिससे कि कार्यकर्त्ताओं के मध्य सौहार्द बना रहे। उस समय गाधी जी भी यर्वदा जेल मे ही बन्द थे। उन्हे गाधी जी से वार्ता करने का मौका मिल गया।

एस.एम जोशी ने कहा, "बापू जमीन्दारी प्रथा आप केसे समाप्त करेगे। गाधी जी ने कहा, 'क्यो? कोई दिक्कत नही है। मान लो कल मैं भारत गणतत्र का राष्ट्रपति हो जाता हूँ। मैं एक आदेश जारी कर दूँगा, जो इस देश का कानून होगा। वह कानून जो जमीदारो के कब्जे मे जमीन है उसे उनसे ले लेगा। जोशी जी के प्रश्न को गाधी जी के समक्ष और स्पष्ट किया गया– "मान लीजिए जमीदार भूमि पर कब्जा न दे तो जबरदस्ती और हिसा का सहारा लेगे।"

गाधी जी ने स्पष्ट किया, "स्वराज पाने के लिए हिसा करने की आवश्यकता नही। पर इसका यह अर्थ नही कि स्वराज्य पाने के बाद हम जो कानून बनायेगे तो उसको बाधा पहुँचाने वाले लोगो के लिए हिसा का सहारा नही लेगे। इस पर गाधी जी का उत्तर था, "अपनी आज्ञा मनवाने के लिए ताकत काम मे लायी जायेगी। वर्ना राज्य है ही किसलिए।" जोशी और गाधी जी के मध्य हुई यह वार्ता जोशी जी को भलीभॉति याद थी। गाधी जी का भूख हड़ताल के कारण यर्वदा जेल से समझौता हुआ। गाधी जी रिहा किए गए। जोशी जी को यर्वदा जेल मे बीजापुर जेल भेजा गया। उनकी दो वर्ष की जेल के आठ माह अभी बाकी थे। यहीं उनकी भेट एस के पाटील से हुई जिन्हे काग्रेसी जेल मे "दादा" नाम से पुकारते थे क्योकि वह स्वछन्द थे, वह जेल के कानून को नही मानते थे। बीजापुर जेल मे जोशी जी का वजन भी बढ गया था तथा स्वतत्रता भी अधिक थी। कुछ दिनो के बाद श्री एम एन राय भी वहॉ आ गये।

दो साल की सजा मे कुछ छूट पाकर अक्टूबर 1933 मे एस एम जेल से छूटे। स्थिति बहुत खराब थी। अग्रेजो का [illegible] जारी था। इसका एहसास एस एम को जेल से छूटने के बाद हुआ

ने सोची। किन्तु ट्यूशन कौन सा छात्र पढता ? हॉ ट्यूशन के नाम पर आठ–दस सी आई डी के अफसर जरूर आने लगे। यह पता लगने पर ट्यूशन बन्द कर दी गयी। किन्तु काग्रेस के कुछ साथियो ने "पूना न्यू स्कूल आफ कामर्स" के नाम से एक शिक्षा केन्द्र खोला। शुरू मे एस एम जी शरीक हुए तथा दरिद्रता दूर हुई।

1934 मे काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की सयोजन समिति की रपट पर विचार करने के लिए वाराणसी मे श्रीप्रकाश जी के आवास पर एक बैठक बुलायी गयी। श्री अच्युत पटवर्धन के साथ जोशी जी उसमे शरीक हुए थे। यह उनकी पहली उत्तर भारत की यात्रा थी। यहीं उनकी भेट आचार्य नरेन्द्रदेव, जयप्रकाश नारायण तथा गगाशरण सिह से हुई थी। स्वर्गीय अच्युत पटवर्धन और एस एम महाराष्ट्र काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सचिव नियुक्त किए गए। बाद मे इसी पद पर तारकुडे की भी नियुक्ति हुई।

उसी दौरान जेल से खबर मिली कि श्री एम एन राय बहुत बीमार है। उन्हे 6 वर्ष की सजा हुई थी। उनकी बीमारी का समाचार सुनकर मुम्बई मे एक विरोध सभा का आयोजन किया गया। एस एम ने इस सभा मे हिन्दी मे जोरदार भाषण दिया। उन्हे पुणे मे गिरफ्तार किया गया तथा दो वर्ष की सश्रम की सजा दी गयी। यह दड बहुत कष्टप्रद था। उन्हे साबरमती जेल मे रखा गया। दो साल मे कुछ महीने कम रह गए तब उन्हे जेल से मुक्त किया गया। यह तिथि 1 अगस्त 1936 की थी।

ताराबाई पेडसे से प्रेम विवाह और कारावास

श्री एस एम जोशी का विवाह 19 अगस्त 1939 को ताराबाई पेडसे से हुआ। उस समय एस एम की आयु 35 वर्ष हो गयी थी। उन्हे अपने प्रेम विवाह मे कोई रस नही दिखायी पडता था। फिर भी, उन्हें विवाह की आवश्यकता इसलिए हुई कि वह भी ताराबाई पेडसे से प्रेम करने लगे थे ऐसा भी नही कहा जा सकता। ताराबाई उन पर फिदा थी। जेल मे भी दोनो के मध्य प्रेम–पत्रो का आदान–प्रदान होता था। तारा पेडसे के परिवार के लोग खाते–पीते थे। उन्हे चिता थी कि इस यायावर से यदि शादी हो गयी तो ताराबाई का क्या होगा। उस समय ताराबाई स्कूल मे अध्यापिका थी। विवाह हुआ और अत्यन्त सफल रहा। ताराबाई एस एम के दुख दर्द मे शामिल थी और पूरा सहयोग करती थी। एस एम भी ऐसी त्यागी, सहृदय, शिक्षित एव त्यागमय पत्नी पाकर धन्य थे। तारा पेडसे के सम्बन्ध मे मधु लिमये ने विस्तार में लिखा है वे लिखते हैं–

एस एम जोशी के यहॉ मेरा आना–जाना बढने के कारण एक व्यक्ति से मेरा परिचय होना स्वाभाविक था और वह व्यक्ति था, सुश्री तारा पेडसे। एस एम अविवाहित हैं यह मै जानता था लेकिन उनकी कोई प्रियतमा है, यह मै पहली मुलाकात के समय नही जानता था। शुरू के कुछ ही दिनो बाद एक दिन शाम को हम गपशप कर रहे थे इतने मे एक लबी छरहरी सॉवली सलोनी नौ गज साडी में लिपटी और चेहरे पर बुद्धि

की आभा लिए एक युवती वहाँ आई। "यह तारा पेडसे है, भावे स्कूल मे शिक्षिका हैं। इस रूप मे मेरी उनके साथ पहचान कराई गई। मेरे साथ अरविंद भी था। थोडी देर रुकने के बाद मैंने उसे चलने के लिए इशारा किया। शायद एस एम जी का ताराबाई के साथ कुछ काम होगा, यही सोचकर मैं वहाँ से बाहर आ गया। बाहर आते ही मैने अरविंद से पूछा, "ये तारा पेडसे कोन है ?" अरविंद के पास पुणे के राजनीतिक नेताओ और कार्यकर्त्ताओ से सबधित एक छोटा–सा जीवनकोश था। उसने मुझे बताया, "ताराबाई यानी एस एम जी की प्रियतमा। व उनके यहाँ आती रहती हैं।" इससे ज्यादा वह जानता भी नही था। बाद में एस एम तारा पेडसे के बारे मे मुझसे खुले दिल से बाते करते थे और ताराबाई भी एस एम जी के बारे मे मुझे अपना दिल खोलकर बताती थी। मेरी जानकारी के अनुसार ताराबाई एस. एम. जी को बहुत पहले से जानती थी। वर्ष 1932 के आसपास उनका एस एम के पास आना–जाना शुरू हुआ होगा। वर्ष 1934 मे दो साल की सजा पर एस एम जेल गए। जेल के दौरान भी दोनो के बीच पत्राचार चलता रहा। ताराबाई प्रेमपत्र लिखा करती थी। एस एम खुले आम अपने प्यार का इजहार नही करते थे लेकिन उन्हे भी मन–ही–मन मे अच्छा लगता होगा, यह मेरा अनुमान है। अपने साथ ताराबाई की जिंदगी जुड जाने से उसके हिस्से सिर्फ दु ख आएगा, ऐसा उनको लगता था। वे कहते मै अकिंचन हूँ। मेरी जिदगी ऊबडखाबड रास्तो से होकर गुजर रही है और मुझसे विवाह करने के पश्चात् तुम्हारे हिस्से मे भी सिर्फ दु ख ही आएगा। मैंने अपनी राहे तय कर ली है। अत तुम मेरा ख्याल छोड दो।' एस एम. ताराबाई को यही बात हरदम समझाते थे। दिल से न सही लेकिन सतही तौर पर वे यही कहते थे। मजाक मे वे मुझसे कहते "शायद इसने एक ही बार सही, आवेश से परिपूर्ण मेरा भाषण गैस की बत्ती की रोशनी मे सुना होगा। तभी से मुझ पर यह लट्टू हो गई होगी और इसीलिए सत्य जानने से वह इन्कार कर रही है।"

"सुश्री तारा पेडसे, दक्षकन्या, सती का आधुनिक अवतार थी, अत उन्होंने एस.एम जी की बातो पर ध्यान नही दिया, न ही उनका उन पर कोई विशेष परिणाम हुआ। एस एम की 'ना' को उन्होने कभी अतिम नही माना और न ही उनकी एकनिष्ठा मे इचमात्र फर्क आया। नियमित रूप से वह एस एम के यहाँ आया करती थी। स्वय एस एम भी अव्यवस्थित नही थे। उनका कमरा व्यवस्थित रूप से सजा होता था, जिसको कभी–कभी ताराबाई भी देखा करती थी। परिणामस्वरूप वह कमरा सुव्यवस्था का नमूना बन जाता था। ताराबाई के साथ मेरी दोस्ती उनके प्रथम परिचय से ही हुई। अपने दिल की बात वह मुझसे कहती थी। कभी–कभी अँधेरा होने पर मैं उन्हे घर तक पहुँचाने का काम भी करता था। उनके घर में संघीय माहोल था। बडे भाईसाहब पुलिस विभाग मे थे और छोटे भाईसाहब राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ के कठोर अनुगामी थे। घर मे तारा का यह समाजवादी 'लव अफेयर' विशेष पसद नही किया जाता था। एस ए' के बारे मे उनकी राय बुरी नही थी। वजह शायद यह थी, एस एम की माली हालत अच्छी नही थी। उन्हे लगता था, जिस व्यक्ति की जिंदगी मे किसी भी बात के बारे मे निश्चिंतता नही है जिसकी माली हालत ठीक नहीं है उससे प्रेम क्या करना ?

ताराबाई मुझसे बहुत स्नेह करती थी। इतनी छोटी उम्र मे यह इटर मे पढ रहा है। राजनीति की इसकी समझ अच्छी है, काफी अध्ययन किया है, यह इस स्नेहदृष्टि की वजह होगी। शायद एस एम मुझे ज्यादा चाहते थे, यह भी इस स्नेहदृष्टि की वजह हो सकती थी, लेकिन ताराबाई के मन मे मेरे बारे मे अपनत्व की भावना थी। स्कूल का अपना काम निपटाकर जब वह आती थी तब काफी थकी हुई होती थी, लेकिन हम लोगो के साथ गपशप करने में उनकी थकान मिट जाती थी। एस एम जी के आने के बाद उनमे बातचीत करने के पश्चात् तो वह थकान पता नही कहाँ गुम हो जाती थी। श्री गोपीनाथ तलवलकर, एस एम जी के जानी दोस्त थे, इसलिए हमारे साथ भी उनकी पहचान हो गई थी। वे आनद नामक बच्चो की पत्रिका के सपादक थे। वे साहित्यिक थे सवेदनशील और भावुक थे। उनका एक उपन्यास एस एम तारा पेडसे की जिंदगी पर आधारित था। उपन्यास की नायिका के नाम पर ही उन्होने अपने उपन्यास का शीर्षक छाया रखा था। स्वय तारा जी की मराठी लेखन--शैली दिलचस्प और मनभावन थी। बीच--बीच मे वह लिखा करती थी। यदि उन्होने लगातार लिखा होता, जरा ज्यादा मेहनत की होती, तो शायद लेखिका के रूप मे उन्होने कब का नाम कमाया होता। लेकिन अपने अस्वास्थ्य तथा बच्चो और परिवार मे उलझने के बाद उनका उत्साह कम होता गया और उन्होंने लिखना छोड दिया।'[7]

मेरे राजनीति के क्षेत्र मे प्रवेश करने के बाद एक दिन मैं नानासाहेब गोरे जी के यहाँ 1940 के मई महीने मे पुणे के समीप विखाडी मे क्षेत्रीय किसान सभा के आयोजन मे गया। उस सभा मे भाग लेने के लिए केशव उर्फ बंडू गोरे एव मधु लिमये ने जोशी जी को आमत्रित किया था। जोशी जी ने सभा में किसानो की समस्याओं की चर्चा की। उन्होने युद्ध विरोधी भाषण नही दिया किन्तु पुलिस 8 जून को उन्हे गिरफ्तार करने पुणे आ गयी। उस समय एस. एम की स्थिति अत्यन्त चिताजनक थी। ताराबाई नवप्रसूत थी। बच्चा जिसका नाम अजय रखा गया था अभी 14 दिन का था। गिरफ्तारी की खबर पाकर ताराबाई की ऑखों में ऑसू बहने लगे। एस एम गिरफ्तार करके थाणे जेल ले जाये गए। बडू गोरे तथा माधव लिमये भी पकडे गए। तीनो को "भारत सुरक्षा कानून" के तहत गिरफ्तार किया गया। एक वर्ष की कारावास हुई और "बी" श्रेणी मिली। कुछ दिनो बाद उन्हे नासिक केन्द्रीय कारागार मे रखा गया। नासिक जेल मे एस एम को सुविधा थी। क्योंकि मच्छरो का प्रकोप नही था तथा जेल का हाता साफ सुथरा था।"

जोशी जी से पहले नासिक जेल में कम्युनिस्ट नेता कामरेड डागे, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के करणे आदि पहले से ही बन्द थे एस एम 23 मई को नासिक जेल में लाये गये

एस एम जेल से छूटे। मित्रो ने निवदन किया कि अब वह जल्दी जेल न जाये। क्योंकि पिछले एक दशक मे उनका अधिकाश समय जेल मे ही बीता था। एस एम स्वय जल्दी जेल नही जाना चाहते थ। उसका एक कारण तो यह था कि महात्मा गाधी अतिम युद्ध की तैयारी कर रहे थे। जयप्रकाश जी इस दौरान पुणे आये थे उन्होने भी एन जी गोरे से निर्णायक स्वतत्रता संग्राम की तैयार करने और उसमे सम्पूर्ण शक्ति झोक देने को कहा था। दूसरा कारण यह था कि एस एम का बच्चा अजय मात्र 14 माह का था। एस एम चाहते थे कि उसे पिता का भरपूर स्नेह प्राप्त हो जाये और वह उन्हे पहचानने लगे। इस जेल यात्रा के दौरान ताराबाई एव अजय को कितना कष्ट हुआ होगा इसकी कल्पना ही उन्हे दुखी कर देती थी। एस एम के मित्र शकर राव आगाशे ने चेक बुक पर हस्ताक्षर करके ताराबाई को दे दिये थ। और आवश्यकता के अनुरूप धन निकाल लेने को कहा था। जेल न जाने का तीसरा कारण था कि एस एम को राष्ट्र सेवा दल का प्रमुख चुना गया था। उसकी रचनात्मक गतिविधियो मे वह लग गए। हिन्दुत्ववादियो को राष्ट्रीय धारा से अलग करना अत्यावश्यक था। इन सभी परिस्थितियो से गुजरते हुए एस एम अभी सभले ही थे कि 1942 के अतिम निर्णायक स्वतन्त्रता सग्राम का समय आ गया।

बिखाडी सम्मेलन म एस एम के भाषण के पहले (जिसमे उन्हे एक वर्ष का कारावास हुआ था) 1940 की मार्च मे रायगढ मे काग्रेस का अधिवेशन हुआ था। उसमे बाबू राजेन्द्रप्रसाद के स्थान पर मौलाना आजाद काग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने थे। काग्रेस ने इस अधिवेशन मे प्रस्ताव पारित किया था कि काग्रेस को "पूर्ण स्वराज्य' के अतिरिक्त कुछ नही चाहिए। इसी प्रकार साम्प्रदायिक समस्या का समाधान सविधान सभा के बिना नही हो सकेगा। कांग्रेस हिन्दू और मुसलमानो को "एक कौम' मानती है और दोनो मे सौहार्दपूर्ण रिश्तो की कामना करती है।

रामगढ काग्रेस के तुरन्त बाद ही मुस्लिम लीग का सम्मेलन हुआ। उसने अपने राजनीतिक प्रस्ताव मे पहली बार "पाकिस्तान" शब्द का इस्तेमाल करते हुए "एक स्वतत्र एव सार्वभौम मुस्लिम राष्ट्र" की मॉग की। मुस्लिम लीग का कहना था कि यदि पूर्ण स्वराज्य प्राप्त होता है तो हिन्दुओ के लिए होगा। मुसलमानो को स्वराज्य उसके पहले एक राज्य देने की अग्रेजो को घोषणा करनी पडेगी। मुस्लिम लीग को भय था कि स्वराज्य के पश्चात स्वतत्र राष्ट्र मे हिन्दुओ का बहुमत होगा और तब वह मनमानी करेगे। इन विषम परिस्थितियो मे काग्रेस नेताओ की मनोदशा उन्हे विचलित करने वाली थी। अग्रेज मुस्लिम लीग की मार्फत काग्रेस पर शिकजा कस रहे थे। उधर सुभाष बाबू देश से फरार होकर बाहर चले गए यह घटना रोमाचक थी जी को गिरफ्तार कर देवली जेल में भेज दिया गया

पर जापानियो का कब्जा हो गया। 15 अप्रैल आते–आते कोलंबो सहित कई स्थानो पर गोलाबारी शुरू हुई। महात्मा गाधी ने 26 अप्रैल को हरिजन म लिखा कि -

"भारत के लिए इसका परिणाम (युद्ध का) कुछ भी हो उसकी (भारत की) और ब्रिटेन की सुरक्षा इसी मे है कि वह व्यवस्थित ढग से भारत छोडकर चला जाना चाहिए।

मुम्बई म हो रहे कांग्रेस क महाधिवेशन मे एस एम सपत्नीक गए थे। "अग्रेज भारत छोडो" प्रस्ताव पारित होने क पश्चात काग्रस सोशलिस्ट कार्यकर्ता "मूषक भवन मे एकत्र होने लगे। यही से उनका गोपनीय जीवन प्रारम्भ हुआ। एस एम कांग्रेस प्रस्ताव पारित होने के पश्चात कार्य की व्यस्तता के कारण दाढी नही बना सके थे। उनकी दाढी बढ गयी थी। उन्होने उस पर खद्दर की शेरवानी पहन ली। फिर चश्मा लगा लिया। एस एम ने ठेठ बोहरा मुसलमानो का रूप धारण कर लिया और 'इमाम अली नूर भाई नाम रख लिया। इस प्रकार श्रीधर महादेव जोशी को पहचानना अब आसान नही रह गया था।

19–20 अगस्त को पुणे म स्वतत्रता सेनानियो की एक बेठक बुलायी गयी जिसमे रामनन्दन मिश्र अच्युत पटवर्धन, डा0 राममनोहर लोहिया, पुरुषोत्तम त्रिकमदास कमला देवी चट्टोपाध्याय, पूर्णिमा बेनर्जी, केशवदेव मालवीय और एस एम उपस्थित थे। पुरुषोत्तम मिकमदास ने समानान्तर सरकार बनाने पर बल दिया। किन्तु शष लोग सहमत नही हुए। साने गुरुजी मधु लिमये विनायक कुलकर्णी, आदि पर गुप्त समाचार पत्र छापने की जिम्मेदारी सौंपी गयी। इस प्रकार भूमिगत जीवन प्रारम्भ हुआ। एस एम भूमिगत जीवन में लाहौर होते हुए पेशावर पहुँचे वहाँ उन्होने डा. खान साहब से सम्पर्क किया। इसी प्रकार चक्कर लगाते हुए तथा क्रान्ति का सगठन खडा करते हुए 18 अप्रैल को गिरफ्तार किए गये। एस एम को आर्थर रोड की केन्द्रीय जेल मे भेज दिया गया।

रचनात्मक कार्यो के लिए समर्पित

एस. एम के सम्बन्ध मे डा लोहिया ने लिखा है कि वे "समाजवादी आन्दोलन मे फावडा और जेल (अर्थात रचना ओर सघर्ष) के प्रतीक हैं" यदि वह "वोट के भी प्रतीक बन जाते तो हिन्दुस्तान को काग्रेसी गुलामी की काल कोठरी से मुक्ति मिल जाती। एस. एम का सम्पूर्ण जीवन रचना और सघर्ष का प्रतीक था। अपने सम्बन्ध मे एस एम लिखते हे, 'जिन दो क्षेत्रो मे कार्य कर पर मुझे बहुत सतोष मिला है, उसमे से पहला है राष्ट्र सेवा दल और दूसरा है कामगार आन्दोलन।"

1930 मे महाराष्ट्र काग्रेस सेवादल की स्थापना हुई। उसके प्रमुख सगठक भाऊ साहब रानाडे थे। इसी समय डा हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ की स्थापना की थी। डा हेडगेवार के सगठन का उद्देश्य मुस्लिम विरोध तथा छद्म राष्ट्रीयता थी जबकि काग्रेस ५ और गैर सगठन था

राष्ट्र सेवादल

1936 मे जब पडित जवाहरलाल नेहरू महाराष्ट्र के दौरे पर आये थे तो उनके दौरे को व्यवस्थित रूप देने के लिए तथा इस कार्यक्रम को सफल बनाने के उद्देश्य से राष्ट्र सेवादल का सगठन खडा किया गया था। उसी वर्ष फैजपुर काग्रेस के कार्यक्रम के सचालन के लिए जो सगठन खडा किया गया था उसका भी राष्ट्र सेवादल का ही नाम दिया गया था। इस तरह मई 1941 मे पुणे के डेक्कन जिमखाने की एक छोटी सी जगह पर लगभग 150 युवकों का एक शिविर लगाया गया। शिविर का उद्घाटन अखिल भारतीय ख्याति के क्रान्तिकारी श्री पृथ्वी सिह आजाद ने किया और समापन के लिए बाला साहब खेर को आमन्त्रित किया गया। मुम्बई नगरपालिका के महापौर यूसुफ मेहर अली ने भी शिविर मे आकर सैनिको का मार्गदर्शन किया था।

शिविर की सफलता देखकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेताओं को कौतूहल हुआ। सघ के नेता बा ना भिडे ने एस एम को वार्ता के लिए बुलाया। उनका अभिप्राय था कि सघ एव सेवादल मे सघर्ष की स्थिति नही आनी चाहिए। इस पर एस एम ने कहा "हम हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सबका एक साझा भारतीय राष्ट्र मानते है। हमारा राष्ट्रवाद असाम्प्रदायिक है और आप हिन्दू राष्ट्रवाद के समर्थक हे।" इस पर भिडे बोले, "यह सच हे कि हम हिन्दू राष्ट्रवाद के समर्थक हैं," मैंने कहा कि "इसका अर्थ यह है कि मुसलमान ओर अन्य गेर हिन्दू आपके राष्ट्रवाद मे नही आते ?"

आगे मैने पूछा, "क्या खान अबुल गफ्फार खाँ अराष्ट्रीय हे।" वे बोले, "हाँ ।" मैंने पूछा, "और मौला अबुल कलाम आजाद" उन्होने कहा "हाँ वह भी।" मैने पूछा "आप यूसुफ मेहर अली को राष्ट्रवादी मानते है ?" उनका उत्तर था "नही।" इस पर मैंने कहा तब हमारी और आपकी कैसे पटेगी ?" हमारा और आपका दृष्टिकोण ही मूलत भिन्न है। जाने दीजिए हम और विषय पर चर्चा करें और हमारी बात यही पर खत्म हो गयी। [7]

राष्ट्र सेवादल समाजवादियो का एक ऐसा सगठन था जिसमे बालकाल मे ही बच्चो को सस्कारित किया जाता था। उसके पश्चात वह अपनी पसद का राजनीतिक क्षेत्र चुन सकते थे। राष्ट्र सेवादल के सस्कारित युवक अनेक सगठनो मे काम करते थे– किसान मजदूर और कामगार, बुद्धिजीवी। अनेक सगठन इन युवाओ ने खडे किए और देश की राजनीति मे नाम कमाया है। साने गुरुजी एव एस एम ने यह एक महत्त्वपूर्ण कार्य किया था। 1942 मे काग्रेस के अवैध घोषित होने के बाद राष्ट्र सेवादल के मच से राजनीतिक कार्य होते थे। राष्ट्र सेवादल मे कार्यकर्त्ता जेल गए असख्य बन्दियो की आवश्यकताओ की पूर्ति करते दशहरा दीपावली तथा अन्य पर्वो पर बन्दियो के लिए उपहार ले जाते तथा परिवार की भी देखभाल करते थे।

एस एम. राष्ट्र सेवा दल के सगठन के सम्बन्ध मे विस्तार से लिखते है–"राष्ट्र

7 यादों की जुगाली–पृष्ठ–157

सेवा दल शैक्षणिक सस्था है। शिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण अग है युवा पीढी और जनता को नवभारत के निर्माण के लिए सस्कार देना। विषमता की नीव पर नवभारत का निर्माण और विकास नही हो सकता। महात्मा गाधी का अस्पृश्यता–विरोधी अभियान तथा पुरुषो की तरह स्त्रियो को भी पुरुषार्थ का अवसर देने का उनका आग्रह, उसी के द्योतक थे उनका यह भी आग्रह था कि अन्य हिन्दुओ की तरह दलितो को भी मदिरो मे प्रवेश मिलना चाहिए।"

"महात्मा गाधी के साथ एक रूप और राष्ट्र सेवा दल को अपना प्राणवत् मानने वाले पूज्य साने गुरुजी को पढरपुर के विठोबा मदिर मे दलितो के प्रवेश पर बदिश असह्य हो उठी। उन्होने उसके विरोध में अनशन करने की घोषणा की। परतु सेनापति बापट ने उन्हे समझाया कि एकाएक अनशन करना उचित न होगा, उसके पहले जनता को अपनी बात के औचित्य का विश्वास दिलाना आवश्यकता है। इस पर गुरुजी ने अनशन का कार्यक्रम छह महीने के लिए स्थगित कर दिया और उस अवधि मे महाराष्ट्र–भर मे दौरा करके लोगो को अपनी बात विस्तार से समझायी। सेनापति बापट भी उनके साथ थे। उनके इस दौरे के कारण सेवा दल को भी नया कार्यक्रम मिला। उसके "कला–पथक" (कला–टोली) का उदय भी एक तरह से उनके इसी दौरे से हुआ। मेरे मित्र कविवर वसत बापट इस दौरे मे गुरुजी के साथ थे। राष्ट्र सेवा दल के आरभ से ही वे उसके लिए नये युग के अनुरूप कल्पनाऍं तथा सस्कार प्रदान करने वाली कविताऍं देते रहे थे। वे केवल कवि नही, अभिनेता भी हैं। गुरुजी के इस दौरे मे उन्होने "महाराष्ट्र शाहीर" के नाम से "कला–पथक" (कला–टोली) का गठन करके उसके जरिये लोकशिक्षा का काम प्रभावशाली ढग से किया। कला–पथक के विकास मे प्रसिद्ध मराठी साहित्यकार पु ल देशपाडे ने भी बहुत योगदान किया। महाराष्ट्र के "तमाशा" लोकनाट्य की शैली मे लिखा हुआ उनका "पुढारी पाहिजे" (नेता चाहिए) बहुत ही लोकप्रिय हुआ। आज महाराष्ट्र और देश–भर मे कुशल कलाकारो के रूप मे चर्चित स्मिता पाटिल, निलु फुले, राम नगरकर मधु कदम इन सभी की कला–प्रतिभा सबसे पहले राष्ट्र सेवा दल के कला–पथक मे ही प्रकट हुई। स्वय ये कलाकार भी यह बात सार्वजनिक रूप से कह चुके हैं।"

कला–पथक के माध्यम से महाराष्ट्र मे एक और महत्त्वपूर्ण बात हुई। स्त्रियो पर जो बधन थे, वे ढीले हुए। आज अपनी लडकियों को नृत्य, गायन आदि कलाऍं सिखाने के लिए लोग उत्साह से आगे आ रहे है। इसका थोडा–बहुत श्रेय सेवा दल के कार्य-कलाप को देना ही पडेगा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाऍं केवल लडकों तक सीमित थी। लडकियो का उसमें प्रवेश नहीं था। सेवा दल मे ऐसा नहीं था। एक ही मैदान मे लडको और लडकियों की शाखाऍं लगतीं। स्त्रियों के साथ समानता का व्यवहार करने की शिक्षा सेवा दल में आरम्भ से ही दी जाती थी

मे तैयार होती थी। इससे प्रकट होता है कि सेवा दल का काम किस तरह गॉव--गॉव मे पहुँच रहा था। लोकशिक्षा का अर्थ केवल शहरी लोगो को शिक्षा देना नहीं होता।

"सतारा के आयोजन के मुख्य अतिथि आजाद हिद फौज के शाहनबाज खॉ थे। आयोजन की पूरी व्यवस्था और युवाजनो के पारस्परिक स्नेह–सबध देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होने अपने भाषण मे उसे व्यक्त भी किया। प्रसिद्ध रैयत शिक्षण सस्था के कर्मवीर भाऊराव पाटील भी इसमे उपस्थित थे और उन्होने स्फूर्तिदायक भाषण किया।

"काग्रेस के नेता शकरराव देव भी पधारे थे। अपने भाषण मे उन्होने अपने मन की एक आशका व्यक्त की । उन्होन कहा, "इसमे सदेह नही कि यह शक्ति है। परतु क्या यह शिवशक्ति है ? इसका विश्वास उत्पन्न होना चाहिए कि इस शक्ति का उपयोग मगल के लिए होगा।" उनके भाषण से उनका यह भय व्यक्त होता था कि अगस्त–आदोलन के समाजवादियो को नेता मानने वाली यह शक्ति यदि काग्रेस के काबू मे नही रही, तो यह परेशानी पैदा करेगी। इससे स्पष्ट हो गया कि जब स्वतत्रता देश की दहलीज तक आ गयी थी, तब राष्ट्र सेवा दल के सबध मे काग्रेस के प्रस्थापित नेतृत्व के एक विशेष गुट की दृष्टि क्या थी। दो महीने के अदर ही इस समस्या ने विवाद का रूप धारण कर लिया। महाराष्ट्र के काग्रेसी नेताओ का विचार था कि राष्ट्र सेवा दल को काग्रेस सेवा दल मे विलीन हो जाना चाहिए, उससे अपना अलग अस्तित्व कायम रखकर रचनात्मक और शिक्षात्मक कार्य करने की कोई आवश्यकता नही है।"

उस समय बबई प्रदेश काग्रेस समिति अलग थी। स का पाटील (एस के पाटील) उसके अध्यक्ष थे। वहॉ भी यह प्रश्न उठा कि राष्ट्र सेवा दल सगठन पर किसका नियत्रण हो। परतु बबई राष्ट्र सेवा दल ने स का पाटील के ताबे मे न जाकर आदर्श चरित्र वाले व्यक्तियो के नियत्रण मे चलने वाली सस्था के रूप मे अपना काम जारी रखा था वह अर्धस्वायत्त सस्था थी। महाराष्ट्र काग्रेस के नेताओ से हमारा कहना था कि बबई की लकीर उन्हे अमान्य नही होनी चाहिए, प्रदेश काग्रेस द्वारा नियुक्त व्यक्ति नियामक मडल मे पदेन रह सकते हैं। भाऊसाहब रानडे और रावसाहब पटवर्धन ने भी इस सबध मे काग्रेस नेताओ से बहुत बातचीत की। परतु आर्थिक स्वावलबन के मुद्दे पर समझौता न हो सका।

आरंभ से ही सेवा दल ने आर्थिक स्वावलबन की नीति अपनायी थी। इसके लिए भिन्न–भिन्न उपायों से धन–सग्रह किया जाता था। 28 दिसबर काग्रेस का स्थापना–दिवस है। उस दिन सेवा दल के सैनिक "त्यागनिधि" के रूप में झडे को निधि समर्पित करते। जो सैनिक खेतो मे परिश्रम करके अथवा अन्य कोई काम करके पैसे कमाते, उसे वे "स्वकष्टार्जित निधि" के रूप मे दल को अर्पित करते। दीवाली पर स्नान के लिए सुगधित उबटन, कदील आदि तैयार करके उनकी बिक्री की जाती। इसके अलावा, प्रति वर्ष सेवा दल की ओर से आकर्षक कलैंडर प्रकाशित किया जाता। उसकी कीमत कुछ अधिक पैसे इकटठे किये जाते पर महाराष्ट्र काग्रेस के देव आदि

नेताओ को हमारी यह स्वायत्तता स्वीकार नही थी। उनका कहना था कि काग्रेस से अनुदान लेकर सेवा दल का काम चलाया जाए। उसके लिए स्वतत्र रूप से धन-सग्रह न किया जाए। हमे यह मजूर नही था।

"वास्तव मे, आचार्य जावडेकर, अण्णासाहब सहस्रबुद्धे, रावसाहब पटवर्धन जैसे सत्ता–राजनीति से अलिप्त और समाजवादी दल से न जुडे हुए श्रेष्ठ व्यक्तियो के नियामक–मडल को मान्य करने में काग्रेसी नेताओ को कोई आपत्ति नही होनी चाहिए थी। ये व्यक्ति भी काग्रेसवादी ही थे। किन्तु शकर राव देव प्रभृति नेताओ को आशंका हुई होगी कि इनके रहते सेवा दल पर अपना अधिकार न हो सकेगा। सो समझौता न हो सका।"

"देश के विभाजन के कारण जो अत्यत भयावह परिस्थिति उत्पन्न हुई थी उसमे युवा पीढी का मार्गदर्शन करने तथा विभाजन के बावजूद भारतीय एकात्मता मे बधे रहने की आवश्यकता युवको को अच्छी तरह समझाने की सख्त जरूरत थी। विभाजन के कारण हमारा सप्रदायातीत राष्ट्रीयता का सिद्धात लोगो के मन मे पहले जैसा दृढ नही रहा था। यह समस्या हमारे लिए ही नही, महात्मा गाधी के लिए भी चुनौती थी।

"मुस्लिम राष्ट्रवाद के नाम से मुस्लिम लीग ने पृथक सार्वभौम देश की स्थापना अवश्य कर ली थी, किंतु उसके बावजूद करोडो मुसलमान भारत मे ही रहने वाले थे। मुसलमानो मे से ज्यादातर ने पाकिस्तान के निर्माण की माग का समर्थन किया था। किंतु हमे उनसे उसका बदला नही लेना है, यह बात हिंदू समाज को समझाना आसान काम नही था। पाकिस्तान से उखड कर भारत आये हुए करोडो शरणार्थियो का भी प्रश्न था। वे एक–राष्ट्रीयता का सिद्धात कैसे मान्य कर सकते थे।"

"यह वातावरण सेवा दल के विकास मे बाधक था। साथ ही काग्रेस और उसकी सरकार सेवा दल की गतिविधियो को प्रोत्साहन देना नही चाहती थी। अवसर मिलते ही उसने प्रहार करने मे सकोच नही किया। इस विकट स्थिति मे मुझे दल–प्रमुख के पद का दायित्व सभालना पडा। पर मेरे दल–प्रमुख होने पर भी भाऊसाहब रानाडे ही सहकारियो की मदद से सगठन का सारा काम करते थे।"

"1947 के दिसबर मे बबई के राष्ट्र सेवा दल ने शिवाजी पार्क मे सैनिको की भव्य रैली आयोजित की। सेवा दल के लगभग चार हजार सैनिको की छावनी शिवाजी पार्क पर लगाने का निश्चय हुआ था। लोकनायक जयप्रकाश नारायण इसका उद्घाटन करने वाले थे। बबई सेवा दल के नियामक–मडल के सदस्य बैकुठभाई मेहता और शातिलाल शाह उस समय काग्रेस मत्रिमडल मे थे। उनके परामर्श से निवास, पानी आदि की सुविधाये प्राप्त की गयी थीं। इसलिए यह कल्पना भी नहीं की जा सकती थी कि अतिम क्षण मे सरकार आयोजन पर रोक लगाकर उसे उद्ध्वस्त कर देगी। 28 दिसबर की सुबह से कार्यक्रम आरभ होने वाले थे और 27 सितबर की दोपहर के 1 बजे कुर्ला के दगे के बहाने गृहमत्री मोरारजी देसाई ने आयोजन पर रोक लगा दी

रावसाहब पटवर्धन ने उन्हे समझाने की कोशिश की। किंतु उसका कोई लाभ नहीं हुआ। शिवाजी पार्क का पुलिस ने मानो घेराव कर लिया था। जब देश मे साप्रदायिक भावनाएं उफन रही हो तब सरकार असाप्रदायिक राष्ट्रवादी गतिविधियो को कुचलने का काम करे यह कितनी बडी शोकांतिका थी।"

"विभाजन के कारण उस समय का समग्र वातावरण साप्रदायिक सगठनो की वृद्धि व विकास के लिए अनुकूल था। उस सदर्भ म मैने बबई–पुणे के बीच कर्जत के स्टेशन पर जो देखा, वह उल्लेखनीय हे। दोपहर की गाडी से मै पुणे से बबई आ रहा था। उसी गाडी मे सघ के सरसघचालक भी है, यह मुझे मालूम नही था। जब गाडी ने कर्जत स्टेशन मे प्रवेश किया तब पूरा प्लेटफार्म काली टोपियो से ढँक गया था। गुरुजी के दर्शन के लिए सघ के स्वयसवको की भारी भीड बड़े अनुशासित ढंग से स्टेशन पर जमा थी। धर्म के आधार पर देश का विभाजन होने के कारण हिंदू समाज के मन मे अत्यत तीव्र असतोष और रोष व्याप्त हो गया था। उससे रा स्व सघ को अपने आप प्रोत्साहन मिला।"

"30 जनवरी 1948 के दिन मै देहू रोड के पास एक गाव मे राष्ट्र सेवादल क शिविर मे था, पर नवगठित सवा विनिमय बोर्ड की बैठक के लिए पुणे आया था। बैठक समाप्त होने के पूर्व ही, गाधीजी की हत्या की खबर मैने सुन ली। मैं तुरत बैठक से उठा और देहू रोड के शिविर मे पहुँचा। शिविरार्थियो मे दु ख और शोक का वातावरण व्याप्त हो गया था लोगो का अनुमान था कि यह दुष्कृत्य किसी मुसलमान ने किया होगा। सबको समझाना बडा मुश्किल था। परतु शाम को हत्यारे गोडसे का नाम घोषित हुआ और हिंदुत्ववादी लोगो के विरुद्ध जनमानस का क्रोध भडक उठा। उसके परिणाम राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ को भोगने पडे। महाराष्ट्र मे अनेक ब्राह्मणो के घर भी जलाये गये। महाराष्ट्र मे ब्राह्मणो और अब्राह्मणो का जो परंपरागत रोष था, उसे व्यक्त करने का अवसर मिल गया। राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ का नेतृत्व ब्राह्मणो के हाथो मे था। कम–से–कम उस समय तो ज्यादातर स्वयसेवको की भरती ब्राह्मणो द्वारा ही होती थी। अगर गाधीजी का बलिदान न हुआ होता, तो पाकिस्तान के निर्माण से भडका हिंदू–मुस्लिम–विद्वेष धीरे–धीरे गॉवो तक पहुँच जाता।

"गांधी जी का हत्यारा महाराष्ट्रीय था, इस बात से साने गुरुजी को मरने तक दु ख रहा। मराठी जनता का यह कलक अशत दूर करने के लिए गुरुजी ने 1 फरवरी 1948 का बापू को श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए बंबई के कामगार मैदान मे आयोजित सभा मे घोषिणा की कि वे प्रायश्चित्तस्वरूप 21 दिनो का उपवास करेगे। उपवास आरभ करने के बाद उन्होने "कर्त्तव्य" नामक सायकालीन दैनिक शुरू किया। बाद मे जब वे उपवास के कारण "कर्त्तव्य" में लिखने मे असमर्थ हो गये, तब उन्होने यह काम मुझे सौपा। मैंने किसी-तरह उसे निभाया। कहॉ साने गुरुजी और कहॉ एस एम जोशी।

साने गुरुजी अक्सर कहा करते थे कि भारतीय का देने वाला

राष्ट्र सेवा दल मेरा श्वासोच्छ्वास है। परतु बबई के गृहमत्री मोरारजी देसाई ने गाधीजी की हत्या के सदर्भ मे फरवरी 1948 मे रा स्व राघ को अवैध घोषित करने के साथ–साथ राष्ट्र सेवा दल के कवायद, इन्यादि कार्य–क्रमो पर भी रोक लगा दी। साने गुरुजी ने अपने सायकालीन दैनिक 'जब इस तरह की निर्मल आदर्शवादी सस्थाओ को मिट्टी मे दफन किया जा रहा है, तब जीवित रहने का क्या अर्थ है ?''

''मैने इस अन्याय के सिलसिले मे मोरारजी भाई से मिलकर उन्हे वस्तुस्थिति की जानकारी देने का निश्चय किया। 12 अप्रैल को हमारी मुलाकात हुई।'

मैने पूछा, ''मै आपसे यह जानने के लिए आया हूँ कि सेवा दल कौन -सा गलत काम कर रहा है ?''

मोरारजी 'आपका सेवा दल अहिसक नही है।''

मै ''इसका सबूत?''

मोरारजी 'क्या सेवा दल के आप जैसे नेताओ ने 1942 के आदोलन मे अहिसक पद्धति से काम किया था ?''

मै ''मोरारजीभाई वह सदर्भ ही अलग था। उस समय भी हमने कभी जानते–बूझते मानव–हत्या का काम नही किया। गाधीजी के 'करो या मरो' के आदेश का हमने जैसा अर्थ समझा, उसके अनुसार काम किया। आज देश स्वतत्र है। सेवा दल लोकतत्रीय जीवन-पद्धति का आदर्श सामने रखकर काम करता है। सेवा दल की शाखाओ मे परोक्ष रूप से भी हिसा की शिक्षा नही दी जाती। क्या वैसा कुछ होने के प्रमाण आप दे सकते है ? हमारे विधायक–मडल मे अण्णासाहब सहस्रबुद्धे, आचार्य जावडेकर और रावसाहब पटवर्धन जैसे व्यक्ति है। क्या उन्हे हिसक आदोलन के नेता कहा जा सकता है ?''

मोरारजी ''समाजवाद के प्रचार के लिए आप ये सस्थाएँ चलाते है ?''

मैं ''अहिसक और शाति के मार्ग से समाजवादी समाज की स्थापना की शिक्षा देने मे अनुचित क्या है ? युग का प्रवाह ही समाजवाद की दिशा मे जा रहा है। मै पूछता हू, कल आप भी समाजवादी नही हो जायेगे, इसकी क्या गारटी है ?''

मोरारजी ''यह आप विचित्र आशा कर रहे है।'

मैं हो सकता है। परतु हम समाजवादी लोग हिसा के मार्ग से समाजवाद लाना नही चाहते। इसलिए सेवा दल मे समाजवाद का प्रचार होता है, यह सदेह करके हम पर प्रतिबंध लगाना मुझे लोकतत्र के विरुद्ध लगता है।''

''इस प्रकार बहुत–सी बातचीत हुई। परतु मोरारजीभाई कुछ भी सुनने की मन स्थिति मे दिखाई नहीं पडे आश्चर्य की बात तो यह है कि जब राष्ट्रीय

सघ से रोक हटा ली गयी, उसके बाद भी बहुत दिनो तक राष्ट्र सेवा दल पर प्रतिबध बने रहे। काग्रेस से समाजवादियो के अलग होने का गुस्सा शासको के मन मे भरा हुआ था, इसीलिए यह पक्तिभेद किया गया।"

इस परिस्थिति मे भी सेवा दल ने जिस हद तक सभव था, अपना काम अबाध रूप से जारी रखा। लाठी–व्यायाम, लेजिम, कबायद आदि करना सभव नही था। कार्यकर्त्ताओ ने अपना ध्यान रचनात्मक कामो पर केन्द्रित किया।

"सन् 1950 के मई महीने मे सागली मे बहुत बडा शिविर हुआ। उसमे एक दिन मच पर, गुरुजी के साथ जो बातचीत हुई, वह मुझे अच्छी तरह याद है। उनसे मैने सैनिको का मार्गदर्शन करने का अनुरोध किया। वे बोले "मै क्या मार्गदर्शन करूँ ? उनके मन पर निराशा के बादल छा रहे थे। मैने कहा, "गुरुजी, युगोस्लाविया के युवको ने श्रमदान करके एक रेलमार्ग का निर्माण किया है। स्वतत्रता मिलने के बाद अब हमे भी देश को खडा करना है। उसके लिए हम सभी श्रमदान का कोई प्रकल्प हाथ मे लेकर युवको को रचनात्मक कार्यक्रम के जरिये समाजवाद के नये सस्कार दे सकते है।

मेरी कल्पना गुरुजी को पसद आयी होगी, क्योकि उन्होने अपने भाषण मे श्रमदान–पथक" की कल्पना विस्तार से प्रस्तुत की। दुर्भाग्य से अगले एक–दो महीनो मे ही हम उस कल्पना को साकार नही कर सके। गाधीजी की हत्या के बाद गुरुजी के जीवन मे रिक्तता उत्पन्न हो गई थी। यदि हमने श्रमदान-पथक की कल्पना तत्काल कार्यान्वित की होती तो शायद 11 जून को गुरुजी ने अपनी जीवन-यात्रा समाप्त न की होती। मुझे तो यह भी लगता है कि जो भूदान-आदोलन 18 अप्रैल 1951 को आरभ हुआ उसकी कल्पना का उदय विनोबा के अत करण मे यदि एक वर्ष पहले हो गया होता तो कदाचित् उसका उपयोग गुरुजी के मन की रिक्तता दूर करने में हुआ होता।

गुरुजी के निर्वाण के बाद सेवा दल की एक बडी सभा मे उनका स्मारक बनाने की चर्चा हुई। मैंने कहा, "गुरुजी का ईट–पत्थर का स्मारक बनाना मुझे पसद नही है। गुरुजी का जोर कर्मवाद पर था। सागली मे उन्होने जो मार्ग-दर्शन किया था, उसके अनुसार कम से कम एक वर्ष निरतर श्रमदान करने वाले एक सेवा-पथक के रूप मे हम उनका सजीव स्मारक बना सकते हैं। मुझे सेवा दल के सौ सैनिक एक वर्ष के लिए दीजिए। हम गॉवो मे लोगो के लिए आवश्यक सार्वजनिक काम श्रमदान से करने का प्रयास करे। जहॉ सपर्क–मार्ग न हो, वहॉ उनका निर्माण करे। तालाबो की सफाई करे। बॉध बनाए। ग्रामीण समाज की जरूरतो को समझकर उन्हें पूरा करें। उन जरूरतो को पूरा करने के लिए विशेषज्ञों की मदद से योजना तैयार करके सेवा पथक कार्य आरम्भ कर दें धीरे-धीरे देहाती जनता भी हमारे कार्मो में हाथ बटायेगी

कला-पथक की तरह ही यह रचनात्मक आयाम भी सेवा दल को साने गुरुजी के कारण ही प्राप्त हुआ। अब तो इस तरह के कामो के लिए विभिन्न सस्थाएं और दल आगे आ रहे है। परतु 1950 में यह कल्पना पहले पहल सेवा दल ने ही प्रस्तुत की।

तलवडे प्रकल्प में काम सपर्क मार्ग बनाने का था। उसका मुख्य दायित्व नाना डेगले को सौंपा गया। वे स्थापत्यशास्त्र के डिप्लोमाधारी थे। योजना का कार्यान्वयन उन्होंने बहुत अच्छे ढग से किया। देहू रोड के प्रतिरक्षा-विभाग की हमारी यूनियन के कार्यकर्त्ता फुरसत के समय वहाँ आकर श्रमदान करते थे। उस एक वर्ष ही नही, अगले चार--पॉच वर्षो तक महाराष्ट्र मे कम से कम 50 स्थानो पर सेवा पथक ने रचनात्मक कार्य किये। इनकी प्रशसा सी.डी. देशमुख ने भी की थी। नरुला के तालाब से कीचड निकालकर उसे स्वच्छ करने के काम के लिए सेनापति बापट भी पधारे थे। भाऊसाहब रानडे अग्रगामी अधिकारी की तरह पहले प्रत्येक योजना-स्थल पर जाते और गाँव के लोगो से विचार-विनिमय करते थे।

मुझे लगता है कि सेवा दल ने इसी तरह छात्रावासो के निर्माण तथा उनके सचालन का काम भी अपने हाथ मे लिया होता,तो आज वह जिस तरह पिछड गया है उस तरह न पिछडता। इस मामले मे कर्मवीर भाऊराव पाटील ने जो काम किया, वह प्रशसनीय है। अगर छात्रावासो का निर्माण हुआ होता, तो हमारे कार्यकर्त्ताओ को एक-एक अथवा दो-दो वर्ष तक उनमे अधीक्षक के रूप में रहने को कहा जा सकता था। उन कार्यकर्त्ताओ ने अनेक ध्येयनिष्ठ युवक तैयार किये होते।

यह मेरा निश्चित मत था कि राष्ट्र सेवा दल को स्वायत्त रखने के लिए जिस तरह उसे काग्रेस से अलग रखा गया, उसी तरह काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी से भी उसे अलग ही रखना चाहिए। परतु पार्टी मे कुछ का यह मत रहा कि उसे पार्टी से जोडा जाना चाहिए। बेगलूर मे पार्टी की महासमिति की बैठक मे मधु लिमये ने दोनो सस्थाओ को एक-दूसरे से जोडने का समर्थन किया।

मैंने सदस्यो को यह हृदयगम कराने का पूरा प्रयास किया कि सेवा दल जैसी शैक्षणिक सस्था को स्वायत्त रखकर देश-भर मे उसका विस्तार करना समाजवादी शील वाले नागरिक तैयार करने के लिए बहुत आवश्यकता है। परतु महासमिति ने मेरी बात नही मानी। उसे प्रत्यक्ष रूप से आदोलन करने वाले युवक और उनका सगठन चाहिए था। स्वभावत ही उसने "समाजवादी युवक सभा" स्थापित करने का निर्णय किया। यह तो अखिल भारतीय नीति की बात हुई। परतु महाराष्ट्र मे तो राष्ट्र सेवा दल पहले से मौजूद था इसलिए महाराष्ट्र में युवक सभा के साथ साथ सेवा दल को भी दी गयी

लोगो को यह गलतफहमी थी कि सेवा दल सगठन के माध्यम से मै अपना व्यक्तिगत नेतृत्व बढा रहा हूँ। इसलिए लोगो मे गलतफहमी न बढने देने के उद्देश्य से मैंने खुद ही सेवा दल के कामो मे धीरे-धीरे अपना ध्यान हटा लिया आर मैं ट्रेड यूनियन तथा सोशलिस्ट पार्टी के कामो पर ज्यादा ध्यान देने लगा। लोगो के मन मे यह भावना भी थी कि रा स्व सघ की तरह राष्ट्र सेवा दल मे एक ही प्रमुख आजीवन नही रहना चाहिए क्योकि उससे "पर्सनैलिटी कल्ट" पैदा होता है। फिर मेरी भी कुछ निजी आकाक्षा थी। काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी मे, ट्रेड यूनियन के क्षेत्र मे बडा आदिमी बनूँ, यह आकाक्षाएँ मुझमे थी ही। परतु आज भी यह विचार मन म उठता है कि दल–प्रमुख की अपनी कार्यावधि समाप्त होने पर यदि मैने उक्त पद पर अपने उत्तराधिकारियो की मदद करते हुए सेवा दल क कार्य मे अधिक ध्यान दिया होता तो उसकी शक्ति बढी होती।

अक्सर मेरे मन मे यह सवाल उठता है कि क्या राष्ट्र सेवा दल के माध्यम से समाज–प्रबोधनकी कोई नयी शक्ति तैयार हुई ? और जवाब मिलता है–हाँ, हुई है। कर्मवीर भाऊवीर पाटील ने रैयत शिक्षण सस्था द्वारा जैसे नये नेतृत्व का निर्माण किया वैसे ही राष्ट्र सेवा दल ने भी एक नया नेतृत्व तैयार किया है। हमारे काम की तुलना मे भाऊराव पाटील का काम बहुत बडा है। वबई–गावो मे ब्राह्मणेतरो को शिक्षा देकर उनमे से नेतृत्व का निर्माण करना आसान काम नही था। परतु सेवा दल के काम का एक अलग ही वैशिष्ट्य है। उसने समाज के दो घटको के बीच की खाई को पाटने का जो उद्देश्यपूर्ण प्रयास किया, वेसा प्रयास भाऊराव के शेक्षणिक कार्यो से हुआ हो ऐसा दिखाई नही देता। ब्राह्मणेतर–आदोलन मे महाराष्ट्र के ब्राह्मणो और ब्राह्मणेतरो के बीच बडी कटुता उत्पन्न हो गयी थी। सेवा दल के कार्य से वह कटुता अब काफी कम हो गयी है।

मेरी जानकारी के अनुसार, महाराष्ट्र के भूतपूर्व आइ जी.पी बसत नगरकर से वरिष्ठ अधिकारियो की एक बैठक मे किसी ने पूछा कि उत्तर प्रदेश, बिहार आदि कुछ राज्यो मे जाति-भावना जितनी तीव्र है उतनी आपके राज्य महाराष्ट्र मे क्यो नहीं है ? नगरकर ने यह उत्तर दिया, "राष्ट्र सेवा दल की शिक्षा के कारण महाराष्ट्र मे यह समस्या उतनी तीव्र नही है। इसी से ब्राह्मणेतर दलो के युवा कार्यकर्त्ता भी प्रत्येक समस्या पर उचित ढग से सोच सकते है। ब्राह्मण और मराठा समाज म आज पहले जैसा वैमनस्य नही है। उनमे सहयोग हो सकता है।"

गाधीजी की हत्या के बाद हुई आगजनी की घटनाओ के दौरान बिलकुल पिछडी मानी जाने वाली धनगर जाति के रानगे नामक लडके ने सेवा दल की शिखा के प्रभाव से अपनी जान खतरे मे डालकर ब्राह्मणो के घर जलाये जाने से रोके। यह घटना गडहिग्लज की है। सयुक्त महाराष्ट्र आदोलन मे वातावरण को शुद्ध रखने मे सेवा दल के कार्यकर्त्ताओ ने बहुत बडा योगदान किया। उस समय यह अफवाह फैली कि मराठी लोगो के डर से गुजराती लोग बंबई छोडकर जा रहे हैं। उदाहरण के लिए बबई की कादेवाडी की मोनजी चाल का नाम लिया गया सेवा दल के सैनिकों ने चार

दिन और चार रात उस चाल मे रहकर गुजराती बाधवो की रक्षा की। मै जब सयुक्त महाराष्ट्र समिति का महासचिव और बबई विधानसभा मे विरोधी दल का नेता था, तब प्रभु भाई सघवी मेरे निजी सचिव थे। लोगो को यह देखकर आश्चर्य होता था कि यह गुजराती युवक मेरा सचिव कैसे है। पालघर से सयुक्त महाराष्ट्र समिति की टिकट पर चुने जाकर जब नवनीतभाई शाह बबई विधानसभा मे आये, तो यशवतराव चाव्हाण तक को आश्चर्य हुआ। उन्होने मुझसे पूछा, 'गुजरातियो को आप अपने साथ कैसे रख पाते हैं?' इसका सारा श्रेय सेवा दल को है। सेवा दल न होता तो यह बात नही हो सकती थी। मेरे विरोध–पक्ष मे रहते हुए भी मेरे लिए अनेक काग्रेसियो के मन में जो स्नेह और आदर का भाव है, उसके लिए भी मै राष्ट्र सेवा दल के अपने काम को ही कारण मानता हूँ।"

मजदूर आन्दोलन के कुशल नेता

एस एम ने समाजवादी आन्दोलन को रचनात्मक नेतृत्व दिया। एक ओर उन्होने राष्ट्र सेवा दल को सगठित कर युवजनो को समाजवादी सस्कृति से सुसस्कृत किया दूसरी ओर श्रमिक वर्ग पर हो रहे अन्याय एव अत्याचार के विरुद्ध सघर्ष किया। वह देश के कुशल ट्रेड यूनियन नेता के रूप मे जाने जाते हैं। उनकी महत्त्वाकाक्षा भी यही थी।

भारत मे मजदूर आन्दोलन स्वतत्र सघर्ष के एक अग के रूप मे प्रारम्भ हुआ इसलिए इस मोर्चे पर कार्य करने वाले नेता विशेषकर गांधीवादी अपने समक्ष उन्ही मूल्यो को रखते थे जिसकी शिक्षा गाधी जी ने दी थी। एस एम का मिल मजदूरो मे किया गया कार्य का बिन्दुवार विवरण इस प्रकार है –

1 1930 मे जी आई पी रेलवे मजदूरो की हडताल पुणे मे बहुत दिन चली। उनका मार्गदर्शन काका साहब गाडगिल कर रहे थे। एसेम का मजदूर आन्दोलन का यह पहला अनुभव था। उन्होने हडताली मजदूरो के लिए चन्दा एकत्र किया था। इस हडताल के कारण ही उन्होने मजदूर आन्दोलन मे प्रवेश किया था।

2 1934 मे मुम्बई गिरणी कामगार यूनियन एव अखिल भारतीय कपडा कामगार यूनियन का सम्मेलन मुम्बई में हुआ। उसमे एस एम. ने भाग लिया।

3 1936 मे साबरमती जेल से छूटने के बाद एस एम श्रमिको के आन्दोलन मे भाग लेने लगे। उन्होने अपने अनुभव से काफी सीख लिया था। प्रारम्भ मे एस एम ने पुणे में छोटे–मोटे बर्तन कारखानो मे काम करने वाले कामगारो को सगठित कर उन्हे न्याय दिलाने का प्रयास किया। ये कामगार व्यापारियो से तॉबा-पीतल की चादरे लाकर बर्तन बनाते थे किन्तु व्यापारी उन्हें वाजिब कीमत नहीं देते थे उनकी आर्थिक स्थिति नहीं सुधरती थी एस एम बर्तन कामगारों की यूनियन

बनाकर हडताल शुरू कर दी। अत मे समझौता हुआ। हडताल समाप्त हो गयी और कामगारो की काफी मागे मान ली गयी। इस प्रकार एस. एम की यह पहली विजय थी।

4 एस एम ने पुणे एव मुम्बई मे श्रमिको के मध्य कार्य करना प्रारम्भ किया। द्वितीय महायुद्ध के समय प्रतिरक्षा विभाग के विभिन्न डिपो, वर्कशाप, एम्यूनिशन फैक्ट्रीयो मे लाखो कामगार नियुक्त किये गए थे। युद्ध की समाप्ति के बाद छँटनी प्रारम्भ हो गयी। इस पर नाना साहब गोरे एव विनायक राव कुलकर्णी ने यूनियन बनाकर डिफेन्स मजदूरो के लिए आन्दोलन पारम्भ किया। डिफेन्स फेडरेशन के कमाड वर्कशाप यूनियन के एसेम अध्यक्ष एव मैथ्यू मत्री चुने गए। मैथ्यू को डिफेन्स फैक्ट्री मे निकाले जाने पर एसेम ने भूख हडताल कर दी। मैथ्यू को वापस लिया गया। यह एस एम की भारी सफलता थी।

5 डिफेन्स फैडरेशन देश की प्रतिष्ठित यूनियन थी जिसके सदस्यो की सख्या एक लाख से उपर थी। इसके तीन अग थे। तीनो को एक कर 'आल इन्डिया डिफेन्स फैडरेशन'' का गठन किया गया। एस एम उसके महामत्री थे।1964 मे जब वह प्रसोपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने तो उन्हे अपने पद से हटना पडा। उन्होंने मैथ्यू को महामत्री बना दिया। मजदूरो को सलाह मशविरा देने के लिए वह स्वय उपाध्यक्ष बन गए।

6 एस एम ने स्टेट बैक कर्मचारियो को सगठित किया। स्टेट बैक आफ इन्डिया के मुम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, मद्रास चार सर्किल थे। चारो को एकत्र कर एक फेडरेशन बनायी गयी जिसके अध्यक्ष एस एम हुए।

इसी प्रकार एस एम की गणना एक अखिल भारतीय स्तर के सफल मजदूर नेता के रूप मे हुई। मजदूरो की मागो के समर्थन में उन्होने अनेक आन्दोलन चलाये और सफलता पाई।

ससदीय जीवन में प्रवेश

स्वतत्रता के बाद देश का प्रथम आम चुनाव 1952 मे हुआ। महाराष्ट्र मे प्रजा सोशलिस्ट पार्टी ने डा अम्बेडकर की 'शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन'' से चुनावी समझौता किया। मुम्बई मे डा. अम्बेडकर और अशोक मेहता सयुक्त उम्मीदवार थे। पुणे मे एस एम पार्टी के लोकसभा के प्रत्याशी थे। चुनाव नतीजे निराशाजनक थे। डा अम्बेडकर, अशोक मेहता, कामरेड डागे तथा एस एम जोशी हार गए। काग्रेस की विजय से सोशलिस्टों मे घोर निराशा घर कर गयी। 1952 के अगस्त के महीने मे पुणे के काग्रेसी विधायक बाबा साहब घोरपडे के से स्थान रिक्त हो गया पार्टी ने एस एम को प्रसोपा से उपचुनाव में बनाया उनको मिली इस

सफलता मे डा लोहिया अत्यन्त प्रसन्न थे। उन्होने वक्तव्य दिया, "एस एम. कुदाल और फावडा लेकर रचनात्मक कार्य करते है अनाज के प्रश्न पर सत्याग्रह करके जेल जाते हैं और मतपेटी की आराधना करके निर्वाचित होते हैं।" वह पार्टी के आदर्श कार्यकर्त्ता है। समाजवाद का सबल था फावडा, जेल और वोट" एस एम तीनो मे खरे उतरे। डा लोहिया का यही अभिप्राय था।

सयुक्त महाराष्ट्र समिति का आन्दोलन

एस एम जोशी की ख्याति की सुगंध महाराष्ट्र मे फैल चुकी थी। वह इस प्रान्त के लोकप्रिय नेता माने जाते थे। "अन्ना" शब्द का अभिप्राय एस.एम. जोशी होता था। वह पुणे नगर के एकक्षत्र नेता थे। मुम्बई मे भी उनकी कीर्ति का प्रकाश फैल चुका था। किन्तु भाषावार राज्यो के निर्माण के समय मुम्बई को महाराष्ट्र से अलग रखकर तथा अन्य मराठी भाषी क्षेत्रो को भी उससे निकाल कर सरकार ने घोर अन्याय किया था। सभवत यह हमला इसलिए किया था कि पुणे एव मुम्बई के मध्य समाजवादी आन्दोलन अत्यत सशक्त था।

इस अन्याय के विरुद्ध एस. एम ने जनता का कुशलतापूर्वक नेतृत्व किया तथा केन्द्रीय सरकार को हिलाया उसमे उनकी प्रतिष्ठा सम्पूर्ण देश मे बढी और लोग इस नाम से परिचित हो गए।

भाषावार राज्यो के निर्माण के लिए गठित फज्ल अली कमीशन की रपट 10 अक्टूबर 1955 को समाचार पत्रो मे छपी। सयुक्त महाराष्ट्र परिषद की ओर से एक शिष्ट मण्डल 24 अगस्त 1954 को भाऊ साहब हिरे के नेतृत्व मे कमीशन के सदस्यो से बातचीत की। मुम्बई को, जोकि मूल रूप से मराठी भाषी था उसे महाराष्ट्र से अलग करने का षडयन्त्र हो रहा था। इसके विरोध मे 5 नवम्बर 1955 को मुम्बई के कामगारो से विरोध करने की अपील की गयी। 120 श्रमिक यूनियनो की ओर से शिवाजी पार्क मे विशाल सभा आयोजित की गयी जिसकी अध्यक्षता एस.एम. जोशी कर रहे थे। निश्चय किया गया कि 18 नवम्बर को जब विधानसभा मे महाराष्ट्र से मुम्बई को अलग करने का प्रस्ताव आयेगा विधानसभा पर प्रदर्शन होगा।

शिवाजी पार्क की इस विशाल जनसभा को आशीर्वाद देने के लिए सेनापति बापट को बुलाया गया। निर्णय लिया गया कि सेनापति बापट आचार्य अत्रे, कामरेड मिराजकर, और प्रोफेसर मधु दडवते जुलूस लेकर विधानसभा जायेगे। एस एम विधानसभा के अन्दर सशोधन पेश करके संघर्ष करेगे। एसेम ने कई घटे भाषण दिया। विधान सभा में उत्तेजना व्याप्त थी। सदन के बाहर निहत्थी जनता पर गोलियाँ चल रही थीं। लगभग 15 लोग जान से मारे गए, 300 गम्भीर रूप से घायल हुए। उत्तेजित जनता विधानसभा की ओर बढी। किन्तु एस एम ने बीच मे आकर स्थिति शात की

इस आदोलन के तीन सत्रधार थे— एस एम जोशी आचार्य अत्रे और श्रीपाद

अमृत डागे। मॉग मजूर हुई और इस आन्दोलन को सफलता मिली। यह आयोजन इतना विशाल था कि कई महीने चला। 45 हजार स्त्री–पुरुषो ने कारावास भोगा, 125 लोगो की हत्या हुई, 32 विधायको ने विधानसभा से त्याग पत्र दिया। इस माहौल मे महाराष्ट्र मे 1957 का आम चुनाव हुआ।

1957 का आम चुनाव

1957 के आम चुनाव की तैयारी प्रारम्भ हुई। देश के लिए यह चुनाव था किन्तु महाराष्ट्र के लिए यह जनमत सग्रह था। सयुक्त महाराष्ट्र समिति द्वारा सीटो का बॅटवारा शातिपूर्ण ढग से हो गया। किन्तु एक बात रह गयी कि पुणे मे सणस के विरुद्ध कौन खडा हो ? अत मे एस एम जोशी का नाम निश्चित किया गया। यह मुकाबला बहुत कठिन था। चर्चा थी कि 30 प्रतिशत वोट भी एस एम को सणस के मुकाबिले मे नही मिलेगे। किन्तु एस एम की शानदार जीत हुई। सयुक्त महाराष्ट्र समिति ने 101 सीटो पर विजय पताका फहराई, पश्चिमी महाराष्ट्र मे 22 स्थान मे से 20 सयुक्त महाराष्ट्र समिति को मिले। यह एस एम के नेतृत्व की कुशलता का परिणाम था।

कुछ दिनो बाद मुम्बई नगर महापालिका का चुनाव हुआ। 97 सीट वाली नगरपालिका मे 71 सयुक्त महाराष्ट्र समिति के उम्मीदवार जीते। महापौर समिति का ही हुआ।

इस प्रकार गठबधन को भारी सफलता प्राप्त हुई जिसका सेहरा सयुक्त महाराष्ट्र समिति एव एस एम के कुशल नेतृत्व के सर बॅधता है।

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष

1959 मे प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का रजत जयती अधिवेशन मुम्बई मे बडे उत्साह के साथ मनाया गया। 1963 मे प्रसोपा का राष्ट्रीय सम्मेलन भोपाल मे हुआ। कार्यकारिणी ने अध्यक्ष पद के लिए एस एम के नाम का प्रस्ताव किया। सयुक्त महाराष्ट्र समिति के आन्दोलन मे उनकी भूमिका को दृष्टिगत रखकर ऐसा किया गया था। एच वी कामथ भी उम्मीदवार थे किन्तु आम राय एसेम के पक्ष मे ही थी।

एस एम के अध्यक्ष निर्वाचित होते ही प्रसोपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने अशोक मेहता को पार्टी से निलबित करने का प्रस्ताव किया। वह राष्ट्रीय कार्यकारिणी के बिना अनुमति लिए ही योजना आयोग के उपाध्यक्ष हो गए थे। इसके अतिरिक्त सयुक्त राष्ट्रसघ के अधिवेशन मे भारत के प्रतिनिधि के रूप मे उनको भारत सरकार ने नामित किया था। इन तमाम पहलुओ पर विचार करते हुए एस एम ने उन्हे सलाह दी कि वह अपने पार्टी सदस्यता का नवीनीकरण न करवाये। जब वह पार्टी के सदस्य ही नहीं रहेगे तो विवाद अपने आप शात हो जायेगा। किन्तु उन्होने इस सुझाव को नही स्वीकारा। उनका कथन था कि "वह अपने साथ अन्य लोगो को भी काग्रेस पार्टी मे ले जायेगे। अत मे उन्हें पार्टी से किया गया

समाजवादी एकता के एसेम के प्रयास

अशोक मेहता ने जो कहा था वही किया। वह अपने साथ अच्छी सख्या म पार्टी कार्यकर्त्ताओं को काग्रेस मे ले गए। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष होने के कारण एस एम को पूरे देश का दौरा करना पडा। उन्होने यह दौरा गोवा से शुरू किया। एम एम ने महाराष्ट्र गोमातक पक्ष के नेता वाडोडकर से वार्ता की। चुनावी समझौता हुआ। 1963 मे हुए गोवा के चुनाव मे वाडोडकर की पार्टी विजयी हुई। लोकसभा म प्रसोपा क नेता पीटर अल्वारिस पहुँचे और विधानसभा मे दो सीटे प्राप्त हुई । वाडोडकर मुख्यमत्री बन गए।

गोवा के चुनाव के बाद प्रसोपा एव डा लोहिया की पार्टी सोपा की एकता का रास्ता साफ हुआ। डा लोहिया ने प्रसोपा एव सोपा की बिना शर्त एकता की पेशकश की। वाराणसी मे नए दल का स्थापना सम्मेलन हुआ। किन्तु एक बार फिर बिखराव हो गया। कार्यकर्त्ताओ एव नेताओ की छोटी सी सख्या पार्टी से अलग हो गयी। उन्होने प्रसोपा बना ली किन्तु शेष लोग सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी मे ही बने रहे। 1997 के चुनाव मे ससोपा को व्यापक सफलता मिली। लोहिया की गैर काग्रेसवाद की नीति सफल रही। पुणे मे एस एम जोशी लोकसभा का चुनाव जीत गए। 1967 के बाद एस एम. चुनावी राजनीति से अलग हो गए किन्तु राजनीति करते रहे। प्रजा सोशलिस्ट पार्टी एव सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के वह तीन बार राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गए। 1967 मे डा लोहिया के निधन मे समाजवादी आयोजन को गहरा आघात लगा उनकी मृत्यु के बाद समाजवादी आन्दोलन उभर नही सका।

1977 मे लोकनायक जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन मे वह एक बार फिर पूरी शक्ति के साथ उतरे। वह वृद्धावस्था के बाद भी 1977 के आम चुनाव मे काग्रेस को भारी पराजय का सामना करना पडा। जनता पार्टी मे सम्मिलित सभी पार्टियो ने अपने को जनता दल मे समाहित कर दिया। एस एम जोशी का त्यागमय जीवन 1 अप्रैल 1989 को समाप्त हो गया।

परिशिष्ट

जीवन की कतिपय महत्त्वपूर्ण तारीखे

12 नवबर 1904	जन्म (जन्नर,महाराष्ट्र)
15 दिसबर 1915	पिताजी की मृत्यु
जून 1918	न्यू इग्लिश स्कू (पुणे) मे दाखिला
जून 1925	फर्ग्युसन कॉलेज (पुणे) मे दाखिला
23 दिसबर 1926	स्वामी श्रद्धानद की हत्या
13 अक्टूबर 1929	पर्वती सत्याग्रह
10 मई 1930	अलीबाग मे पहली गिरफ्तारी
22 जुलाई 1931	हॉटसन पर गोली दागने की खबर अखबार को भेजी
6 जनवरी 1932	मगल भुवन मे गिरफ्तारी और पुणे छावनी की सीमा मे नजरबदी
23 मार्च 1932	नजरबदी का बधन तोडने पर दो साल का सपरिश्रम कारावास
21–22 अक्टूबर 1934	काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का प्रथम अधिवेशन (बबई)
4 दिसबर 1934	डॉ एम एन राय की रिहाई की माग करनेवाली सभा मे बोलने पर 2 वर्ष का सपरिश्रम कारावास
1 अगस्त 1936	साबरमती जेल से रिहाई
11 अगस्त 1939	विवाह
10 जून 1940	युद्ध–विरोधी भाषण के कारण एक वर्ष की कैद
अप्रैल 1941	राष्ट्र सेवा दल का प्रमुख–पद
27 जून 1942	मातृ–वियोग
9 अगस्त 1942 से	
18 सितबर 1943 तक	भूमिगत जीवन

11 जून 1950	साने गुरुजी का आत्मार्पण
2 जुलाई 1950	युसुफ मेहरअली का देहात
2 अक्टूबर 1950	साने गुरुजी सेवापथक का नेतृत्व
अगस्त 1952	पुणे शहर मे उपचुनाव मे विधानसभा के लिए निर्वाचित
24 दिसबर 1954	सेवा दल के भूदान-पथक का नेतृत्व
10 दिसबर 1955	आचार्य जावडेकर का निधन
19 जनवरी 1956	सयुक्त महाराष्ट्र आदोलन मे पुलिस सबइस्पेक्टर आडवाणी का बचाव
9 फरवरी 1956	सयुक्त महाराष्ट्र समिति के महासचिव
19 फरवरी 1956	आचार्य नरेन्द्रदेव का निधन
17 जून 1957	सयुक्त महाराष्ट्र समिति के विधायक दल के नेता
11 जून 1963	प्रजा समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष
8 जून 1964	सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के अध्यक्ष
12 नवबर 1964	षट्य्ब्दपूर्ति समारोह अच्युत पटवर्धन की अध्यक्षता मे
6 जनवरी 1965	पुणे महा नगरपालिका से मानपत्र
7 अप्रैल 1965	ससोपा के दूसरी बार अध्यक्ष
12 अक्टूबर1967	डॉ लोहिया का निधन
1 जनवरी 1968	ससोपा के तीसरी बार अध्यक्ष
9 अगस्त 1971	प्रसोपा–ससोपा विलीनीकरण
26 जून 1975	आपातकाल घोषित
24 मार्च 1977	केंद्र मे जनता सरकार सत्तारूढ
18 जुलाई 1978	पुलोद सरकार महाराष्ट्र मे सत्तारूढ
15 जुलाई 1979	जनता सरकार टूटी
8 अक्टूबर 1979	जयप्रकाश जी का देहात
17 फरवरी 1980	पुलोद सरकार बरखास्त
1 अगस्त 1983	लोकमान्य तिलक सम्मान पारितोषिक
12 नवबर 1984	अस्सीवॉ जन्मदिन
1 अप्रैल 1989	देहावसान

कला, कविता और जनतांत्रिक मूल्यों के लिए समर्पित – यूसुफ मेहर अली

यूसुफ मेहर अली का जन्म बम्बई के एक सम्पन्न मुस्लिम बोहरा परिवार मे 23 सितम्बर 1903 को हुआ था। कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के नेता के रूप म, तथा मुम्बई क 1942 के तूफानी दौर के मेयर क रूप मे, उन्होने अपनी प्रतिष्ठा बढ़ायी थी। कांग्रेस के राष्ट्रीय नेतृत्व के मध्य वह अत्यत लोकप्रिय एव गतिशील नेता थे। उनके विकास मे उनके परिवार का कोई विशेष योगदान नही था। दूसरी कक्षा तक की उनकी पढ़ाई मुम्बई के ग्राट रोड के ट्रिगिल हाईस्कूल मे हुई थी। उसके पश्चात व बोरीबदर के न्यू हाईस्कूल मे भरती हुए थे, जिसका नाम बाद मे बदलकर भार्दा हाईस्कूल कर दिया गया था। प्रारम्भिक दिनो मे उनका नाम यूसुफ मर्चेन्ट था। मर्चेन्ट शब्द व्यापारी वर्ग से जुड़ा होने के कारण उन्हे नापसद था। इसलिए परिवार वालो ने उनका नाम यूसुफ मेहर अली कर दिया। तब से मृत्यु-पर्यन्त उनका यही नाम रहा तथा इस राष्ट्रभक्त को देश ने इसी नाम से जाना। विद्यालय मे उनके निकटतम मित्र मीनू मसानी तथा सोली बाटलीवाला थे। इन दोनो ने भी समाजवादी आन्दोलन एव स्वतत्रता सग्राम मे ख्याति अर्जित की थी। इस प्रकार इन तीनों को समान रूप से प्रसिद्ध मिली थी। यूसुफ मेहर अली एव सोली बाटलीवाला का दाखिला सेट जेवियर कालेज मे हुआ था किन्तु एक वर्ष बाद दोनो एल्फिस्टन कालेज मे चले गए। कालेज के दिनो मे यूसुफ मेहर अली मे व्यक्तिगत गुण उभरने लगा था जिससे उनका व्यक्तित्व अत्यत सरल एव आकर्षक लगने लगा तथा लोग उनसे आकर्षित होने लगे। यही गुण नेतृत्व के लिए आवश्यक होता है। यह गुण था लोगो से सहज दोस्ती कर लेना एव मित्रो से प्रेम व्यवहार बढ़ाना।

एल्फिस्टन कालेज की मकन्ज़ल डिबेटिंग सोसाइटी (वाद–विवाद समिति) यूसुफ मेहर अली एव उनके सहपाठियों की प्रतिभा निखारने मे सहायक सिद्ध हुयी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अखिल भारतीय सम्मेलन के दृश्यो की नाटकीय प्रस्तुति इस सोसाइटी ने आयोजित किया जिसमें अपनी कल्पना शक्ति की अच्छी मिसाल थी। इन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सम्मेलन के नाटको मे 'मौलाना यूसुफ मेहर अली, देशबधु देसाई, 'लोकमान्य' खडालावाला, 'महात्मा' भावे तथा मसानी ड्रामो मे पार्ट अदा करते थे। ड्रामे के मच मे इन पात्रों के लिए अदा किया गया यह रोल यूसुफ के जीवन में केवल ड्रामा नही रह गया था वह वास्तविकता मे परिणित हो रहा था। अब यूसुफ वाद-विवाद में शामिल होने लगे तथा पुरस्कार प्राप्त करने लगे

एल्फिस्टन कालेज मुम्बई की (सामाजिक अध्ययन मडल समिति) सोशल स्टडी सर्किल कमेटी ने यूसुफ मेहर अली की अध्यक्षता मे एक 'विश्वविद्यालय सुधार समिति' की स्थापना की थी। समिति के अन्य सदस्य थे जे सी पी डी आजाद, कुमारी एस वी देसाई, एस एम बाटलीवाला, वी जे इस्माईल तथा सचिव थे एच एस गीरवाई।

विश्वविद्यालय सुधार समिति के प्रशासनिक एव शैक्षणिक सुधार के सम्बन्ध मे जो रपट प्रस्तुत की गयी थी वह अत्यत ही महत्त्वपूर्ण एव खोजपूर्ण थी। यूसुफ तथा उनके साथियो की बौद्धिक प्रतिभा का एक प्रसारण था। आगे चलकर सुधार समिति के सदस्यो को राष्ट्रीय जीवन मे बहुत ख्याति मिली तथा उनकी योग्यता की प्रशसा की गयी।

यूसुफ मेहर अली जिस सस्था का निर्माण करते उसके लिए अद्भुत जगह खोजते। उन्होने तथा उनके साथियो ने एल्फिस्टन कालेज मे एक क्लब बनाया था। उसका नाम बदनाम रूसी रासपुतिन के नाम पर रासपुतिन क्लब रखा था। यह क्लब लडकियो को छेडने वाले लडकों को सैनिक अदालत की भाँति दड भी देता था। किन्तु यह कार्य मात्र हास्यविनोद तथा जीवन मे आनन्द लेने के उद्देश्य से ही होता था। कालेज के जीवन के दिनो मे यूसुफ कविता के शौकीन थे। उनका कथन था कि सवेदनशील मन ही कविता कर सकता है। कालेज की मैगजीन एल्फिस्टन मे प्रकाशित उनका लेख 'हाफिजे शीराज का बुलबुल' उनके काव्य बोध का उत्कृष्ट साहित्यिक प्रमाण है। महाकवि हाफिज का शीराज वतन था। उनकी कविताओ ने सदियो तक लोगो को प्रभावित किया है और आज भी कर रही है। यूसुफ ने एल्फिसटन कालेज की वार्षिक पत्रिका 'एल्फिस्टोनिया' मे हाफिज शीराजी के काव्य की बहुत सुन्दर टीका की है। उसमे स्वय मे उनका व्यक्तित्व झलकता है। हाफिज की शायरी मे आध्यात्मिकता एव प्राकृतिक एव मानवीय सौंदर्य का अत्यत सुन्दर एव सटीक बोध होता है। जो हाफिज शीराजी के युग के फारसी कवियो का रोचक विषय रहा है। यूसुफ के जीवन मे जो अध्यात्मिकता थी तथा जो सौंदर्य के प्रति उपासना थी उसने उनके मन को स्वच्छ एव निर्मल बना दिया था जिसकी छाप उनके मन पर स्पष्ट दिखायी देती थी। छात्र जीवन मे उनका कला एव कविता का रगीन पक्ष भलीभाँति पुष्पित एव पल्लवित हुआ। वोहरा परिवार मे जन्म लेने के कारण ईरानी सभ्यता एव सस्कृति का प्रभाव उनके ऊपर पडना स्वाभाविक था।

जिन दिनों यूसुफ मेहर अली एल्फिस्टन कालेज मे पढते थे उन दिनो उनके प्राध्यापक चार्ल्स जे सिसन थे जो अग्रेजी पढाते थे। उनकी पढाई की विधि निराली थी। वह विद्यार्थियो को अग्रेजी पढाने के बजाय अध्ययन कक्ष के विविध कोने मे खडे होकर शेक्सपीयर के नाटको के विभिन्न पात्रो की भूमिकाओ का अभिनय करके उनके सवाद बोलने के लिए कहते। यूसुफ भी शेक्सपीयर के पात्रो मे से किसी–किसी की भूमिका अदा करते थे। प्राध्यापक महोदय विविध अवतरणो को स्वय अत्यत प्रभावशाली शैली मे पढाते तथा उनके विद्यार्थी आनन्द-मग्न होकर उन वाक्यों को दोहराते। शेक्सपीयर को पढाने की इस प्रणाली का छात्रो के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ता। यूसुफ ने अपने जीवन में नाटकीयता की जिस भावना को आत्मसात कर लिया था उसके पीछे प्रो चार्ल्स सिसन का अत्यधिक योगदान था। उनके ही कारण यूसुफ के जीवन के बहुरगी पक्ष उजागर हो सके



II

यूसुफ मेहर अली को एल्फिंस्टन कालेज की नीरस वाद-विवाद प्रतियोगिता मे रुचि नही थी। अपनी जोशीली देशभक्ति को अमली जामा पहनाने के लिए वह 'बाम्बे स्टूडेन्ट ब्रदरहुड' नामक सगठन मे शामिल हो गए। इस प्रकार उन्हे इस सगठन की मार्फत खुले वातावरण म कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ।

इसी सगठन ने 20 मई 1928 को मुम्बई के ओपेरा हाउस में एक सभा का आयोजन किया जिसकी अध्यक्षता पंडित जवाहरलाल नेहरू ने की। सभा मे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस भी उपस्थित थे। उन्होने एक ओजपूर्ण भाषण दिया। उन्होने विश्वास दिलाया कि युवजनो की शक्ति से ब्रिटिश साम्राज्य का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा और देश स्वतत्र होगा। पडित नेहरू ने इस सभा मे युवकों से निष्ठापूर्वक कार्य करने तथा विद्रोह का बिगुल बजाने और देशप्रेम मे दीवानगी अपनाने पर बल दिया। इस कार्यक्रम का यूसुफ मेहर अली के युवा मस्तिष्क पर गहरा असर पडा। उन्होने पडित जवाहरलाल नेहरू एव नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के प्रथम दर्शन किए थे और उन दोनो के भाषणो से अभिभूत हो गए थे। उन्होने स्वतन्त्रता संग्राम मे कूदने और देश के लिए प्राण भी न्यौछावर करने का व्रत लिया। उस समय बम्बई मे राष्ट्रभक्त युवको की एकमात्र सस्था यूथ लीग थी जिसके वह सदस्य बन गए।

यूथ लीग के सचिव के नाते यूसुफ को विश्वशाति युवा काग्रेस मे भाग लेने के लिए हालैड जाना था। उस सम्मेलन मे स्वतन्त्रता के प्रति भारत की उत्कट आकाक्षा को अभिव्यक्त करने के लिए यूसुफ अत्यंत उपयुक्त प्रतिनिधि थे। मुम्बई स्टूडेन्ट्स ब्रदरहुड ने यह सोचकर कि अन्तर्राष्ट्रीय मच से भारत की स्वतत्रता की आवाज बुलन्द करने के लिए यूसुफ तथा उनके साथियो को हालैड अवश्य भेजा जाए। इसके लिए चन्दा एकत्र किया गया। इस प्रकार यूसुफ हालैंड जा सके।

यूसुफ मेहर अली जहाँ देश की स्वतन्त्रता के लिए सक्रिय थे वही छात्र समस्या के प्रति भी जागरूक थे। उन्होंने अपने कालेज मे बढी फीस के विरुद्ध आवाज उठायी। 13 जून 1928 को उन्होने यूथ लीग के तत्त्वावधान मे छात्रो एव युवा कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक बुलायी। जिसे के एफ नारीमन, एम एच कीत, ए आर. भट्ट तथा जोशिम अल्वा सरीखे लोगो ने भाग लिया। उसी वर्ष यूसुफ ने बगलूर मे छात्रो पर पुलिस की अधाधुध गोलीबारी का प्रतिरोध करने के उद्देश्य से एक बैठक का आयोजन किया।

यूसुफ मेहर अली ने श्रमिको को भी सगठित किया। 17 अगस्त 1928 को हडताली मिल मजदूरो के समर्थन मे यूथ लीग तथा बाम्बे स्टूडेन्ट ब्रदरहुड के सयुक्त तत्त्वावधान मे जनसभा का आयोजन किया गया जिसमे प्रख्यात ट्रेड यूनियन नेता एस एम जोशी तथा वी जी विट उपस्थित हुए। इस आदोलन से यह स्पष्ट हो गया कि युवा शक्ति एव श्रमिक शक्ति यदि सगठित हो जाए तो परिवर्तन की गति तेज हो सकती है।

यूसुफ को 8 1925 को इतिहास और अर्थशास्त्र में बी ए की डिग्री प्राप्त

हुई। उसके बाद मुम्बई के ला कालेज से उन्होने 26 जनवरी 1929 को विधि स्नातक की डिग्री प्राप्त की। किन्तु इसी वर्ष 10 अगस्त को मुम्बई उच्च न्यायालय के न्यायाधीशो ने उनकी उग्र राजनीतिक गतिविधियो के आरोप के मुकदमो की पैरवी करने का अनुमति पत्र देने से इकार कर दिया। इस प्रकार छोटी सी उम्र मे ही यूसुफ मेहर अली को ब्रिटिश सत्ता का एक खतरनाक विरोधी के रूप मे प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। यह उनकी देशभक्तिपूर्ण कार्यो का एक प्रमाण था।

III

1929 मे अपनी शिक्षा पूरी कर यूसुफ मेहर अली ने सक्रिय राजनीति मे प्रवेश किया। वह पूर्णकालिक राजनीतिक कार्यकर्ता बन गए। विश्राम उनके भाग्य मे कहां था ? एक बडी चुनौती उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह था भारत मे 'साइमन कमीशन' का आगमन। भारत सरकार अधिनियम 1919 के अन्तर्गत, 'ब्रिटिश भारत मे सरकार की कार्य पद्धति, शिक्षा के विस्तार तथा प्रतिनिधि सस्थाओ के विकास एव अन्य विषयों से सबधित मामलो की छानबीन करके इस बारे मे रपट प्रस्तुत करने के लिए' एक 'वैधानिक आयोग की नियुक्ति का प्रावधान किया था। इसे पता लगाना था कि 'क्या भारत मे उत्तारदायी शासन का सिद्धान्त लागू किया जाना वाछनीय होगा, यह भी कि किस सीमा तक अथवा तत्कालीन उत्तरदायी शासन का दर्जा सशोधित अथवा परिसीमित किया जाए, इसमे यह प्रश्न भी सम्मिलित है कि विधायिका के द्वितीय सदन की स्थापना वाछनीय है अथवा नही।

8 नवम्बर 1927 को ब्रिटिश सरकार ने एक सात सदस्यीय वैधानिक आयोग की नियुक्ति कर दी जिसके अध्यक्ष सर जान साइमन थे। उस आयोग के सभी सदस्य ब्रिटिश ससद के अग्रेज सदस्य थे तथा उसमे एक भी भारतीय को प्रतिनिधित्व नहीं दिया गया था। इस बात को लेकर सारे भारत मे रोष उत्पन्न हो गया। अंग्रेजो की इस चालबाजी से काग्रेस नेतृत्व अत्यत दुखी हुआ। उसने साइमन कमीशन पर अपनी नीति का खुलासा किया।

दिसम्बर 1927 को भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस ने साइमन कमीशन के बहिष्कार का प्रस्ताव पारित किया। मुस्लिम लीग, अखिल भारतीय उदार सघ, हिन्दू महासभा तथा भारत के लोक जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले अनेक संगठनो ने काग्रेस के बहिष्कार के प्रश्न पर अपनी सहमति एव सहयोग की घोषणा की।

3 फरवरी 1928 की रात मे बम्बई के मोल बन्दरगाह पर साइमन कमीशन के सदस्यो के साथ पानी का जहाज उतरा। उस दिन भोर मे तीन बजे से ही यूथ लीग के स्वयसेवक यूसुफ मेहर अली के नेतृत्व मे जुलूस निकालकर कमीशन के विरुद्ध नारे लगाने लगे। साइमन कमीशन जैसे मोल बन्दरगाह पर उतरा सैकडो कार्यकर्त्ता 'गो बैक साइमन' के नारे लगाते हुए बन्दरगाह के अन्दर घुसने की चेष्टा करने लगे। यूसुफ तथा उनके साथियो पर लाठीचार्ज किया गया किन्तु इस शेर दिल वाल नौजवान को झुकाया

नही जा सकता था। उन्होने लाठीचार्ज का आदेश देने वाले पुलिस सार्जेन्ट कार्टर पर मुकदमा चला दिया। 9 महीने बाद अदालत ने सार्जेन्ट पर 100 रु जुर्माना किया। यह यूसुफ एव उनके साथियो की विजय थी। किन्तु इसका मूल्य प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट पडित को चुकाना पडा। सरकार ने उन्हे स्थायी करने से इकार कर दिया। यूसुफ मेहर अली को भी मूल्य चुकाना पडा। उन्हे अदालत मे वकालत करने की अनुमति पत्र को देने से सरकार ने साफ इंकार कर दिया।

इस घटना के बाद यूसुफ मेहर अली एव उनके यूथ लीग के सदस्यो ने पूरे बम्बई मे साइमन कमीशन विरोधी पोस्टर चिपकाये तथा स्थान-स्थान पर कमीशन का विरोध किया गया। मुम्बई की ग्रान्ट रोड पर हजारो लोगो ने साइमन विरोधी नारे लगाये। यूसुफ को गिरफ्तार किया गया। उन्हे ग्रान्ट रोड के पुल के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लुढकाया गया। यूसुफ लहूलुहान हो चुके थे। किन्तु यूथ लीग के कार्यकर्त्ताओ का जोश ठडा नही पडता था। यूसुफ के इस उग्र प्रतिरोध के समाचार सम्पूर्ण देश मे फैल गए। जो लोग यह समझते थे कि विरोध प्रभावशाली नही रहेगा, उनका भ्रम टूटा। सम्पूर्ण देश मे 'साइमन गो बैक' के नारे गूँजने लगे। साइमन विरोधी आन्दोलन को गतिशील बनाने के लिए 'बाम्बे यूथ लीग' ने जिला सभागार में एक मीटिग बुलायी जिसमे एक राष्ट्रव्यापी आन्दोलन छेडने की अपील की गयी।

यूसुफ का साइमन विरोधी अभियान सफल रहा। साइमन साहब जैसे–जैसे भारत का भ्रमण करते आन्दोलन तीव्र से तीव्रतर होता जाता। लाहौर मे लाला लाजपत राय ने इसका तीव्र विरोध किया। उन पर इतनी लाठियॉ बरसाई गयीं कि कुछ दिनो बाद ही वह इस ससार से विदा हो गए। लखनऊ मे पडित जवाहरलाल नेहरू एव पडित गोविन्दवल्लभ पत को बुरी तरह पीटा गया। इन लोमहर्षक घटनाओ की गर्जना सेन्ट्रल असेम्बली मे की गयी। लाहौर मे ही पडित मदनमोहन मालवीय, डा गोपीचन्द भार्गव और मौलाना जफर अली के नेतृत्व मे साइमन कमीशन का उग्र विरोध किया गया। सायकाल लाहौर मे विरोध स्वरूप एक विशाल सभा का आयोजन किया गया जिसमें लाला लाजपत राय ने उद्घोष किया, 'हमारे सीने पर की गयी प्रत्येक चोट ब्रिटिश सरकार का कफन सिद्ध होगी।' लाला जी की 17 नवम्बर 1928 को इस घटना के कारण मृत्यु हो गयी।

लाला जी की हत्या से यूसुफ मेहर अली को भयंकर आघात लगा। उन्होने मुम्बई के युवको का आह्वान किया कि वह एकजुट होकर ब्रिटिश सत्ता से सघर्ष करते रहे। इस सघर्ष मे यूसुफ मुम्बई के लोगो के दिलो पर राज करने लगे। उनका नेतृत्व भरपूर उभरा। यूसुफ तथा उनकी इडियन यूथ लीग ने मुम्बई की दीवारो पर पोस्टर चिपकाया। पोस्टर इस प्रकार था–

- मिस्र में घृणित मिल्नर कमीशन का प्लेग की भाँति हर जगह बहिष्कार किया गया

यदि वे रेस्त्रॉ मे जाते तो बैरे भोजन परासने से इकार कर देते।

जन आक्रोश समूचे मिस्र मे उनका पीछा करता रहा।

वे परेशान एव अपमानित हुए, उनके षडयत्र विफल रहे। वे कलकित होकर अपने देश को भाग गए।[1]

यूसुफ मेहर अली पर सरदार पटेल के बारदोली सत्याग्रह का भी प्रभाव पडा था। बाम्बे प्रेसीडेन्सी मे यूथ लीग के बारदाली सत्याग्रह के लिए जन समर्थन जुटाने का भरपूर प्रयास किया।

यूसुफ मेहर अली द्वारा तैयार की गयी 'बाम्बे प्रेसीडेसी यूथ लीग' की वर्ष 1928 की प्रथम वार्षिक रपट मे बारदोली सत्याग्रह तथा उस पर लीग की प्रतिक्रिया पर मुखर टिप्पणी की गयी है। श्री मधु दडवते लिखते है--

'हमारी गतिविधि का अगला महत्त्वपूर्ण चरण बारदोली सघर्ष था। वह अचानक वज्र की भॉति टूट पडा, उसने अन्य सभी प्रश्नो को गौण कर दिया तथा वह देश के सपूर्ण राजनीतिक जीवन पर छा गया। युवाओ के अनेक दल समस्या को प्रत्यक्ष रूप से समझने तथा बारदोली के वीर किसानो से पेरणा ग्रहण करने के लिए सघर्ष क्षेत्र (बारदोली) होकर आए। समूचे प्रेसीडेसी क्षेत्र के युवाओ ने तत्काल बारदोली के प्रश्न को हाथ मे ले लिया तथा बारदोली सत्याग्रह के आश्चर्यजनक एव अविस्मरणीय उत्साह के दृश्य तथा उसमे जनता की गहरी दिलचस्पी ने नौकरशाही को होश मे लाने की दिशा मे योगदान किया। यह एक काफी कुछ सीमा तक यूथ लीग के परिश्रम का फल था। 4 जुलाई 1928 को बबई के युवाओ ने जिस उत्साहपूर्वक बारदोली दिवस मनाया उसे भुलाया नही जा सकता। गर्मजोशी से परिपूर्ण सभा तथा युवाओ द्वारा सरदार वल्लभ भाई पटेल के अद्भुत स्वागत के पश्चात मूसलाधार वर्षा के बीच ही जुलूस एम्पायर थियेटर से शुरू हुआ। उसमे हजारो युवा थे। वह दृश्य सदा ही उनके लिए एक सुखद और प्रिय स्मृति बना रहेगा। बॉम्बे यूथ लीग की 'बारदोली प्रचार तथा राहत समिति' ने अपने पूरक कार्य के रूप मे बारदोली गाथा के प्रसार के लिए समय--समय पर बढिया भाषणो का भी आयोजन किया। सरदार वल्लभभाई पटेल के फोटो वाले बटन, बारदोली सत्याग्रह के झडे बारदोली अभ्यास पुस्तिकाएँ आदि के वितरण ने सत्याग्रह अभियान को बल पहुचाया।[2]

बाम्बे प्रेसीडेसी यूथ लीग का दूसरा सम्मेलन 12 तथा 13 सितम्बर 1928 को पुणे मे हुआ। इस सम्मेलन मे यूसुफ मेहर अली प्रमुख आकर्षण का केन्द्र थे। लीग के समक्ष दो महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव 1 प्रेसीडेसी यूथ लीग के सविधान की स्वीकृति तथा 2 पूर्ण स्वराज्य को तत्काल राष्ट्रीय लक्ष्य घोषित करना। इस पर पूर्ण मनोयोग से बल दिया गया था।

---

1 यूसुफ मेहरअली नये क्षितिजों की खोज—मधु दडवते पृष्ठ 15

2 वही पृष्ठ 17

यूथ लीग का सविधान का प्रारूप यूसुफ मेहर अली ने बहुत मेहनत से तैयार था इसमे उस युवा पीढी के चिन्तन का बोध होता है जो 1930 के आस पास हो रही थी। श्री मधु दडवते के अनुसार –

लीग का सविधान :

उद्देश्य तथा आदर्श :– लीग का उद्देश्य एक सार्वजनिक सगठन तथा समान र्गों के अनुसरण द्वारा बाम्बे प्रेसीडेंसी के युवाओ मे एकता लाना, उनमे स्वैच्छिक सेवा आत्मबलिदान की भावना फूँकना तथा भारत के लिए पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने का य लेकर मातृभूमि की सेवा करने के लिए तैयार करना है।

उद्देश्य की पूर्ति के लिए लीग :

हर तरह की साम्प्रदायिकता से सघर्ष करेगी तथा अपने सदस्यो मे एक व्यापक सहनशीलतापूर्ण और विश्वबधुत्व के दृष्टिकोण को प्रोत्साहन देगी

उन प्राचीन सामाजिक एव धार्मिक प्रथाओ के निराकरण के लिए कार्य करेगी जिनकी उपादेयता कभी की समाप्त हो चुकी है,

विद्यालयो और महाविद्यालयो मे शारीरिक तथा सैनिक शिक्षा की सुविधाओ मे वृद्धि की माग करना तथा जहॉ सभव हो वहॉ इस प्रकार की सुविधाय अपनी ओर से प्रदान करना एवं जिमनेजियम और अखाड़ा आदोलन के प्रसार मे सहायता देना

स्वदेशी को प्रोत्साहन देना,

युवाओं की बेरोजगारी मे वृद्धि के कारणो का अध्ययन करना तथा जहॉ सभव हो उसके निराकरण के लिए उपाय और साधन सुझाना,

समूची प्रेसीडेसी मे तत्काल नि शुल्क एव अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा लागू करने तथा माध्यमिक, उच्च एव व्यावसायिक शिक्षा के विस्तार की माग करना,

प्रेसीडेसी के युवाओ मे सार्वजनिक प्रश्नो पर गहन अध्ययन, स्वतत्र चिन्तन, अनुशासित स्वतन्त्रता तथा उत्तरदायित्व की नागरिक चेतना का विकास,

अतर्राष्ट्रीय प्रश्नो के अध्ययन को प्रोत्साहन देना,

ऐसी अन्य गतिविधियॉ हाथ मे लेना जिसमे प्रेसीडेसी के युवाओ की सक्रिय रुचि हो।

यूसुफ ने अधिवेशन के समक्ष निम्न प्रस्ताव रखा जो यूथ लीग द्वारा अपने लिए कृत इस सविधान की भावना के सर्वथा अनुरूप था

"यह सम्मेलन अपने इस सुविचारित मत की घोषणा करता है कि राष्ट्र का कालिक लक्ष्य पूर्ण स्वराज्य होना चाहिए।"

पूर्ण स्वराज्य को तत्काल राष्ट्र का तात्कालिक लक्ष्य घोषित करने की माग के अपने इस प्रस्ताव का यूसुफ ने जोरदार ढग से समर्थन किया।

"पूर्ण स्वराज्य" सबधी प्रस्ताव पारित कराने के पीछे यूसुफ का प्रयोजन "पूर्ण स्वराज्य" को काग्रेस के नए लक्ष्य के रूप मे स्वीकार करने की दिशा मे बढने के लिए भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के नेताओ को बल पहुँचाना था। यूथ लीग के लिए यह गर्व और आनद का विषय रहा कि भारतीय तट पर आयोजित अपने लाहौर अधिवेशन मे यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया जिसमे "पूर्ण स्वराज्य" को उसका लक्ष्य घोषित किया गया था। इससे पहले कांग्रेस के कुछ वामपथी नेताओ ने यूथ लीग के पूर्ण स्वराज्य सबधी प्रस्ताव को बालको जैसी एक नसमझी पूर्ण बात कहकर हसी उडाने की चेष्टा की थी। किन्तु जब मातृ सगठन भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस ने अपने लाहौर अधिवेशन मे पूर्ण स्वराज्य को अपना लक्ष्य घोषित कर दिया तब यूथ लीग के आलोचको पर व्यग्य कसते हुए यूसुफ मेहर अली ने कहा था, "बालक मनुष्य का पिता होता है।"

स्वतंत्रता सग्राम के जो स्वर आम जनता के मध्य गुजायमान होते थे उनके स्वर विधान मडलो मे भी सुनाई पडते थे। विट्ठल भाई पटेल केन्द्रीय विधानसभा के अध्यक्ष थे किन्तु उन्होने अपने कर्त्तव्य की कभी उपेक्षा नही की और न ब्रिटिश सरकार से वह डरे। श्री मधु दडवते लिखते है –

" साइमन वापस जाओ "

"सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक" के विरुद्ध गहरा रोष व्याप्त था, और सरदार भगत सिह और उनके साथियो ने केन्द्रीय विधानसभा मे एक झूठमूठ के बम का विस्फोट किया था उन्ही दिनो केन्द्रीय विधानसभा मे उस विधेयक पर विचार विमर्श के दौरान उसकी अध्यक्षता करते हुए विट्ठलभाई पटेल ने यह व्यवस्था देकर असाधरण साहस का परिचय दिया कि केन्द्रीय विधानसभा मे "सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक" पर होने वाली चर्चा उन्ही दिनो क्रान्तिकारियो के विरुद्ध चलाए जा रहे मेरठ षडयत्र मुकदमे की सुनवाई को प्रभावित कर सकती थी अत उस विधेयक पर किसी प्रकार की बहस नही की जा सकती थी।

केन्द्रीय विधानसभा के अध्यक्ष के इस दृढ तथा साहसिक निर्णय का यूसुफ मेहर अली पर गहरा प्रभाव पडा तथा उन्होने विटठ्लभाई पटेल को उनके प्रशसनीय साहस पर बधाई देने के लिए मुम्बई के माटुगा क्षेत्र के पैप्पू सभागार मे एक सार्वजनिक सभा बुलायी, जिसमे उन्होने अपनी चिरपरिचित शैली में अपने श्रोताओं से कहा "सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक अध्यादेश को लागू करके वायसराय ने जिस बम का विस्फोट किया है वह केन्द्रीय विधानसभा मे हुए बम विस्फोट की अपेक्षा कही अधिक हानिकारक और [illegible] है।"[3]

3 यूसुफ मेहर अली—नये क्षितिजों की खोज—पृष्ठ—17 18 19

यूथ लीग ने महात्मा गाधी के नेतृत्व मे चले स्वदेशी आन्दोलन मे भाग लिया तथा अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया था। यूसुफ मेहर अली ने अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय देते हुए स्वदेशी वस्तुओ का प्रचार करना प्रारम्भ किया उसके लिए गाने तैयार किए तथा विदेशी वस्तुओ एव स्वदेशी वस्तुओ की मूल्य सूची देकर दोनो का तुलनात्मक अध्ययन किया जिससे कि लोग स्वदेशी के प्रति आकृष्ट हो। यूथ लीग के स्वयसेवक स्वदेशी का प्रचार करते हुए घूमते रहते थे। इन लोगो ने मुम्बई मे एक स्वदेशी बाजार भी लगाया था। यह लोग मेरठ काड के क्रान्तिकारियो के लिए चन्दा भी एकत्रित करते थे। यूसुफ राजनीतिक बन्दियो के लिए जेल मे सहायता भिजवाने का भी प्रबध करते थे।

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी जतिन दास ने राजनीतिक बन्दियो के अधिकारो के लिए लाहौर जेल मे अपने साथियो सहित आमरण अनशन कर दिया था। यह अनशन 60 दिन तक चला। जतिन दास ने सितम्बर 1928 को प्राण त्याग दिए। सारा देश सिहर उठा। सरकार ने माग मान ली। किन्तु कब जब इस राष्ट्रभक्त की इहलीला समाप्त हो गयी। सायकाल यूथ लीग ने एक विशाल जुलूस निकाला। चौपाटी पर यह विशाल प्रदर्शन अग्रेजी साम्राज्य विरोधी नारे लगा रहा था। लाठियो के प्रहार से यूसुफ विचलित नही हुए। उन्होने निरन्तर सघर्ष की अद्भुत मिसाल कायम की थी।

मुम्बई मे बडाला के नमक सत्याग्रह मे युसूफ ने वीरता की एक ओर मिसाल प्रस्तुत की थी। नमक सत्याग्रह मे भाग लेने हजारो लोग एकत्र हुए थ। उन पर पुलिस ने बेरहमी से घोडे दोडाये। इस निर्दयता से क्रोधित यूसुफ ने एक दौडते हुए घोडे की लगाम पकड ली। घोडा तेज गति से भाग रहा था किन्तु यूसुफ ने नही छोडा। अत मे उसे रुकना पडा तब उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया।

IV

काग्रेस द्वारा चलाये गए सविनय अवज्ञा आदोलन की गति मद पड रही थी। 1932 के आसपास काग्रेस मे सविधानवादियो का वर्चस्व बढ रहा था। 1934 मे मुम्बई मे काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का प्रथम सम्मेलन हुआ जिसमे एक प्रतिनिधि के रूप मे युसूफ मेहरअली ने भी भाग लिया। काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के प्रवक्ता यूसुफ मेहरअली इस निश्चित मत के थे ब्रिटिश शासन भारत पर जो भी विधान थोपेगा वह नकली होगा जिसे किसी भी स्थिति मे स्वीकार नही किया जाएगा। इसलिए भारत के सविधान का निर्माण एक सविधान निर्मात्री सभा ही कर सकती है। समाजवादी एक नकली सविधान के अन्तर्गत काग्रेस द्वारा पद स्वीकार किए जाने के विरुद्ध थे। अपने दृष्टिकोण के समर्थन मे 14 जनवरी 1935 को चौपाटी पर युसूफ ने एक सभा का आयोजन किया जिसमे ब्रिटिश सरकार द्वारा पारित सविधान के प्रारूप को प्रतिक्रियावादी तथा साम्राज्यवादी बताया गया। प्रस्ताव मे कहा गया था, "काग्रेस समाजवादी दल के तत्त्वावधान मे आयोजित इस सभा का यह मत है कि सयुक्त संसदीय समिति के प्रतिवेदन में जिस ढाँचे की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी है वह भारत के जनता को पूर्णतया

अस्वीकार्य है क्योकि इसमे ब्रिटिश साम्राज्यवाद का यह प्रयास निहित है कि वह इस देश के प्रतिक्रियावादी तत्त्वो की सहायता प्राप्त करके इस देश पर अपनी पकड सुदृढ बनाए रखे।"[4]

अपने प्रस्ताव के समर्थन मे युसूफ मेहर अली ने उपस्थित जन समूह को बतलाया कि तीन दिन बाद दिल्ली मे काग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक हो रही है जिसमे यह तय करना था कि सयुक्त ससदीय समिति के प्रतिवेदन पर होने वाली बहस के दौरान विधान सभाओ के कांग्रेसी सदस्यो का दृष्टिकोण अपनाये। उन्होंने स्पष्ट किया कि "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है तथा भारत के लिए सविधान बनाने का अधिकार किसी भी अभारतीय को नही दिया जा सकता है।"[5]

समाजवादी नेताओ आचार्य नरेन्द्रदेव, डा राममनोहर लोहिया एव जयप्रकाश नारायण की भाँति यूसुफ मेहर अली भी यह मानते थे कि स्वराज्य के लिए भारतीय जनता का सघर्ष, आर्थिक सघर्ष के साथ जुडा था। मुम्बई शाखा के काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के श्रम सचिव होने के नाते यूसुफ मेहर अली ने 23 मार्च 1935 को बाम्बे क्रानिकल मे एक विस्तृत लेख लिखकर स्पष्ट किया कि, "श्रमिक सगठित हो जाये तथा अपने अधिकारो के लिए सघर्ष करे। सघर्ष के लिए श्रमिको का सुदृढ सगठन खडा किया जाए। आर्थिक शिकायतो को दूर कराने के सतत् सघर्ष चलाने के प्रयोजन से बनाये गये संगठन को ट्रेड यूनियन कहा जाता है। श्रमिक सघ वर्ग-सघर्ष का एक उपकरण होता है। श्रमिक वर्ग को यह मानना चाहिए कि उनकी आर्थिक माँगे राजनीतिक स्वतन्त्रता के बिना पूरी नहीं हो सकती। श्रमिक वर्ग को अपनी जीवन दशा सुधारने के लिए राजनीतिक स्वतन्त्रता के लिए लडना होगा।"

स्वतन्त्रता के इस सघर्ष मे श्रमिक वर्ग अकेला नही है। स्वतन्त्रता के लिए वे कृषक तथा मध्यम वर्ग भी सघर्ष कर रहे है, जो श्रमिकों के समान ही शोषित हैं। स्वतन्त्रता के सघर्ष मे श्रमिक वर्ग तभी विजयी होगा जबकि वह कृषक वर्ग तथा मध्यम वर्ग के साथ जुटकर लडेगा।'

एक ओजस्वी समाजवादी के नाते यूसुफ देश की किसी भी ज्वलत समस्या की अनदेखी नही कर पाते थे। वह प्रत्येक समस्या के लिए सघर्ष को तत्पर रहते थे। किन्तु उनकी मूल दिलचस्पी युवाओ को सगठित करने तथा उन्हे समाजवादी समाज के निर्माण की दिशा मे सक्रिय बनाने मे थी।

काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की मुंबई शाखा ने एक व्याख्यान माला का आयोजन किया जिसमें 'चीन कल और आज' का आधार' सरीखे विषयों पर दिलवाये

उद्देश्य से अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग करते थे। उन्होने 11 नवम्बर 1935 को पड़ने वाले युद्ध दिवस को युद्ध विरोधी दिवस के रूप मे मनाया। इस आन्दोलन में साम्यवादी भी शामिल थे। एक सभा की अध्यक्षता डा लोहिया ने की थी। इस प्रकार विभिन्न अवसरो पर दिवस मनाकर तथा सभाये करके वे जागरूकता बनाये रखते थे।

1935 मे हुआ काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का सम्मेलन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था। सम्मेलन का लेखा- जोखा प्रस्तुत करने के लिए 28 जनवरी 1936 को मुम्बई के जिन्ना हाल मे एक सभा आयोजित की गयी। इस सभा के मध्य मुख्य मुद्दा था काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के मध्य उभरा काग्रेस का वर्ग चरित्र। इसमे कहा गया कि जब तक काग्रेस की नीतियो मे आमूल परिवर्तन नही किए जाते तथा उसे शोषित वर्ग की इच्छाओ एव आकाक्षाओ का बिम्ब नही बनाया जाता उसको समाज के मजदूर, किसान एव सर्वहारा का समर्थन नही प्राप्त होगा। सितम्बर 1936 मे आध्र समाजवादी पार्टी का सम्मेलन किया गया जिसमे अध्यक्षीय भाषण यूसुफ मेहर अली ने दिया।

2 अक्टूबर 1936 को बगाल काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सम्मेलन मे उन्होने साम्प्रदायिक समस्या की ओर प्रतिनिधियो का ध्यान खीचा। यूसुफ मेहर अली ने "क्या पढ़े"? के शीर्षक से एक "अध्ययन कार्यक्रम" तेयार किया। इस पाठ्यक्रम मे महत्त्वपूर्ण निबंध सग्रहीत हे। अध्ययन शिविर के पाठ्यक्रम म सम्मिलित निम्नलिखित सूची से ज्ञात होता है कि मेहर अली ने प्रशिक्षण शिविर की योजना कितन परिश्रम से तेयार की थी।

समाजवादी दल का इतिहास	4 भाषण
आधुनिक पूँजीवाद का विकास	2 भाषण
समाजवाद का सिद्धान्त	3 भाषण
साम्राज्यवाद	2 भाषण
फासीवाद	1 भाषण
भारतीय राष्ट्रीय आदोलन का इतिहास	3 भाषण
भारत मे कृषि संबंधी समस्याये	2 भाषण
भारत मे दमनकारी कानून	1 भाषण
सोवियत सघ	1 भाषण
अमेरिका मे नए विचार	4 भाषण
निकट पूर्व मे उमडता ज्वार	1 भाषण
स्पेन और उसका भविष्य	1 भाषण

इसके अतिरिक्त मार्क्स, एंजेल्स, लेनिन, स्टालिन तथा ट्राटस्की पर एक-एक भाषण।

यूसुफ मेहर अली की दिलचस्पी कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ताओ को प्रशिक्षण देने की तो थी ही, इसके साथ ही साथ श्रमिक वर्ग को सगठित करने की भी थी। जून 1937 मे मालाबार यात्रा के दौरान उनकी सभाओ पर रोक लगा दी गयी थी। कालीकट मे उन्हे गिरफ्तार किया गया तथा 6 माह का दड दिया गया।

V

यूसुफ मेहर अली कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के अत्यंत जुझारू एव कल्पनाशक्ति से भरपूर नेता थे। उनमे साहस एव त्याग भावना की कमी नही थी। राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति का कोई भी महत्त्वपूर्ण प्रश्न शायद ही उनकी दृष्टि से छूटा हो उन्हाने 22 मार्च 1938 को मुम्बई की चौपाटी पर एक सभा बुलायी जिसका उद्देश्य काग्रेसी सरकार द्वारा बम्बई नगर निगम के लोकतत्रीकरण के लिए स्थायी निगमो के चुनावो मे मताधिकार लागू करने की मॉग को उठाना था। 28 मार्च 1938 को लाहौर मे एक सार्वजनिक सभा मे राज्य के किसानो द्वारा चलाये जा रहे दमन विरोधी सघर्ष के प्रति पूर्ण समर्थन व्यक्त करना था। यह प्रस्ताव यूसुफ मेहर अली ने प्रस्तुत किया था।

सन् 1938 मे समाजवादी दल के लाहोर अधिवेशन मे कम्युनिस्टो एव सोशलिस्टो के मतभेद प्रकट हो गए। कम्युनिस्टो के भी षडयत्र की मशा स्पष्ट हाने लगी थी।

लाहौर अधिवेशन के अवसर पर जिस समय यूसुफ अध्यक्षीय भाषण पढ़ रहे थे सभा स्थल के एक कोने मे हलचल शुरू हुई जहॉ कम्युनिस्ट कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। यूसुफ को सगठन के सचालन का भरपूर अनुभव था। उन्होने सभा को नियत्रित किया।

यूसुफ मेहर अली की गतिविधि हिन्दुस्तान तक ही सीमित नही थी। उन्होने 1938 मे ही भारत के प्रतिनिधि के रूप मे योरोप और अमेरिका का दौरा किया था।

इडिया लीग ने उनके स्वागत मे लदन के कैक्सटन हाल मे एक विशाल समारोह का आयोजन किया था। ट्रिब्यून के सपादक विलियम मेलर ने समारोह की अध्यक्षता तथा उसमे संसद सदस्य रेजीनाल्ड सोरेन्सन और कु. मोनिका ह्वाल्टै सरीखे प्रसिद्ध लोग सम्मिलित हुए थे। ट्रिब्यून के सवाददाता ने उनके भाषण को विचारोत्तेजक एव भावनापूर्ण बताया था। एक अन्य समारोह मे टाइम्स आफ इडिया के सवाददाता ने उनके भाषण को भावनापूर्ण बताया था। विश्व युवा काग्रेस मे भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए उन्होने 4 अगस्त को योरोप से अमेरिका के लिए प्रस्थान किया। इस काग्रेस में भाग लेकर वे 24 दिसम्बर 1938 को भारत लौटे काग्रेस पार्टी के ने उनका हार्दिक अभिनन्दन किया

VI

सन् 1939 मे द्वितीय विश्व युद्ध प्रारम्भ हुआ। यूसुफ काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की इस नीति मे पूर्णतया सहमत थे कि साम्राज्यवादी सूत्र के विरुद्ध जिसमे भारत को उसकी सहमति के बिना ही घसीट लिया गया था, एक विराट आदोलन छेडा जाना चाहिए। काग्रेस समाजवादी दल युद्ध मे ब्रिटिश शासन को सहयोग देने का घोर विरोधी था। सोशलिस्टो ने गाधी जी से कहा कि युद्ध का लाभ उठाकर स्वतत्रता सग्राम तेज किया जाये। यूसुफ मेहर अली ने डेहरी–आन–सान मे बिहार के समाजवादियो के सम्मेलन की अध्यक्षता की। मेहर अली ने 1940 मे हुए व्यक्तिगत सत्याग्रह का पूरे मन से समर्थन नही किया। वह जन आन्दोलन चाहते थे। किन्तु वह उसमे सम्मिलित हुए।

सी आई डी पुलिस कमिश्नर की मुम्बई की विशेष शाखा क अनुसार उन्हे 17 सितम्बर 1940 को प्रात 5 बजे गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हे भादावला रेलवे स्टेशन द्वारा नासिक रोड केन्द्रीय कारागार भेज दिया गया।

27 और 28 सितम्बर 1941 मे पटना म आयोजित अखिल भारतीय छात्र सघ के सातवे सम्मेलन के अध्यक्ष यूसुफ मेहर अली थे। उन्होने उस अवसर का उपयोग महात्मा गाधी द्वारा शुरू किए गए व्यक्तिगत सत्याग्रह के प्रति समाजवादियो की दृष्टि तथा विश्व युद्ध के दौरान फॅसे हुए ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध व्यक्तिगत सत्याग्रह की जो राष्ट्रीय आदोलन के रूप मे परिणति की अनिवार्यता को स्पष्ट करने के लिए किया। काग्रेस के अन्दर वामपंथी विचारधारा के लोग चाहते थे कि काग्रेस को जन आदोलन के माध्यम से युद्ध मे फॅसी ब्रिटिश सरकार के कार्यो मे प्रभावशाली ढग से बाधा डालनी चाहिए।

मेहर अली ने छात्रों के सम्मुख यह स्पष्ट किया कि व्यक्तिगत सत्याग्रह मे 30 हजार भारतीयो की गिरफ्तारी, ससद एव विधानसभाओ से काग्रेसी सदस्यो का त्यागपत्र ब्रिटिश शासन से पूर्ण रूप से असहकार तथा शासन के कार्यो मे जनता की निष्क्रियता मे विश्व के समक्ष यह बात स्पष्ट हो गयी है कि भारत साम्राज्यवादी युद्ध से पूर्णतया सम्बन्ध विच्छेद कर चुका है।

यूसुफ मेहर अली ने छात्रो को स्वदेशी, हिन्दू-मुस्लिम एकता एव सहकार प्रतिक्रियावादी विचारो से अलगाव तथा प्रगतिशील विचारो से जुडाव पर बल दिया।

VII

मुम्बई नगरपालिका को इस बात का गर्व होना चाहिए कि एक स्वतत्रता सग्राम का सैनिक, समर्पित समाजवादी तथा निष्कलक व्यक्तित्व का मालिक यूसुफ मेहर अली 1942 के महापौर पद के उम्मीदवार बने। काफी वाद–विवाद के पश्चात चुनाव हुआ यूसुफ को 65 मत प्राप्त हुए तथा उनके दो को 26 और 9 मत प्राप्त हुए

जवादियो के लिए यह क्षण अत्यत प्रसन्नता एव उत्साह के थे।

महापौर पद के लिए यूसुफ का निर्वाचन बडा नाटकीय था। जिस समय महापौर पद के लिए उनका नामाकन के लिए उनके नाम का चयन किया गया वह लाहोर जल मे नजरबद थे। काग्रेस के दिग्गज नेता उनके नाम के विरोधी थे किन्तु सरदार पटेल ने उनके समर्थन मे अपनी पूरी शक्ति लगा दी थी। इसी का परिणाम था कि यूसुफ मेहर अली काग्रस के प्रत्याशी बन सके थे। ब्रिटिश सरकार ने महापौर के चुनाव मे भाग लेने के लिए उन्हे जेल से मुक्त कर दिया।

मुम्बई के प्रथम समाजवादी मेयर के रूप म उन्होंने अत्यत इमानदारी एव निष्पक्ष ढग से नगर निगम की कार्यवाही का सचालन किया। मुम्बई महापौर के नाते उन्होने विश्व युद्ध के दोरान जनता की सुरक्षा का काम सरकार की रक्षा पर छोडन से इकार कर दिया। उन्होने नगर निगम की ओर से एक स्वयसेवी जत्थ (पॉपुलर वालटरी ब्रिगेड) का गठन किया।

इस गरिमापूर्ण पद पर प्रतिष्ठित होने के बाद उन्होने अपने समाजवादी चरित्र को नही छोडा। जब राज्यपाल ने उनके स्वागत मे रात्रिभोज का आयोजन किया तो उन्होंने उन प्रतिष्ठित मेहमानों के मध्य अपने कार चालक का भी बैठाया।

लोकतान्त्रिक समाजवादी होने के नाते उन्होन अपने विचारो के प्रचार एव प्रसार के लिए भरपूर प्रयास किया। उन्होने इस हेतु पद्मा प्रकाशन की बुनियाद डाली जिसके वह स्वय सपादक थे। उनके दो प्रकाशन मे प्रथम कमला देवी चट्टोपाध्याय की पुस्तक युद्ध मे खंडित चीन' तथा यूसुफ मेहर अली की पुस्तक 'भारत के नेता (लीडर्स आफ इडिया) काफी लोकप्रिय हुई। यूसुफ मेहर अली के पद्मा पकाशन ने महात्मा गाधी के आशीर्वाद से 'भारत छोडो' (क्विट इडिया) नामक पुस्तक प्रकाशित की। यह पुस्तक इतनी लोकप्रिय हुई कि लगभग चार सप्ताह मे इसक छ सस्करण बिक गए।

मुम्बई के काग्रेस महासमिति के अधिवेशन मे चरम परिणति के रूप मे 8 अगस्त 1942 को 'भारत छोडो' पस्ताव पारित हुआ। इस अधिवेशन मे भाग लने के लिए जब महात्मा गाधी मुम्बई पधारे तो उनका स्वागत महापोर के नाते यूसुफ मेहर अली ने किया। काग्रेस महासमिति के अधिवेशन तथा काग्रेस साशलिस्ट पार्टी की भूमिका का अत्यत सुन्दर चित्रण करते हुए मधु लिमये ने लिखा है–

"अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की वैठक गायालिया टैक के मैदान मे बनाए पडाल मे होने वाली थी। उससे पहले वर्किंग कमेटी की बेठक हुई। गाधी जी की 'क्विट इडिया' घोषणा तथा अतिम आदोलन का जिहाद छेडने वाला प्रस्ताव पारित किया गया। इस प्रस्ताव मे यह कहा गया था कि 'स्वराज्य में सत्ता खेतो, कारखानो तथा अन्य जगहो पर काम करने वाले श्रमिको के हाथों में होनी चाहिए वर्किंग कमेटी की बैठक के लिए आचार्य नरेन्द्र देव अच्युतराव पटवर्धन तथा डॉक्टर लोहिया जी को भी बलाया गया उस

साल मुबई महानगर पालिका क मेयर थे, यूसुफ महर अली। गाधी के स्पश से मुबइ मे भी समाजवादी तथा सदोबा पाटील के बीच जो अविश्वास तथा कड़ुवाहट थी, वह मिट गइ थी ओर उसका स्थान एकता तथा सहयोग न ल लिया था। सरदार पटल जी के आशीर्वाद से यूसुफ के गले मे मेयर पद की माला डाल दी गई थी। इसके अलावा सभावित हवाई हमले के दौरान लोगो की हर तरह की सहायता करने की जिम्मेदारी राष्ट्रीय सभा की मुबई कमेटी न स्वतत्र रूप से अपने कधो पर ली थी। उसके लिए एक स्वयसेवक दस्ता भी तैयार किया गया। लोग भी बडे उत्साह के साथ उसमें शामिल हो रह थे। इस दस्ते क नेता अशोक मेहता थे। यूसुफ मेहर अली मगर के नाते तथा अशोक मेहता इस दस्ते के सेनापति के रूप मे बडी ही आकर्षक यूनिफार्म मे अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की बैठक मे शान से घूम रहे थे। इस समारोह मे समाजवादियो को जो सम्मानजनक स्थान मिल रहा था यह देखकर हम तो खुशी स फूले नही समा रह थ। गोवालिया टैंक मैदान पर पुस्तको, साहित्यो के स्टाल लगाए गए थे। गाधी साहित्य की माग थी। जवाहरलाल जी की कृतियो को भी बेचा जा रहा था। समाजवादी सोच स सबधित किताबो का भी वितरण हो रहा था। लेकिन सबसे ज्यादा भीड उस स्टॉल पर उमड पडी थी जहाँ पद्मा प्रकाशन सस्था की पुस्तिकाएँ बिक्री हेतु रखी गई थी। इस नये प्रकाशन के पीछे यूसुफ मेहरअली जी की प्रेरणा थी। 'क्विट इडिया' इस शीर्षक के तहत गाधी जी के हाल ही के कुछ चुनिदा लखो का सग्रह पद्मा पकाशन ने निकाला था। गरमागरम पकौडो, सेव--गाठियो पर जिस तरह से लोग टूट पड रह थ ठीक उसी तरह जिज्ञासु लोग इस पुस्तिका पर टूट पडे थे। बयालीस के आदोलन की यह गाथा–गीत (पोवाडा) थी। उसका प्रथम सस्करण कब का बिक चुका था। मैंने भी एक प्रति खरीदी थी। ब्रिटिश सरकार द्वारा इस पुस्तिका पर पाबदी लगाई गई। परतु तब तक इस पुस्तिका का दूसरा सस्करण भी लगभग बिक चुका था। शायद सरकार के हाथो थोडी–सी ही प्रतिया लगी होगी। पदमा प्रकाशन की इस छोटी-- सी पुस्तिका ने क्राति की आग को प्रज्ज्वलित करने का महत्त्वपूर्ण काम किया।

पद्म प्रकाशन माला का दूसरा पुष्प था 'सर स्टैफर्ड क्रिप्स का रहस्य'। यह पुष्प राममनोहर लोहिया जी ने गूँथा था। उसकी भी एक प्रति मैंने खरीदी थी। अतर्राष्ट्रीय–वाद तथा समाजवाद का सारी दुनिया के सामने ढिढोरा पीटने वाले क्रिप्स अपने देश की साम्राज्य–रक्षा के हथियार कैसे बन गए या वशवाद से अथवा रुडयार्ड किप्लिंग के व्हाईट मैंस बर्डन से स्वय को किस तरह से मुक्त नही कर पाए, इसका बुनियादी तथा कुछ हद तक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण डॉक्टर साहब ने किया था। इस प्रकाशन को लेकर मैं यूसुफ पर फिदा था।

अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की वह ऐतिहासिक सभा आखिर शुरू हुई। मौलाना आजाद जी ने काग्रेस के अध्यक्ष के नाते इस सभा का अध्यक्ष-स्थान मडित किया था। वर्ष 1940 मे पुणे मे सपन्न बैठक के वक्त भी मौलाना साहब ही अध्यक्ष थे। धुले जेल मे मैंने उर्दू सीखी थी बाद में भी इस भाषा की पढाई मैंने जारी रखी थी इसलिए

मौलाना जी की परिष्कृत शैली के भाषण का रसास्वादन मै स्वय कर सकता था। अपने दोस्तो को भी कुछेक बातो के बारे मे समझा दिया करता था। मौलाना का व्यक्तित्व रौबदार था, उनकी कश्मीरी स्टाइल की टोपी सफेद होने लगी घनी दाढी, वह अचकन वह पाजामा और शान से सिगरेट पीना, सब कुछ शानदार था। प्रारंभिक औपचारिकताएँ खत्म होने के बाद अब सबकी नजरे जवाहरलाल जी की ओर से प्रस्तुत किए जाने वाले प्रस्ताव पर लगी थी। उस प्रस्ताव पर चर्चा शुरू हुई। जुलाई और अगस्त महीने मे मुबई मे बारिश का जोर होता है। पूरी मुबई को बारिश हर साल इन दो महीनो मे साफ–सुथरा करती है। सात–आठ दिनो तक सूरज के दर्शन तक नही होते। इस बैठक के दौरान भी बारिश अपने उफान पर थी। गोवालिया टैंक का पूरा मैदान पानी और कीचड़ से भर गया था। हजारो लोगो की आवाजाही के कारण कीचड की मात्रा और बढ गई थी। हम घटो इस कीचड पानी मे खडे होकर यह चर्चा सुन रहे थे, आने जाने वाले नेता लोगो को देख रहे थे। 'देखो, सरदार पटेल आ रहे है।' कोई कहता था और सभी लोगो की गर्दने उस ओर मुड जाती थी। 'कहॉ है ? कहॉ है ?' 'वह देखो। वह देखो।' जैसी मिली–जुली आवाजे उठती रही। इस बैठक के पहले अपने मुबई के दौरे मे सरदार पटेल जी की कुछ सभाएँ मुबई की चौपाटी पर आयोजित की गई थी। सरदार जी के खुले विचारो तथा भाषण ने मुबई की जनता को मोह लिया था। पहली बार सरदार जी की व्यापक लोकप्रियता दिखाई दे रही थी। जवाहरलाल जी आकर्षण-बिंदु थे तब लोग उनके पीछे झुड मे आते थे। लेकिन इस अधिवेशन का सच्चा आकर्षण (उत्सवमूर्ति) थे महात्मा जी। अधिवेशन मे आचार्य नरेन्द्रदेव, राममनोहर लोहिया आदि के भाषण हुए। कम्युनिस्ट सदस्यो ने भी भाषण दिए। उन्होने फासिज्म के विरोध मे अपना राग अलापा। उन्होने सघर्ष का विरोध किया, समझोते की डफली बजाई, लेकिन ए आई सी सी ही नही बल्कि आमत्रित किए गए तथा बाहर खडे हजारो लोग कम्युनिस्टो के इस विसवादी स्वर को सुनने की मन स्थिति मे नही थे। कम्युनिस्ट जनमानस से अलग हो रहे थे। जवाहरलाल जी ने भी 1 अगस्त को जारी किए गए पत्र द्वारा यह बताया था कि कम्युनिस्ट पार्टी की नयी नीति, काग्रेस की मूल नीति के विरुद्ध है।

हम दिनभर गोवालिया टैक मे उपस्थित रहते थे। बड्डू, माधव, विनायक सभी साथी वहॉ इकट्ठा हुए थे। मुबई के कामरेड्स मिलते थे। खानदेश से भी लोग आए थे। कभी हम एकसाथ गुट बनाकर खडे होते थे तो कभी उस भीड मे हम अलग हो जाते थे। जब कभी बकवास भाषण शुरू होता था तब किसी मुबई के साथी के साथ हम आस–पास के होटलो या स्टालो पर चाय पीने चले जाते थे। दो दिन तक हमे किसी भी बात का ख्याल नही था। न तो हमे बारिश की चिंता थी, न कीचड की या खाने–पीने की। हम सातवे आसमान पर थे।"

8 अगस्त की उस शाम वह ऐतिहासिक प्रस्ताव रात को पारित हो गया। 9 अगस्त 1942 को 'भारत छोडो' पारित हुआ जिसका ने भरपूर समर्थन किया इसके बाद काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के नेता भूमिगत हो गए उन्होंने जो

भूमिगत मुहिम चलायी उसकी सविस्तार चर्चा इस प्रस्ताव मे किसी अन्य स्थान पर होगी। किन्तु भूमिगत आन्दोलन की योजना बनाने मे यूसुफ का बहुत बडा हाथ था इस बात से इकार नही किया जा सकता। यूसुफ मेहर अली गिरफ्तार कर लिए गए। पुलिस के अत्याचार से उनके हृदय को गभीर क्षति पहुँची जिसके कारण युवावस्था मे ही उनकी दुखद मृत्यु हो गयी।

1946-47 मे अग्रेजो ने 1942 के बन्दियो को मुक्त किया। काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के नेताओ ने एक अपील जारी की जिसमे 'समाजवादी भारत के निर्माण में' सहायता देने की अपील की गयी थी। सभवत वह अतिम अपील थी जिस पर यूसुफ मेहर अली के अन्य नेताओ के साथ हस्ताक्षर थे-

" मित्रो !

हम स्वतत्रता की चौखट पर खडे है। 15 अगस्त को हमारा देश औपनिवेशिक स्वराज्य प्राप्त कर लेगा तथा उसके बाद शीघ्र ही एक स्वतत्र गणराज्य बन जाएगा। एक पीढी द्वारा भोगा गया सत्रास और बलिदान रग लाया है, भले ही इस रग मे पीडा और दुख की कटुता घुल गयी है। भारत के कुछ भाग 150 वर्षो तक अपनाई गयी 'फूट डालो और राज्य करो' नीति तथा हमारे राष्ट्रीय जीवन के दोषो के कारण मातृभूमि से विलग हो गए है। घृणा एव रोषवश बाटे गए भूभाग जब तक पुन स्नेह तथा स्वैच्छिक एकता की भावना से आपस मे जुड नही जाते, तब तक भारत की नियति अर्थहीन एव उसकी स्वतत्रता अपूर्ण रहेगी।"

"हमे विश्वास है कि समाजवाद ही वह शक्ति है, जो देश के खडित भागो को एक टिकाऊ एकता के सूत्र मे पिरो सकती है।"

"हमने जो स्वतत्रता प्राप्त की है जनता के लिए, उसका भी तब तक कोई विशेष महत्त्व नहीं होगा जब तक कि वह अर्थ अभाव, सामाजिक दमन तथा आर्थिक शोषण से स्वतत्र न हो। यदि इस स्वतंत्रता को चिरस्थायी बनाना है तो उसे शीघ्र ही एक सामाजिक रूपातरण तथा एक ऐसी नयी समाज व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करना होगा जिसमें न कोई भिखारी हो, न राजकुमार, न कोई जाति से ऊँचा हो, न नीचा, मानव का शोषण न हो, तथा जिसमें सबको सेवा तथा आत्माभिव्यक्ति एव विकास के समान अवसर प्राप्त हो।"

"हमे विश्वास है कि सामाजिक न्याय तथा स्वतत्रता के इन लक्ष्यो तक जाने के लिए केवल समाजवाद ही हमारा मार्गदर्शन कर सकता है।"

"हमारा देश विश्व के निर्धनतम देशो मे से एक है, तथा हमारे देशवासियो का बहुताश अत्यधिक अभाव और दरिद्रता मे जी रहा है। दरिद्रता और अभाव का निराकरण तीव्र आर्थिक विकास तथा कषि के पुनर्जीवन पर निर्भर है

"हमे विश्वास है कि ऐसा तीव्र आर्थिक विकास नियोजित अर्थव्यवस्था की समाजवादी प्रणाली के अतर्गत ही सभव है।"

"अतत सास्कृतिक दृष्टि से हम एक अत्यत पिछडी हुई जाति है।"

"हमे पुन यह विश्वास है कि एक जन सास्कृति के निर्माण तथा भारत मे सामान्यजन का उसके वर्तमान पशु स्तर से उठाकर मानवीय स्तर तक ले जाने का कार्य समाजवाद ही कर सकता है।"

"इस प्रकार हम लोग समाजवादी दल की ओर से इस विश्वास के साथ कि भारत का भविष्य समाजवाद पर निर्भर है, अपने उन समस्त देशवासियो से जो भारत के भविष्य मे हमारी आस्था मे साझेदार है, विनती करते है कि वे एक समाजवादी अर्थात स्वतत्र सपन्न और सयुक्त भारत के निर्माण मे हमे सहायता प्रदान करे।"

"समाजवादी भारत का निर्माण एक दिन मे नही हो जाएगा। उसके लिए अनेक रूपो मे कठोर सतत रचनात्मक कार्य करना होगा। समाजवादी दल वह कार्य करना चाहता है। अब आपको उसे उपकरण प्रदान करने है। अब तक जो कार्य हुआ है वह महत्त्वहीन नही है परन्तु तीव्र परिवर्तन और सक्रमण के इस काल मे उसे और तीव्रता से सब ओर फैलाया जाना चाहिए। समाजवादी दल पूर्ण समय देने वाले समर्पित कार्यकर्त्ताओ की एक विशाल टोली को भरती करके प्रशिक्षित करना चाहता है।"

"उसे एक स्वस्थ एव सशक्त श्रमिक सघ आदोलन विकसित करना होगा। और यदि समाजवाद को वास्तविक अर्थात उसे एक श्रमिक लोकतंत्र का रूप ग्रहण करना है तो समाजवादी दल को एक 'श्रमिक शिक्षण कार्यक्रम' हाथ मे लेना होगा। क्योकि श्रमिको का सास्कृतिक स्तर उठाए तथा उनको राजनीतिक परिपक्वता प्रदान किए बिना श्रमिक लोकतत्र एक दिवास्वप्न बनकर रह जाएगा। इसके अतिरिक्त समाजवादी दल को कृषको तथा भूमिहीन श्रमिको के संगठन बनाने होगे। उसे एक सर्वांगसपूर्ण सहकारिता आदोलन विकसित करना होगा। अतत दल को अध्ययन तथा शोध, अपने निजी बौद्धिक आधार, साहित्य तथा समाजवादी पुनर्रचना की रूपरेखाओ के सृजन, एव प्रचार तथा प्रकाशन का कार्य करना होगा।"

"हमारे सामने भारी कार्य है जिनकी पूर्ति के लिए आस्था और निष्ठा के अतिरिक्त धन की भी आवश्यकता होगी। हमारा अनुमान है कि हमे अपनी वर्तमान योजनाओ के क्रियान्वयन की दिशा मे एक समुचित पहल करने के लिए कम–से–कम दस लाख रुपए की आवश्यकता होगी। केन्द्र और राज्यों मे स्वाभाविक है कि दल वर्तमान भारत के प्रत्येक भाग मे कार्य करेगा। दल के सामान्य कामकाज के अतिरिक्त हमारे सामने तीन निश्चित योजनाए हैं– प्रथम, श्रमिक सघो के कार्यकर्त्ताओं के प्रशिक्षण के लिए श्रमिक महाविद्यालयों की की योजना द्वितीय दृश्य एव श्रव्य शिक्षण प्रणाली तथा

वयस्क–साक्षरता के माध्यम से श्रमिको की शिक्षा के लिए श्रमिक शिक्षण आदोलन की योजना तथा तृतीय एक ऐसे सामाजिक एव आर्थिक शोध सस्थान की स्थापना की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण योजना जिसमे पर्याप्त सख्या मे विशेषज्ञो तथा शोधकर्ताओ का दल एव एक उपयुक्त पुस्तकालय हो।'

'हमे जो कार्य करना है उसकी तुलना मे दस लाख रुपए की राशि बहुत छोटी है। परन्तु हम आपसे यह मामूली--सी राशि प्रारंभिक राशि के रूप मे माग रहे है तथा हमे आशा है कि समाजवादी दल आपके प्रारंभिक समर्थन के सहारे जो कार्य करेगा उसके बलबूते पर वह आपसे इसके आगे तथा इसकी अपेक्षा अधिक समर्थन प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त कर लेगा।'

"हमे आशा है कि हमने आपके सम्मुख जो श्रेष्ठ प्रयोजन प्रस्तुत किए है उनकी सिद्धि के लिए आपमे से प्रत्येक अपनी सामर्थ्य के अनुसार दल की सहायता करेगे। हमे यह भी आशा है कि समाजवादी दल आपकी सहायता और आपके सहयोग के बल पर स्वतत्रता समृद्धि प्रसन्नता तथा श्रेष्ठ जीवन से सपन्न नए भारत के निर्माण मे सफल रहेगा।'

नरेन्द्र देव	पुरुषोत्तम त्रिकमदास
कमला देवी चट्टोपाध्याय	अहमद दीन
यूसुफ मेहर अली	अशोक मेहता
अरुणा आसफ अली	अच्युत पटवर्धन
राममनोहर लोहिया	जयप्रकाश नारायण
	7 अगस्त, 1947

VIII

यूसुफ मेहर अली ने देश की अनेक समस्याओ को लेकर सघर्ष किया। स्वतत्रता से पूर्व कच्छ भारत के पश्चिमी भाग मे एक देशी राज्य था। वह गुजरात राज्य का अग था। यूसुफ मेहर अली के पितामह कच्छ के एक प्रमुख व्यापारी थे। वे अपनी दानशीलता और उदारता के लिए प्रसिद्ध थे। यूसुफ मेहर अली ने कच्छ की दुर्दशा पर अपनी टिप्पणी मे लिखा था–

1 कच्छ को देखकर 16वी अथवा 17वी शताब्दी के भारत की कल्पना होती है।

2 वायुयानो के इस युग मे वहॉ रेलमार्ग अथवा मोटर मार्ग तो है ही नही, अच्छे बैलगाडी मार्ग भी नही हैं।

3 वहा केवल एक हाईस्कूल है कालेज भी नहीं है

कच्छ में विधिसम्मत शासन नहीं था। वहाँ के शासक तथा उसके चाटुकारो का आतक व्याप्त था। 1926 मे वहा 'कच्छीय प्रजातान्त्रिक परिषद' की स्थापना की गयी तथा जनसाधारण मे राजनीतिक जागरूकता उत्पन्न करने के प्रयत्न किए गए। 1936 में यूसुफ मेहर अली 'कच्छीय जनतान्त्रिक परिषद' के वार्षिक सम्मेलन मे सम्मिलित हुए। उनके प्रेरक भाषण ने जनता को बहुत प्रभावित किया। 1938 मे उन्हें इस सगठन का अध्यक्ष चुना गया।

परिषद का वार्षिक सम्मेलन 26–28 दिसम्बर को मूदडा मे हुआ। सम्मेलन को शानदार सफलता मिली तथा समाज के प्रत्येक वर्ग के लोग उस सम्मेलन मे शामिल हुए। सम्मेलन मे उन्होने राजनीतिक स्थिति की समीक्षा की। कांग्रेस द्वारा चलाये गए आन्दोलन का प्रभाव कच्छ में भी था। अपनी समस्याओं के समाधान के लिए वह भी आतुर थे। यूसुफ मेहर अली ने किसानो, मजदूरो, युवाओ एव महिलाओ के सम्मेलन आयोजित किए तथा उन्हे सत्याग्रह के लिए तैयार रहने को कहा। इन प्रयासो से कच्छ की जनता मे एक नया उत्साह फूट पडा। वह लोग अपनी राजनीतिक मागो के समर्थन के लिए लामबन्द हो गए।

यूसुफ मेहर अली तथा कच्छ नरेश के मध्य परिषद की मागो को लेकर चर्चा हुई। उन्होंने कच्छ नरेश के मुख उत्तरदायी शासन की माग इस प्रकार रखी।

1 (क) भाषण की स्वतत्रता (ख) प्रकाशन की स्वतत्रता (ग) सगठन खडा करने की स्वतत्रता।

2 निर्वाचित विधान मडल।

3 राज परिवार को प्राप्त होने वाले प्रीवीपर्स की राशि राज्य के राजस्व के 10 प्रतिशत से अधिक नही होनी चाहिए।

यूसुफ मेहर अली ने यह भी कहा कि यदि कच्छ के शासक सशोधन रखना चाहे अथवा सुझाव दे तो उस पर परिषद विचार करेगी।

कच्छ के शासक ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नही की। यूसुफ ने स्पष्ट कर दिया कि 31 मार्च 1939 तक उनकी मॉगो को स्वीकार नहीं किया गया तो आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया जाएगा।

इसके बाद उनके साथियो ने सगठन बनाना तथा धन सग्रह करना प्रारम्भ कर दिया। उन्होने किसानो का सगठन बनाया, हिन्दू–मुस्लिम एकता, खादी प्रचार, शराब की दुकानो पर धरना, आदि आरभ करने की अपील की। वे जहॉ भी गए उनका उत्साहपूर्ण स्वागत किया गया। कच्छ नरेश ने भी दमनचक्र जारी कर दिया। किन्तु महात्मा गाधी की इस घोषणा के बाद कि देशी रियासतों में किया जा रहा वापस ले लिया जाए कच्छ परिषद ने अपना वापस ले लिया यूसुफ मेहर अली

और कच्छ की आन्दोलनकारी जनता को भारी आघात लगा।

किन्तु यूसुफ ने बताया कि सघर्ष वापस लेने का यह मतलब नही है कि हम दमनचक्र को चलने देंगे। परिषद की ओर से राज्य के एक गॉव मनकुवा में जनसभा आयोजित की गयी। मेहर अली के आने से पहले ही सैकडो लोग सभा स्थल पर पहुँच गए। उनके भाषण से लोगो मे उत्साह भर गया। कच्छ के शासक के पालतू पुलिस वालो ने दमनचक्र बन्द कर दिया। सघर्षशील जनता की मागो के लिए रास्ता प्रशस्त हो गया। उनकी मागे बडी हद तक स्वीकार कर ली गयी।

IX

यूसुफ मेहर अली मुम्बई नगर (दक्षिण) निर्वाचन क्षेत्र से चुने जाने पर 31 मार्च 1949 को मुबई विधानसभा के सदस्य के रूप मे शपथ ग्रहण की। वे 2 जुलाई 1950 तक अपनी असामयिक मृत्यु तक विधायक रहे। मेहर अली अपने साथियो को अंतिम सलाम करके विदा हो गए। उनकी मृत्यु के समय जयप्रकाश नारायण उपस्थित थे। उन्होने अश्रुपूर्ण नेत्रो से उनको दम तोडते देखा। मृत्यु के समय उनकी आयु मात्र 47 वर्ष थी। जयप्रकाश जी ने अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए अपनी भावनाओ के आवेग मे कहा—

'मैं उनके जीवन को सर्मपण की एक ऐसी अभिव्यक्ति के रूप मे देखता हूँ जिसका स्थान गाधी जी के बाद प्रथम है।'

डा राजेन्द्रप्रसाद, पडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, डा राममनोहर लोहिया, सहित अनेक राष्ट्रीय नेताओ ने उन्हे श्रद्धाजलि अर्पित की। उनके ताबूत को कधा देने वालो का नेतृत्व मोरारजी देसाई कर रहे थे। जनाजे मे काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के वरिष्ठ नेता सर्वश्री जयप्रकाश नारायण, डा राममनोहर लोहिया, अच्युत पटवर्धन, अशोक मेहता, एस एम.जोशी एव एन जी गोरे सहित हजारो श्रमिक, किसान एव मुम्बई के प्रत्येक वर्ग के लोग उपस्थित थे।

यूसुफ मेहर अली–श्रेष्ठ और सुदर मिश्रण

—प्रो मधु दडवत

(यह लेख प्रो मधु दडवते की पुस्तक "यूसुफ मेहर अली –नये क्षितिजो की खोज" से लिया गया है। शायद यह दिवगत नेता पर एक मात्र पुस्तक है। यहाँ हम उसके कुछ अश साभार उद्धृत कर रहे हैं)

सो जाएँगे जब हम थककर,
होगे सन्नद्ध लोग अन्य तब
युवा और तत्पर।
चढेगे वे उन सोपानो से
काटे हमने जो पाषाणो मे,
पहुँचेगे शिखरो पर उन सीढियो से
किया निर्माण जिनका हमने।
न होगे ज्ञात तथापि उनको
कदापि नाम उनके
गढा जिन्होंने सोपानों को।

—ओलिव श्रेइनर

यूसुफ मेहर अली अपनी भद्रता दयालुता, उत्कट मैत्री तथा अपने सहज सौंदर्यबोध के कारण अपने सपर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के प्रिय बन जाते थे, उनकी राजनीति और उनके आदर्श इसमे आडे न आते। कुछ विदेशी भी यूसुफ की सगति से गहन रूप से प्रभावित हुए और उन्हे ऐसा लगता कि भारत आने पर मेहरअली का नाम भर उनके लिए पासपोर्ट का काम करेगा।

मेहर अली के घनिष्ठ सपर्क मे रहने वाले प्रतिभाशाली कलाकारो तथा शिक्षाविदो की यह मान्यता थी कि यूसूफ की मैत्री ने स्वय को एक ऐसी सृजनात्मक शक्ति मे रूपांतरित कर लिया था जिसके बल पर यूसुफ समाज को उसके रोष के बदले में सच्चाई एव सद्भावना विकीर्ण करने वाली आह्लादपूर्ण और चित्तग्राही मुस्कान प्रदान करते थे। युसुफ उस विरल कोटि के पुरुषो मे से थे जिनका लक्ष्य मनुष्यो के बीच भेद अथवा विसगति की अपेक्षा अथवा सगति पर बल देकर उनमें अधिक तथा सहयोग वृत्ति जागृत करना होता है

प्रत्येक सघर्ष का एक प्रेरक उद्घोष (नारा) होता है। 1942 की अगस्त क्राति गॉधी जी द्वारा दिए गए 'भारत छोडो' उद्घोष (नारे) से प्रेरित थी और नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज के सैनिको ने उनके ओजस्वी आह्वान 'दिल्ली चलो' की प्रेरणा पर कूच किया। इसी प्रकार 20वी शती के तीसरे दशक मे भारत की युवापीढी यूसुफ मेहर अली के नारे 'साइमन वापस जाओ' की गूँज से अभिप्रेरित थी।

अपने मित्रो के प्रति युसुफ की चिन्ता उनके मानवीयपूर्ण व्यक्तित्व का प्रमाण थी। लदन मे एक मित्र से विदा लेते समय युसुफ ने ऐसे क्षणो मे उससे कहा 'अपना ध्यान रखना' जब वे स्वय मृत्यु की ड्योढी पर खडे थे। विदाई के इन शब्दो के साथ युसुफ ने अपने मित्र के हाथो मे अर्नेस्ट हेमिग्वे की पुस्तक 'डैथ इन दा आफ्टरनून (तृतीय प्रहर मे मृत्यु) थमा दी।

उत्तमता के प्रति युसुफ की उत्कटता एक शुष्क और निस्पद सामाजिक–आर्थिक विश्लेषण की निष्पत्ति न थी वरन उसका उदय एक अन्यायपूर्ण समाज की विषमताओ तथा निर्ममताओ और उसके अपराधो से विक्षुब्ध अत करण की पीडा के प्रति उनकी नैतिक अनुक्रिया मे से हुआ था।

मेहर अली सरीखे ओजस्वी तथा चित्ताकर्षक व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति के दीर्घ–अस्वस्थता से ग्रस्त होकर पलग से लग जाने की स्थिति एक महान त्रासदी थी तथापि वे अपनी असह्य आतरिक पीडा को छिपा लेते तथा अपनी कुशल पूछने के लिए आने वाले लोगो को अपनी मुस्कुराहट और निश्छल हँसी के द्वारा प्रसन्न रखने की चेष्टा करते थे जिससे कि उनकी रोग शय्या के चारो ओर उदासी का वातावरण न बनने पाए। वे अपनी रुलाई को रोकने के लिए हँसते रहते थे।

'भारत छोडो आदोलन' के अतर्गत मेहर अली की नजरबदी के दौरान ब्रिटिश ने उन्हे इस डर से रिहा कर दिया था कि कही उनकी मृत्यु जेल मे ही न हो जाए, परतु यूसुफ ने मौत को ललकारा और वे अगले आठ वर्ष जीवित रहे। इसके पीछे चिकित्सा का योगदान इतना महत्वपूर्ण न था जितना कि उनके भीतर जीवित रहने वाला सघर्ष करने की अदम्य इच्छा शक्ति का।

यूसुफ के चरित्र की मुख्य विशेषता अलगाव की भावना नही वरन् समावेशन की वृत्ति थी। अत उनकी मैत्री–भावना जिसे भी छू लेती वह उनमे परिपूर्णतया ऐसे समा जाता जैसे महासागर की ओर सरपट दौडती हुई नदी अपना अस्तित्व और अपनी पहचान महासागर मे विलीन कर देती है।

मेहर अली की कुशाग्र बुद्धि की झलक उनकी समान रूप से पैनी और चुटीली व्यग्योक्तियो मे मिलती है। 1942 मे गॉधी जी की गिरफ्तारी पर लदन मे ब्रिटिश सरकार के भारत मत्री ने जब यह गर्जना की कि "गॉधी जी की गिरफ्तारी पर कोई कुत्ता तक नहीं भौंका' तो यूसुफ मेहर अली ने अपनी व्यग्यात्मक शैली में भारी चोट की 'एकदम ठीक कुत्ते तो गाँधी को गिरफ्तार न किए जाने पर ही भौंकते हैं

भोली भाली और बुद्धिमत्तापूर्ण नटखटता यूसुफ की प्रकृति का एक प्रमुख अंग था। यूसुफ और उनके साथियो ने 3 फरवरी 1928 की भोर मे अति घृणित साइमन आयोग द्वारा भारतीय भूमि पर पॉव रखने के समय बबई–हार्बर पर एक प्रतीकात्मक प्रदर्शन का आयोजन किया। यह सचमुच 'लाइट ब्रिगेड का चार्ज' था। पुलिस ने यूसुफ और उनके साथी प्रदर्शनकारियो की पिटाई की। इस घटना के अतिरजित समाचार जगल की आग के समान हर ओर फैलाए गए। जिस समय यूसुफ अपना घायल और पट्टी मे लिपटा हाथ लिये घर लौट रहे थे, तो एक राहगीर ने उनसे पूछा कि क्या उन्हें साइमन आयोग के विरुद्ध प्रदर्शनकारियो पर पुलिस द्वारा किए गए लाठी प्रहार मे चोट आई है। यूसुफ ने हॉ मे सिर हिला दिया। वह राहगीर फिर बाला, "हमारे नेता यूसुफ मेहर अली को गंभीर चोट आई है और वे अस्पताल मे है।" यूसुफ ने अपनी सहज नटखटतावश अपनी चपल ऑख झपकाते हुए तथा अपनी पहचान छिपाते हुए राहगीर से कहा, "यह अतिरजित समाचार है।" इस पर राहगीर ने उनकी ओर अपमान भरी दृष्टि से देखा और उनके कथन की खिल्ली उडाई। बाद मे उस राहगीर को उसी दिन शाम का बबई मे चौपाटी की रेत पर हुई विरोध सभा में यह पता चला कि उस सवेरे उसकी मुठभेड उस सभा के नेता यूसुफ मेहर अली के साथ ही हुई थी। यूसुफ अपने गभीर राजनीतिक अभियानो तथा सघर्षों मे प्राय इसी प्रकार की नटखटता का आनद लिया करते थे।

विदेशो मे भारत के सरकारी राजदूत तथा कूटनीतिक प्रतिनिधि कम बोलते हैं। उनके लिए मौन ही श्रेयस्कर है। शब्दो का अल्पतम प्रयोग आधुनिक कूटनीतिज्ञो की आचार–संहिता ही बन गयी है। परतु इन कूटनीतिज्ञो के विपरीत यूसुफ मेहर अली यूरोप तथा अमेरिका के देशो मे भारत के गैर सरकारी सास्कृतिक दूत के रूप मे विदेशियो के सम्मुख भारत के हृदय की शाब्दिक अभिव्यक्ति करते हुए तब तक बोलते रहते थे जब तक कि वे थककर चूर न हो जाते। वे उन्हे भारत की यशस्वी परपराओ, कला और वास्तुकला तथा उसके गौरवशाली इतिहास और साहित्य के वर्णन द्वारा भारत का एक बिब प्रदान करते तथा उसके बदले मे वे जिस देश में जाते उसके इतिहास तथा उसकी सस्कृति के रत्न बटोर लाते थे। इतना ही नही वे संस्कृति तथा इतिहास की अपनी तीर्थ यात्रा की सौंदर्यपरक अनुभूतियो को कागज पर उतारने के लिए परम लालित्य तथा सुरुचिपूर्वक लेखनी चलाते थे।

अपने अप्रकाशित लेख "फ्रासीसी क्राति की एक परिक्रमा" मे यूसुफ मेहर अली ने फ्रासीसी क्राति की ऐतिहासिक भूमि की यात्रा के समय अपनी समाधिस्थ चेतना का परिचय दिया। यूसुफ ऐसा मानते थे कि किसी ऐतिहासिक स्थल की आत्मा को ग्रहण करने का एक सर्वोत्तम उपाय उन बिदुओ को खोज निकालना है जिन पर अतीत और वर्तमान का सगम अथवा मिलन होता तथा भविष्य के पथ को आलोकित करता है। उनका मत था कि फ्रासीसी क्राति के काल मे ऐसा एक स्पदनशील बिदु पेरिस था। मेहर अली ने फ्रासीसी क्राति की यात्रा उसके स्वाभाविक समारभ स्थल 'बेस्टाइल' से आरभ की। वहाँ वह कारा–दुर्ग आज भी खडा है जिस पर विद्रोही फ्रासीसी जनता ने

14 जुलाई, 1789 को अधिकार कर लिया था। यह एक ही ऐसी तिथि है, जो स्वतन्त्रता के इतिहास मे सदा स्मरणीय बनी रहेगी।

यूसुफ की चेतना 1789 के पेरिस की ओर लौटी जिसने उनके सम्मुख एक दोहरा दृश्य उपस्थित कर दिया जिसके एक ओर अकूत विलासिता थी तो दूसरी ओर घोर वेदना। पुराने दस्तावेजो को देखने पर यूसुफ को पता लगा कि उस समय पेरिस मे 31 000 बेरोजगार लोग थे। खाद्य–सामग्री के अभाव ने गभीर रूप धारण कर लिया था तथा कीमते तेजी से चढ रही थी। रोटी की दुकाना पर ग्राहको की लबी लबी कतारे लगी रहती थी, जिसके कारण लोग बुरी तरह तग आ चुके थे। जब महारानी मेरी अत्वायनत को इस कठिनाई के बारे मे बताया गया तो सम्राज्ञी ने अपने कुलीन वर्गीय अज्ञान एव अबोधपन मे कहा, "यदि लोगो के पास रोटी नही है, तो वे केक क्यो नही खा लेते ?" युसुफ सम्राज्ञी के इस कथन को खूब विनोदपूर्ण स्मरण करते थे तथा उन्होने इसका उल्लेख अपने इस साहित्यिक निबध मे भी किया।

फ्रासीसी क्राति की अपनी परिक्रमा मे युसुफ का समय हर्षपूर्ण उत्तेजना की मन स्थिति मे बीता। उन रोमाचकारी क्षणो का वर्णन युसुफ ने इस प्रकार किया "आज तो तुलेरीज के सुदर उद्यानो मे कोई भी घूम सकता है, राजमहल अब नही रहा। अथवा यहॉ से सीन नदी पर बना पुल पार करके कसियरजेरियो की विशाल जेल तक जाया जा सकता है जहॉ से मेरी अत्वायनत, गिरोद्वादियो तथा बहुत–से अन्य लोगो को गिलोटिन तक ले जाया गया था तथा जिसे पेरिस जाने वाले प्रत्येक पर्यटक को देखना ही चाहिए। इसके अतिरिक्त विविध सग्रहालयो मे क्राति के महान अग्रदूतो के नामो से जुडे अनेक बहुमूल्य ऐतिहासिक स्मारको के दर्शन किए जा सकते है, जिनमे सबसे अधिक उल्लेखनीय कारना वैले है, जहॉ क्राति के घोषणा पत्र की मूल प्रति को पढा जा सकता है अथवा बेस्टाइल की अनुकृति अथवा ह्यूबर्ट राबर्ट की यह पेन्टिग देखी जा सकती है जिसमे बेस्टाइन का ढहाना दिखाया गया है। वहॉ फ्रास के सम्राट के नाते लुई सोलहवे द्वारा जारी किए गए अतिम आदेश अथवा उसके मृत्युदड से सबधित ढेरो दस्तावेजो पर भी दृष्टि डाली जा सकती है। इनके अतिरिक्त वहॉ चित्रो, परिधानो, तमगो तथा दस्तावेजो जैसी स्मृति को आदोलित करने वाली तथा चेतना पर छा जाने वाली सैकडो अन्य वस्तुऍ सुरक्षित है। फ्रासीसी क्रांति–कालीन पेरिस की खोज कैसी सुफल यात्रा है।"

मेहर अली द्वारा प्रस्तुत इस सजीव वर्णन से उनकी उस बहुमुखी प्रतिभा का ही परिचय मिलता है जिसमे इतिहास की चेतना, कला और सौदर्य के प्रति प्रेम, प्रलेखन के प्रति एव विवेचन दृष्टि तथा इन सबसे अधिक पुनर्जागरण एव क्राति की भूमि से जडे श्रेष्ठतर सवेगों के प्रति उनकी अनुक्रिया क्षमता निहित है

सकता है कि यूसुफ मेहर अली एक प्रयोजनशील जीवन के प्रतीक हैं। उनके लिए मानव जाति का मानदड मनुष्य था। अत यूसुफ के समस्त प्रयासो का प्रयोजन सहज ही मानवीय व्यक्तित्व का चरम विकास था न कि मानवीय पीडा का लाभ उठाना। उनके जीवन की तन्त्री उनके चारो ओर के मनुष्यो के स्पदनशील जीवन के साथ स्वर से स्वर मिलाकर झकृत होती थी। गहन मानवीय सहानुभूति का भाव ही उनके जीवन का सजीव स्रोत था। अत यह तनिक भी आश्चर्य का विषय नही रह जाता कि युसुफ जब अपने चारो ओर उल्लास देखते तो उनका हृदय पीडा और यत्रणा से घायल हो उठता। यूसुफ का चुबकीय व्यक्तित्व सृष्टि स श्रेष्ठ एव सुदर तत्त्वो का सुखद मिश्रण था। उनका मृदुल चित्त जीवन मे बर्बरता और भोडेपन से घृणा करता था और ऐसे ही उनके समाजवाद की जडे सौंदर्यबोध तथा नैतिकता मे निहित थी।

युसुफ परपरागत अर्थ मे धार्मिक पुरुष न थे तथापि उनके जीवन मे सार्वभौम धर्म की उदारता प्रतिबिबित होती थी। वे कवि न थे तथापि उनके भीतर कवि जैसी सवेदना थी। वे सगीतकार न थे तथापि उनके भीतर लयबद्धता और सुसगतता के दैवी गुण कूट–कूटकर भरे थे। वे चितेरे न थे तथापि उनके जीवन के उल्लासमय पटल पर उल्लासपूर्ण रगो की अभिव्यक्ति हुई। युसुफ के उस चमकदार जीवन ने जिसे मृत्यु ने 47 वर्ष की अल्पायु मे ही डस लिया, रवीन्द्रनाथ ठाकुर के गीत की अमर पक्तियो मे मुखर अभिव्यक्ति प्राप्त की .

परिपूरित था गीतों से
मेरा भोर,
सध्या को मेरी
रगो से भर दो।

लौह पुरुष – युसुफ मेहर अली

– अच्युत पटवर्धन

(यह लेख स्वर्गीय अच्युत पटवर्धन का है जो प्रो मधु दडवते की पुस्तक 'युसुफ मेहर अली–नये क्षितिजो की खोज' से लिया गया है। इसे हम यहाँ साभार उद्धृत कर रहे हैं।)

पिछले दो दशको मे सामाजिक एव राजनीतिक स्थिति का सदर्भ आमूल बदल गया है, जिसके कारण वर्तमान पीढी इस जीवनी के विषय को सामाजिक परिस्थितियो के उसके अपने ढाँचे मे नही देख पाएगी। मेहर अली ने जिस पृष्ठभूमि मे उन लक्ष्यो को सिद्ध करने की चेष्टा की जिनकी सिद्धि के लिए हम अपने परिवर्तित परिदृश्य मे प्रयास कर रहे हैं–मानव की स्वतत्रता और एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था का सृजन जिसे शोषण और अन्याय निरतर निष्फल न कर पाएँ उस पृष्ठभूमि पर विहगम दृष्टि डालना शायद लाभदायक रहगा। मेहर अली के जीवन का सक्रिय काल 1927 से 1947 तक अथवा मोटे तौर पर दो विश्व युद्धो के बीच की अवधि मे रहा।

प्रथम महायुद्ध की समाप्ति के बाद अतर्राष्ट्रीय सबधो मे दूरगामी परिवर्तन हुए। एक परिवर्तन तो यह था कि एक राज्य के रूप मे सोवियत रूस का उदय प्रथम विश्वयुद्ध के विजेताओ की नैतिक विहितता के लिए एक चुनौती तो बन ही गया था उसके कारण पाश्चात्य जगत मे अतर्विरोध भी उभर आए थे। दूसरा बडा परिवर्तन युद्धोत्तर विश्व मे सयुक्त राज्य अमेरिका का एक विश्व शक्ति के रूप मे उभरना था। एक अन्य युद्ध की सभावनाओ को टालने की दृष्टि से राष्ट्र सघ की स्थापना से एक ऐसे मच का निर्माण हुआ जिससे इन प्रमुख शक्तियो की अनेक नीतियो की विहितता की आलोचना सभव हो पाई–विशेषतया राज्यो के आत्मनिर्णय के अधिकार के क्षेत्र मे। महाशक्तियाँ छोटे राज्यो के पारस्परिक सबधो मे एक दूसरे के आत्मनिर्णय के अधिकार के सम्मान तथा विधि–सम्मत शासन के सिद्धात की घोषणा कर रही थीं परतु वे अपने–अपने साम्राज्यो पर अपने ही स्वेच्छाचारी शासन द्वारा इस सिद्धात का खुल्लम–खुल्ला उल्लघन कर रही थी। इस तथ्य ने यह सिद्ध कर दिया था कि वे ऊँचे–ऊँचे सिद्धातो की घोषणाओ की आड मे अपने साम्राज्यवादी प्रयोजनो को छिपाने का प्रयास कर रही थी। साम्राज्यवाद के बारे मे लेनिन की पुस्तक ने बीसवी शती के उपनिवेशवाद के आर्थिक आधार को उजागर कर दिया अर्थात् यह स्पष्ट कर दिया कि उपनिवेशवाद का मूल प्रयोजन प्राकृतिक ससाधनो की दृष्टि से सम्पन्न तथा तकनीकी बुद्धिकौशल एव उद्यमिता की दृष्टि से विपन्न एशियाई एव अफ्रीकी क्षेत्रो के ससाधनो पर एकाधिकार प्राप्त करना था।

लेनिन ने की समाप्ति से आरभ करके पूँजीवाद के विकास का

चरणबद्ध वर्णन किया। उन्होंने बताया कि एकाधिकारवादी पूँजीवाद किस प्रकार साम्राज्यवाद का अंतिम चरण है, तथा वह एक अन्य विश्वयुद्ध को किस प्रकार अनिवार्यतया जन्म देगा। समकालीन इतिहास की इस आर्थिक व्याख्या ने ब्रिटिश फ्रांसीसी अथवा डच्च साम्राज्यवाद के उपनिवेशो मे राष्ट्रीय स्वतत्रता के लिए सघर्ष कर रहे समस्त बुद्धिजीवियो की ऑखे खोल दी। इसने हमे अतीत के प्रति एक रागात्मक दृष्टिकोण से उबारकर अर्द्ध--औद्योगिक समाज मे सामाजिक शक्तियो के पारस्परिक सबधो की एक अधिक यथार्थपरक दृष्टि प्रदान की। मेहर अली उस पीढी के व्यक्ति थे, जो भारत की प्राचीन धरोहर से प्यार करते थे परन्तु साम्राज्यवादी प्रभुत्व द्वारा प्रस्तुत चुनौतियो का सामना करने मे समर्थ आधुनिक भारत के निर्माण का दायित्व उठाने के लिए भारत के युवाओ का आह्वान करते समय उन्होने पुनरुद्धारवादी वृत्ति का लेशमात्र भी परिचय नही दिया।

दूसरे दशक की एक अन्य विशिष्टता राष्ट्रीय चेतना के प्रसार की तीव्रता थी। प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात से देश मे ऐसे समर्थ युवा विद्यमान थे, जिनके मन में यह चेतना थी कि उन्होने मेसोपोटामिया की समरभूमि मे अपनी वीरता को सिद्ध किया था युद्ध कौशल तथा शाति की कला मे भारतीय-जन गोरो के समतुल्य थे। डॉ जगदीशचन्द्र बोस, सी वी रमन तथा मेघनाथ साहा जेविकी की शोध तथा भौतिकी के जगत मे प्रथम कोटि के विद्वान हुए। भारत एक गौरवपूर्ण अतीत का ही देश न था, उसका जनशक्ति-ससाधन भारत के ही नही वरन् समूचे तीसरे विश्व के पुनरोत्थान के लिए प्रतिभा का अक्षय भडार था। अपनी सामर्थ्य के इस बोध ने देश की जनता के मन मे आत्मविश्वास और आस्था जगाने मे भारी योग दिया था। उधर विदेशी प्रभुत्व के जुए को उतार फेकने के लिए सघर्षशील जनता के सामने गॉधी जी के सत्याग्रह ने सामाजिक कर्म की एक नयी व्यूह रचना प्रस्तुत कर दी थी। गॉधी जी की महत्ता इस बात मे निहित थी कि उन्होने भारत मे एक नैतिक उत्साह तथा विश्वास उत्पन्न कर दिया कि हम एक शत--प्रतिशत नैतिक उद्देश्य के लिए सघर्ष कर रहे थे एव हमारा शत्रु नैतिक दृष्टि से शत--प्रतिशत दोषी था। गॉधी जी हमारे शासको को प्रतिरक्षात्मक स्थिति मे खडा करने मे सफल रहे—वायसराय ने, भले ही अनिच्छा से सही, 1931 मे पहली बार यह स्वीकार किया कि इडियन नेशनल काग्रेस भारतीय स्वाधीनता का एक सशक्त मच थी। लाला लाजपत राय सरीखे नेताओ की भॉति मेहर अली ने साइमन—कमीशन के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी प्रदर्शन के माध्यम से नमक--सत्याग्रह के लिए आधार तैयार किया। नमक--सत्याग्रह ने लाखो भारतीयो के मन मे सहज सक्रिय भागीदारी की भावना जगाकर भारत मे प्रथम बार यह चेतना उत्पन्न की कि ब्रिटिश राज के नैतिक प्रभुत्व की जडे तक हिल चुकी है।

काग्रेस समाजवादी दल के उदय से, जिसके युसुफ मेहर अली एक अग्रणी सस्थापक थे, हमारे राजनीतिक सघर्ष मे रुचि लेने वाले लोगो का दृष्टिकोण और अधिक स्पष्ट हो गया। काग्रेस के नेतृत्व एव साधारण कार्यकर्त्ता एक ऐसे नए विश्व चिन्तन के सपर्क में आए जिसका गॉधी जी की चिन्तन धारा से कही टकराव न था वरन जिसने उसे एक सामाजिक क्षितिज प्रदान किया रूस के सोवियत राज्य ने

भारत मे श्रमिक वर्ग मे जागृति उत्पन्न करने एव उसे सगठित करने के लिए 1924 मे एक साम्यवादी दल का प्रवर्तन किया। इस दल ने तृतीय इटरनेशनल की गलत दृष्टि अपनाकर इडियन नेशनल काग्रेस को यह कहकर बदनाम करने की चेष्टा की कि उसमे भारतीय पूँजीपतियो के हितो का प्रभुत्व है। काग्रेस समाजवादी दल ने समाजवादी आदर्शो पर भारतीय साम्यवादियो के एकाधिकार को चुनौती दी तथा दो बातो पर बल दिया कि प्रत्येक वास्तविक समाजवादी को सर्वप्रथम भारत के स्वतन्त्रता सग्राम का सैनिक होना चाहिए तथा साम्राज्यवाद विरोधी सघर्ष के लिए काग्रेस सर्वाधिक व्यापक आधार वाला सगठन है। उसका यह दृष्टिकोण उसके अपने नाम 'काग्रेस समाजवादी दल' से स्पष्ट रूप से झलक रहा था।

साम्यवादियो को 1938 मे अपनी नीति बदलनी पडी और तब वे राष्ट्रीय जीवन की मुख्यधारा से अलग–थलग पड जाने की स्थिति से बचने के लिए भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस मे सम्मिलित हो गए। इसके बावजूद सोवियत सघ द्वारा मित्रराष्ट्रो–ब्रिटेन, फ्रास अमेरिका के साथ युद्ध मे कूद पडने पर उन्होने द्वितीय विश्वयुद्ध को जन–युद्ध घोषित कर दिया और अलगाववादी मार्ग पर लौटकर एक नए भारत के निर्माण मे सलग्न भारतीय शक्तियो के विरुद्ध कार्य करना आरम्भ कर दिया। काग्रेस समाजवादी दल युद्ध–प्रयासो मे भाग लेने का घोर विरोधी था तथा उसने इस तर्क का खडन किया कि पाश्चात्य शक्तियाँ नैतिक दृष्टि से हिटलर की अपेक्षा श्रेष्ठतर है। यह दृष्टिकोण उस समय सही सिद्ध हुआ जब मित्रराष्ट्रो ने हजारो निर्दोष जापानी स्त्रियो, पुरुषो तथा बच्चो पर घातक अणुबम गिराकर उन्हे नष्ट कर दिया। असलग्नता की हमारी नीति को सही ठहराने वाले तथ्यों को इसी घटनाक्रम ने एक ठोस आधार प्रदान किया। तरुण भारत की चेतना को जगाने वाले युवा सत्याग्रह–जन्य क्राति की उपज थे। उनमे यूसुफ मेहर अली का एक विशिष्ट स्थान था। उनकी लोकप्रियता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि वे भारी बहुमत से बबई नगर निगम के महापौर चुने गए। मेहर अली मे महत्त्वाकाक्षा लेशमात्र न थी। उन्हे जीवन मे जो भी पुरस्कार मिला वह समूचे भारत की जनता के सभी वर्गो के स्नेह और आदर का फल था। समाजवादी दल मे मेहर अली का योगदान विश्लेषणात्मक शैलि द्वारा अभिव्यक्ति की सीमाओ से कही अधिक परे और महान था। साम्यवादी काग्रेस समाजवादी दल को भीतर से नष्ट करने के प्रयोजन से सयुक्त मोर्चे का नाम लेकर उसमें सम्मिलित हुए थे। इस खतरे को भाँपने तथा उससे दल को भारी क्षति पहुँचने से पहले ही उसका भडाफोड करने वाले मेहर अली ही थे। काग्रेस समाजवादी दल की एकता को जब–जब आतरिक कलह की चुनौतियो का सामना करना पड़ा, तब–तब मेहर अली और आचार्य नरेन्द्र देव–काग्रेस समाजवादी दल के इन दो सरक्षको ने आतरिक संकट के उन क्षणो मे उसकी नौका पार लगाई। उनके देहावसान के पश्चात एक रिक्तता उत्पन्न हो गयी जिसकी पूर्ति नही की जा सकी तथा व्यक्तिगत अहमन्यता ने दल को खडित कर डाला।

मेहर अली ने एक ऐसा कार्यक्रम प्रस्तुत करने का प्रयास किया था जिसके द्वारा काग्रेस दल एक ऐसा लघु सक्रिय कार्यकर्ता सगठन बन

सकता था जो नयी समाज व्यवस्था के निर्माण के लिए प्रथम कोटि का नेतृत्व प्रदान करता। उन्होने अध्ययन–मडला की एक श्रृखला बनाई और सामाजिक अध्ययन का एक पाठयक्रम तैयार किया। प्रत्येक जनाधारित कार्यक्रम के लिए ऐसे अतरग कार्यकर्त्ताओ की आवश्यकता होती है। दुर्भाग्यवश यह सकेत परवर्ती काल में दृष्टि से ओझल हो गया तथा काग्रेस समाजवादी दल को श्रम सघ क्षेत्र मे होने वाली गुटीय सघर्ष मे गभीर पराभव का मुंह देखना पड़ा।

भारत छोडो आदोलन म समाजवादियो की भूमिका का श्रेय भी मुख्यतया यूसुफ मेहर अली को ही जाता है। उन्होने द्वितीय विश्वयुद्ध के अत से पहले ही मनोरथो के निर्णायक सघर्ष की अपरिहार्यता की पूर्व कल्पना कर ली थी। व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा आदोलन ने प्रतिरोध की लौ का पज्ज्वलित रखा था, तथापि उग्र सघर्ष से बचा नहीं जा सकता था। मेहर अली को अग्रिम पंक्ति के नेताओ की गिरफ्तारी के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले नेतृत्व के शून्य की पूर्वकल्पना हो गयी थी। उन्होने आदोलन का अभिक्रम प्रत्येक क्षेत्र मे प्रतिरोध के सुस्पष्ट कार्यक्रम के अनुसार कार्य करने वाले सक्रिय दलो को हस्तातरित करने का प्रयास किया। मेहर अली ने शिरूभाऊ लिमये तथा छोटू भाई पुराणी तथा कतिपय अन्य कार्यकर्त्ताओ की सहायता से अनेक राज्यो मे जन–स्तर पर विद्रोह फैलाने तथा ब्रिटिश युद्ध प्रयासो के सचार–माध्यमो में व्यवधान डालने की दृष्टि से एक सघन कार्यक्रम की व्यूह–रचना के विषय मे छोटे–छोटे दलो को प्रशिक्षित करने के लिए गुप्त समूह गठित किए। 1942 मे नेताओ की गिरफ्तारी के बाद इन सक्रिय दस्तों ने ही अपने कार्यों द्वारा आदोलन को जीवित बनाए रखा।

परतु उनकी इन सब गतिविधियो से चकित होकर हमे इस अत्यन्त प्रेमिल व्यक्ति के दूसरे पक्ष की उपेक्षा नही कर देनी चाहिए। वे एक महान मानववादी थे। सकीर्ण धार्मिक निष्ठाओ का उनके जीवन मे कोई स्थान न था। वे भारत की अतीत-कालीन सस्कृति के प्रति गहन प्रेम पर पले थे। उन्होने हैवेल, कुमारस्वामी और बाशम से भारत-विद्या के पाठ पढे थे। मानवीय अस्तित्व के अर्थ की खोज के लिए किया गया मानव का प्रत्येक प्रयास मनुष्य को समाज मे गरिमा प्रदान करता है। वे वनो तथा प्रकृति के महान प्रेमी थे तथा उन्होने दूर–दूर की यात्राएँ की थी। उन्होने गॉवों मे भारत की महत्ता तथा औद्योगिक कस्बो और नगरो की अनियोजित दरिद्रता में उसकी हेयता का दर्शन किया था। हिमालय की पर्वत श्रृखला के सम्मुख पहुँचकर मेहर अली सम्मोहित हो गए थे तथा उन्होने उन गोपनीय रहस्यो को जान लिया था जिन्हे विराट अबर उन चिर युवा हिमाच्छादित शैल–श्रृगो के कानो मे फुसफुसाता रहता है, जिन पर मनुष्य के चरण कभी नही पडे। मेहर अली पर्यावरण रक्षा आदोलन के, जिसे अब समुचित महत्त्व दिया जा रहा है, एक प्रबल पक्षधर थे।

मेहर अली लौह पुरुष थे। कोई भी पद अथवा स्तर उन्हें जन साधारण से विलग नही कर सकता था। मैं उनकी स्मृति को, दूसरो की व्यक्तिगत समस्याओ मे हाथ बॅटाने वाले तथा उस पृथ्वी पर मनुष्य मात्र के हित के प्रति सपूर्णतया समर्पित एक अत्यन्त प्रिय व्यक्ति के रूप में अपनी प्रेमपूर्ण श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ।

टिप्पणियाँ

नारायण गणेश गोरे	जन्म 13 जून 1907, हिंदला, रत्नागिरी, शिक्षा फार्गूसन कालेज, पूना, 1928, बम्बई में यूथ लीग की स्थापना मे योगदान, 1930 सत्याग्रह जेल यात्रा, 1932 दो वर्ष की कैद, 1934 कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सदस्य तथा सयुक्त मत्री, 1941–46 कारावास 1948 सोशलिस्ट पार्टी के सयुक्त मत्री 1953–54 प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के महामत्री गोवा मुक्ति आन्दोलन मे सत्याग्रही जत्थे का नेतृत्व। 2 वर्ष की सजा किन्तु मुक्त कर दिए गये, 1957–62 लोकसभा के सदस्य, 1965 पूना म्यूनिस्पल कार्पोरेशन के मेयर, 1967–68 महाराष्ट्र साहित्य परिष्द्द के अध्यक्ष 1970 राज्य सभा के सदस्य 1977–79 ब्रिटेन म भारत के उच्चायुक्त, मराठी के प्रसिद्ध लेखक एव साहित्यकार।
बीबी साने	महाराष्ट्र के समाजवादी, राष्ट्र सेवा दल के कार्यकर्त्ता
गगाधर ओगले	पुणे के काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सक्रिय कार्यकर्त्ता, देखिये 'आत्मकथा', मधु लिमये।
केशव गोरे उर्फ 'बंडू'	काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सक्रिय कार्यकर्त्ता स्वतत्रता सग्राम में जेल गये, "अन्तर्राष्ट्रीय समाजवाद" पर पुस्तक लिखी, समाजवादी नेता मृणाल गोरे के पति तथा एन जी गोरे के चचेरे भाई, मधुलिमये के बाल्य सखा असमय मृत्यु, विस्तार के लिए देखिए मधु लिमये की आत्म–कथा

दत्तू साठे	कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के पुणे के सक्रिय कार्यकर्ता, मधु लिमये की आत्मकथा मे विस्तृत वर्णन।
मृणाल गोरे	बम्बई की प्रसिद्ध समाजवादी नेता, बम्बई नगर महापालिका की सदस्य रही, विधायक रही तथा लोक सभा की सदस्य रही। बम्बई की पानी समस्या के लिये आन्दोलन के कारण "पानी वाली बाई" के नाम से मशहूर, महिला समस्याओ के समाधान के लिए आपने "बेलन आन्दोलन" चलाया। सामाजिक तथा राजनीतिक कार्यो मे सक्रिय।
विनायक राव कुलकर्णी	काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सदस्य रहे, प्रतिरक्षा कामगारो को सगठित करने म एस एम जोशी के सहकर्मी, गहरे स्वाध्यायी, समर्पित समाजवादी। निधन हो गया।
अच्युत पटवर्धन	जन्म 5 फरवरी 1905 महाराष्ट अहमदनगर, बनारस से बी ए. और एम ए, 1932 तक बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे अर्थशास्त्र के अध्यापक, सविनय अवज्ञा आन्दोलन मे जेल, 1934 काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सस्थापक सदस्य 1942, भारत छोडो आन्दोलन मे भूमिगत रहकर कार्य किया, 1950 सक्रिय राजनीति से मुक्त निधन हो गया।
अशोक मेहता	जन्म 24 अक्तूबर, भावनगर सौराष्ट्र, शिक्षा–बम्बई, 1932 . असहयोग आन्दोलन के कारण पढाई छोडी, 1934 कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सस्थापक सदस्य, डॉ लोहिया के साथ 'काग्रेस सोशलिस्ट' के सम्पादक 1942, बम्बई में काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी को सगठनात्मक आधार दिया, जेल गये 1950–53, समाजवादी दल के महामत्री 1952–56 पिछडी अर्थ व्यवस्था के सिद्धान्त के प्रतिपादक 1963, प्लानिग कमीशन के उपाध्यक्ष 1964, काग्रेस मे स्थापित 1966 केन्द्रीय में काबीना

	मत्री 1977 जनता पार्टी के गठन के पूर्व सगठन काग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष, लोक सभा के सदस्य, कई ग्रन्थो के रचयिता, देहात 11 दिसम्बर 1984।
अरुणा आसिफ अली	जन्म 1909, 1930 असहयोग आन्दोलन मे जेल, 1941 युद्ध विरोधी आन्दोलन के कारण कारावास 1942–46 भूमिगत रहकर आन्दोलन का सचालन, 1947 ' दिल्ली प्रदेश काग्रेस कमेटी का अध्यक्ष 1948 सोशलिस्ट पार्टी मे शामिल, राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सदस्य, 1955 कम्युनिस्ट पार्टी म शामिल, 1958, कम्युनिस्ट पार्टी छोड दी, 1958–59 दिल्ली की मेयर, 1964 काग्रेस मे शामिल। निधन हो गया।
कमला देवी चट्टोपाध्याय	काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की नेता, महिला आन्दोलन पर अनेक पुस्तको की रचयिता, मानवाधिकार और नारी मुक्ति आन्दोलन मे सक्रिय, दुखद निधन हो गया।
ऊषा मेहता	काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की नेता, 1942 म काग्रेस रेडियो का गठन किया तथा गिरफ्तार की गयीं स्वतत्रता सग्राम मे हिस्सा लिया, बम्बई विश्वविद्यालय मे राजनीति शास्त्र की प्राध्यापिका, अगस्त 2000 मे मृत्यु।
रामनन्दन मिश्र	जन्म रघुनाथपुर, दरभगा, शिक्षा काशी विद्यापीठ 1925 मझोलिया ग्राम मे भगत आश्रम की शुरुआत, 1927–28 पर्दा प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन, 1930 ' नमक कानून तोड़ने के अपराध मे जेल 1934 बिहार मे काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सस्थापक सदस्य, 1939–40 युद्ध विरोधी अभियान मे गिरफ्तार, 1942–46 भारत छोडो आन्दोलन मे जयप्रकाश नारायण के साथ जेल से फरार, 1946 रिहा 1952, सोशलिस्ट पार्टी से अलग हो गये। निधन हो गया।
नबूदरीपवाद ई एम एस	जन्म 14 जून 1909 मिन्यूर केरल 1931

कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापक सदस्य, कम्युनिस्ट पार्टी मे चले गये, केरल के मुख्यमन्त्री, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के महामंत्री रहे, अनेक पुस्तको के लेखक, अनेक बार जेल गये, निधन हो गया।

विश्वनाथ बनर्जी

जन्म--11 जुलाई 1897, खुलना (पूर्वी बगाल) मे जन्म, शिक्षा नेशनल स्कूल खुलना, ईस्टर्न यूनीवर्सिटी ताशकन्द रूस, राजा महेन्द्र प्रताप के समर्थन मे स्वतत्र सरकार गठित की, अनेक बार जेल गए, श्रमिक सगठन बनाया, 1952–53 मे हिन्द मजदूर सभा के अध्यक्ष, बगलादेश के मुक्ति सग्राम मे सहायक मृत्यु 16 फरवरी, 1982।

श्रीपाद अमृत डागे

कम्युनिस्ट पार्टी के सस्थापक सदस्य, कम्युनिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष, सयुक्त महाराष्ट्र समिति के नेता, श्रमिक नेता, कई बार सासद एव महाराष्ट्र से विधायक, अनेक बार जेल यात्रा की विद्वान लेखक, अग्रेज सरकार स माफी के विवाद पर कम्युनिस्ट पार्टी मे विभाजन तथा निष्कासन। मृत्यु हो गयी।

बी टी रणदिवे

कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख नेता, कम्युनिस्ट पार्टी मे विवाद के पश्चात् मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव स्वतत्रता सग्राम सेनानी, अनेक बार जेल यात्रा की, दुखद निधन।

बालकिशन गुप्त

लोहिया के बाल सखा, समाजवादी पार्टी के सदस्य रहे। स्वतत्रता सग्राम मे हिस्सा लिया, दिवगत हो गए।

रमा मिश्र

लोहिया जी की मित्र, ससोपा नेता, अनेक पुस्तको की लेखिका, स्वतत्रता सग्राम मे साझीदार दिल्ली के मिरांडा कालेज मे अध्यापिका। निधन।

साने गुरु जी

राष्ट्र सेवा दल के समर्पित नेता, समाजवादी, स्वतत्रता सग्राम सेनानी बच्चो की एक पीढी को प्रभावित किया ५ के विरोधी मराठी

के ख्याति प्राप्त साहित्यकार, समाज सुधारक, मराठी पत्रिका साधना प्रारम्भ की, गाँधी जी की हत्या के बाद हताश व निराश हो चले थे। आत्म हत्या कर ली, मधुलिमये की 'आत्मकथा'' म विस्तृत चर्चा है।

बसावन सिह	जन्म 23 मार्च, 1909, शिक्षा हथिपुर स्कूल, मुजफ्फर जी पी वी कालज, स्वतत्रता सग्राम मे भाग लिया। अनेक बार गिरफ्तार, बिहार विधान सभा एव विधान परिषद के सदस्य, 1987 मे सविद सरकार मे मत्री।
प्रेम भसीन	जन्म 27 दिसम्बर, 1917 रावलपिडी, शिक्षा रावलपिडी और लाहोर पहली बार कराची काग्रेस मे शामिल हुए 1937 काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी मे शामिल हुए 1941–46 युद्ध विरोध के कारण कारावास, 1948 मे काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के महामत्री बने, बाद मे प्रसोपा के महामत्री, जनता साप्ताहिक से सबद्ध, लेखन कार्य मे लगे है।
मीनू मसानी	जन्म 20 नवम्बर, 1905, शिक्षा बम्बई मे हुई, बाद मे लदन स्कूल आफ इकोनामिक मे हुई, 1930, सविनय अवज्ञा आन्दोलन मे जेल, काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सस्थापक सदस्य, 1943–44 बम्बई क मेयर, 1943 जेल गए, 1947–49, सविधान निर्मात्री सभा के सदस्य, 1957–62, 1963–67 लोकसभा के सदस्य। निधन हो गया।
डीमिलो	बम्बई के प्रसिद्ध श्रमिक नेता, सोशलिस्ट पार्टी से सबन्धित, जार्ज फर्नांडिस के श्रमिक राजनीति मे गुरु, असमय मृत्यु।
ज्योतिर्मय वसु	कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के लोकसभा मे नेता, प्रखर वक्ता कुशल सासद मधु लिमये के प्रिय मित्र, आपातकाल मे जेल गये। निधन हो गया।
नन्दनी सत्पथी	उडीसा में काग्रेस की वरिष्ठ नेता तथा मुख्यमत्री

	रहीं आपातकाल क विरोध मे कान्ग्रेस छोडी तथा हेमवतीनन्दन बहुगुणा जगजीवन राम के साथ "काग्रेस फार डेमोक्रेसी" की स्थापना की।
नानाजी देशमुख	राष्ट्रीग स्वयसेवक सघ के आजीवन कार्यकर्त्ता एव नेता, दीनदयाल शोध सस्थान के प्रबधक, सामाजिक उत्थान मे कार्यरत, आपातकाल मे जेल गए, लोकसभा के सदस्य (1977) राज्यसभा के सदस्य। (2000)
सत्यदेव त्रिपाठी	छात्र जीवन स समाजवादी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र यूनियन क महामत्री, लखनऊ विश्वविद्यालय के अध्यक्ष, उ प्र सरकार के मत्री, इस समय उ प्र काग्रेस के उपाध्यक्ष।
सत्यप्रकाश राणा	लखनऊ विश्वविद्यालय के अध्यक्ष रहे। विधान परिषद के सदस्य। सक्रिय राजनीति से अलग।
रामस्वरूप वर्मा	समाजवादी पार्टी के टिकट पर कई बार उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य रहे। सविद सरकार मे समाजवादी पार्टी के वित्त मत्री थे। समाजवादी पार्टी से अलग होकर अर्जक सघ का निर्माण किया। निधन।
मोहन सिह	छात्र जीवन से ही समाजवादी राजनीति मे सक्रिय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अध्यक्ष रहे, आपातकाल मे 9 महीना बन्दी रहे। समाजवादी आन्दोलनो मे लगभग तीन वर्ष की जेल यात्रा की। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम ए (इतिहास) मे किया। उ प्र सरकार मे मत्री रहे, तीन बार विधायक एव दो बार लोकसभा के सदस्य रहे। अच्छे लेखक एव कुशल वक्ता।
डॉ फरीदी	लखनऊ के प्रसिद्ध टी. बी डाक्टर, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के सक्रिय नेता, मुस्लिम मजलिस के सस्थापक, विधान परिषद मे प्रसोपा ग्रुप के नेता। अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के अल्प सख्यक चरित्र की समाप्ति पर विशाल आन्दोलन के अगु भारतीय क्रान्ति दल सोपा (राज

	नारायण) एव मुस्लिम मजलिस के त्रिगुणी मोर्चा ने 1974 मे चुनाव लड़ा उसके सयोजक, निधन हो गया।
बाबू बनारसी दास	वरिष्ठ काग्रेसी नेता, अनेक बार उ प्र मे मत्री, राज्यसभा (1974) एव लोकसभा के सदस्य रहे। उ प्र के मुख्यमत्री रहे। निधन हो गया।
बसत बापट	प्रसिद्ध कवि लेखक उपन्यासकार, नेशनल कालेज, रुइया कालेज, बम्बई विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर, राष्ट्र सेवा दल के कला पथक के सचालक, स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी, प्रखर समाजवादी।
मधु दडवते	किशोरावस्था मे समाजवादी आन्दोलन से सम्बद्ध, बम्बई विश्वविद्यालय मे भौतिक शास्त्र के प्राध्यापक, 1971 से 1989 तक निरन्तर पॉच बार लोकसभा के सदस्य रहे। केन्द्रीय रेल एव वित्त मत्री रहे। बुद्धिजीवी, लेखक एव गतिशील सामाजिक कार्यकर्त्ता एव नेता। प्रेरणादायी व्यक्तित्व के मालिक।
र क खाडिलकर	रघुनाथ केशव खाडिलकर, तरुणाई मे यूथलीग मे सक्रिय, शेतकारी कामगार पक्ष की महासघ की स्थापना की। 1967 मे लोकसभा के सदस्य, लोकसभा के उपाध्यक्ष रहे, श्रम राज्यमत्री भी रहे।
गोपीनाथ तलवलकर	समाजवादी आन्दोलन एव राष्ट्र सेवा दल से सम्बद्ध, मराठी के प्रसिद्ध साहित्यकार।
काका साहब गाडगिल	नरहरि विष्णु गाडगिल कांग्रेस के महाराष्ट्र मे वरिष्ठ एव सम्मानित नेता, उत्तम वक्ता, राजनीति एवं अर्थशास्त्र पर मराठी में लेखन, केन्द्रीय मत्री एव पंजाब के राज्यपाल रहे।
सेनापति बापट	पाडुरग महादेव बापट लदन में इजीनियरिंग पढते समय वीर सावरकर के प्रभाव मे आये, बम बनाना सीखकर गुप्त क्रान्तिकारी रहे 1920 मे प्रत्यक्षी ह का नेतृत्व किया सेनापति

	कहलाय। सत्याग्रह मे बार–बार जेल यात्रा की, बुढापे मे सयुक्त महाराष्ट्र समिति के आन्दोलन मे भाग लिया और ख्याति प्राप्त की।
महात्मा ज्योतिबा फुले	महाराष्ट्र की एक पिछडी जाति मे जन्म लेकर शिक्षा, समाज सुधारक तथा सामाजिक समता का प्रचार करने वाले महापुरुष, पुणे मे लडकियो के लिए प्रथम स्कूल आप ने ही खोला, 1887 मे सत्य शोधक मण्डल की स्थापना की।
शकर राव देव	चपारन सत्याग्रह (1917) मे गाँधी जी के निष्ठावान अनुयायी, महाराष्ट्र प्रान्तीय काग्रेस के अध्यक्ष (1934), वर्षों काग्रस कार्यकारिणी के सदस्य रहे और बाद मे उसके महामत्री बने। मधु लिमये ने अपनी 'आत्मकथा' मे आपकी विस्तृत चर्चा की है।
आचार्य भागवत	शकर राव देव के दाहिने हाथ, बगला साहित्य पर अधिकार नवभारत मासिक और आलमभारती से सबद्ध रहे।
तारकुडे	विट्ठल महादेव तारकुडे बैरिस्टर, बम्बई उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश 1931 के बाद एम एन राय के प्रभाव मे आये, नागरिक स्वतत्रता के हिमायती। लोहिया एव जे पी के मित्र जे पी द्वारा स्थापित सिटीजन्स फार डेमोक्रेसी के महासचिव।
पूर्णिमा बनर्जी	अरुणा आसफ अली की छोटी बहन, स्वतत्रता सग्राम सेनानी, डॉ लोहिया की मित्र, प्रखर एव तेजस्वी महिला, दुखद निधन।
केशवदेव मालवीय	काग्रेस के नेता, स्वतत्रता सग्राम में जेल यात्रा की, कई बार केन्द्रीय मत्री रहे, वामपथी विचारधारा के प्रति प्रतिबद्ध। निधन।
पुरुषोत्तम त्रिकमदास	समाजवादी नेता, काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सदस्य, स्वतत्रता सग्राम सेनानी। निधन

सप्त क्रान्ति

1 नर–नारी की समानता के लिए।

2 चमडी के रग पर रचित राजकीय, आर्थिक और दिमागी असमानता के खिलाफ।

3 सरकारगत, जन्मजात, जाति प्रथा के खिलाफ और पिछडो को विशेष अवसर के लिए।

4 परदसी गुलामी के खिलाफ और स्वतत्रता तथा विश्व लोक–राज के लिए।

5 निजी पूँजी की विषमताओ के खिलाफ और आर्थिक समानताओ के लिए।

6 निजी जीवन मे अन्यायी हस्तक्षेप के खिलाफ और लोकतान्त्रिक पद्धति के लिए।

7 अस्त्र–शस्त्र के खिलाफ और सत्याग्रह के लिए।

—राममनोहर लोहिया